लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–26

रूसी लोक कथा माला

1830

अंग्रेजी अनुवादः रौबर्ट स्टीले 1916

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-26
Book Title: Roosi Lok Katha Mala (Russian Garland)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2019
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Russia

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5

रूसी लोक कथा माला 7

1 ल्युबिम ज़ारेविच और पंखों वाला भेड़िया 9

2 एक आश्चर्यजनक और अपने आप बजने वाले अच्छे हार्प की कहानी 28

3 सात भाई साइमन 45

4 किसान के बेटे इवान की कहानी 59

5 सोने के पहाड़ की कहानी 75

6 मुरोम का इलिया और डाकू नाइटिन्गेल 90

7 मशहूर हीरो बोवो कोरोलेविच और राजकुमारी द्रशनेवना 100

8 सीधा आदमी और उसकी चालाक पत्नी 168

9 सोने के अंडों वाली बतख की कहानी 178

10 बहादुर साथी बुलाट की कहानी 186

11 राजकुमार मलनद्राश और राजकुमारी सैलीकल्ला की कहानी 200

12 एक जूता बनाने वाले और उसके नौकर पृतुइट्शकिन की कहानी 214

13 बेवकूफ इमैल्यान 231

14 शैम्याका का न्याय 255

15 सोने की चाभी वाले राजकुमार पीटर और राजकुमारी मैगिलीन की कहानी 261

16 ज़िला ज़ारेविच और सफेद स्मोक वाला इवाश्का 270

17 नाइट यारोस्लाव लाज़ारेविच और राजकुमारी अनास्तासिया की कहानी 281

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुईं और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषाओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

रूसी लोक कथा माला[2]

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़े से सबसे छोटा। इस तरह एशिया संसार का सबसे बड़ा महाद्वीप है। इसको सबसे बड़ा महाद्वीप बनाते है जनसंख्या में दो देश – चीन और भारत और क्षेत्रफल में रूस। चीन अकेले की जनसंख्या 1355 मिलियन से ज़्यादा है।

सारा रूस देश बहुत ठंडा है पर इसका उत्तरी हिस्सा तो बहुत ही ज़्यादा ठंडा है। इसका उत्तरी हिस्सा टुण्ड्रा[3] कहलाता है और इसके साइबेरिया[4] नाम के क्षेत्र में आता है। यहाँ के कोणधारी वन बहुत मशहूर हैं। रूस की पूरी आबादी केवल 40 मिलियन है और साइबेरिया की जनसंख्या तो बहुत ही कम है।

इस देश में समय के 9 क्षेत्र हैं यानी इसके पूर्वी और पश्चिमी सीमा के समय में 9 घंटे का अन्तर रहता है। जैसे कैनेडा में 5 घंटे का अन्तर है और उत्तरी अमेरिका में 4 घंटे का। जब इसके पूर्वी सीमा पर रात के 9 बजे होते हैं तो इसके पूर्वी सीमा पर अगले दिन के दोपहर के 12 बजे होते हैं। इसकी दूसरी खास बात यह है कि इस देश में सब तरह की जलवायु पायी जाती है सिवाय उष्ण जलवायु[5] के। वह भी इसलिये कि इसका कोई हिस्सा उष्ण जलवायु के क्षेत्र में आ ही नहीं सकता।

रूस के तीन मुख्य शहर हैं – मास्को, सेन्ट पीटर्सबर्ग और व्लाडीवोस्टक[6]। इसमें दो नदियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं – यूराल और वोल्गा। यूराल नदी यूराल पहाड़ से निकलती है और उत्तर में आर्कटिक सागर में जा कर गिरती है।[7] वोल्गा नदी यूरोप से आती है और रूस के काफी बड़े हिस्से से गुजरती हुई कैस्पियन सागर में गिर जाती है। इसमें दो मुख्य पहाड़ हैं – यूराल पर्वत और अल्टाई पर्वत। इसमें एक बहुत पुरानी मुख्य रेलवे लाइन जाती है जिसका नाम है ट्रान्स साइबेरियन रेलवे[8]। यह पूर्व से ले कर पश्चिम तक पूरे साइबेरिया में जाती है। यह दुनियाँ की सबसे लम्बी रेलवे लाइन है। यहाँ पेट्रोल बहुत होता है जिसको रूस पूरे यूरोप को बेचता है।

तुम सोच रहे होगे कि रूस तो उत्तरी अमेरिका से बहुत दूर है पर ऐसा नहीं है। उत्तरी अमेरिका की एक स्टेट अलास्का जो कैनेडा देश के सुदूर पश्चिम में है और रूस का सुदूर पूर्वी किनारा जो अलास्का के पास है उनमें आपस में सबसे कम दूरी केवल ढाई मील है। इस तरह से रूस और उत्तरी अमेरिका तो दो गाँवों से भी ज़्यादा पास हैं।

---

[2] Russian Garland

[3] Tundra

[4] Siberia – is a district of Russia and its a region too which stretches from its Ural River in the West to Mongolia in the East.

[5] Tropical Climate

[6] (1) Moscow is the capital. (2) St Petersburg (later known as Petrograd and Leningrad) is a port city on Baltic Sea. It is a European kind of most modern city of Russia. (3) Vladivostok

[7] Ural River comes out from Ural Mountains and falls in Arctic Sea in North.

[8] Trans-Siberian Railway is a network of railways connecting Moscow with the Russian Far East and the Sea of Japan. With a length of 5,772 miles (9,289 kms), it is the longest railway line in the world. There are connecting branch lines into Mongolia, China and North Korea. It has connected Moscow with Vladivostok since 1916, and is still being expanded.

क्लासिक लोक कथाओं की सीरीज़ में रूस की लोक कथाओं की दो पुस्तकें हम पहले ही प्रकाशित कर चुके हैं – "रूस की लोक कथाऐं" जिसे अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव ने लिखा था[9] और "रूसी लोगों की लोक कथाऐं" जिसे वीरा डी ब्लूमैन्थल ने लिखा था।[10] हमको तुम सबको यह बताते हुए बहुत ख़ुशी हो रही है कि वे दोनों रूसी लोक कथाओं के हिन्दी में पहले अनुवाद थे और वे दोनों ही अनुवाद तुम सबको बहुत पसन्द आये और वे बहुत लोकप्रिय भी हुए।

इसी से उत्साहित हो कर हम रूस की लोक कथाओं की एक और पुस्तक "रूसी लोक कथा माला" का अनुवाद प्रस्तुत कर रहे हैं।[11] इस पुस्तक में कुल **17** लोक कथाऐं दी गयी है। सभी लोक कथाओं का हिन्दी अनुवाद यहाँ प्रस्तुत है। हालाँकि ये लोक कथाऐं **1916** में प्रकाशित की गयी थीं पर इन्हें सन् **1830** के आस पास लिखा गया था। इसका अर्थ यह है कि इसका यह अंग्रेजी अनुवाद **86** साल बाद किया गया। यह एक बहुत ही मजेदार बात है कि लगता है यह पुस्तक हूबहू इस पुस्तक की नकल है जो शायद रूसी भाया से जर्मन भाष से अनुवाद की गयी थी[12]।

हमें पूरी आशा है कि पिछले दोनों संकलनों की तरह से यह संकलन भी तुम सब लोगों को बहुत पसन्द आयेगा और रूस के बारे में तुम्हारी जानकारी बढ़ायेगा।

संसार के सात महाद्वीप

---

[9] Russian Folk-Tales. By Alexander Nikolayevich Afanasief. 1889. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916. Available at : https://www.gutenberg.org/files/62509/62509-h/62509-h.htm

[10] Folk Tales from the Russian. By Verra de Blumenthal. 1903. 9 tales. Available at several Sites : https://www.sacred-texts.com/neu/ftr/index.htm

[11] "The Russian Garland: Being Russian Folk Tales", Edited by Robert Steele. NY: Robert McBride. 1916. 17 tales collected from various booklets of 1830s, although published in 1916. Book Available on the Web Site : https://www.worldoftales.com/Russian_Garland.html

[12] Russian Popular Tales. By Anton Dietrich in German. Translator unknown with an Introduction by Jocobs Grimm. London and Chapman Hall. 1857. 17 tales. Available at : https://books.google.ca/books?id=fXkWAAAAYAAJ&pg=PR15&source=gbs_selected_pages&cad=2#v=onepage&q&f=false

1 ल्यूबिम ज़ारेविच और पंखों वाला भेड़िया[13]

एक बार की बात है कि एक देश में ऐलीदारोविच नाम का एक ज़ार[14] रहा करता था। इसकी एक पत्नी थी मिलीतीसा इब्राहीमोवना।[15] इनके तीन वेटे थे। बड़े बेटे का नाम था अक्सोफ ज़ारेविच दूसरे बेटे का नाम था हत ज़ारेविच[16] और तीसरे सबसे छोटे बेटे का नाम था ल्यूबिम ज़ारेविच।[17]

उनके तीनों बेटे दिन ब दिन ही नहीं बल्कि हर घंटे बढ़ रहे थे। जब उनका सबसे बड़ा बेटा **20** साल का हो गया तो उसने अपने माता पिता से दूसरे देशों जाने की इजाज़त मॉगी ताकि वह अपने लिये पत्नी ढूँढ सके।

आखिर उसके माता पिता ने उसको जाने की इजाज़त दे दी। उसको अपना आशीर्वाद दिया और उसको चारों दिशाओं में जाने की इजाज़त दे दी

कुछ दिन बाद हत ज़ारेविच ने भी इसी तरह की इच्छा प्रगट की तो ज़ार ऐलीदार और ज़ारीना मिलीतीसा[18] ने उसको भी बड़ी खुशी

---

[13] Story of Lyubim Tzarewich and the Winged Wolf (Tale No 1)
[14] Tzar or Tsar is the title of the King of Russia before 1917.
[15] Elidarovich was the name of the Tzar and Militissa Ibrahimovna was the name of his wife
[16] Tzarevich means the "son of Tzar"
[17] Tzar had three sons – Aksof Tzarevich, Hut Tzarevich and Lyubim Tzarevich
[18] Tzar's wife is called Tzarina

से जाने की इजाज़त दे दी। सो हत ज़ारेविच भी दुनियाँ घूमने चला गया।

दोनों भाई काफी दिन तक दुनियाँ में घूमते रहे। काफी दिनों के बाद भी उन दोनों के बारे में न कुछ सुना गया न किसी ने उनको देखा सो यह समझा गया कि वे दोनों मर गये।

ज़ार और ज़ारीना दोनों ही इस बात से बहुत दुखी थे। वे काफी समय तक उनके लिये रोते रहे पर क्या करते।

इसके बाद उनका सबसे छोटा बेटा ल्यूबिम ज़ारेविच आया और उनकी खुशामद की कि वह अपने दोनों भाइयों को ढूँढने जाना चाहता है।

पर उसके माता पिता ने कहा — "बेटे तुम अभी बहुत छोटे हो तुम अभी इतने लम्बे सफर के लायक भी नहीं हो। और हम तुम्हें जाने भी कैसे दे सकते हैं अब तुम्हीं तो हमारे पास बच गये हो। हम लोग भी अब बूढ़े होते जा रहे हैं अगर तुम्हें कुछ हो गया तो हम अपना राज्य किसको दे कर जायेंगे।"

पर ल्यूबिम ज़ारेविच कहाँ मानने वाला था। वह अपने इरादे में पक्का था। वह बोला — "माँ और पिता जी इस समय मेरा जाना बहुत जरूरी है। मुझे भी दुनियाँ देखनी चाहिये। क्योंकि अगर मुझे किसी देश पर राज करना है तो मुझे यह काम न्याय के साथ करना चाहिये।"

जब ज़ार ऐलीदार और ज़ारीना मिलितीसा ने अपने बेटे के ये शब्द सुने तो वे बहुत खुश हुए और उन्होंने अपने बेटे को सफर करने की इजाज़त दे दी पर केवल कुछ समय के लिये ही। इसके अलावा उन्होंने उससे यह भी कहा कि वह इस बीच अपने साथ कोई साथी नहीं लेगा और न ही किसी खतरे में पड़ेगा।

ल्यूबिम ने उनसे विदा ले कर सोचा कि वह सफर पर जाने से पहले कैसे एक नाइट[19] वाला घोड़ा ले और एक जिरहबख्तर[20] ले। वह यह सोचता हुआ शहर की तरफ चल दिया कि रास्ते में उसको एक बुढ़िया मिली। उस बुढ़िया ने उससे पूछा — "बेटा ल्यूबिम ज़ारेविच तुम कुछ दुखी लगते हो क्यों।"

पर उसने उसको कोई जवाब नहीं दिया और बिना कुछ कहे उसके पास से गुजर गया। पर बाद में उसने सोचा कि बूढ़े लोग नौजवानों से ज़्यादा अक्लमन्द होते हैं सो वह लौट पड़ा।

वह उसके पास गया और बोला — "पहली मुलाकात में माँ मुझे ऐसा लगा कि मुझे आपको अपने दुख के बारे में नहीं बताना चाहिये कि मैं क्यों दुखी हूँ फिर मेरे दिमाग में आया कि बड़े लोग नौजवानों से ज़्यादा अक्लमन्द होते हैं इसलिये मुझे आपको यह बताना ही चाहिये।"

---

[19] A knight is a person granted an honorary title of knighthood by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity – see its picture above.

[20] Translated for the word "Armor". Armor is a protective garment normally worn in war. Normally it is made of iron.

बुढ़िया बोली — “अब तुम्हारी समझ में आया न ल्यूबिम ज़ारेविच। तुम बूढ़े लोगों से बच नहीं सकते। तो अब बताओ कि तुम दुखी क्यों हो। बूढ़ी पत्नी को बताओ तो।”

ल्यूबिम ज़ारेविच बोला — “मेरे पास कोई बढ़िया घोड़ा नहीं है और न ही कोई बढ़िया जिरहबख्तर है फिर भी मुझको अपने भाइयों की खोज में बहुत दूर का सफर करना है।”

इस पर बुढ़िया ने कहा — “तुम क्या सोचते हो? एक घोड़ा और एक जिरहबख्तर तो तुम्हें अपने पिता के वर्जित[21] घास के मैदान में ही मिल जायेंगे। यह घोड़ा उसके 12 फाटक के पीछे 12 जंजीरों से बॅधा हुआ है। उसी घास के मैदान में एक चौड़ी सी तलवार भी है और एक बढ़िया जिरहबख्तर भी।”

जब ल्यूबिम ज़ारेविच ने यह सुना तो वह तो बहुत खुश हो गया। उसने बुढ़िया को धन्यवाद दिया और तुरन्त ही अपने पिता के वर्जित घास के मैदान की ओर दौड़ गया।

घोड़े के पास पहुॅच कर वह रुका और सोचा “मैं ये 12 फाटक कैसे तोड़ूॅ?” पर फिर उसने उनको तोड़ने की कोशिश की तो उसने एक फाटक तो उसी समय तोड़ दिया।

उसके एक फाटक तोड़ते ही घोड़े ने बहादुर नौजवान की खुशबू महसूस की तो उसने बहुत कोशिश कर के अपनी जंजीरें तोड़

[21] Translated for the word “Forbidden”. The “royal forbidden meadows” were those belonging to the Sovereign, the use of which was strictly forbidden to his subjects. When an enemy came into the country they first pitched their camp in these fields, as a declaration of hostilities.

दीं। उसके बाद ल्यूबिम ज़ारेविच ने तीन फाटक और तोड़ दिये। उधर घोड़े ने बाकी बचे फाटक तोड़ दिये। तब ल्यूबिम ज़ारेविच ने घोड़े को देखा भाला, जिरहबख्तर को ढूँढा, उसे पहना, घोड़े को वहीं घास के मैदान में छोड़ कर अपने घर गया।

वहाँ जा कर अपने माता पिता को ढूँढा और बड़ी ख़ुशी के साथ उनको वह सब बताया जो इसके साथ हुआ था कि कैसे एक बुढ़िया ने उसकी सहायता की थी।

उसने फिर अपने सफर के लिये उनसे आशीर्वाद माँगा। उसके माता पिता ने उसको आशीर्वाद दिया और फिर वह अपने बढ़िया घोड़े पर चढ़ कर अपने लम्बे सफर पर चल दिया।

चलते चलते वह एक ऐसी जगह आ पहुँचा जहाँ तीन सड़कें मिलती थीं। उस चौराहे के बीच में एक खम्भा खड़ा था जिस पर तीन वाक्य लिखे हुए थे।

पहला वाक्य था "जो यहाँ से दाँये को मुड़ेगा उसको बहुत सारा खाना मिलेगा पर उसका घोड़ा भूखा रह जायेगा।"

दूसरा वाक्य था "जो यहाँ से सीधा जायेगा वह ख़ुद भूखा रह जायेगा पर उसके घोड़े के लिये काफी खाना होगा।"

तीसरा वाक्य था "जो यहाँ से बाँये को मुड़ेगा वह पंखों वाले भेड़िये से मारा जायेगा।

जब ल्यूबिम ज़ारेविच ने इसे पढ़ा तो इन तीनों वाक्यों पर विचार किया और निश्चय किया कि वह और कोई सड़क नहीं लेगा बल्कि बॉयी तरफ ही जायेगा।

उस तरफ जा कर या तो पंखों वाले भेड़िये से वह खुद मरेगा या फिर वह खुद पंखों वाले भेड़िये को मारेगा। और इस तरह से वह उन सब लोगों को उस पंखों वाले भेड़िये से छुटकारा दिला देगा जो उस रास्ते से सफर करेंगे।

यही सोच कर वह बॉई तरफ मुड़ गया और चलते चलते एक मैदान में निकल आया। वहॉ उसने अपने आराम करने के लिये एक तम्बू गाड़ दिया। तभी अचानक उसने देखा कि पश्चिम से एक पंखों वाला भेड़िया उसकी तरफ उड़ा चला आ रहा है।

उसने ल्यूबिम ज़ारेविच को चौंका दिया। उसने तुरन्त ही अपना जिरहबख्तर पहना कूद कर अपने घोड़े पर बैठा और भेड़िये की तरफ चल दिया। भेड़िये ने उसको अपने पंखों से इतनी ज़ोर से मारा कि वह अपने घोड़े से गिरते गिरते बचा।

फिर भी ल्यूबिम ज़ारेविच अपनी सीट पर बैठा रहा। पर गुस्से में भर कर उसने अपनी तलवार से उस पंखों वाले भेड़िये का पंख काट डाला जिससे वह भेड़िया नीचे गिर पड़ा। इससे उसका दॉया पंख घायल हो गया जिसकी वजह से वह अब उड़ नहीं सकता था।

जब भेड़िया अपने होश में आया तो वह ल्यूबिम ज़ारेविच से आदमी की आवाज में बोला — "मेहरबानी कर के तुम मुझे मत

मारो मैं तुम्हारे काम आऊँगा और तुम्हारे भरोसे का नौकर बन कर तुम्हारी सेवा करूँगा।"

इस पर ल्यूबिम ज़ारेविच बोला — "क्या तुम्हें पता है कि मेरे भाई कहाँ हैं।"

भेड़िया बोला — "हाँ वे तो बहुत दिन हुए मारे जा चुके हैं पर हम फिर से उनको ज़िन्दा करेंगे जब हम सुन्दर राजकुमारी को जीत लेंगे।"

ल्यूबिम ज़ारेविच बोला — "पर हम यह करेंगे कैसे?"

भेड़िया बोला — "सुनो तुम अपना घोड़ा यहाँ छोड़ दो. . . ।"

"यह कैसे हो सकता है? बिना घोड़े के मैं क्या करूँगा?"

"तुम बस मेरी बात सुनो। मैं अपने आपको घोड़े में बदल लूँगा और तुमको ले चलूँगा क्योंकि जिस काम के लिये हम जा रहे हैं यह घोड़ा उस काम के लिये ठीक नहीं है।

उस शहर में जहाँ राजकुमारी रहती है वहाँ दीवारों से शहर में लगी सारी घंटियों तक डोरियाँ जाती हैं। और हमें वे सब डोरियाँ उनको बिना छुए ही कूद कर पार करनी हैं चाहे वह कितनी सी भी छोटी क्यों न हो नहीं तो हम गिरफ्तार हो जायेंगे।"

ल्यूबिम ज़ारेविच को तुरन्त ही यह अहसास हो गया कि भेड़िया अक्लमन्दी की बात कर रहा है सो वह राजी हो गया।

"तो चलो फिर चलते हैं।"

और वे दोनों वहाँ से चल दिये जब तक वे शहर की सफेद पत्थर की दीवार के पास आये और ल्यूबिम ज़ारेविच ने उस दीवार को देखा तो वह तो डर गया। उसके मुँह से निकला — "हम इतनी ऊँची दीवार को कैसे लाँघेंगे। यह तो नामुमकिन है।"

भेड़िया बोला — "इसको लाँघना मेरे लिये कोई मुश्किल काम नहीं है। पर इसको लाँघने के बाद और नयी मुश्किलें खड़ी हो जायेंगी – जैसे तुम्हारे प्यार में पड़ जाने के बाद।

तब तुम्हें "ज़िन्दगी के पानी में" नहाना पड़ेगा। उसमें से कुछ अपने भाइयों के लिये भी ले जाना पड़ेगा। थोड़ा सा "मौत का पानी" भी लेना पड़ेगा।"

उसके बाद वे सुरक्षित रूप से बिना किसी पत्थर को छुए शहर की दीवार लाँघ गये। ल्यूबिम ज़ारेविच महल के पास रुका और सुन्दर राजकुमारी के महल में गया। जैसे ही वह पहले कमरे में घुसा तो उसने देखा कि बहुत सारी दासियाँ गहरी नींद सोयी हुई हैं पर राजकुमारी वहाँ नहीं है।

फिर वह दूसरे कमरे में घुसा तो वहाँ भी बहुत सारी दासियाँ गहरी नींद सोयी हुई थीं पर राजकुमारी यहाँ भी नहीं थी। इसके बाद ल्यूबिम तीसरे कमरे में गया तो वहाँ उसको राजकुमारी मिली। वह वहाँ सो रही थी।

उसकी सुन्दरता को देख कर तो ल्यूबिम के दिल में आग सी लग गयी। वह तो उसके प्रेम में पड़ गया था कि वहाँ से हिल भी

नहीं सका। फिर वह इस डर की वजह से कि कहीं वह पकड़ा न जाये वह वहॉ से ज़िन्दगी और मौत का पानी लाने बागीचे में चला गया।

वहॉ जा कर वह पहले ज़िन्दगी के पानी से नहाया फिर उसने दो डिब्बे भर कर दोनों पानी लिये और अपने भेड़िये के पास लौट आया।

जब वह अपने घोड़े बने भेड़िये पर बैठ रहा था तो भेड़िया बोला — “तुम बहुत भारी हो गये हो। इस तरह से हम वापस दीवार नहीं लॉघ सकते बल्कि उससे टकरा जायेंगे और सबको जगा देंगे। फिर भी तुम उन सबको मार दोगे।

और जब ये सब मर जायेंगे तो एक सफेद घोड़े को पकड़ने का ध्यान रखना। उस समय मैं तुम्हें लड़ने में सहायता करूँगा। जैसे ही हम अपने तम्बू के पास पहुँचेंगे तुम अपना घोड़ा ले लेना और मैं सफेद घोड़े पर बैठ जाऊँगा।

जब हम सारे सिपाहियों को मार देंगे तो राजकुमारी अपने आप ही तुमसे मिलने आयेगी और बहुत ज़्यादा प्यार जताते हुए तुम्हारी पत्नी बनने के लिये कहेगी।”

इसके बाद उन्होंने शहर की दीवार लॉघने की कोशिश की पर उनसे वहॉ की डोरियॉ छू गयीं। बस सारे शहर की घंटियॉ बज उठीं और नगाड़े बज उठे।

हर आदमी जाग उठा और अपने अपने हथियार ले कर कूद कर महल से बाहर आ गया। कुछ लोगों ने महल का दरवाजा खोल दिया ताकि राजकुमारी पर कोई मुसीबत न आ पड़े।

इसी समय राजकुमारी भी जाग गयी और यह देख कर कि एक नौजवान उसके कमरे में था उसने अलार्म बजा दिया। अलार्म सुन कर सारे दरबारी उसके पास आ गये। बहुत सारे नाइट्स भी वहाँ आ गये।

उसने उनसे कहा — "ओ बहादुर योद्धाओ जाओ और उस नौजवान को पकड़ो और उसका सिर काट कर मेरे पास लाओ ताकि उसको उसकी बहादुरी की सजा मिल सके।"

उन बहादुर नाइट्स ने राजकुमारी से वायदा किया और कहा — "हम तब तक चैन से नहीं बैठेंगे जब तक हम उसको मार नहीं लेंगे और उसका सिर ला कर आपको नहीं दे देंगे चाहे वह किसी सेना के बीच में ही क्यों न हो।"

राजकुमारी ने उनको भेज दिया और खुद ऊपर छज्जे पर चली गयी और अपनी सेना की तरफ देखा और उस अजनबी की तरफ देखा जो उसके कमरे में आने की हिम्मत कर सका और उसको सोते में सहलाने की हिम्मत कर सका।

राजकुमारी ने जब अलार्म बजाया था तब तक ल्यूबिम ज़ारेविच अपने भेड़िये वाले घोड़े पर बहुत दूर जा चुका था। वह अपने तम्बू की तरफ आधे रास्ते तक पहुँच गया था।

जब उसने उनको आते देखा तो वह पलटा और इतने सारे नाइट्स को मैदान में देख कर गुस्से में भर गया। वे सारे लोग उसके ऊपर टूट पड़े पर ल्यूबिम ज़ारेविच उनसे अपनी तलवार से बहुत बहादुरी से लड़ा और उसने बहुतों को मार दिया

उसके घोड़े ने अपने खुरों से उससे ज़्यादा लोगों को मार दिया। उसने करीब करीब सारे छोटे छोटे नाइट्स को खत्म कर दिया।

तब ल्यूबिम ज़ारेविच ने एक अकेला नाइट एक सफेद घोड़े पर सवार देखा जिसका सिर बीयर के एक बैरल[22] के समान था वह उसी की तरफ बढ़ा चला आ रहा था। पर ल्यूबिम ज़ारेविच ने उसको भी मार दिया।

फिर वह उस सफेद घोड़े पर बैठ गया और उसने अपने भेड़िये घोड़े को आराम करने के लिये छोड़ दिया। जब वे आराम कर चुके तो वे अपने तम्बू की तरफ चले गये।

जब सुन्दर राजकुमारी ने ल्यूबिम ज़ारेविच को अकेले ही इतनी बड़ी सेना को मारते देखा तो उसने और बड़ी सेना इकट्ठी की और उसको उससे लड़ने के लिये भेजा। उसके बाद वह फिर से अपने छज्जे पर चली गयी।

[22] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter – see its picture above.

उधर जब ल्यूबिम ज़ारेविच अपने तम्बू में आया तो उसके भेड़िये ने अपने आपको एक ऐसे बहादुर नाइट में बदल लिया जैसा किसी ने न देखा हो सिवाय परियों की कहानियों में सुनने के।

उधर सुन्दर ज़ारेवना की बहुत बड़ी सेना बढ़ी चली आ रही थी जिनके सिपाहियों को गिनना भी मुश्किल था।

ल्यूबिम ज़ारेविच और भेड़िया अपने सफेद घोड़े पर चढ़े और उनके हमले का इन्तजार करने लगे। जब सुन्दर ज़ारेवना[23] की सेना पास आ गयी तो ल्यूबिम ने सेना की दॉयी तरफ लेते हुए भेड़िये को उसकी बॉयी तरफ पर हमला करने के लिये कहा।

तभी उन्होंने अचानक ज़ारेवना की सेना पर भयानक रूप से हमला कर दिया और उनको गाजर मूली की तरह से काटना शुरू कर दिया। वे तब तक ऐसा करते रहे जब तक मैदान में केवल दो ही लोग रह गये। एक तो भेड़िया और दूसरा ल्यूबिम ज़ारेविच।

इस भयानक लड़ाई के बाद बहादुर भेड़िये ने ल्यूबिम ज़ारेविच से कहा — "देखो वह सुन्दर ज़ारेवना यहॉ खुद ही चली आ रही है। अब वह तुमसे शादी करने के लिये कहेगी। अब उससे कुछ ज़्यादा डरने की जरूरत नहीं है।

मैंने अपने बहुत से अपराध अपनी बहादुरी से ढक दिये हैं। अब तुम मुझे विदा दो और मुझे अपने राज्य जाने की इजाज़त दो।"

---

[23] Tsarevna means the "Daughter of the Tsar" means Princess

सो ल्यूबिम ज़ारेविच ने उसकी सलाह और उसकी सेवाओं के लिये उसे धन्यवाद दिया और उसको विदा दी। उसके बाद भेड़िया गायब हो गया।

जब ल्यूबिम ज़ारेविच ने सुन्दर ज़ारेवना को अपनी तरफ आते देखा तो वह बहुत खुश हुआ और उससे मिलने चला।

उसने उसका हाथ अपने हाथ में लिया उसको गले लगाया और कहा — "अगर मैं तुम्हें प्यार न करता होता तो मैं यहाँ रहता ही नहीं। पर तुमने देखा कि मेरा प्यार तुम्हारी सेना से ज़्यादा मजबूत था।"

सुन्दर ज़ारेवना बोली — "ओ बहादुर नाइट तुमने मेरी सारी ताकतें जीत लीं मेरे सारे ताकतवर मुख्य मुख्य नाइट मार दिये जिन पर मेरी सारी उम्मीदें टिकी हुई थीं। अब मेरा शहर खाली हो गया है। मैं इसे छोड़ दूँगी और तुम्हारे साथ चलती हूँ। आज से तुम मेरे रक्षक हो।"

ल्यूबिम ज़ारेविच बोला — "मैं खुशी से तुम्हें अपनी पत्नी स्वीकार करता हूँ। आज से मैं तुम्हारी और तुम्हारे राज्य की वफादारी से रक्षा करूँगा।"

इस तरह से बात करते हुए वे अपने तम्बू में घुसे और खाना खाने और आराम करने के लिये बैठ गये।

अगली सुबह सवेरे ही वे अपने अपने घोड़ों पर सवार हुए और ऐलीदार के राज्य को रवाना हो गये।

रास्ते में ल्यूबिम ज़ारेविच ने कहा — “ओ सुन्दर राजकुमारी, मेरे दो बड़े भाई थे जिन्होंने तुमको पाने की उम्मीद में मुझसे पहले ही घर छोड़ दिया था। वे यहीं कहीं जंगलों में मारे गये हैं।

अब उनके मरे हुए शरीर कहाँ हैं मैं नहीं जानता पर मैं अपने साथ “ज़िन्दगी का पानी” और मौत का पानी” साथ ले कर आया हूँ और उन्हें ज़िन्दा करना चाहता हूँ। वे हमारे रास्ते से ज़्यादा दूर नहीं हो सकते।

क्या तुम मेरे साथ उस खम्भे तक चलना पसन्द करोगी जिस पर कुछ लिखा हुआ है और वहाँ मेरा इन्तजार करोगी। मैं तुमको जल्दी ही आ कर मिलता हूँ।”

इतना कह कर ल्यूबिम ज़ारेविच उस सुन्दर राजकुमारी को वहीं छोड़ कर अपने भाइयों के मरे हुए शरीर ढूँढने चला गया। आखिर वे उसको जंगल में पेड़ों के नीचे मिल गये।

मौत का पानी छिड़कने के बाद उनकी हड्डियाँ एक साथ बढ़ने लगीं। उसके बाद उसने उन पर ज़िन्दगी का पानी छिड़क दिया जिससे वे ज़िन्दा हो गये।

तब अक्सोफ़ और हत ज़ारेविच दोनों एक साथ बोले — “भाई हम लोग यहाँ कितनी देर सोते रहे?”

ल्यूबिम ज़ारेविच बोला — “ओह तुम तो यहाँ हमेशा के लिये सोते रहते अगर मैं तुम्हें यहाँ ढूँढने नहीं आता तो।”

तब उसने उनको अपना सारा किस्सा बताया कि कैसे उसने भेड़िये को जीता फिर कैसे सुन्दर राजकुमारी को जीता फिर कैसे उनके लिये ज़िन्दगी और मौत का पानी ले कर आया।

उसके बाद वे अपने तम्बू में चले गये जहाँ सुन्दर ज़ारेवना उनका इन्तजार कर रही थी। वहाँ पहुँच कर सबने बहुत खुशियाँ मनायीं और बढ़िया खाना खाया।

जब वे सब आराम करने के लिये लेट गये तो अक्सोफ़ ज़ारेविच ने अपने भाई हत ज़ारेविच से कहा — "हम अपने पिता ऐलीदार और माँ मिलीतीसा के पास कैसे जायेंगे? हम उनको जा कर क्या बतायेंगे?

हमारा छोटा भाई तो यह कह सकता है कि वह राजकुमारी को ले कर आया है पर हम? तो हमारे लिये यह बेइज़्ज़ती की बात नहीं होगी? क्या यह अच्छा नहीं होगा कि उसको हम अभी उसको मार दें?"

और बस दोनों ने मिल कर ल्यूबिम ज़ारेविच के टुकड़े टुकड़े कर दिये और वे टुकड़े हवा में फेंक दिये। फिर उन्होंने राजकुमारी को धमकी दी कि अगर उसने यह भेद किसी पर खोला तो उसका भी यही हाल होगा।

फिर हत ने ज़िन्दगी और मौत का पानी लिया और अक्सोफ़ ने राजकुमारी को लिया और इस तरह से वे अपने पिता के राज्य को चल दिये।

वहाँ आ कर वे "वर्जित घास के मैदान" में गये और वहाँ जा कर अपने तम्बू गाड़ दिये। ज़ार ऐलीदार ने यह जानने के लिये अपने दूत भेजे कि वहाँ किसने अपने तम्बू गाड़े हैं।

इसका जवाब हत ने दिया — "हमारे पिता ज़ार से कहो कि हत और अक्सोफ़ एक सुन्दर राजकुमारी के साथ वापस आ गये हैं और हम लोग अपने साथ ज़िन्दगी और मौत के पानी भी लाये हैं।"

ज़ार का दूत तुरन्त ही दरबार लौट गया और हत का सन्देश ज़ार को जा सुनाया। ज़ार ने पूछा कि क्या उसके तीनों बेटे आ गये हैं। दूत बोला — "योर मैजेस्टी वहाँ तो आपके केवल दो बड़े बेटे ही थे। तीसरा सबसे छोटा बेटा तो कहीं दिखायी नहीं दिया।"

फिर भी ज़ार बहुत खुश हुआ और अपनी पत्नी ज़ारीना को यह बताने गया कि उनके दो बड़े बेटे वापस लौट आये हैं।

ज़ार ऐलीदार और ज़ारीना मिलीतीसा उठे और अपने दोनों बेटों से मिलने चल दिये। उन्होंने उनसे गले मिल कर उनका स्वागत किया और महल आ कर एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया। यह दावत सात दिन और सात रात तक चली।

इसके बाद उन्होंने शादी के बारे में सोचना शुरू किया तो उसकी तैयारी के बारे में, मेहमानों बोयर[24] और सिपाहियों को बुलाने के बारे में भी सोचना शुरू किया।

---

[24] Boyar is the member of the old aristocracy in Russia, next in rank to a Prince

पंखों वाला भेड़िया जानता था कि ल्यूबिम के भाइयों ने उसको मार डाला है। वह तुरन्त ही भागा गया और ज़िन्दगी और मौत के पानी ले कर आया।

उसने ल्यूबिम के मरे हुए शरीर के हिस्से इकट्ठे किये और पहले उन पर मौत का पानी छिड़क दिया। इससे उसकी हड्डियाँ एक साथ बढ़ने लगीं। फिर उसने उनके ऊपर ज़िन्दगी का पानी छिड़क दिया। ज़िन्दगी का पानी छिड़कते ही वह बहादुर नौजवान उठ कर खड़ा हो गया जैसे कि उसको कुछ हुआ ही नहीं।

वह बोला — "अरे मैं तो कितनी देर तक सोता रहा।"

भेड़िया बोला — "तुम तो हमेशा के लिये सोते रहते अगर मैं तुम्हें जगाने के लिये नहीं आता तो।"

और उसने ल्यूबिम ज़ारेविच को वह सब बता दिया जो उसके भाइयों ने उसके साथ किया था। फिर उसने अपने आपको एक घोड़े में बदला और ल्यूबिम से कहा — "जल्दी चलो। तुम उनको जरूर ही पकड़ लोगे। कल तुम्हारा भाई अक्सोफ़ ज़ारेविच राजकुमारी से शादी कर रहा है।"

ल्यूबिम तुरन्त ही वहाँ से चल दिया और घोड़े के रूप में भेड़िया कुलाँचें मारने लगा। भागते भागते वे ज़ार के शहर आये जहाँ आ कर ल्यूबिम घोड़े से उतर गया।

वहाँ से वह बाजार गया और एक गुसली[25] खरीदी और एक ऐसी जगह जा कर बैठ गया जहाँ से राजकुमारी गुजरती।

जब राजकुमारी चर्च ले जायी जा रही थी तो ल्यूबिम ज़ारेविच ने गुसली बजा बजा कर उस पर अपनी जवानी की घटनाऐं गानी शुरू कर दीं।

और जब सुन्दर राजकुमारी पास आ गयी तो उसने अपने भाइयों के बारे में गाया कि किस बेरहमी से उन्होंने उसको मारा और किस तरह से उनके पिता को धोखा दिया।

तब राजकुमारी ने अपनी गाड़ी वहाँ रुकवायी और अपनी नौकरानियों से गुसली वाले अजनबी को बुलाने के लिये कहा और पूछने के लिये कहा कि वह कौन था और उसका क्या नाम था।

पर बिना कोई जवाब दिये ल्यूबिम राजकुमारी के पास गया। जैसे ही राजकुमारी ने उसको देखा तो वह बहुत खुश हो गयी। उसने उसको अपनी गाड़ी में बिठा लिया और फिर वे उसके पिता के पास चले।

जब ज़ार ऐलीदार और ज़ारीना मिलीतीसा ने अपने बेटे ल्यूबिम ज़ारेविच को देखा तो खुशी के मारे उनका तो मुँह खुला का खुला रह गया। वे तो कुछ बोल ही न सके।

---

[25] Gusli, plural -s. A Russian musical instrument of the Zither class having approximately 28 gut strings and played with a keyboard. See its picture above.

सुन्दर राजकुमारी ने कहा — "पिता जी वह अक्सोफ़ नहीं था जिसने मुझे जीता बल्कि वह ल्यूबिम ज़ारेविच था और वह भी ल्यूबिम ही था जो ज़िन्दगी और मौत के पानी ले कर आया और आपके दोनों बेटों को ज़िन्दा किया।" तब ल्यूबिम ज़ारेविच ने उनको अपने सफर का सारा हाल सुनाया।

उसके सफर का हाल सुन कर ज़ार ज़ारीना ने अपने दोनों बड़े बेटों अक्सोफ़ और हत को बुलाया और उनसे पूछा कि उन्होंने इस बुरी तरीके से व्यवहार क्यों किया पर उन्होंने इस इलजाम को झूठा बताया।

इस पर ज़ार को बहुत गुस्सा आ गया और उसने उनको फाटक पर मारने का हुक्म दे दिया। ल्यूबिम ज़ारेविच ने सुन्दर राजकुमारी से शादी कर ली और वे जितने साल ज़िन्दा रहे सुख से रहे।

2 एक आश्चर्यजनक और अपने आप बजने वाले अच्छे हार्प की कहानी[26]

एक बार की बात है कि किसी देश में फ़िलौन नाम का एक राजा रहता था। उसकी एक पत्नी थी और एक बेटा था। पत्नी का नाम चलतूरा था और बेटे का नाम अस्त्राश था।[27] अस्त्राश की शुरू से ही यह इच्छा थी कि वह नाइट जैसे काम कर के दुनियाँ में मशहूर हो।

जब वह बड़ा हो गया तो उसके मन में शादी का विचार आया। उसने अपने पिता से पूछा कि ऐसा कौन सा देश था जिसमें राजा या ज़ार की सबसे सुन्दर बेटियाँ रहती थीं।

पिता बोला — "मेरे प्यारे बेटे, मेरे अच्छे बच्चे, अगर तुम्हें शादी ही करनी ही है तो आओ मेरे साथ मैं तुम्हें सारे राजाओं और ज़ारों की सारी बेटियों की तस्वीरें दिखाऊँगा।"

यह कह कर वह अस्त्राश को एक कमरे में ले गया जहाँ बहुत सारी तस्वीरें लगी हुई थीं। उसने बेटे को वे तस्वीरें दिखायीं। बेटे ने सारी तस्वीरें बड़े ध्यान से देखीं तो उनमें से उसको एक तस्वीर बहुत अच्छी लगी।

---

[26] Story of the Most Wonderful and Noble Selfplaying Harp (Tale No 2)

[27] There lived a King named Filon with his wife named Filtura and son named Astrach.

वह थी ज़ारेवना ओसीदा की। यह मिश्र के सुलतान अफोर की बेटी थी।[28] उसने अपने पिता से आशीर्वाद लिया इजाज़त ली और ओसीदा का हाथ माँगने के लिये मिश्र के सुलतान से मिलने चल दिया।

राजा फ़िलौन अपने बेटे की शादी के विचार से बहुत खुश था। उसने उसको अपना आशीर्वाद दे कर विदा किया।

राजकुमार अस्त्राश कोई अच्छा सा घोड़ा देखने के लिये शाही घुड़साल की तरफ चल दिया। पर उसके दिमाग में उनमें से कोई घोड़ा जँचा नहीं सो वह अकेला ही पैदल मिश्र की तरफ चल दिया।

वह बहुत देर तक चलता रहा – दूर पास, यहाँ वहाँ कि उसको एक बहुत बड़े मैदान में एक सफेद संगमरमर का महल खड़ा हुआ दिखायी दिया। वहाँ पहुँच कर वह उस बिल्डिंग के चारों तरफ घूमा।

यह देखने के लिये कि वहाँ कोई है या नहीं उसने महल की हर खिड़की देखी पर वहाँ उसे कोई दिखायी नहीं दिया। सो वह उसके अन्दर कम्पाउंड में चला गया और बहुत देर तक इधर उधर घूमता रहा। फिर वह उस महल के अन्दर चला गया। वह वहाँ कमरों में घूमता रहा पर वहाँ सब शान्त पड़ा था। लगता था जैसे कोई उसे छोड़ कर चला गया हो।

---

[28] Tsarevna Osida, daughter of Afor, the Tsar of Egypt

आखिर में वह एक कमरे में आया जिसमें एक आदमी के खाने के लिये एक मेज लगी थी। बहुत भूखा होने की वजह से अस्त्राश उस मेज पर बैठ गया और पेट भर कर खाया पिया। उसके बाद वह एक पलंग पर लेट गया और लेटते ही सो गया।

जब उसकी ऑख खुली तो वह फिर से इधर उधर चक्कर काटने लगा। घूमते घूमते वह एक कमरे में आया जहॉ से उसने एक खिड़की से झॉका तो उसे एक बहुत सुन्दर बागीचा दिखायी दिया। उतना सुन्दर बागीचा उसने पहले कभी देखा नहीं था सो उसके मन में आया कि वह उस बागीचे में सैर करे।

वह महल के बाहर चला गया और उस बागीचे में बहुत देर तक घूमता रहा। कि उसे एक पत्थर की दीवार दिखायी दे गयी। उसमें एक लोहे का दरवाजा लगा था और उसमें एक बहुत बड़ा ताला पड़ा हुआ था।

जैसे ही उसने ताले को छुआ तो दीवार के उस पार से किसी घोड़े के हिनहिनाने की आवाज आयी। उसने वह ताला हटाना चाहा सो उसने अपने हाथों में एक बहुत बड़ा पत्थर लिया और उससे ताला खोलने की कोशिश करने लगा।

पर वह तो उसकी एक बार की मार में ही खुल गया। उसके पीछे एक दूसरा लोहे का दरवाजा था। उसमें भी पहले जैसा बड़ा ताला लगा था। इसको भी उसने उसी तरह तोड़ डाला। इसके पीछे ऐसे ही ताले लगे 10 दरवाजे और थे।

उन सबमें भी वैसे ही ताले पड़े हुए थे जिनको उसने उसी तरह से खोल दिया जैसे पहला ताला खोला था। तब अन्दर जा कर उसे एक बहुत बढ़िया घोड़ा मिला और एक मजबूत जिरहबख्तर[29] भी। वह उस घोड़े के पास गया उसे सहलाया। वह घोड़ा वहाँ ऐसे खड़ा रहा जैसे वह वहीं जम गया हो।

तब राजकुमार आगे बढ़ा और उसने घोड़े पर साज सजाया। साज बहुत बढ़िया था। उसकी सिल्क की डोरी थी जो उसने उसके मुँह में डाली और उसको बाहर ले जा कर पहाड़ नदियाँ जंगल पार करते हुए ले चला।

पर जैसे ही उसने घोड़े को एड़ लगायी कि घोड़ा तो ऊपर उठने लगा जंगलों से भी ऊपर बादलों के पास। नदियाँ पार करते हुए उन्हें अपनी पूँछ से ढकते हुए चलता चला कि राजकुमार अस्त्राश उस घोड़े से इतना थक गया कि उसे गुस्सा आने लगा।

इतने में वह घोड़ा आदमी की आवाज में बोला – "ओ राजकुमार, ओ मेरे भले सवार। तैंतीस साल हो गये हैं जब मैं यारोस्लाव यारोस्लावोविच[30] की सेवा किया करता था जो बहुत ही बहादुर और ताकतवर नाइट था। मैंने उसके साथ अकेले वाली बहुत सारी लड़ाइयाँ लड़ी हैं। पर मैं इतना कभी नहीं थका जितना

[29] Translated for the word "Armor" – a kind of protective thing normally made of iron to wear on the body.

[30] Yaroslav Yaroslavovich – read his story in this book given in last "Story of the Knight Yaroslav Lasarevich and the Princess Anastasia".

कि आज थक गया हूँ। अब मैं तुम्हारी अपने मरते दम तक सेवा करने के लिये तैयार हूँ।"

इसके बाद राजकुमार अस्त्राश उसको वापस महल के कम्पाउंड में ले गया। उसको घुड़साल में रखा। उसको खाने के लिये सफेद मक्का दी और पीने के लिये सोते का पानी दिया। इसके बाद वह संगमरमर के महल में चला गया। पेट भर कर खाया पिया फिर सोने के लिये लेट गया।

अगली सुबह वह जल्दी ही उठ गया। उसने अपने घोड़े पर जीन कसी और ज़ार अफोर से मिलने के लिये और उससे उसकी सुन्दर बेटी ज़ारेवना ओसीदा का हाथ माँगने लिये मिश्र की तरफ चल पड़ा।

मिश्र के राजा के दरबार में पहुँच कर उसने अपने आपको राजा फ़िलौन का बेटा बताया। यह सुन कर मिश्र के ज़ार ने उसका बहुत इज़्ज़त के साथ स्वागत किया और उससे उसके आने की वजह पूछी।

राजकुमार अस्त्राश ने कहा — "ओ सारे मिश्र के महाराज। मैं आपके दरबार में दावत खाने नहीं आया हूँ बल्कि आपकी सुन्दर बेटी को अपनी पत्नी के रूप में माँगने आया हूँ।"

ज़ार बोला — "ओ बहादुर राजकुमार अस्त्राश। मैं अपनी बेटी जरूर तुमको दे दूँगा पर तुम्हें मेरा एक काम करना पड़ेगा। टार्टर का ज़ार हमारे करीब आ रहा है और मेरे राज्य को नष्ट करने की

मुझे और मेरी पत्नी को मारने की और मेरी बेटी को ले जाने की धमकी दे रहा है।"

अस्त्राश बोला — "ओ शाही शान वाले ज़ार अफोर। मैं उस ज़ार के साथ लड़ने के लिये आपके राज्य को नष्ट होने से बचाने के तैयार हूँ।"

यह सुन कर ज़ार अफोर को बहुत तसल्ली मिली। उसने बहादुर और सुन्दर राजकुमार अस्त्राश के लिये तुरन्त ही एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया। दावत के बाद दोनों की सगाई हो गयी।

अगले दिन 300 हजार लोगों की बुसुरमान फौज[31] शहर के सामने आ गयी तो मिश्र का ज़ार चिन्तित हो उठा। उसने अस्त्राश से सलाह माँगी। तो राजकुमार ने अपना घोड़ा सजाया और शाही महल में पहुँच गया।

वहाँ जा कर उसने चारों दिशाओं में झुक कर अपनी प्रार्थना की। उसके बाद उसने ज़ार अफोर और उसकी पत्नी और अपनी होने वाली पत्नी ज़ारेवना[32] से विदा ली और सीधा दुश्मन के पड़ाव की तरफ चला गया।

जब उसने अपने घोड़े को ऐड़ लगायी तो वह घोड़ा जंगलों से भी ऊँचा पर बादलों से नीचे दौड़ने लगा। वह अपने पीछे नदियाँ

[31] Busurman Army

[32] Tsarevna means = the daughter of Tsar – means "The Princess"

पहाड़ मैदान छोड़ता जा रहा था। आखिर में वह दुश्मन के पड़ाव तक आ पहुँचा। राजकुमार ने तुरन्त ही उस सेना पर कत्ले आम शुरू कर दिया। थोड़ी ही देर में उसने सबको मार डाला।

वह जिस तरफ भी अपना हाथ चलाता एक रास्ता सा खुल जाता और जिधर वह अपना घोड़ा ले जाता मैदान का मैदान साफ कर देता। इस तरह वह दौड़ता रहा और दुश्मन की सेना को मारता रहा। उसने बुसुरमैन के राजा को बन्दी बना लिया और उसे ज़ार अफोर के पास ले आया जिसने उसको जेल में डाल दिया।

उसके बाद दावतें हुईं और सारे राज्य में खुशियाँ ही खुशियाँ मनायी गयीं। यह जश्न दो हफ्ते तक चलता रहा।

इसके बाद राजकुमार ने ज़ार अफोर को ज़ारेवना ओसीदा से अपनी शादी के बारे में याद दिलाया तो फिर एक बार राज्य में जश्न शुरू हो गया। ज़ार अफोर ने अपनी बेटी को शादी की तैयारी का हुक्म दे दिया।

जब ज़ारेवना ओसीदा ने यह सुना तो उसने राजकुमार अस्त्राश को अपने पास बुलाया और कहा — “मेरे प्यारे दोस्त और मेरे होने वाले दुलहे। तुम शादी करने की बड़ी जल्दी में हो। ज़रा सोचो कि शादी की दावत बिना संगीत के कितनी उदास और खराब लगेगी क्योंकि मेरे पिता के पास तो कोई संगीतज्ञ ही नहीं है।

इसलिये प्यारे दोस्त। मैं तुमसे विनती करती हूँ कि तुम थ्राइस नाइन जमीन[33] पार कर के तुरन्त **30**वें राज्य में यानी कि अमर काशशी[34] के राज्य में चले जाओ और वहाँ से अपने आप बजने वाला हार्प[35] ले आओ।

वह सारी धुनें इतनी अच्छी तरह बजाता है कि लोग उनको सुने बिना रह ही नहीं सकते। उसकी कोई कीमत भी नहीं ऑक सकता। उससे हमारी शादी में जान पड़ जायेगी।"

यह सुन कर राजकुमार अस्त्राश शाही घुड़साल में गया अपने घोड़े पर जीन कसी और अपने आप बजने वाले हार्प की खोज में अमर काशशी के राज्य की तरफ चल दिया।

जब वह जा रहा तो रास्ते में एक पुराना मकान पड़ा जो एक बागीचे में जंगल की तरफ मुँह किये खड़ा था। उसने अपनी नाइट की सी आवाज में कहा — "ओ मकान जंगल की तरफ से अपना मुँह मेरी तरफ को घुमा।"

उसी समय वह मकान राजकुमार की तरफ को मुँह कर के खड़ा हो गया। राजकुमार अपने घोड़े से उतरा और उस घर के अन्दर गया तो उसने देखा कि वहाँ एक बूढ़ी जादूगरनी फर्श पर बैठी बैठी चरखे से रुई कात रही है।

---

[33] Thrice nine lands
[34] In the Kingdom of Deathless Kashtshei, that is the 30th Kingdom. Kashtshei may be the same as Koshchei the Deathless in other Russian folktales. He is a good friend of Baba Yaga.
[35] Harp is a Western musical string instrument. See its picture above,

पर जादूगरनी उसको देख कर डर के मारे चिल्ला पड़ी — "फू फू फू। इससे पहले तो कोई रूसी इधर सुना नहीं गया और आज तो मैं उसे देख रही हूँ।"

फिर उसने राजकुमार अस्त्राश से पूछा — "ओ भले बच्चे राजकुमार अस्त्राश। तू यहाँ किसलिये आया है। तू यहाँ अपनी मर्जी से आया है या नहीं। यहाँ तो कोई चिड़िया भी पर नहीं मारती। कोई जंगली जानवर भी नहीं आता। कोई नाइट मेरे मकान के पास से नहीं गुजरता तो भगवान ने तुझे यहाँ कैसे भेज दिया।"

राजकुमार अस्त्राश बोला — "ओ बेवकूफ बूढ़ी पत्नी। पहले तू मुझे खाने पीने के लिये तो कुछ दे। उसके बाद कोई सवाल पूछना।"

यह सुन कर बूढ़ी जादूगरनी तुरन्त ही उसके लिये कुछ खाने के लिये ले आयी। खाना पीना राजकुमार के सामने रखते हुए उसने उसे नहाने के लिये कहा। उसके बाल बनाये। उसके लिये बिस्तर बिछाया। पर वह फिर से उससे सवाल पूछने लग गयी।।

"ओ सुन्दर नौजवान बता तो तू किधर जा रहा है। किस दूर देश जा रहा है। और वहाँ भी तू अपने इच्छा से जा रहा है या...।"

राजकुमार अस्त्राश ने कहा — "मैं अपनी इच्छा से थ्राइस नाइन लैंड से हो कर थ्राइस टैन्थ लैंड में जा रहा हूँ। अमर काशशी के देश में अपने आप बजने वाला हार्प लेने के लिये।"

यह सुन कर बूढ़ी जादूगरनी बहुत ज़ोर से हॅसी — "हो हो हो हो। तेरे लिये हार्प लाना बहुत मुश्किल काम है। अभी तो तू अपनी प्रार्थना कर और फिर आराम कर। सुबह इन सब बातों के बारे में सोचना रात तो सोने के लिये होती है।"

सो राजकुमार अस्त्राश सोने के लिये लेट गया।

अगली सुबह बुढ़िया जल्दी जागी, उठी और राजकुमार को उठाया — "उठो राजकुमार उठो।"

सो अस्त्राश उठा और तैयार हुआ मोजे जूते पहने चारों दिशाओं में झुक कर अपनी प्रार्थना की और जादूगरनी से विदा लेने के लिये तैयार हो गया।

उसको ऐसे तैयार खड़ा देख कर जादूगरनी बोली — "तू ऐसे इस बुढ़िया की इजाज़त लिये बिना कैसे जा सकता है। ऐसे तुझे अपने आप बजने वाला हार्प कैसे मिलेगा।"

और जब उसने उससे इजाज़त ली तो वह बोली — "भगवान का नाम ले कर जा। और जब तू अमर काशशी के राज्य की सीमा पर पहुँच जाये तो ख्याल रखना कि तू वहाँ दिन के 12 बजे ही पहुँचे।

उसके सोने के महल के पास एक हरा बागीचा है। उस बागीचे में तझे एक बहुत सुन्दर राजकुमारी घूमती हुई दिखायी देगी। तू दीवार फॉद कर अन्दर उस लड़की के पास चले जाना। वह तुझे देख कर बहुत खुश होगी क्योंकि अमर काशशी उसे उसके पिता के

दरबार से छह साल पहले उठा लाया था। तू इस लड़की से पूछना कि तू अपने आप बजने वाले हार्प को कैसे पा सकता है। वही तुझे बतायेगी।"

यह सुन कर राजकुमार अस्त्राश अपने घोड़े पर बैठा और अमर काशशी के राज्य को चल दिया। वह अमर काशशी के राज्य में पहुँचा। वहाँ पहुँच कर वह फिर काशशी के महल की तरफ चला।

वहाँ पहुँच कर उसने अपने आप बजने वाले हार्प की आवाज सुनी तो उसको तो वह सुनता हुआ खड़ा ही रह गया और उसमें ही खो गया। कुछ देर बाद जब वह होश में आया तो वह दीवार फाँद कर बगीचे के अन्दर चला गया।

वहाँ पहुँच कर उसको ज़ारेवना[36] दिखायी दे गयी। राजकुमार उसके पास गया तो पहले तो वह उसको देख कर डर गयी तब राजकुमार ने उसको तसल्ली दी और उससे पूछा कि वह अपने आप बजने वाला हार्प वहाँ से कैसे ले सकता है।

राजकुमारी दरीसा[37] बोली — "अगर तुम मुझे यहाँ से ले चलने का वायदा करो तभी मैं तुम्हें बता सकती हूँ कि तुम यहाँ से हार्प कैसे ले सकते हो।"

---

[36] Tsarevna means the daughter of a Tzar – means the Princess

[37] Darisa – name of the princess who was kidnapped by Kashtshie

राजकुमार ने उससे वायदा किया कि वह उसको वहॉ से निकाल ले जायेगा तो राजकुमारी ने उससे वहीं बागीचे में इन्तजार करने के लिये कहा और वह खुद अमर काशशी के पास चली गयी।

उसके पास जा कर उसने उससे मीठी मीठी बातें करने लगी — "मेरे सबसे प्यारे और सबसे नजदीकी दोस्त। तुम मुझे बताओ कि क्या तुम वाकई कभी नहीं मरोगे।"

काशशी बोला — "नहीं कभी नहीं।"

राजकुमारी ने पूछा — "तब तुम्हारी मौत कहॉ हैं। क्या यहॉ?

काशशी बोला — "हॉ। यह जो देहरी पर झाड़ू रखी है वह इसमें है।"

यह सुनते ही राजकुमारी दरीसा ने तुरन्त ही झाड़ू उठा कर आग में फेंक दी। हालॉकि झाड़ू तो जल गयी पर अमर कोशशी फिर भी ज़िन्दा ही रहा।

ज़ारेवना बोली — "प्रिये तुम मुझे सच्चा प्यार नहीं करते। इसलिये तुमने मुझे बताया नहीं कि तुम्हारी मौत कहॉ है। खैर फिर भी मैं तुमसे नाराज नहीं हूॅ। मैं अभी भी तुम्हें दिल से प्यार करती हूॅ।"

ऐसे शब्द कह कर उसने फिर से अमर काशशी से विनती की कि वह उसे उसकी मौत की जगह बता दे। अमर काशशी हॅस कर बोला — "पहले मुझे यह बताओ कि तुम्हारे पास इस बात को

जानने की क्या वजह है। चलो फिर भी अपने प्यार की खातिर मैं तुम्हें बता देता हू कि मेरी मौत कहाँ है।

फलाँ फलाँ मैदान में तीन हरे ओक के पेड़ खड़े हैं। उनमें से सबसे बड़े पेड़ की जड़ में एक कीड़ा है। अगर किसी तरह से यह कीड़ा मिल जाये तो उसे कुचलने पर मैं मर जाऊँगा।"

राजकुमारी तुरन्त भागी भागी राजकुमार के पास गयी और उससे कहा कि किस तरह उसे फलाँ फलाँ जगह जा कर और वहाँ लगे सबसे बड़े हरे ओक के पेड़ की जड़ में एक कीड़े को ढूँढ कर उसे कुचलना है।

सो राजकुमार उस मैदान की तरफ चल दिया। वहाँ उसे तीन हरे ओक के पेड़ नजर आ गये। उसने सबसे बड़े ओक के पेड़ की जड़ खोद कर कीड़ा ढूँढा और इसे कुचल दिया। यह कर के वह ज़ारेवना दरीसा के पास आया और उससे पूछा "क्या अमर काशशी अभी भी ज़िन्दा है। मुझे कीड़ा मिल गया था और मैंने उसे कुचल दिया था।"

राजकुमारी दरीसा बोली "हाँ वह तो अभी तक ज़िन्दा है।"

राजकुमार अस्त्राश बोला — "तो तुम फिर से वहाँ जाओ और फिर से मालूम कर के आओ कि उसकी मौत कहाँ है।"

सो राजकुमारी फिर से अमर काशशी के पास गयी और रोते हुए उससे बोली — "तुम मुझे बिल्कुल प्यार भी नहीं करते और सच भी नहीं बताते बल्कि मुझे बेवकूफ समझते हो।"

और आखिर काशशी को उसकी बात सुननी ही पड़ी और उसे सारा सच बताना ही पड़ा। उसने कहा — "मेरी मौत यहाँ से बहुत दूर है। उसको ढूँढना बहुत मुश्किल है। वह समुद्र के ऊपर है। समुद्र में एक टापू है बूयान[38]।

इस टापू पर एक हरे ओक का पेड़ है। इस पेड़ के नीचे एक लोहे का बक्सा है। उसमें एक छोटी सी टोकरी है। उस टोकरी में एक बड़ा खरगोश[39] है। इस बड़े खरगोश के अन्दर एक बतख है। बतख में एक अंडा है। इस अंडे को जो कोई तोड़ देगा वही मेरी मौत की वजह होगा।"

जैसे ही ज़ारेवना ने यह सुना तो वह फिर से राजकुमार के पास भागी गयी और उसको जा कर सब कुछ बताया। राजकुमार भी यह सुन कर तुरन्त ही अपने घोड़े पर चढ़ा और बूयान टापू की तरफ चल दिया।

जब वह समुद्र के किनारे पहुँचा तो वहाँ एक नाव वाला दिखायी दे गया। उसने उससे बूयान टापू चलने के लिये कहा। वह नाव में बैठ गया और जल्दी ही वे बूयान टापू पहुँच गये।

राजकुमार अस्त्राश ने जल्दी ही हरे ओक के पेड़ को ढूँढ लिया। उसने उसके नीचे से लोहे का एक बक्सा निकाला। बक्से को खोला तो उसमें एक टोकरी निकली। टोकरी में से बड़ा खरगोश

[38] Buyan Island – a mythical island. It is mentioned in Norse Mythology also. Read some stories of Norse Mythology in the Book "Norse Deshon Ki Dant Kathayen", by Sushma Gupta written in Hindi.
[39] Translated for the word "Hare". Hare is little bigger than an ordinary rabbit.

निकला तो उसने उसे मार डाला। उस खरगोश में से एक भूरी बतख निकली। बतख उसमें से निकलते ही समुद्र के ऊपर उड़ गयी। उड़ते समय उसने अपना अंडा समुद्र में गिरा दिया।

यह देख कर राजकुमार अस्त्राश बहुत दुखी हुआ पर उसने नाव वाले के समुद्र में मछली पकड़ने वाला जाल फेंकने के लिय कहा।

नाव वाले ने तुरन्त ही अपना जाल समुद्र में डाल दिया। उस जाल से उसने एक बहुत बड़ी पाइक मछली पकड़ ली। मछली के अन्दर से उसको अंडा मिल गया। अंडा ले कर उसने नाव वाले से किनारे चलने के लिये कहा।

किनारे पर पहुँच कर उसने मछियारे को बहुत सारा इनाम दिया। फिर वह अपने घोड़े पर चढ़ कर ज़ारेवना के पास पहुँच गया। जैसे ही वह ज़ारेवना के पास पहुँचा उसने उसे बताया कि उसको अंडा मिल गया है।

राजकुमारी बोली — "बस अब तुम्हें डरने की जरूरत नहीं है। अब तुम मेरे साथ अमर कोशशी के पास चलो।"

जब वे अमर काशशी के पास पहुँचे तो वह राजकुमार के ऊपर कूद पड़ा। उसने राजकुमार को मार दिया होता परन्तु राजकुमार ने हाथ में पकड़े अंडे को तुरन्त ही तोड़ने लगा। जैसे ही वह अंडा तोड़ने लगा वैसे ही काशशी ने चिल्लाना शुरू कर दिया।

उसने राजकुमारी दरीसा से कहा — “क्या मैंने तुम्हें अपने मरने की बात इसलिये नहीं बतायी थी कि मैं तुम्हें सच्चा प्रेम करता था और उसका तुमने मुझे यह बदला दिया।”

यह कहते हुए उसने दीवार से अपनी तलवार उठा ली और ज़ारेवना को मारने दौड़ा। यह देखते ही राजकुमार ने अपने हाथ में पकड़ा अंडा तुरन्त ही तोड़ दिया। अंडे के टूट जाने से वह राक्षस मक्का के भुट्टे की तरह से जमीन पर गिर गया और मर गया।

तब ज़ारेवन दरीसा राजकुमार अस्त्राश को महल के अन्दर ले गयी और बोली — “लो अब यह हार्प तुम्हारी है पर इसके बदले में तुम मुझे मेरे घर पहुँचा दो।”

सो राजकुमार ने हार्प ले ली। हार्प ने तो इतनी अच्छी तरह से बजना शुरू कर दिया कि राजकुमार तो चकित रह गया। जैसा वह बजता था वैसे ही वह बना हुआ भी था। वह पूर्वीय क्रिस्टल का बना हुआ था और उसमें सोने के तार पड़े हुए थे।

पहले तो राजकुमार उसको बहुत देखता रहा फिर अपने राज्य को रवाना हो गया। उसने राजकुमारी दरीसा को अपने घोड़े पर बिठाया हुआ था। सो पहले वह दरीसा के घर गया और फिर मिश्र में ज़ार अफोर के पास गया। उसने हार्प ज़ारेवना ओसीदा को दे दिया। तब उन्होंने हार्प को एक मेज पर रख दिया और वह बहुत सारी मीठी मीठी धुनें बजाने लगा।

अगले दिन राजकुमार ऐस्ट्रैश की शादी राजकुमारी ओसीदा से हो गयी। कुछ दिन बाद वे मिश्र से अपने देश वापस लौट आये। जब राजकुमार के माता पिता ने देखा कि उनका बेटा शादी कर के वापस आ गया है तो वे बहुत खुश हुए।

कुछ समय बाद ही फ़िलौन मर गया तो राजकुमार अस्त्राश को वहाँ का राजा बना दिया गया। और फिर उसने अपनी रानी के साथ जब तक मरा तब तक खुशी खुशी राज किया।

3 सात भाई साइमन[40]

एक बार की बात है कि एक किसान अपनी पत्नी के साथ रहता था। वे दोनों बहुत सालों तक एक साथ ही रहे पर उनके कोई बच्चा नहीं था। जब वे बूढ़े हो गये तो वे एक बच्चे के लिये प्रार्थना करने लगे। क्योंकि वे अब बूढ़े हो गये थे इसलिये वे अब बहुत ज़्यादा मेहनत भी नहीं कर पाते थे।

सात साल बाद स्त्री ने सात बेटों को जन्म दिया। उन्होंने अपने सब बेटों का नाम साइमन रख दिया। जब वे सब भाई 10 साल की उम्र तक पहुँचे तो उनके पिता चल बसे। अब वे वह जमीन जोतते थे जो उनके पिता छोड़ गये थे और अपना गुजारा करते थे।

अब एक दिन इत्तफाक ऐसा हुआ कि जब वे अपने पिता का खेत जोत रहे थे तो ज़ार अडोर[41] उधर से गुजरा। उसने देखा कि सात छोटे छोटे बच्चे जमीन जोत रहे हैं। यह देख कर उसको बहुत दुख हुआ सो उसने अपने नौकरों को वहाँ यह पता करने के लिये भेजा कि वे बच्चे किसके हैं और वे इतनी कड़ी मेहनत क्यों कर रहे हैं।

[40] Seven Brothers Simeon (Tale No 3)

[41] Tsar Ador

उनमें से सबसे बड़ा साइमन बोला — "हम अनाथ हैं और हमारा काम करने के लिये भी नहीं है। हम सबका नाम साइमन है।"

नौकर ने जा कर यह बात ज़ार अडोर से कही तो उसने हुक्म दिया कि उन बच्चों को उसके साथ भेज दिया जाये।

महल आ कर ज़ार अडोर ने अपने सब सलाहकारों को बुलाया और इस बारे में उनकी सलाह माँगी। उसने उनसे कहा — "देखो ये यहाँ सात गरीब अनाथ बच्चे हैं। इनका कोई रिश्तेदार भी नहीं है जो इनकी सहायता कर सके।

मैं इनको ऐसा आदमी बनाना चाहता हूँ जिससे ये लोग मुझे याद रखें। इसी लिये मैं आप सबकी सलाह चाहता हूँ कि मैं इनको क्या दस्तकारी या क्या कला कौशल सिखाऊँ जिससे इनकी ज़िन्दगी बन जाये?"

नौकरों ने जवाब दिया — "योर मैजेस्टी, क्योंकि ये लोग थोड़े बड़े हैं और इनको थोड़ी समझ भी है तो इनको अलग अलग बुला कर इन्हीं से पूछा जाये कि ये लोग क्या सीखना चाहते हैं।"

ज़ार अडोर को उनका यह सुझाव पसन्द आया सो उसने सबसे पहले सबसे बड़े साइमन को बुलाया और उससे पूछा — "बोलो तुम क्या कला या व्यापार सीखना चाहते हो? मैं तुमको वही सिखवा दूँगा।"

बड़ा साइमन बोला — "योर मैजेस्टी, मैं कोई कला नहीं सीखना चाहता पर अगर आप मुझे अपने महल के ऑगन के बीच में एक लोहारखाना खोलने की इजाज़त दें तो मैं उसमें एक खम्भा ऐसा बनाऊँगा जो आसमान तक जाता हो।"

अगर बड़ा साइमन यह कर सकता था और वह इतना अच्छा लोहार था तो ज़ार अडोर को उसका यह जवाब सुनते ही पता चल गया था कि बड़े साइमन को किसी कला के सीखने की जरूरत नहीं थी।

पर उसको यह विश्वास ही नहीं हुआ कि वह इतना ऊँचा जाने वाला खम्भा बना सकता था इसलिये उसने उसको अपने महल के ऑगन में एक लोहारखाना खोलने का हुक्म दे दिया। और बड़ा साइमन सीधा अपने काम पर लग गया।

अब ज़ार अडोर ने दूसरे साइमन से पूछा — "तुम कौन सी कला या हस्तकला सीखना चाहते हो?"

तो दूसरे साइमन ने जवाब दिया — "हुजूर, मैं भी कोई कला या हस्तकला नहीं सीखना चाहता। हॉ जब मेरा बड़ा भाई वह लोहे का खम्भा बना लेगा तो मैं उसकी चोटी पर चढ़ जाऊँगा और वहॉ बैठ कर सारी दुनियॉ देख कर आपको यह बताऊँगा कि आपके सारे राज्यों में क्या क्या हो रहा है।"

यह जवाब सुन कर ज़ार अडोर को विश्वास हो गया कि इस बच्चे को भी किसी चीज़ के सीखने की जरूरत नहीं हैं क्योंकि वह तो पहले से ही बहुत होशियार था।

अब उसने तीसरे साइमन से पूछा — "बच्चे तुम कौन सी कला या हस्तकला सीखना चाहते हो?"

उसने भी यही कहा — "योर मैजेस्टी, मैं कोई कला या हस्तकला सीखना नहीं चाहता। हॉ अगर मेरा बड़ा भाई मेरे लिये एक कुल्हाड़ी बना देगा तो मैं पलक झपकते ही उससे एक जहाज़ बना दूँगा।"

ज़ार अडोर ने जब यह सुना तो उसके मुँह से निकल पड़ा — "मुझे ऐसे ही काम करने वालों की जरूरत थी। तुमको भी कुछ सीखने की जरूरत नहीं है।"

अब उसने चौथे साइमन की तरफ देखा और उससे पूछा — "और तुम चौथे साइमन, तुम कौन सी कला या हस्तकला सीखना चाहते हो?"

चौथा साइमन बोला — "योर मैजेस्टी, मैं भी कोई कला या हस्तकला सीखना नहीं चाहता। हॉ जब मेरा तीसरा भाई जहाज़ बना लेगा और अगर किसी दुश्मन ने उस पर हमला किया तो मैं उसको उसके आगे वाले हिस्से से पकड़ कर जमीन के नीचे वाले राज्य में ले जाऊँगा। और जब वह दुश्मन चला जायेगा तो मैं उसको फिर से समुद्र के ऊपर ले आऊँगा।"

ज़ार अडोर तो ऐसी सब बातें सुन सुन कर बहुत ही आश्चर्यचकित हो रहा था। वह बोला — "वाकई तुमको तो कुछ सीखने की जरूरत ही नहीं है।"

अब उसने पाँचवे साइमन की तरफ देखा और उससे पूछा — "और तुम साइमन, तुम कौन सी कला या हस्तकला सीखना चाहते हो?"

पाँचवाँ साइमन बोला — "योर मैजेस्टी, मैं भी कोई कला या हस्तकला सीखना नहीं चाहता। हाँ अगर मेरा सबसे बड़ा भाई मेरे लिये एक बन्दूक बना देगा तो मैं उससे हर वह चिड़िया मार दूँगा जो उड़ती है और जो मैं देख सकता हूँ। फिर चाहे वह कितनी भी दूर क्यों न हो।"

यह सुन कर ज़ार अडोर के मुँह से निकला — "तुम सच्चे मायने में शिकारी हो। तुम जरूर बहुत ही मशहूर शिकारी बनोगे।"

अब ज़ार अडोर छठे साइमन की तरफ मुड़ा और उसने उससे भी वही सवाल पूछा — "और तुम साइमन, तुम कौन सी कला या हस्तकला सीखना चाहते हो?

छठा साइमन बोला — "योर मैजेस्टी, मैं भी कोई कला या हस्तकला सीखना नहीं चाहता। जब मेरा छठा भाई कोई चिड़िया मार लेगा तो मैं उसको जमीन पर गिरने से पहले ही पकड़ लूँगा और उसे आपके पास ले आऊँगा।"

ज़ार अडोर बोला — "बहुत अच्छे, बहुत अच्छे। तुम खेतों में और कोई चीज़ पकड़ने के लिये काम करोगे।"

अब सातवें और आखिरी साइमन की बारी थी। ज़ार अडोर ने उससे भी वही सवाल पूछा तो उसने भी वही जवाब दिया कि वह कोई कला या हस्तकला नहीं सीखना चाहता क्योंकि वह तो पहले से ही एक बहुत ही कीमती कला में होशियार है।

ज़ार अडोर ने पूछा — "और वह कीमती कला क्या है?"

आखिरी साइमन बोला — "योर मैजेस्टी, मैं दुनियाँ के किसी भी ज़िन्दा आदमी से ज़्यादा अच्छी तरह से चोरी कर सकता हूँ।"

जब ज़ार अडोर ने ऐसी बुरी कला के बारे में सुना तो वह बहुत गुस्सा हुआ और उसने अपने सलाहकारों से पूछा — "तुम्हारी राय में ऐसे चोर को क्या सजा देनी चाहिये। इसको किस तरह की मौत मिलनी चाहिये?"

इस पर वे सब एक साथ बोले — "योर मैजेस्टी, क्या इसको मरना ही चाहिये? क्या पता यह कोई चतुर चोर हो और जरूरत के समय हमारे काम आये।"

"ऐसा कैसे हो सकता है।"

ज़ार अडोर के सलाहकारों ने जवाब दिया — "योर मैजेस्टी, आप 10 साल से सुन्दर ज़ारीना हेलेना[42] को पाने के लिये कोशिश

[42] Tsarina Helena – Tsarina means "daughter of the Tsar".

कर रहे हैं और उसके लिये अपना बहुत सारा खजाना और बहुत सारी फौज नष्ट कर चुके हैं। हो सकता है कि यह चोर उसको आपके लिये चुरा कर ले आये।"

यह सुन कर ज़ार अडोर खुश होते हुए बोला — "यह तो आप सब ठीक कहते हैं।"

फिर वह उस आखिरी साइमन की तरफ देख कर बोला — "अब तुम ध्यान से मेरी बात सुनो। क्या तुम थ्राइस नाइन जमीनों को पार कर के 30वें राज्य में जा सकते हो और वहाँ से मेरे लिये सुन्दर ज़ारीना हेलेना[43] को ला सकते हो?"

छोटा साइमन बोला — "योर मैजेस्टी आपको तो केवल हुक्म देने की जरूरत है बाकी सब आप हम पर छोड़ दीजिये।"

ज़ार अडोर बोला — "मैं तुमको हुक्म नहीं दे रहा हूँ मैं तो बस तुमसे केवल प्रार्थना कर रहा हूँ। अब तुम यहाँ एक पल के लिये भी मत ठहरो और ज़ारीना को लेने चले जाओ। और हाँ तुम्हें उसको लाने के लिये जितना पैसा और जितनी फौज चाहिये उतना पैसा और उतनी फौज ले लो।"

चोर साइमन बोला — "मुझे न आपका पैसा चाहिये और ना ही कोई फौज। बस हम सब भाइयों को एक साथ भेज दीजिये क्योंकि बिना अपने भाइयों के मैं कुछ नहीं कर सकता।"

[43] Princess Helena who lives in the Thrice-Tenth land after crossing Thrice-Ninth land. Somewhere her name is given as Yelena, such as in the story of "Firebird".

ज़ार अडोर उन सबको एक साथ भेजना तो नहीं चाहता था पर अगर उसको ज़ारीना हेलेना चाहिये थी तो उसको उन सबको एक साथ भेजना ही पड़ा।

इस बीच सबसे बड़े साइमन ने महल के ऑगन में अपना लोहारखाना बना कर उसमें अपना खम्भा बना कर खत्म कर लिया था। दूसरा साइमन तुरन्त ही उस पर चढ़ गया और वहाँ से चारों तरफ देख रहा था कि सुन्दरी हेलेना के पिता का राज्य कहाँ था।

उसने ज़ार अडोर को बुलाया और कहा — "योर मैजेस्टी थ्राइस नाइन जमीनों के बाद **30**वीं जमीन पर सुन्दरी हेलेना अपनी खिड़की पर बैठी है। वह तो कितनी सुन्दर है। उसकी खाल इतनी गोरी है कि उसकी तो हड्डियाँ भी उसमें से साफ दिखायी दे रही हैं।"

उसके बारे में यह सुन कर तो ज़ार अडोर उसको और ज़्यादा प्यार करने लगा। उसने ज़ोर से सब साइमनों से कहा — "तुम सब लोग तुरन्त ही चले जाओ और ज़ारीना हेलेना को ले कर मेरे पास तुरन्त ही वापस आ जाओ। अब मैं उस सुन्दर हेलेना के बिना एक पल भी नहीं रह सकता।"

सो सबसे बड़े साइमन ने तीसरे साइमन के लिये एक बन्दूक बनायी और वे सब डबल रोटी ले कर अपनी यात्रा पर निकल पड़े। चोर साइमन ने अपने साथ एक बिल्ली और ले ली। और इस तरह वे सब चल पड़े।

यह बिल्ली उस चोर साइमन की इतनी पालतू थी कि वह जहाँ भी जाता वह उसके साथ ही रहती जैसे लोगों के पालतू कुत्ते उनके साथ रहते हैं। और जब भी वह रुकता तो वह अपने पीछे वाले पैरों पर बैठ जाती और अपने शरीर के बाल उसके शरीर से मलती रहती।

इस तरह वे सब चलते रहे और चलते चलते समुद्र के किनारे आ गये। अब यहाँ से तो उनको जहाज़ पर जाना था। सो काफी देर तक वे सब लकड़ी ढूँढने के लिये इधर उधर घूमते रहे ताकि वे उससे जहाज़ बना सकें।

आखिर उनको एक बहुत बड़ा ओक का पेड़ मिल गया। तीसरे साइमन ने अपनी कुल्हाड़ी उठायी और उसे उस पेड़ की जड़ में रख दिया। कुल्हाड़ी के वहाँ रखते ही वह पेड़ नीचे गिर पड़ा और उसका एक जहाज़ बन गया।

उस जहाज़ पर सारी जरूरत की चीज़ें थीं और बहुत सारा कीमती सामान था बेचने के लिये।

कुछ महीनों तक समुद्र में यात्रा करने के बाद वे उस जमीन पर आ गये जहाँ ज़ारीना हेलेना रहती थी। उन्होंने वहाँ जहाज़ का लंगर डाल दिया।

अगले दिन चोर साइमन अपनी बिल्ली के साथ शहर गया और सीधा ज़ार के महल पहुँचा। वहाँ जा कर वह ज़ारीना हेलेना की खिड़की के नीचे खड़ा हो गया।

जैसे ही वह वहाँ रुका तो उसकी बिल्ली अपने पिछले पैरों पर बैठ गयी और अपने शरीर के बाल उसके शरीर से मलने लगी।

अब हुआ यह कि इस देश में किसी ने भी कभी भी कोई बिल्ली न तो सुनी थी और न देखी थी। और न ही किसी को किसी ऐसे जानवर का कुछ पता था।

सुन्दरी हेलेना अपनी खिड़की में बैठी हुई उस बिल्ली को देख रही थी। उसको वह जानवर कुछ अजीब सा लगा सो उसने अपनी दासियों को चोर साइमन के पास यह जानने के लिये भेजा कि उसके पास वह कौन सा जानवर था। क्या वह उसको उसे बेच सकता था और अगर बेच सकता था तो कितने का।

उसकी दासियाँ चोर साइमन के पास आयीं और उस बिल्ली के बारे में उससे पूछा तो चोर साइमन बोला — "हर मैजेस्टी" से कहना कि इस जानवर का नाम बिल्ली है। मैं इसको बेच तो नहीं सकता पर हाँ अगर "हर मेजेस्टी" को यह चाहिये तो मैं इसको उन्हें भेंट दे सकता हूँ।"

सो ज़ारीना हेलेना की दासियाँ वापस उसके पास दौड़ी गयीं और उसको जा कर वह सब बताया जो चोर साइमन ने उनसे कहा था।

ज़ारीना हेलेना ने जब यह सुना तो वह बहुत खुश हुई। वह खुद उसके पास गयी और उससे पूछा कि वह बिल्ली उसको क्यों नहीं बेच सकता था और केवल भेंट में ही क्यों दे सकता था।

पर उसका जवाब सुने बिना ही उसने बिल्ली को अपनी गोद में उठाया और अपने कमरे में चली गयी। उसने चोर साइमन को भी वहीं बुला लिया।

वह उस बिल्ली को दिखाने के लिये अपने पिता ज़ार सार्ग[44] के पास गयी और उसको उसे दिखा कर बोली कि "देखिये पिता जी एक अजनबी ने मुझे यह भेंट दी है।"

ज़ार सार्ग ने खुशी से उस अजीब से जानवर को देखा और चोर साइमन को अपने सामने लाने का हुक्म दिया। जब चोर साइमन उसके पास आया तो उस बिल्ली के लिये उसने उसको बहुत सारा इनाम देना चाहा पर चोर साइमन ने उसके बदले में उससे कुछ भी लेने से इनकार कर दिया।

तब ज़ार सार्ग बोला — "ठीक है तब तुम मेरे महल में कुछ समय के लिये रहो। जब तुम यहाँ रहोगे तो यह बिल्ली मेरी बेटी के साथ ज़्यादा अच्छी तरह से घुल मिल जायेगी।"

अब चोर साइमन की वहाँ रहने की तो कोई मर्जी थी नहीं सो वह ज़ार सार्ग से बोला — "योर मैजेस्टी, मैं आपके महल में रह कर बहुत खुश होता अगर मेरे पास वह जहाज़ न होता जिसमें बैठ कर मैं आपके राज्य में आया हूँ।

यह जहाज़ मैं किसी के पास छोड़ नहीं सकता क्योंकि उसमें मेरा बहुत कीमती सामान रखा है पर अगर योर मैजेस्टी की इच्छा हो तो

---

[44] Tsar Sarg – name of father of Tsarina Helena

मैं रोज महल आऊँगा और बिल्ली की आपकी सुन्दर बेटी से जान पहचान करा दूँगा।"

ज़ार सार्ग को उसकी यह बात पसन्द आयी और अब चोर साइमन रोज उसके महल में जाने लगा।

एक दिन उसने हेलेना से कहा — "जैसे मैं यहाँ रोज आता हूँ तो मैंने कभी देखा नहीं कि आप बाहर कभी घूमने भी जाती हैं। अगर आप मेरे जहाज़ पर आयेंगी तो में आपको दिखाऊँगा कि मेरे जहाज़ पर कितनी सुन्दर और कितनी कीमती चीज़ें लदी हुई हैं – हीरे जड़ा सोने के तारों का बुना हुआ कपड़ा इतना सुन्दर ब्रोकेड जैसा कपड़ा आपने पहले कभी नहीं देखा होगा।"

यह सुन कर ज़ारीना हेलेन अपने पिता के पास गयी और उनसे उस अजनबी के जहाज़ को देखने की इजाज़त माँगी। ज़ार ने उसको वहाँ जाने की इजाज़त दे तो दी पर साथ में उसे अपनी दासियों को ले जाने के लिये भी कहा।

जब वे चोर साइमन के जहाज़ पर आये तो उसने उन सबका वहाँ स्वागत किया और उसने और उसके भाइयों ने उन सबको अपना वह कीमती सामान दिखाया।

फिर वह चोर साइमन ज़ारीना हेलेना से बोला — "अब आप अपनी दासियों को यहाँ से जाने को कह दें क्योंकि अब मैं आपको और बहुत कीमती सामान दिखाने वाला हूँ जो उनको दिखाने के लायक नहीं है।"

सो ज़ारीना हेलेना ने उनको समुद्र के किनारे जाने को कहा। जैसे ही वे सब उस जहाज़ से उतर कर समुद्र के किनारे गयीं तो चोर साइमन ने अपने भाइयों से जहाज़ की रस्सियाँ खोल कर उसको खेने के लिये कहा।

इस बीच वह ज़ारीना हेलेना को और बहुत सारी चीज़ें दिखाता रहा और उसको बहुत सारी भेंटें भी देता रहा।

इस तरह से सामान देखते देखते ज़ारीना हेलेना को जब कई घंटे बीत गये तो वह बोली कि अब उसके घर जाने का समय हो गया और अब उसको घर जाना चाहिये क्योंकि उसके पिता उसका इन्तजार कर रहे होंगे।

यह कह कर वह जहाज़ के नीचे वाले केबिन में से ऊपर गयी तो उसने देखा कि जहाज़ तो पानी में चल रहा था और वहाँ से जमीन भी कहीं दिखायी नहीं दे रही थी। यह देख कर वह तो बहुत परेशान हो गयी।

उसने अपने आपको एक हंस में बदला और वहाँ से उड़ गयी। पर पाँचवें साइमन ने तुरन्त ही अपनी बन्दूक चलायी और उस पर गोली चला दी और छठे साइमन ने उसको पानी में नीचे गिरने से पहले ही पकड़ लिया।

वह उसको जहाज़ के डैक पर ले आया। वहाँ आ कर ज़ारीना फिर से लड़की में बदल गयी।

इस बीच ज़ारीना की दासियों ने जो समुद्र के किनारे पर खड़ी थीं जहाज़ को जाते देख लिया था सो वे तुरन्त ही ज़ार सार्ग के पास भागी गयीं ओर उसको चोर साइमन के धोखे के बारे में बताया।

यह सुन कर ज़ार ने तुरन्त ही अपनी फौज को हुक्म दिया कि वे उसकी बेटी को वहाँ से बचा कर लायें। वे उस जहाज़ के पास पहुँचे ही थे कि चौथा साइमन उस जहाज़ को पकड़ कर पानी के नीचे ले गया।

जब ज़ार की फौजों ने जहाज़ को पानी के अन्दर जाते देखा तो उनको लगा कि जहाज़ तो समुद्र में डूब गया और साथ में ज़ारीना हेलेना भी। तो वे बहुत दुखी हुए और ज़ार के पास दौड़े गये और जा कर उसको सब कुछ बताया।

पर सातों साइमन सुरक्षित घर वापस लौट आये और ज़ारीना हेलेना को ला कर ज़ार अडोर को सौंप दिया। ज़ार हेलेना को देख कर बहुत खुश हुआ। उसने सातों साइमनों को यह सोच कर छोड़ दिया कि वे तो खुद ही बहुत होशियार थे।

उन्होंने उसकी जो सेवा की थी उसके बदले में उसने उनको बहुत सारा सोना चाँदी और जवाहरात दिये।

ज़ार भी ज़ारीना हेलेना के साथ फिर बहुत दिनों तक बहुत खुशी से रहा।

4 किसान के बेटे इवान की कहानी[45]

एक गाँव में एक बहुत ही गरीब किसान अपनी पत्नी के साथ रहता था। उनके तीन साल से कोई बच्चा नहीं था। आखिर उस भली स्त्री के एक बेटा हुआ तो उन्होंने उसका नाम इवान रखा।

बेटा धीरे धीरे बढ़ने लगा। पर जब वह पाँच साल का भी हो गया तो वह चल नहीं पाया। यह देख कर उसके माता पिता बहुत दुखी थे। वे रोज प्रार्थना करते कि उनके बेटे की टाँगें ताकतवर हो जायें और वह चलने लगे पर उनकी प्रार्थनाओं से उनका बेटा बैठने तो लगा पर **33** साल की उम्र तक भी वह चल नहीं पाया।

एक दिन किसान अपनी पत्नी के साथ चर्च गया हुआ था। सो जब वह घर पर नहीं था तो उसके घर एक भिखारी आया और उसके मकान की खिड़की पर खड़ा हो कर किसान के बेटे इवान से भीख माँगने लगा।

इवान बोला — "मैं तुमको खुशी से कुछ दे देता पर मैं अपने स्टूल से उठ नहीं सकता।"

भिखारी बोला — "तुम उठो तो और मुझे कुछ दो। तुम्हारे पैर तो बहुत मजबूत और ताकतवर हैं।"

---

[45] Story of Ivan, the Peasant's Son (Tale No 4) https://www.worldoftales.com/European_folktales/Russian_Folktale_1.html

यह सुन कर इवान ने उठने की कोशिश की तो वह तो तुरन्त ही उठ गया। अपनी इस नयी ताकत को पा कर तो वह बहुत खुश हो गया। उसने उस आदमी को अपने घर के अन्दर बुलाया और उसे खाना खिलाया।

खाना खा कर भिखारी ने थोड़ी सी बीयर माँगी तो इवान तुरन्त ही उसके लिये बीयर भी ले आया। पर भिखारी ने उसे खुद नहीं पिया बल्कि इवान को ही उस बर्तन को खाली करने के लिये कहा। इवान ने उसको पूरा का पूरा पी लिया।

तब भिखारी ने इवान से पूछा — "अब बताओ इवानुष्का इस बीयर को पीने के बाद तुम कितना ताकतवर महसूस कर रहे हो?"

इवान बोला — "बहुत ताकतवर।"

भिखारी बोला — "तब ठीक है अब मैं चलता हूँ।"

और यह कह कर भिखारी तो गायब हो गया और इवान वहीं का वहीं भौंचक्का सा खड़ा का खड़ा रह गया।

कुछ देर बाद उसके माता पिता चर्च से वापस आ गये। जब उन्होंने अपने बेटे को ठीक देखा तो वे आश्चर्य में पड़ गये। उन्होंने उससे पूछा कि यह सब कैसे हुआ। तब इवान ने उनको पूरी कहानी बतायी।

बूढ़े माता पिता ने कहा कि वह कोई भिखारी नहीं था बल्कि कोई संत था जो उनके बेटे को ठीक कर गया। उस दिन उन्होंने बहुत अच्छा खाना खाया और बहुत खुशियाँ मनायीं।

अब इवान ने अपनी ताकत का इम्तिहान लेना चाहा तो वह बाहर निकला रसोईघर के बागीचे में पहुँच कर वहाँ लगा एक खम्भा पकड़ लिया और उसको ऊपर से मार कर उसकी आधी लम्बाई तक नीचे जमीन में गाड़ दिया। फिर उसको अपनी ताकत से उसको घुमाया तो सारा गाँव ही घूम गया।

फिर वह अपने घर में अन्दर चला गया और अपने पिता से बाहर जाने के लिये उनका आशीर्वाद माँगा। जब उसने बाहर जाने की बात की तो उसके बूढ़े माता पिता रोने लगे। उन्होंने उससे कहा कि वह कुछ दिन और रुक जाये।

पर इवान ने उनके आँसुओं पर कोई ध्यान नहीं दिया और कहा — "अगर आप मुझे जाने की इजाज़त नहीं देंगे तो मैं आपकी बिना इजाज़त लिये ही चला जाऊँगा।"

सो उसके माता पिता ने उसको आशीर्वाद दिया इवान ने प्रार्थना की चारों दिशाओं को सिर झुकाया और अपने माता पिता से विदा ली।

वह सीधा बाहर मैदान में गया और जहाँ जहाँ उसको अच्छा लगता रहा वहाँ वहाँ वह 10 दिन और 10 रात तक घूमता रहा। आखिर में वह एक बहुत बड़े राज्य में आ पहुँचा। वह उस शहर में घुसा ही था कि उसने बहुत ज़ोर का शोर सुना।

इस शोर को सुन कर तो वहाँ का ज़ार[46] भी काँप उठा और उसको एक मुनादी पिटवानी पड़ी कि जो कोई भी इस शोर को बन्द करेगा वह उसको अपनी बेटी और उसके साथ अपना आधा राज्य दे देगा।

जब इवानुष्का ने यह सुना तो वह ज़ार के दरबार में पहुँचा और वहाँ के चौकीदार से कहा कि वह ज़ार को खबर करे कि वह उस शोर को शान्त कर देगा।

चौकीदार यह बात कहने के लिये ज़ार के पास अन्दर गया तो ज़ार ने कहा कि उस नौजवान को उसके पास अन्दर लाया जाये।

इवान अन्दर गया तो ज़ार ने पूछा — "जो कुछ तुमने चौकीदार से कहा क्या वह सच है?"

"जी योर मैजेस्टी यह सच है। पर इसके लिये मुझे कोई और इनाम नहीं चाहिये सिवाय उस वजह के जिसकी वजह से यह शोर मच रहा है।"

इस पर ज़ार हँसा और बोला — "दिया, अगर वह तुम्हारे किसी काम का हो तो।" सो किसान के बेटे इवान ने ज़ार को सिर झुकाया और उससे विदा ले कर चला गया।

बाहर जा कर इवान ने चौकीदार से सौ मजदूर माँगे जो उसे तुरन्त ही मिल गये। उसने उन मजदूरों को हुक्म दिया कि वे ज़ार के महल के सामने एक बड़ा गड्ढा खोदें।

---

[46] Tzar or Tsar is the title of the King of Russia before 1917.

जब उन्होंने वहाँ गड्ढा खोदा और उसकी मिट्टी निकाल कर बाहर फेंकनी शुरू की तो उनको वहाँ एक लोहे का दरवाजा दिखायी दिया जिसमे एक ताँबे का छल्ला पड़ा हुआ था।

इवान ने यह दरवाजा केवल एक हाथ से ही उठा लिया। तो उसमें उसने एक बहुत ही बढ़िया घोड़ा देखा जो बहुत ही अच्छा सजा हुआ था और उस पर एक जिरहबख्तर[47] भी था।

जब घोड़े ने इवान को देखा तो वह उसके सामने अपने घुटनों पर गिर पड़ा और आदमी की आवाज में बोला — "ओ बहादुर नौजवान, किसान के बेटे इवान, मशहूर नाइट ल्यूकोपीरो[48] ने मुझे यहाँ रखा हुआ है और मैं बड़ी बेचैनी से **33** साल से तुम्हारा इन्तजार कर रहा हूँ।

तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ और फिर जहाँ चाहो वहाँ जाओ। मैं तुम्हारी बड़ी वफादारी से सेवा करूँगा जैसी कि एक बार मैंने ल्यूकोपीरो की की थी।"

[47] Translated for the word "Armor". Armor is a protective garment normally worn in war. Normally it is made of iron.

[48] A knight is a person granted an honorary title of knighthood by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. Knight Lukopero.

इवान ने उस अच्छे घोड़े पर जीन कसी, कढ़ाई की गयी लगाम लगायी और 10 बढ़िया रेशम की पेटियॉ बॉधीं। फिर वह उसके ऊपर बैठ गया।

उसने उसको चाबुक मारी तो घोड़ा थोड़ा सा हिला और फिर जमीन से ऊपर उठाना शुरू किया तो फिर वह तो जंगल से भी ऊँचा उठ गया। उसने पहाड़ी छोड़ दी। उसकी पूँछ से बड़ी बड़ी नदियॉ ढकी जा रही थीं, उसके कानों से बहुत सारी भाप निकल रही थी और उसके नथुनों से आग की लपटें निकल रही थीं।

आखिर इवान एक अनजाने देश में आ गया और उस देश में वह 30 दिन और 30 रात घूमता रहा। उसके बाद वह चीन के एक राज्य में आ गया।

वहॉ वह घोड़े से उतरा और उसको तो मैदान में छोड़ दिया और खुद वह बाजार चला गया जहॉ से उसने एक ब्लैडर[49] खरीदा। उसको अपने सिर पर पहन कर वह ज़ार के महल के चारों तरफ घूमता रहा।

जब लोगों ने वहॉ उसको इस तरह से देखा कि वह वहॉ कब आया, वह किस तरह का आदमी था और उसके माता पिता के क्या नाम थे। पर इवान ने उनके हर सवाल का जवाब यही दिया "मुझे नहीं मालूम।"

---

[49] Bladder is the part of a body in which urine s collected.

इससे उनको लगा कि यह कोई बेवकूफ है सो वे चीनी ज़ार के पास गये और जा कर उसको उसका हाल बताया। चीनी ज़ार ने उसको अपने पास बुलाया और उससे पूछा कि वह कहाँ से आया है और उसका क्या नाम है।

पर उसने उसको भी वही जवाब दिया "मुझे नहीं मालूम।" तो ज़ार ने उसको अपने दरबार से निकाले जाने का हुक्म दे दिया।

वहाँ की भीड़ में एक माली भी था। उसने ज़ार से प्रार्थना की कि उस आदमी को उसे दे दिया जाये ताकि वह उससे अपने बागीचे में कुछ काम ले सके। ज़ार ने उसको इजाज़त दे दी और वह माली उसको ले कर बागीचे में आ गया।

वहाँ आ कर उसने इवान को बागीचे में से बेकार की घास फूस निकालने का काम दे दिया और खुद बाहर चला गया।

इवान एक पेड़ के नीचे लेट गया और गहरी नींद सो गया। वह रात में उठा और बागीचे के सारे पेड़ तोड़ डाले। सुबह सवेरे जब माली उठा और उसने अपने बागीचे में चारों तरफ देखा तो वह तो उसे देख कर ही डर गया। उसका सारा बागीचा बर्बाद हो चुका था।

वह किसान के बेटे इवान के पास गया और उसको गालियाँ देते हुए उससे पूछा — "ये पेड़ किसने गिराये?"

पर इवान ने फिर वही जवाब दिया — "मुझे नहीं मालूम।"

माली इस बात को ज़ार से कहते डरता था पर ज़ार की बेटी ने अपनी खिड़की से बाहर देखा और माली के बागीचे की यह बर्बादी देखी तो बड़े आश्चर्य में पड़ गयी।

उसने माली से पूछा कि उसके बागीचे की यह बर्बादी किसने की तो उसने जवाब दिया कि यह इस बेवकूफ "मुझे नहीं मालूम" ने उसके इतने अच्छे पेड़ों का सत्यानाश किया है।

पर उसने उससे यह भी प्रार्थना की कि वह यह बात अपने पिता से न कहे। उसने कहा कि वह उस बागीचे को पहले से भी अच्छा बना देगा।

इवान अगली रात सोया नहीं। वह जा कर कुँए से पानी भर कर लाया और उन टूटे पेड़ों में वह पानी डाल दिया। जब सुबह को सूरज उगा तो वे सारे टूटे पेड़ पत्तियों से ढक गये थे और माली का बागीचा पहले से कहीं ज़्यादा अच्छा हो गया था।

जब माली बगीचे में आया तो अचानक ही यह बदलाव देख कर आश्चर्यचकित रह गया पर उसने "मुझे नहीं मालूम" से फिर कोई सवाल नहीं पूछा क्योंकि वह तो जवाब देता ही नहीं था।

और जब ज़ार की बेटी सुबह जागी और अपने बिस्तर से उठी तो उसने फिर माली के बागीचे की तरफ देखा। इस बार तो इसका बागीचा पहले के मुकाबले में बहुत अच्छा लग रहा था।

यह देख कर उसने माली को बुलवाया और उससे पूछा कि रात भर में ही यह सब कैसे हुआ। माली बोला कि यह सब तो वह खुद

भी नहीं समझ सका। और ज़ार की बेटी कि यह "मुझे नहीं मालूम" कोई बहुत ही होशियार और अक्लमन्द आदमी है उससे अपने से भी ज़्यादा प्यार करने लग गयी। वह उसको अपने खाने में से खाना भेजने लगी थी।

चीनी ज़ार की तीन बेटियॉ थीं और उसकी तीनों ही बेटियॉ बहुत सुन्दर थीं। उसकी सबसे बड़ी बेटी का नाम था दुआसा उसकी दूसरी बेटी का नाम था स्काओ और तीसरी सबसे छोटी बेटी जो किसान के बेटे के प्रेम में पड़ गयी थी उसका नाम था लोताओ।[50]

एक दिन ज़ार ने अपनी तीनों बेटियों को बुलाया ओर उनसे कहा — "मेरी प्यारी बेटियों, सुन्दर राजकुमारियों, अब समय आ गया है जब तुमको शादी कर लेनी चाहिये। मैंने तुमको यही कहने के लिये यहॉ बुलाया है कि तुम लोग अब अपने लिये देश विदेश के राजकुमारों में से किसी को भी अपना पति चुन लो।"

यह सुन कर ज़ार की दो सबसे बड़ी बेटियों ने दो ज़ारेविच[51] के नाम लिये जिनसे वे प्यार करती थीं। पर उसकी सबसे छोटी बेटी रो पड़ी और उसने अपने पिता से प्रार्थना की कि वह उसको "मुझे नहीं मालूम" को दे दें।

अपनी तीसरी बेटी की यह प्रार्थना सुन कर ज़ार आश्चर्यचकित रह गया। वह बोला — "बेटी क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है

---

[50] Tsar's three daughters were – the eldest daughter was Duasa, the middle one was Scao and the youngest one was Lotao.

[51] Tsarevich means "the son of a Tsar" – means the son of a king , a prince.

कि तुम एक बेवकूफ "मुझे नहीं मालूम" से शादी करना चाहती हो जो एक शब्द भी नहीं बोल सकता?"

बेटी बोली — "वह चाहे कितना भी बेवकूफ क्यों न हो पर मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप मुझे उससे शादी करने की इजाज़त दे दें।"

ज़ार ने दुखी होते हुए कहा — "अगर तुम्हें और कुछ खुश नहीं करता तो तुम उसी से शादी कर लो। उससे शादी करने की मेरी तुम्हें इजाज़त है।"

ज़ार ने जल्दी ही उन राजकुमारों को बुलवा लिया जिनको उसकी बड़ी बेटियों ने पसन्द किया था। उन्होंने ज़ार का बुलावा तुरन्त ही स्वीकार कर लिया और वे बहुत जल्दी ही चीन चले आये। ज़ार की दोनों बेटियों की शादी धूमधाम से उनसे कर दी गयी।

राजकुमारी लोताओ की शादी इवान से कर दी गयी। उसकी बड़ी बहिनें उसके इस बेवकूफ को पति चुनने पर बहुत हँसीं।

कुछ समय बाद ही एक बड़ी सेना ने देश पर हमला कर दिया और उसके नाइट पोलकान[52] ने ज़ार से उसकी सुन्दर बेटी लोताओ से शादी की माँग की।

उसने उसको धमकी दी कि अगर उसने उसको अपने बेटी राजी से नहीं दी तो वह उसके सारे देश में आग लगा देगा, तलवार से सब

[52] Knight Polkan who invaded the country

लोगों को मार देगा, ज़ार और ज़ारीना को जेल में डाल देगा और उसकी बेटी को जबरदस्ती ले जायेगा।

ये धमकियाँ सुन कर तो ज़ार बहुत डर गया। उसने तुरन्त ही अपनी सेना को इकट्ठा होने का हुक्म दिया और उसके दो बेटे उसको ले कर पोलकान से लड़ने गये। दोनों सेनाऐं आपस में मिलीं और दोनों में घमासान युद्ध हुआ। पोलकान की सेना ने चीन के ज़ार की सेना को हरा दिया।

इस समय राजकुमारी अपने पति किसान के बेटे इवान के पास आयी और बोली — "मेरे प्यारे दोस्त "मुझे नहीं मालूम"। वे लोग मुझे तुमसे छीनना चाहते हैं। नाइट पोलकान ने अपनी सेना के साथ हमारे देश पर हमला कर दिया है और अपनी तलवार से हमारी सेना को पछाड़ दिया है।"

इवान ने राजकुमारी से कहा कि वह उसको अकेला छोड़ दे और वह खुद खिड़की से कूद कर बाहर खुले मैदान में चला गया। वहाँ जा कर वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया —

सिवका बुरका हे, वसन्त के लोमड़े आ
घास के पत्ते की तरह यहाँ मेरे सामने खड़े हो

तभी एक घोड़े ने जमीन के अन्दर से कुदान लगायी जिससे सारी जमीन काँप गयी। उसके कानों से भाप निकल रही थी और नथुनों से आग की लपटें।

किसान का बेटा उसके एक कान में से अन्दर घुसा और दूसरे कान में से एक ऐसा बहादुर नाइट बन कर बाहर निकल आया जिसके बारे में किसी की कलम ने न लिखा होगा और किसी कहानी में भी न कहा गया होगा।

वह घोड़े पर सवार हुआ और पोलकान की सेना की तरफ चल पड़ा। वहाँ जा कर वह उसकी सेना में अपनी तलवार घुमाने लगा और अपने घोड़े से सेना को अपने खुरों के नीचे कुचलने लगा और इस तरह से उसे राज्य के बाहर खदेड़ दिया।

यह देख कर चीन का ज़ार इवान के पास आया और उसको न जानते हुए भी अपने महल में बुलाया। इवान ने कहा — "मैं आपकी प्रजा नहीं हूँ। मैं आपकी सेवा नहीं करूँगा।" ऐसा कहते हुए वह वहाँ से चला गया। बाहर खुले मैदान में जा कर उसने अपने घोड़े को छोड़ दिया और खुद महल चला गया।

वहाँ जा कर वह जैसे खिड़की से बाहर आया था वैसे ही फिर से खिड़की से महल के अन्दर चला गया। ब्लैडर अपने सिर के ऊपर ओढ़ लिया और सोने के लिये लेट गया।

ज़ार ने इस जीत के लिये सब लोगों को एक बहुत बड़ी दावत दी जो कई दिन तक चली।

इत्तफाक की बात कि कुछ दिन बाद पोलकान ने उस देश पर एक नयी सेना के साथ फिर से हमला कर दिया और फिर से धमकी के साथ सबसे छोटी राजकुमारी का हाथ माँगा।

ज़ार ने फिर से अपनी सेना को इकट्ठा किया और उसको पोलकान से लड़ने के लिये भेजा पर नाइट ने पहले की तरह से उसे फिर से हरा दिया। लोताओ बेचारी फिर से अपने पति के पास गयी और फिर से एक बार वही हुआ जैसे पहले हुआ था।

इवान ने फिर से पोलकान को पछाड़ कर उसकी सेना को राज्य के बाहर खदेड़ दिया। इस जीत पर ज़ार ने फिर से उसको अपने महल में आने के लिये बुलावा भेजा पर बिना उसकी प्रार्थना पर ध्यान दिये हुए इवान ने बड़े खुले मैदान में अपना घोड़ा छोड़ा और महल वापस चला गया और जा कर सो गया।

सो ज़ार ने एक इस जीत की खुशी में एक और दावत दी। उसने उस हीरो की जिसने पोलकान को हराया था उसकी बहुत तारीफ की कि वह किस तरह का हीरो था जिसने उसके राज्य को पोलकान से बचाया था।

कुछ समय बाद पोलकान ने तीसरी बार ज़ार के राज्य पर हमला कर दिया। ज़ार की सेना फिर हार गयी। इवान फिर खिड़की से कूदा लड़ाई के मैदान की तरफ भागा अपने घोड़े पर चढ़ा और दुश्मन से लड़ने जा पहुँचा।

इस बार घोड़े ने आदमी की आवाज में कहा — “ओ किसान के बेटे इवान सुनो, इस बार हमें बहुत मुश्किल काम करना है। जितनी बहादुरी से तुम लड़ सकते हो लड़ो और पोलकान के सामने

मजबूती से खड़े रहो नहीं तो तुम और चीनी सेना दोनों मारे जाओगे।"

यह सुन कर इवान ने अपने घोड़े को कोड़ा मारा और पोलकान की सेना के सामने चल दिया। वहाँ जा कर उसने पोलकान की सेना को दाँये बाँये दोनों तरफ से काटना शुरू कर दिया।

जब पोलकान ने देखा कि उसकी सेना हारती जा रही है तो उसको बहुत गुस्सा आ गया और वह इवान के ऊपर अपनी पूरी ताकत के साथ भूखे शेर की तरह टूट पड़ा।

और फिर दोनों के घोड़ों में वह लड़ाई शुरू हुई जिसको देख कर दोनों की सेनाऐं हक्का बक्का रह गयीं। वे दोनों बहुत देर तक लड़ते रहे।

पोलकान ने इवान के बाँये हाथ को घायल कर दिया। इस पर इवान ने अपना एक हथियार पोलकान के ऊपर फेंका जिसने पोलकान का दिल छेद दिया। उसके बाद उसने उसके सिर में मारा और उसकी सारी सेना को राज्य से बाहर खदेड़ दिया।

इवान अब चीन के ज़ार से मिला जो उसके सामने बहुत नीचे तक झुका और पहले की तरह से उसे अपने महल में बुलाया।

उसके बाँयी बाँह पर खून देख कर राजकुमारी लोताओ ने अपना रूमाल उस पर बाँध दिया और उसको महल में ही रहने के लिये कहा पर उसकी किसी भी बात पर कोई ध्यान दिये बिना इवान

अपने घोड़े पर चढ़ा और वहॉ से चल दिया। इसके बाद उसने अपना घोड़ा मैदान में छोड़ा और खुद सोने चला गया।

ज़ार ने फिर से एक दावत का इन्तजाम किया। राजकुमारी लोताओ अपने पति के पास गयी और उसको जगाने की कोशिश की पर सब बेकार।

कि अचानक उसके सिर पर सुनहरी बाल देख कर उसको बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि किसी वजह से इवान के सिर पर से उसका ब्लैडर उतर गया था और जब वह उसके पास गयी तो उसके बॉयी बॉह पर अपना बॉधा हुआ रूमाल देखा तो वह समझ गयी कि यह वही था जिसने तीनों बार पोलकान को हराया और तीसरी बार में उसे मार दिया।

वह तुरन्त ही अपने पिता के पास भागी गयी और उसको महल में ले कर आयी। वह बोली – "देखिये पिता जी आप कहते थे कि मैंने एक बेवकूफ से शादी की है। आप इसके बालों की तरफ ज़रा ध्यान से देखिये और इसके घाव की तरफ देखिये जो इसको पोलकान से मिला था।"

तब ज़ार ने देखा कि यह तो वही था जिसने तीनों बार उसका राज्य बचाया था। यह देख कर ज़ार को बहुत खुशी हुई।

जब किसान का बेटा इवान जागा तो बादशाह ने उसको उसके सफेद गोरे हाथों से पकड़ा और उसको उसकी सेवाओं के लिये उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

अब क्योंकि वह खुद काफी बूढ़ा हो चुका था सो उसने अपने सिर से ताज उतार कर इवान के सिर पर रख दिया। इवान राजगद्दी पर बैठा खुशी खुशी राज किया और अपनी पत्नी के साथ बहुत साल तक जिया।

5 सोने के पहाड़ की कहानी[53]

एक बार की बात है कि किसी देश में एक ज़ार[54] अपनी पत्नी के साथ रहा करता था। उसके तीन बेटे थे। उनमें सबसे बड़े बेटे का नाम था वासिली ज़ारेविच। दूसरे का नाम था फीदोर ज़ारेविच और सबसे छोटे का नाम था इवान ज़ारेविच।[55]

एक दिन ज़ार अपनी ज़ारीना के साथ बागीचे में घूमने गया कि अचानक एक बहुत बड़ा तूफान आया और उसकी ऑखों के सामने से उसकी ज़ारीना को उठा कर ले गया।

ज़ार यह देख कर बहुत दुखी हुआ और बहुत दिनों तक उसका दुख मनाता रहा। पिता को इतना दुखी देख कर उसके दोनों बड़े बेटों ने उससे आशीर्वाद मॉगा और अपनी मॉ को ढूँढ लाने के लिये बाहर जाने की इजाज़त मॉगी। उसने उनको इजाज़त दे दी और विदा किया।

उसके दोनों बड़े बेटे बहुत दिनों तक घूमते रहे और घूमते घूमते एक बहुत बड़े से रेगिस्तान में आ पहुँचे। वहॉ उन्होंने अपने तम्बू गाड़ लिये और वहॉ रह कर इन्तजार करने लगे कि शायद कभी कोई आये और उनको रास्ता बताये। वे वहॉ तीन साल रहे पर वहॉ कोई नहीं आया जो उन्हें रास्ता बताता।

---

[53] Story of the Golden Mountain   (Tale No 5)
https://www.worldoftales.com/European_folktales/Russian_Folktale_1.html

[54] Tsar or Tzar is the title of the King of Russia before 1917.

[55] Vasili Tsarevich, Fedor Tsarevich and Ivan Tsarevich

इस बीच ज़ार का सबसे छोटा बेटा इवान भी बड़ा हो गया था। वह भी अपने दोनों बड़े भाइयों की तरह से अपने पिता के पास गया और उससे अपनी माँ को ढूँढने जाने की इजाज़त चाही। उसके पिता ने उसको भी जाने की इजाज़त दे दी।

वह भी वहाँ से चल दिया और तब तक घूमता रहा जब तक कि उसको दूर कुछ तम्बू नजर आये। वह उन तम्बुओं की तरफ चलता रहा। वहाँ पहुँच कर उसने देखा तो उसको तो अपने भाई मिल गये।

उसने अपने भाइयों से पूछा — "भाइयो। आप लोग यहाँ इस अकेली जगह कैसे आ गये। चलो अब साथ साथ अपनी माँ को ढूँढते हैं।"

दूसरे भाइयों ने उसकी सलाह मान ली और फिर तीनों साथ साथ ही चल पड़े। वे बहुत दिनों तक चलते रहे चलते रहे कि उनको दूर एक महल दिखायी दिया। वह महल क्रिस्टल का बना हुआ था और उसके चारों तरफ क्रिस्टल की ही चहारदीवारी लगी हुई थी।

इवान ने चहारदीवारी का फाटक खोला और तीनों उसके अन्दर दाखिल हो गये। महल के अन्दर घुसने वाले दरवाजे पर एक खम्भा लगा हुआ था जिसमें दो छल्ले पड़े हुए थे एक सोने का और दूसरा चाँदी का।

इवान ने अपने घोड़े को उन दोनों छल्लों में रस्सी डाल कर बाँध दिया और सीढ़ियों से ऊपर चला गया।

सीढ़ियों के ऊपर राजा खुद इवान से मिलने के लिये आया। काफी देर तक राजा से बात करने पर पता चला कि इवान ज़ारेविच तो उसका भतीजा था। तो फिर वह उसको अपने बड़े कमरे में ले गया और उसके भाइयों को भी उसने वहीं बुला लिया।

वे बहुत दिनों तक महल में रहे। चलते समय राजा ने भाइयों को एक जादू की गेंद दी जिसको उन्होंने अपने सामने लुढ़का दिया और वे उसके पीछे पीछे चलते रहे।

उसके पीछे चलते चलते वे एक पहाड़ के पास आ पहुँचे। वह पहाड़ इतना ऊँचा और खड़ी चढ़ाई का था कि वे उस पर चढ नहीं सकते थे। इवान उस पहाड़ पर चढ़ने के लिये उसके चारों तरफ कई बार घूम आया तो एक जगह उसको एक जगह पहाड़ कुछ कटा हुआ सा दिखायी दिया तो वह उसके अन्दर चला गया।

वहाँ जा कर उसको एक लोहे का दरवाजा दिखायी दिया जिसमें ताँबे का एक छल्ला पड़ा हुआ था। दरवाजा खोलने पर उसको लोहे के कुछ हुक दिखायी दिये। वे हुक उसने अपने हाथों पैरों में बाँध लिये और उनकी सहायता से पहाड़ पर चढ़ गया।

पहाड़ पर चढ़ कर वह थक गया था सो वह वहीं बैठ गया। उसने अपने हुक निकाल दिये पर जैसे ही उसने ऐसा किया तो उसके तो सब हुक गायब हो गये।

पहाड़ पर थोड़ी ही दूर पर उसको एक तम्बू दिखायी दिया जो बहुत ही बढ़िया कैम्ब्रिक कपड़े का बना हुआ था। जिससे ऐसा लगता था जैसे वह ताँबे का राज्य हो क्योंकि उसके ऊपर ताँबे की एक गेंद लगी हुई थी।

वह उस तम्बू की तरफ बढ़ा तो उसके घुसने वाले दरवाजे पर दो बड़े बड़े शेर लेटे हुए थे जो किसी को अन्दर नहीं आने देते थे। इवान ने देखा कि पास में ही दो ताँबे के बर्तन रखे हुए थे। उनमें उसने शेरों को पानी पिलाने के लिये पानी डाला उन्हें पानी पिलाया तो उन्होंने उसको अन्दर जाने दिया।

अन्दर जा कर इवान ने देखा कि उसके अन्दर तो एक बहुत सुन्दर रानी सोफे पर लेटी हुई है और उसके पैरों के पास एक तीन सिर वाला ड्रैगन सो रहा है। इवान ने उसके तीनों सिरों को एक ही वार में काट दिया।

रानी ने उसको उसकी इस सेवा के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उसको ताँबे का एक अंडा दिया जिसमें ताँबे का राज्य था। इवान ज़ारेविच ने उससे वह अंडा लिया विदा ली और और आगे चल दिया।

काफी देर चलने के बाद उसको एक और तम्बू दिखायी दिया जो बहुत ही बढ़िया गौज़[56] का बना हुआ था। वह चाँदी के तारों से एक

[56] A thin translucent fbric of silk, linen, or cotton, See its picture above.

सीडर के पेड़ से बँधा हुआ था जिसमें पन्ने की छोटी छोटी गेंदें लगी हुई थीं।

तम्बू के ऊपर से ऐसा लगता था जैसे वह चाँदी का राज्य हो। उसकी चोटी पर चाँदी की एक गेंद लगी हुई थी। उसके घुसने के रास्ते पर दो बहुत बड़े बड़े चीते लेटे हुए थे जो किसी को अन्दर नहीं जाने देते थे। पास में चाँदी के दो बर्तन रखे थे।

इवान ने पहले की तरह से इन चीतों को भी चाँदी के बर्तनों में पानी पिलाया और फिर बिना किसी रोक टोक के अन्दर चला गया।

अन्दर तम्बू में पहुँच कर उसने देखा कि एक सोफे पर एक बहुत सुन्दर रानी बैठी हुई थी। यह रानी पहले वाली रानी से कहीं ज़्यादा सुन्दर थी। उसके पैरों के पास एक छह सिर वाला ड्रैगन लेटा हुआ था। यह ड्रैगन भी उतना ही बड़ा था जितना कि पहले वाला ड्रैगन था। इवान ज़ारेविच ने इसके भी एक ही वार में छहों सिर काट दिये।

उसकी इस बहादुरी से रानी बहुत खुश हुई और उसने उसको चाँदी का एक अंडा दिया जिसमें चाँदी का राज्य बन्द था। उससे चाँदी का अंडा ले कर और विदा ले कर वह और आगे चल दिया।

कुछ देर बाद इवान ने एक तीसरा तम्बू देखा जो बहुत ही बढ़िया सिल्क का बना हुआ था। वह सोने की रस्सियों से एक

लौरेल के पेड़ से बॅधा हुआ था। जिससे हीरों के गेंदें लटक रही थीं। उसके ऊपर सोने की एक गेंद रखी हुई थी।

उसके दरवाजे के पास ही दो बहुत बड़े बड़े मगर लेटे हुए थे। वे अपने मुॅह से आग उगल रहे थे। इवान ने उनको भी पीने के लिये पानी दिया और वह खुद उस तम्बू में घुस गया।

उसने तम्बू में घुस कर देखा कि उसमें भी एक रानी थी जो सुन्दरता में पहली दोनों रानियों से भी ज़्यादा सुन्दर थी। उसके पैरों के पास एक बहुत ही भयानक ड्रैगन लेटा हुआ था जिसके 12 सिर थे। उसने दो बार में ही उनके सिर काट दिये।

यह देख कर रानी बहुत खुश हुई और उसने उसे एक सोने का अंडा दिया। इसमें सोने का राज्य बन्द था। और इसके साथ ही उसे अपना दिल भी दे दिया।

जब वे बात कर रहे थे तो इवान ने उससे पूछा कि क्या वह जानती है कि उसकी मॉ कहॉ है। तो उसने इवान को उसके रहने की जगह बतायी और उसके काम में सफलता की इच्छा की।

काफी दूर चलने के बाद इवान ज़ारेविच को एक महल दिखायी दिया तो वह उसमें अन्दर चला गया और फिर उसके बहुत सारे कमरों में घूमता रहा। पर उन सबमें उसे कोई दिखायी नहीं दिया। आखिर वह एक बहुत बड़े कमरे में आया जहॉ उसने अपनी मॉ को बैठे देखा।

वहॉ वह शाही पोशाक पहने बैठी हुई थी। इवान दौड़ कर उसके गले लग गया। उसने उसे बताया कि किस तरह से वह अपने भाइयों के साथ इतनी दूर यात्रा कर के वहॉ आया है।

ज़ारीना ने इवान को बताया कि जल्दी ही एक आत्मा वहॉ आने वाली है सो वह उसके शाल में छिप जाये। “जब वह आत्मा आये और उसको गले लगाने की कोशिश करे तब तू दोनों हाथों से उसकी जादू की छड़ी लेने की कोशिश करना।

इससे तेरे साथ साथ वह भी जमीन से ऊपर उठने लगेगा। उस समय तू डरना नहीं चुप रहना क्योंकि वह जल्दी ही जमीन पर गिर जायेगा और उसके टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे। इन टुकड़ों को तू इकट्ठा कर लेना और जला देना और उस राख को मैदान में बिखेर देना।”

जैसे ही ज़ारीना ने अपने ये शब्द खत्म किये इवान उसके शाल में छिप गया। तभी आत्मा भी वहॉ आ गयी और उसकी मॉ को गले लगाने लगी कि इवान ज़ारेविच ने वैसा ही किया जैसा उसकी मॉ ने कहा था। उसने उसकी जादू की छड़ी पकड़ ली।

गुस्से में वह आत्मा ऊपर उठने लगी और उसके साथ में उठने लगा इवान भी। इवान आश्चर्य से उसको देखता रहा पर बोला कुछ भी नहीं सो कुछ ही पलों में वह नीचे गिरने लगा और उसके टुकड़े टुकड़े हो गये।

इवान ज़ारेविच ने उसके वे टुकड़े उठा लिये और जला दिये। जादू की छड़ी उसने अपने पास रख ली। उसके बाद वह अपनी माँ के साथ उन तीनों रानियों को भी वहाँ से छुड़ा कर एक ओक के पेड़ के पास ले गया।

वहाँ से उसने सबसे एक लिनन के कपड़े में बैठ कर पहाड़ से नीचे फिसल जाने के लिये कहा। जब उसके भाइयों ने देखा कि इवान पहाड़ पर अकेला रह गया है तो उन्होंने उसके हाथ से वह कपड़ा छीन लिया।

वे दोनों अपनी माँ और उन तीनों रानियों को अपने राज्य ले गये। उन्होंने उनसे यह वायदा करवा लिया कि वे राजा से यह कहें कि उन्होंने ही माँ को और तीनों रानियों को आजाद कराया है।

इधर इवान पहाड़ पर अकेला ही खड़ा रह गया। वह नहीं जानता था कि अब वह पहाड़ से नीचे कैसे उतरे। यही सब सोचता हुआ वह इधर उधर घूमता रहा और उस जादू की छड़ी को इस हाथ से उस हाथ में और उस हाथ से इस हाथ में पलटता रहा।

कि अचानक उसके सामने एक आदमी आ खड़ा हुआ और इवान से बोला — "इवान ज़ारेविच तुम्हारी खुशी के लिये मैं क्या करूँ।"

उसे देख कर इवान को बहुत आश्चर्य हुआ उसने उस आदमी से पूछा "तुम कौन हो और यहाँ इस सुनसान पहाड़ पर कहाँ से आये हो।"

आदमी बोला — "मैं आत्मा हूँ। मैं उसके कब्जे में थी जिसको तुमने मार दिया है। पर क्योंकि अब यह जादू की छड़ी तुम्हारे हाथ में है और तुमने इसको एक हाथ से दूसरे हाथ में ले लिया है तो मैं अब तुम्हारे सामने हाजिर हूँ। जब भी तुमको मुझे बुलाना हो तो इसी तरीके से इस छड़ी को एक हाथ से दूसरे हाथ में बदल लेना। मैं हर समय तुम्हारी सेवा करने के लिये तैयार हूँ।"

इवान ज़ारेविच बोला — "यह तो बहुत अच्छा है। तो सबसे पहली सेवा तो तुम मेरी यही करो कि तुम मुझे मेरे राज्य वापस ले चलो।"

जैसे ही इवान ने यह कहा उसने देखा कि वह तो अपने शहर में है। वहाँ पहुँच कर वह पहले यह जानना चाहता था कि महल में हो क्या रहा है। सो उसने बजाय अपने इसी रूप मे जाने के वह पहले एक चमार की दूकान में गया जहाँ जा कर उसने चमार का काम करना सीखा। उसने सोचा कि ऐसी जगह में उसे कोई नहीं पहचानेगा।

अगले दिन चमार जूता बनाने के लिये चमड़ा खरीदने के लिये बाजार गया तो जब वह घर लौटा तो वह बहुत थक गया था। सो उसने अपनी सारी जिम्मेदारियाँ अपने असिस्टैन्ट पर छोड़ दीं और जा कर सो गया।

पर इवान को तो जूता बनाना आता नहीं था सो उसने अपनी सहायता के लिये आत्मा को बुलाया। उसने उससे चमड़ा लेने के

लिये और उससे जूता बनाने के लिये कहा और फिर वह खुद भी सो गया।

सुबह को जब चमार उठा तो वह यह देखने गया कि इवान ने वहाँ क्या काम किया था। पर उसने देखा कि इवान तो अभी तक सोया हुआ है तो उसका गुस्सा तो सातवें आसमान पर चढ़ गया।

वह चिल्लाया — “उठ ओ आलसी लड़के। क्या मैंने तुझे यहाँ सोने के लिये रखा है।”

इवान ने अँगड़ाई लेते हुए धीरे से अपने मालिक से कहा — “थोड़ा धीरज रखिये। पहले आप अपनी दूकान में जाइये और वहाँ जा कर देखिये कि वहाँ जा कर आपको क्या मिलता है।”

चमार अपनी दूकान में गया और देखा तो वहाँ तो उसने देखा कि कई जूते बने तैयार रखे हैं। उसने देखने के लिये एक जूता उठाया और उसका काम बारीकी से देखा तब तो उसका आश्चर्य और भी बढ़ गया।

उसको अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। उस जूते में एक भी टाँका नहीं लगा था बल्कि ऐसा लगता था जैसे कि किसी जूते का साँचा काट कर रख दिया हो।

सो अब चमार ने अपनी दूकान का सामान उठाया और उसे बाजार में बेचने के लिये ले गया। जैसे ही लोगों ने उन आश्चर्यजनक जूतों को देखा तो वे तो पलक झपकते ही बिक गये। अब क्या था वह चमार तो बहुत जल्दी ही मशहूर हो गया।

उसके जूतों की शोहरत महल तक जा पहुँची। राजकुमारियों ने उसको देखने की इच्छा प्रगट की। और जब वह वहाँ गया तो वहाँ से उसको कई दर्जन जूतों का आर्डर मिल गया। पर वे जूते उनको अगली सुबह ही चाहिये थे।

बेचारे चमार ने उनको बहुत समझाने की कोशिश की यह काम नामुमकिन है पर उन्होंने तो उसको धमकी दी कि अगर उसने उनका हुक्म नहीं माना तो उसका सिर धड़ से काट कर अलग कर दिया जायेगा। क्योंकि उनको भी साफ साफ दिखायी दे रहा था कि यह किसी आदमी का काम नहीं बल्कि जादू का काम है।

चमार बेचारा बहुत दुखी हो कर घर लौटा। फिर वह जूते बनाने के लिये चमड़ा खरीदने के लिये बाजार गया। शाम को वह देर से घर लौटा। उसने चमड़ा फर्श पर फेंका और इवान से कहा — "जिस शैतानी ताकत से तूने पहले जूते बनाये थे उसी ताकत से अब फिर जूते बना।"

तब उसने उसको सब बताया कि किस तरह से राजा के महल से उसको आर्डर मिला है और किस तरह से कल तक ये जूते उनको न देने पर उसको धमकी मिली है।

इवान बोला — "तुम चिन्ता न करो जा कर सो जाओ। सुबह का एक घंटा रात के दो घंटे के बराबर होता है।"

चमार ने उसको उसकी सलाह के लिये धन्यवाद दिया और बैन्च पर जा कर लेट गया और जल्दी ही खर्राटे भरने लगा। उसके

बाद इवान ने आत्मा को बुलाया और उसको सुबह से पहले काम पूरा करने का हुक्म दिया। और फिर वह भी सो गया।

अगली सुबह जब चमार उठा तो उसने सोचा कि आज तो उसका सिर काट ही जाना है। सो वह इवान के पास आखिरी विदा लेने गया। उसने उससे अपने साथ आखिरी बार शराब पीने के लिये कहा ताकि वह खुशी खुशी मर सके।

पर इवान बोला कि उसको डरने की कोई जरूरत नहीं है वह अपनी दूकान में जाये जिस काम का आर्डर वह महल से ले कर आया था वह तैयार है वह उसे वहाँ से ले जाये।

चमार को यकीन ही नहीं आया वह दूकान में पहुँचा तो वहाँ तो सारे जूते बने पड़े थे। वह तो खुशी से नाच उठा। उसको समझ ही नहीं आया कि वह क्या कहे और क्या करे बस उसने अपने असिस्टैन्ट को अपने गले से लगा लिया। उसने तुरन्त ही सारे जूते उठाये और महल की तरफ चल दिया।

जब राजकुमारियों ने यह देखा तब तो उनको पक्का विश्वास हो गया कि इवान ज़ारेविच वहीं कहीं शहर में ही है।

उन्होंने चमार से कहा — "तुमने तो सचमुच में बहुत ही अच्छे तरीके से हमारा हुक्म बजाया है। पर तुम्हें अभी हमारी एक सेवा और करनी है। आज की रात हमें हमारे महल के सामने एक सोने

का महल चाहिये। और एक पौर्सलेन[57] का पुल चाहिये जो दोनों महलों को जोड़ता हो।"

चमार हाथ जोड़ते हुए बोला — "मैं एक गरीब चमार हूँ मैं तो केवल जूता बनाता हूँ मैं यह काम कैसे कर सकता हूँ।"

राजकुमारियों ने फिर वही कहा कि अगर उसने उनकी इच्छा पूरी नहीं की तो वे उसका सिर कटवा देंगी।

बेचारा चमार बड़े भारी दिल से महल छोड़ कर अपने घर आ गया और ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। उसने इवान को बताया कि उस दिन महल में क्या हुआ।

इवान बोला — "तुम सोने जाओ। चिन्ता मत करो। सुबह का सूरज देखेगा कि यह काम हो गया है।"

सो चमार अपनी बैन्च पर लेट गया और सो गया। इवान ने आत्मा को बुलाया और उसको राजा की बेटियों की इच्छा बतायी और सोने चला गया।

अगले दिन सुबह जल्दी ही इवान ज़ारेविच ने मालिक को जगाया और एक बतख का पंख दे कर उससे कहा कि वह पुल पर जा कर उससे उसकी धूल साफ करे।

इस बीच इवान ज़ारेविच सोने के महल में गया और जब ज़ार और राजकुमारियाँ अपने छज्जे पर बाहर निकलीं तो वे तो महल और पुल देख कर बहुत आश्चर्यचकित हुए। पर राजकुमारियाँ

---

[57] Porcelain – a material like China clay

अपनी अक्ल पर बहुत खुश थीं क्योंकि अब शक की कोई गुंजायश ही नहीं रह गयी थी कि इवान शहर में था।

तभी उन्होंने उसे सोने के महल की एक खिड़की में खड़े देखा। तो उन्होंने ज़ार और ज़ारीना से विनती की कि वे उनके साथ उस महल में जाना चाहती हैं।

जैसे ही उन्होंने अपना पैर सीढ़ियों पर रखा इवान ज़ारेविच उनसे मिलने के लिये खुद ही आ पहुँचा। माँ और तीनों राजकुमारियाँ दौड़ कर उसके गले लग गयीं। यही तो है वह जिसने हमें आजाद कराया है।

उसके भाइयों की निगाह नीची हो गयी और ज़ार की तो आश्चर्य के मारे बोली ही नहीं निकली। उसकी पत्नी ने तब सब कुछ उसको बताया।

ज़ार को यह सब हाल सुन कर अपने बड़े बेटों पर बहुत गुस्सा आया। वह उनको मारने की सजा सुनाने ही वाला था कि इवान उसके पैरों पर गिर पड़ा।

वह बोला — "पिता जी अगर आप मुझे इनाम देना चाहते हैं तो मुझे मेरे भाइयों की ज़िन्दगी दे दीजिये। बस मैं सन्तुष्ट हो जाऊँगा।"

उसके पिता ने उसे ऊपर उठाया और गले से लगा लिया और बोला "ये लोग ऐसे भाई के काबिल तो नहीं हैं पर अगर तुम कहते हो तो... ।" फिर वे सब महल लौट आये।

अगले दिन तीन शादियाँ मनायी गयीं। सबसे बड़े बेटे वासिली ज़ारेविच की शादी ताँबे की राज्य की राजकुमारी से हो गयी। दूसरे बेटे फीदोर ज़ारेविच की शादी चाँदी के राज्य की राजकुमारी से हो गयी और सबसे छोटे राजकुमार इवान ज़ारेविच की शादी सोने के राज्य वाली राजकुमारी से हो गयी।

उसने गरीब चमार को अपने घर में रख लिया गया और वे बहुत साल तक खुशी खुशी रहे।

6 मुरोम का इलिया और डाकू नाइटिन्गेल[58]

एक मशहूर शहर मुरोम में एक बार इवान तीमोफ़ेयेविच[59] नाम का एक किसान रहता था। इवान के एक बेटा था जिसका नाम था इलिया। वह उसको बहुत प्यार करता था।

वह 30 साल तक की उम्र तक चल नहीं सका पर तीस साल के बाद अचानक ही उसमें इतनी सारी ताकत आ गयी कि न केवल वह भाग सका बल्कि उसने अपने लिये एक जिरहबख्तर भी बना लिया और एक लोहे का भाला भी।

उसने घोड़े पर जीन कसी और अपने माता पिता के पास गया और उनसे आशीर्वाद मॉगा — "मॉ और पिता जी मेहरबानी कर के मुझे मशहूर शहर कीव[60] जाने की इजाज़त दीजिये।"

उसके माता पिता ने उसको कीव जाने की इजाज़त दे दी और यह कहते हुए विदा किया — "बेटे सीधे कीव जाना। सीधे चरनीगोव शहर[61] जाना। कहीं किसी दूसरे रास्ते पर जाने की गलती नहीं करना। और न ही बेकार में किसी ईसाई का खून बहाना।"

---

[58] Iliya of Murom and the Robber Nightingale (Tale no 6) https://www.worldoftales.com/European_folktales/Russian_Folktale_1.html

[59] Ivan Timofeyeivich named countryman lived in Murom city.

[60] Kiev is the capital of Ukraine.

[61] Chernigov city

इस तरह से मुरोम के इलिया ने अपने माता पिता से विदा ली और अपना सफर शुरू किया। वह घने जंगलों से हो कर गया कि वह डाकुओं के एक कैम्प में आ पहुँचा।

जब डाकुओं ने उसको देखा तो उनको उसके कुलीन घोड़े को लेने का मन कर आया। उन्होंने आपस में सलाह की कि वे इलिया को मार देंगे और उसका घोड़ा ले लेंगे।

सो वे सब **25** आदमी मुरोम के इलिया के ऊपर टूट पड़े पर मुरोम के इलिया ने अपने मुँह से घोड़े की रास पकड़ी और एक हाथ से अपने तरकस से तीर निकाला उसको अपनी कमान पर रखा और उसको जमीन में मार दिया। इससे वहाँ की मिट्टी तीन तीन एकड़ तक की दूरी में बिखर गयी।

जब डाकुओं ने यह देखा तो उनकी तो डर के मारे बोली ही नहीं निकली। वे अपने घुटनों पर गिर पड़े और बोले — "ओ हमारे पिता और मालिक, प्यारे भले नौजवान, हमसे गलती हो गयी। हमारे इस जुर्म की सजा देने के लिये तुम हमारा सारा खजाना ले लो हमारे सारे अच्छे कपड़े ले लो और जितने चाहो घोड़े ले लो पर हमें छोड़ दो।"

इलिया यह सुन कर हँसा और बोला — "मैं तुम्हारा खजाना ले कर क्या करूँगा। पर हाँ अगर तुम्हारे दिल में अपनी ज़िन्दगी की कोई इज़्ज़त हो तो इससे पहले कि ऐसा कोई खतरा मोल लो भविष्य में ज़रा सावधान रहना।"

और ऐसा कह कर वह फिर मशहूर शहर कीव की तरफ चल दिया। रास्ते में वह चरनीगोव शहर में आया जिसे अनगिनत पागन[62] सेना ने कब्जा कर रखा था और धमकी दे रखी थी कि वे उसके घर और चर्च सब बर्बाद कर देंगे और उसके सारे राजकुमारों को अपना गुलाम बना कर रखेंगे।

मुरोम का इलिया तो इतनी सारी सेना को देख कर घबरा गया। फिर भी उसने हिम्मत बटोरी और अपने धर्म के लिये मरने का निश्चय किया। सो एक बहादुर दिल और एक मजबूत भाले के साथ उसने अपने दुश्मन पर हमला बोल दिया।

उसने उनको हवा की तरह से चारों तरफ बिखरा दिया उनके नेता को बन्दी बना लिया और उसको जीत के तौर पर चरनीगोव ले चला।

शहर के लोग अपने गवर्नर और कुलीन लोगों के साथ उसका स्वागत करने के लिये बाहर आये और उसको उनको आजाद कराने के लिये धन्यवाद दिया। फिर वे इलिया को महल में ले गये और उसको बहुत बढ़िया खाना खिलायी।

इसके बाद मुरोम का इलिया फिर आगे चला और उसने कीव जाने वाली सीधी सड़क ली। इस सड़क को डाकू नाइटिन्गेल ने **30** साल से कब्जा रखा था। वह उस सड़क पर किसी को भी नहीं जाने देता था चाहे वह पैदल हो या फिर घोड़े पर।

---

[62] A person holding religious beliefs other than those of the main world religions.

वह उस सड़क पर चलने वाले को सबको मार देता था – तलवार से नहीं बल्कि अपनी डाकू वाली सीटी से।

जब इलिया खुले मैदान में आया तो वह ब्रियान्स्की जंगल[63] में से स्मारोदियन्का नदी[64] की तरफ को ऐल्डर की लकड़ी के पुल पर से हो कर दलदल में से गुजरा।

दूर से डाकू नाइटिन्गेल ने उसे आते देखा तो अपनी डाकुओं वाली सीटी बजायी पर हमारे हीरो के दिल पर उसका कोई असर नहीं हुआ पर तब क्या होता अगर उस डाकू नाइटिन्गेल ने जहाँ से अपनी सीटी बजायी थी वहाँ से वह दस वर्स्त[65] के अन्दर अन्दर होता तब तो इलिया का घोड़ा बेचारा अपने घुटनों पर ही गिर गया होता।

तब मुरोम का इलिया उस घोंसले के पास गया जो 12 ओक के ऊपर बना था। तब डाकू नाइटिन्गेल ने रूस के हीरो की तरफ देखा और अपनी पूरी ताकत लगा कर सीटी बजायी और मारने की कोशिश की।

पर इलिया ने अपनी कमान उठायी उस पर अपना तीर रखा और सीधा उस घोंसले को निशाना बना कर डाकू नाइटिन्गेल की दाँयी आँख में मारा। तो वह तो वहाँ से ओट्स की बाली की तरह कट कर गिर पड़ा।

---

[63] Brianski Forest

[64] Smarodienka River

[65] Verst is a Russian measure of length – 0.66 mile or 1.1 Kms.

तुरन्त ही मुरोम के इलिया ने डाकू नाइटिन्गेल को अपने घोड़े पर अपने जूते रखने की जगह से कस कर बाँध दिया ताकि वह हिल भी न सके और कीव की तरफ चल दिया।

रास्ते में डाकू नाइटिन्गेल का महल पड़ा जहाँ उसने डाकू की बेटियों को खिड़की में बैठे देखा। उनमें से उसकी सबसे छोटी बेटी चिल्लायी — "देखो हमारे पिता जी घोड़े पर सवार चले आ रहे हैं।"

डाकू की सबसे बड़ी बेटी ने इलिया को ज़्यादा पास से देखा तो बहुत ज़ोर से रो पड़ी और बोली — "अरे बहनो नहीं। यह हमारे पिता जी नहीं हैं यह तो कोई अजनबी है जो हमारे पिता जी को बन्दी बना कर लिये आ रहा है।"

बस फिर क्या था उन्होंने अपने अपने पतियों को ज़ोर से पुकारा कि वे बाहर आ कर उस अजनबी से मिलें और उनके पिता को उससे छुड़ा कर लायें।

उनके पति बहुत ही मशहूर घुड़सवार थे। वे अपने अपने मजबूत भाले ले कर रूसी घुड़सवार से मिलने और उसको मारने के लिये निकल पड़े।

पर डाकू नाइटिन्गेल उन्हें आते देख कर चिल्लाया — "ओ मेरे बच्चों इतने बहादुर घुड़सवार को तुम अपने आपको मारने के लिये

उकसा कर अपनी बेइज़्ज़ती मत कराओ बल्कि उसको अपने महल में एक गिलास वोदका[66] पीने के लिये बुलाओ।"

पर वे नहीं माने और इलिया से लड़े और अधमरे से हो कर गिर पड़े। तब उन्होंने इलिया को वोदका पीने के लिये महल में बुलाया।

इलिया जब उनके महल की तरफ जाने के लिये मुड़ा तो उसको तो अन्दाज ही नहीं था कि वहाँ कितना बड़ा खतरा उसका इन्तजार कर रहा था।

क्योंकि डाकू नाइटिन्गेल की सबसे बड़ी बेटी ने एक जंजीर से एक तख्ता खींच रखा था ताकि जब इलिया महल के फाटक में घुसे तो वह फाटक उसके ऊपर गिर जाये और वह मर जाये। पर इलिया ने उसका यह जाल पहले ही देख लिया और उसको अपने भाले से मार दिया।

उसके बाद वह फिर कीव की तरफ चल दिया और महल की तरफ जाते हुए उसने प्रार्थना की और कुलीन लोगों को सैल्यूट मारा। कीव के राजकुमार ने इलिया से कहा — "ओ बहादुर नौजवान बताओ तो तुम्हारा नाम क्या है और तुम यहाँ कब आये हो।"

इलिया बोला — "मेरे मालिक, मेरा नाम इलीयुष्का है। मैं मुरोम शहर में पैदा हुआ था।"

---

[66] Vodka is a famous Russian liquor.

तब राजकुमार ने पूछा — "तुम किस रास्ते से आये हो।"

इलिया बोला — "पहले मैं मुरोम से चरनीगोव गया जहाँ मैंने पागन की अनगिनत सेना को मारा और शहर को उनसे आजाद कराया। उसके बाद मैं सीधा यहीं आ रहा हूँ।

वहाँ से आते हुए रास्ते में मुझको डाकू नाइटिन्गेल मिल गया था तो उसको पकड़ा और उसको बन्दी बना कर अपने घोड़े की जीन के पंजे से बाँध कर ला रहा हूँ।"

यह सुन कर पहले तो राजकुमार गुस्सा हो गया क्योंकि उसने सोचा कि इलिया उसको धोखा दे रहा है पर तब उसके दो नाइट्स अलेशा पोपोविच और दोब्रिन्जा निकितिच[67] इस सच को देखने के लिये गये तो उन्होंने देखा कि सचमुच में ही इलिया डाकू नाइटिन्गेल को पकड़ लाया है।

जब राजकुमार को विश्वास हो गया कि हाँ वाकई इलिया डाकू नाइटिन्गेल को पकड़ लाया है तो उसने बहादुर नौजवान इलिया के लिये वोदका का एक गिलास मँगवाया और उससे डाकू नाइटिन्गेल की सीटी की एक आवाज सुनवाने की प्रार्थना की।

सो मुरोम के इलिया ने राजकुमार और राजकुमारी को अपनी बाँहों में दबाया उनको अपने कोट में लपेटा और डाकू नाइटिन्गेल को हल्के से सीटी बजाने को लिये कहा।

---

[67] Alescha Popovich and Dobrinja Nikitivich – names of the two Knights of the Prince of Kiev

पर डाकू ने इतनी ज़ोर से सीटी बजायी कि उसने तो वहाँ मौजूद सारे नाइट्स[68] को ही चौंका दिया। वे तो वहाँ फर्श पर चौपट ही गिर पड़े। इस पर मुरोम के इलिया को इतना गुस्सा आया कि उसने उसको वहीं मार दिया।

इसके बाद मुरोम के इलिया की दोब्रिन्जा निकितिच से बहुत अच्छी दोस्ती हो गयी सो दोनों ने अपने अपने घोड़ों पर जीन कसी और घूमने चल दिये। वे बिना किसी दुश्मन का सामना किये हुए तीन महीनों तक चलते रहे।

चलते चलते आखिर उनको एक लॅगड़ा आदमी मिला जिसके कोट का वजन **50** पूड[69] था उसके बोनैट का वजन नौ पूड था और उसकी बैसाखी छह फीट लम्बी थी।

मुरोम का इलिया उसकी हिम्मत देखने के लिये उसके पास गया पर वह लॅगड़ा बोला — "ओ मुरोम के इलिया क्या तुमको मेरी याद नहीं है कि हम लोग एक ही स्कूल में साथ साथ पढ़ते थे और अब तुम मुझे मारना चाहते हो – एक गरीब मजबूर लॅगड़े को।

क्या तुम्हें मालूम नहीं कि कीव शहर पर एक बहुत बड़ी मुसीबत आ पड़ी है। एक ऐसा नाइट जिसका सिर बीयर के बैरल[70] की तरह से बड़ा है

[68] A knight is a person granted an honorary title of knighthood by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity – see its picture above.
[69] Pood is a unit of mass equal to 40 funt (Russian pound). Plural: pudi or pudy. It is approximately 36.11 pounds (16.38 kilograms).
[70] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern

जिसकी भौंहें एक बालिश्त की दूरी पर हैं और जिसके कन्धे छह फीट चौड़े हैं उस शहर के अन्दर घुस गया है।

वह एक बैल एक बार में खा जाता है और एक बैरल बीयर एक घूँट में पी जाता है। इसलिये राजकुमार को तुम्हारी कमी बहुत महसूस हो रही है।"

मुरोम के इलिया ने उस लँगड़े का कोट उससे लिया अपने चारों तरफ लपेटा और कीव की तरफ चल दिया। वह सीधे राजकुमार के महल की तरफ जा कर ज़ोर से चिल्लाया — "ओ कीव के राजकुमार, एक गरीब लँगड़े को भीख दो।"

जब राजकुमार ने यह सुना तो वह बोला — "आओ मेरे महल के अन्दर आओ। मैं तुम्हें खाना भी खिलाऊँगा और शराब भी पिलाऊँगा और तुम्हारे सफर के लिये पैसे भी दूँगा।"

यह सुन कर इलिया महल के अन्दर गया और ऑगीठी के पास जा कर बैठ गया और पास में बैठा वह मूर्ति पूजने वाला जिसने उसको खाने और शराब के लिये बुलाया था।

उसके बाद नौकर उसके लिये एक भुना हुआ बैल ले कर आये जिसको उसने उसकी हड्डियों तक खा लिया। फिर **27** लोग उसके लिये एक बैरल बीयर ले कर आये जिसको उसने एक ही घूँट में पी लिया।

---

barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter. See its picture above.

तब मुरोम के इलिया ने कहा — "मेरे पिता के पास एक बार एक लालची घोड़ा था जो इतना खाता था कि एक बार वह फट गया।"

यह सुन कर उस मूर्ति पूजा वाले नाइट को बहुत गुस्सा आ गया वह बोला — "तुम्हारी यह हिम्मत कि तुम मुझे इस तरह की बातें कर के उकसाओ, ओ बदकिस्मत लॅगड़े। क्या तुम मेरे बराबर के भी हो? देखो तो मैं तुमको अपनी हथेली पर भी रख सकता हूँ और तुम्हें सन्तरे की तरह से निचोड़ सकता हूँ।

तुम्हारे अपने देश में एक बहुत ही शानदार हीरो था मुरोम का इलिया जिसके साथ मैं एक बार बेकार ही लड़ा पर तुम तो सचमुच में..."

लॅगड़े ने अपना टोप उतार दिया और बोला "यह रहा मुरोम का इलिया।" और उसके सिर पर ज़ोर से मारा, हालॉकि वह बहुत ज़ोर से नहीं था फिर भी उसके उस मारने ने उसको महल की दीवार में घुसा दिया।

फिर इलिया ने उसका शरीर उठाया और महल के बाहर फेंक दिया। राजकुमार ने इलिया को बहुत सारा इनाम दिया और उसको अपने सबसे ज़्यादा बहादुर नाइट की तरह से शाही दरबार में रख लिया।

7 मशहूर हीरो बोवो कोरोलेविच और राजकुमारी द्रशनेवना[71]

एक मशहूर शहर अन्तोन में एक बड़ा बहादुर और ताकतवर राजा राजा गिदौं[72] राज किया करता था। उसने राजकुमारी मिलीत्रीसा किरबितोवना[73] की सुन्दरता के बारे में अपनी प्रजा से और विदेशियों से भी इतना ज़्यादा सुन रखा था कि उसकी उसको देखने की इच्छा हो आयी थी।

सो वह उसको देखने के लिये चल दिया। वह डिमिशियान शहर[74] आया जहॉ उसने उसको कई बार देखा था और उसके प्रेम में पड़ गया था।

जब राजा गिदौं वापस लौट कर आया तो उसने अपने हाथ से एक चिट्ठी लिखी और उसको अपने नौकर लिचारदा[75] को दे कर अपने दूत की हैसियत से राजकुमारी मिलीत्रीसा किरबितोवना के पिता राजा किरबित वरसूलोविच[76] के पास भेजा। इस चिट्ठी में उसने राजा किरबित से राजकुमारी मिलीत्रीसा का हाथ मॉगा था।

---

[71] The Renowned Hero Bovo Korolevich and the Princess Drushnevna (Tale No 7) https://www.worldoftales.com/European_folktales/Russian_Folktale_1.html
[72] King Guidon
[73] Princess Militrisa Kirbitovna
[74] Dimichtian City
[75] Servant Litcharda
[76] Kung Kitbit Versoulovich

जब लिचारदा दिमिशिया शहर आया तो उसने अपने मास्टर की लिखी हुई चिट्ठी राजा किरबित को दी।

राजा किरबित ने वह चिट्ठी पढ़ी और पढ़ कर तुरन्त ही राजकुमारी मिलित्रीसा के पास गया और बोला — "मेरी प्यारी बेटी तुम्हारी सुन्दरता की चर्चा बहादुर और ताकतवर राजा गिदौं तक पहुँच गयी है। वह तुमको देखने के लिये इस शहर में भी आ चुके है और तुमसे बहुत प्यार भी करते है।

उन्होंने तुम्हारा हाथ मॉगने के लिये एक दूत भेजा है और मैंने इसके लिये पहले ही हॉ कर दी है।"

जब राजा किरबित यह सब कह रहा था तो मिलित्रीसा रोने लगी। जब उसके पिता ने उसको रोते हुए देखा तो बोला — "बेटी दुखी मत हो। राजा गिदौं ताकतवर है मशहूर है अमीर है। वह तुम्हारे लिये एक अच्छा पति साबित होगा। तुम उसके साथ उसके दरबार में भी हिस्सा लोगी।

इस प्रार्थना को ठुकराना नामुमकिन है। क्योंकि अगर हमने ऐसा किया तो वह अपनी वड़ी सेना ले कर हमारे शहर में तूफान मचा देगा और तुमको जबरदस्ती ले जायेगा।"

जब राजकुमारी मिलित्रीसा ने यह सुना तो वह सिसकियॉ लेने लगी और अपने घुटनों पर गिर गयी और बोली — "पिता जी आपका मेरे ऊपर पूरा अधिकार है पर मैं सच कहना चाहती हूँ।

मैंने राजा गिदौं को देखा है। उसकी तो शक्ल से ही मुझे डर लगता है। इसलिये मुझे उससे शादी करते में डर लगता है। पिता जी मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप अपना इरादा बदल दें। आप मुझे ज़ार दादों[77] को दे दें जो हमारे पड़ोसी हैं एक वफादार दोस्त हैं और हमारे राज्य की रक्षा भी करते हैं।"

पर किरबित ने अपनी बेटी की बात नहीं सुनी उसकी प्रार्थना नहीं सुनी और उसको राजा गिदौं के पास अन्तोन शहर[78] में उसकी पत्नी बनने के लिये भेज दिया।

राजा गिदौं तो उसके आने पर बहुत खुश हुआ। उसने उसके आने पर अगले दिन अपनी शादी की एक बहुत बड़ी दावत का हुक्म दिया। इस खुशी के मौके पर अपने सारे कैदियों को भी आजाद कर दिया।

तीन साल तक राजा गिदौं और राजकुमारी मिलित्रीसा एक साथ रहे। इस बीच उनके एक बेटा हुआ जिसका नाम उन्होंने रखा बोवो कोरोलेविच।[79] बोवो बहुत ही सुन्दर और ताकतवर बच्चा था। वह दिनों दिन नहीं बल्कि हर घंटे बढ़ता रहा।

एक दिन रानी मिलित्रीसा किरबितोवना ने अपने वफादार नौकर लिचारदा को बुलाया और उससे कहा — "आज तुम मेरी एक सेवा

[77] Tzar Dadon – Tzar or Tsar is the title of the King of Russia befor 1923 and Dadon is his name.
[78] City of Anton
[79] Bovo Korolevich – name of the prince of King Guidon and the Princess Militrisa

कर दो लिचारदा। इसके बदले में मैं तुम्हें बहुत सारा सोना और जवाहरात दूँगी।

तुम यह चिट्ठी ज़ार दादौं के पास ले जा कर उसे दे दो। और देखो राजा गिदौं को इसका पता न चले। अगर तुमने मेरा काम नहीं किया तो तुम एक बहुत बुरी मौत मरोगे।"

लिचारदा ने रानी की वह प्राइवेट चिट्ठी ली घोड़े पर चढ़ा और ज़ार दादौं के पास चल दिया। वहाँ जा कर उसने उसको वह चिट्ठी ज़ार दादौं को दे दी।

जब ज़ार दादौं ने वह चिट्ठी पढ़ी तो वह हँसा और लिचारदा से बोला — "तुम्हारी रानी या तो मजाक कर रही है या फिर मुझसे कोई गलत काम करवाना चाह रही है।

वह मुझे मेरी सेना के साथ अन्तोन शहर बुला रही है और अपने पति को मेरे हवाले करने का वायदा कर रही है। मुझे पूरा विश्वास है कि उसका यह मतलब नहीं हो सकता क्योंकि उसके तो एक छोटा सा बेटा भी है।"

पर लिचारदा बोला — "ओ ताकतवर ज़ार दादौं, इस चिट्ठी में आपको कोई शक नहीं होना चाहिये। आप मुझे खाना और पानी के साथ जेल में रख दें अपनी सेना इकट्ठी करें और अन्तोन शहर की तरफ बढ़ें। और अगर इस चिट्ठी में लिखा झूठ हो तो आप मुझे मार दें।"

जब ज़ार दादौं ने लिचारदा के ये शब्द सुने तो वह बहुत खुश हुआ और उसने हमले के लिये बिगुल बजाने का हुक्म दिया। उसने 30 हजार सिपाहियों की एक सेना इकट्ठी की और अन्तोन शहर की तरफ बढ़ चला। वहाँ जा कर उसने शाही मैदान में अपने तम्बू गाड़ दिये।

जैसे ही रानी मिलित्रीसा किरबितोवना को यह पता चला कि ज़ार दादौं ने शहर के सामने में अपने तम्बू गाड़ दिये हैं वह अपने अपने सबसे अच्छे कपड़ों में सजी और राजा गिदौं के पास पहुँची और बीमार होने का बहाना बनाते हुए उसने उससे अपने खाने के लिये बाहर जा कर एक जंगली सूअर मारने के लिये कहा।

राजा को अपनी पत्नी की इच्छा पूरी करने में बड़ी खुशी हुई सो वह अपने भरोसे के एक घोड़े पर चढ़ा और जंगली सूअर के शिकार पर चल दिया।

जैसे ही राजा शहर से बाहर निकला रानी मिलित्रीसा ने शहर का पुल[80] उठा देने के लिये और शहर के सारे फाटक बन्द कर देने का हुक्म दे दिया।

उधर जैसे ही राजा गिदौं ज़ार दादौं के कैम्प के पास पहुँचा तो ज़ार दादौं ने उसका पीछा किया।

[80] Translated for the word “Drawbridge”. This type of bridge is used to protect castles. See its picture above.

राजा गिदौं ने भी तुरन्त ही अपना घोड़ा अपने शहर की तरफ मोड़ दिया पर उसकी यह कोशिश बेकार रही क्योंकि जब वह अपने शहर आया तो उसके शहर के सब दरवाजे बन्द थे। उसके सारे पुल ऊपर खींच लिये गये थे।

वह अपने दिल में बहुत दुखी हुआ। वह बोला — "यह तो आदमियों के लिये सबसे ज़्यादा बदकिस्मती की बात है। अब मुझे अपनी नीच पत्नी की चालाकी का पता चला कि किस तरह उसने मेरे मारने का जाल बिछाया था। पर ओ बोवो मेरे प्यारे बेटे तूने मुझे उसकी इस धोखे के बारे में क्यों नहीं बताया।"

जब वह यह बोल रहा था तो ज़ार दादौं उसकी तरफ चला आ रहा था। आ कर उसने अपने भाले से उसका दिल छेद दिया और राजा गिदौं अपने घोड़े से गिर कर मर गया।

जब रानी मिलित्रीसा किरबितोवना ने महल की दीवारों से यह देखा तो उसने दरवाजे खोलने और पुलों को गिराने का हुक्म दे दिया और ज़ार दादौं से मिलने जा पहुँची। उसने उसके होठों को चूमा और उसको किले में बुला लायी।

अन्दर आ कर वे एक खाने की मेज पर बैठ गये जिस पर बहुत बढ़िया खाना लगा हुआ था और खाना खाना शुरू कर दिया।

पर छोटे बच्चे बोवो कोरोलेविच ने, क्योंकि वह तो उस समय बहुत ही छोटा था, जब अपनी माँ का यह नीच व्यवहार देखा तो

वह किले के बाहर अस्तबल में गया और वहॉ जा कर घोड़ों के खाने की जगह के नीचे बड़े दुखी मन से बैठ गया।

जब उसके नौकर सिम्बाल्दा[81] ने उसको वहॉ बैठे देखा तो वह यह देख कर रो पड़ा।

वह बोला — "मेरे प्यारे छोटे मास्टर बोवो कोरोलेविच, आपकी बेरहम मॉ ने मेरे प्यारे मालिक यानी आपके प्यारे पिता को ज़ार दादौं के हाथों मरवा दिया और अब वह महल में बैठी उस कातिल के साथ आनन्द मना रही है।

मेरे बच्चे आप अभी बहुत छोटे हैं और अपने पिता की हत्या का बदला नहीं ले सकते हैं। और कौन जानता है कि कल को इसी तरह वह आपको भी मरवा दे। तो अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये हम लोग सुमीन[82] शहर भाग चलते हैं जहॉ के राजा मेरे पिता हैं।"

यह कह कर सिम्बाल्दा ने एक बहुत बढ़िया वाला घोड़ा उठाया उस पर अपने लिये जीन कसी और बोवो के लिये एक मामूली सा घोड़ा लिया साथ में 30 मजबूत लोग लिये और सुमीन शहर की तरफ चल दिया।

जैसे ही ज़ार दादौं के लोगों ने उसे भागते हुए देखा तो उन्होंने जा कर उसे बताया कि बोवो और सिम्बाल्दा सुमीन शहर की तरफ भाग गये हैं।

[81] Simbalda was the name of the servant who took care of the Prince Bova

[82] Sumin City

जब ज़ार दादौं ने यह सुना कि सिम्बाल्दा बोवो को ले कर भाग गया है तो उसने अपनी सेना को इकट्ठे होने का और फिर उसको बोवो कोरोलेविच और उसके रक्षक सिम्बाल्दा दोनों के पीछे जाने का हुक्म दिया। उन्होंने उनको सुमीन शहर से थोड़ी दूर पहले ही पकड़ लिया।

सिम्बाल्दा ने खतरा देखा तो अपने घोड़े को ऐड़ लगाते हुए शहर की तरफ भाग लिया और उसके अन्दर पहुँच कर उसके दरवाजे बन्द कर लिये।

पर बोवो कोरोलेविच जो बहुत छोटा था घोड़े पर अपनी सीट पर बैठा नहीं रह सका और नीचे जमीन पर गिर पड़ा। तो ज़ार दादौं के आदमियों ने उसे उठा लिया और उसे ज़ार दादौं के पास ले चले। ज़ार दादौं ने उसे उसकी माँ मिलित्रीसा के पास भेज दिया।

फिर उसने अपनी सेना इकट्ठी की और सुमीन शहर की तरफ उसको जबरदस्ती कब्जा करने के लिये और सिम्बाल्दा और वहाँ के लोगों को मारने के लिये चल दिया। वहाँ जा कर उसने शहर के चारों ओर वाले "वर्जित घास के मैदान"[83] में जा कर अपने तम्बू गाड़ दिये।

एक रात ज़ार दादौं को सपना आया कि बोवो कोरोलेविच ने भाले से उसका सीना छेद दिया है। उसकी आँख खुल गयी। जागने

---

[83] Translated for the word "Forbidden". The "royal forbidden meadows" were those belonging to the Sovereign, the use of which was strictly forbidden to his subjects. When an enemy came into the country they first pitched their camp in these fields, as a declaration of hostilities.

पर उसने अपने बोयर सरदार[84] को बुलाया और रानी मिलित्रीसा के पास उसको इस सन्देश के साथ भेजा कि वह उसको मार दे।

पर जब रानी मिलित्रीसा ने ज़ार दादौं का यह सन्देश सुना तो वह बोली — "मैं इसे खुद नहीं मार सकती क्योंकि यह मेरा अपना बेटा है। पर मैं इसको किसी अँधेरे तहखाने में बन्द करने का हुक्म दे सकती हूँ। वहाँ इसको बिना खाना और पानी के रखा जायेगा जिससे यह वहाँ भूख से मर जायेगा।"

इस बीच ज़ार दादौं ने सुमीन शहर के सामने अपना कैम्प छह महीने तक लगा कर रखा पर न तो वह उसको जबरदस्ती हासिल कर सका और न ही वह उसको भूखा रख कर हासिल कर सका। सो उसने अपना वह कैम्प वहाँ से उखाड़ा और अन्तोन वापस आ गया।

जब ज़ार दादौं वहाँ से चला गया तो सिम्बाल्दा ने **15** हजार लोगों की एक सेना तैयार की और अन्तोन शहर की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने उसको चारों तरफ से घेर लिया और माँग की कि बोवो उसको दे दिया जाये।

पर ज़ार दादौं ने सिम्बाल्दा की सेना से दोगुनी सेना इकट्ठी की और उसको सुमीन शहर वापस खदेड़ दिया।

---

[84] Boyar is the member of the old aristocracy in Russia, next in rank to a prince

एक दिन जब रानी मिलित्रीसा अपने बागीचे में घूम रही थी तो इत्तफाक से वह उस जेल के सामने से गुजरी जहाँ बोवो को बन्द कर के रखा गया था।

मॉ को देख कर वह चिल्लाया — "ओ मेरी मॉ, सुन्दर रानी मिलित्रीसा, आप मुझसे इतनी नाराज क्यों हैं। आपने मुझे जेल में क्यों रखा हुआ है? आपने मुझे भूख से मारने के लिये जानबूझ कर खाना भी नहीं दिया। क्या मैंने अपने किसी व्यवहार से आपको दुखी किया है? या फिर किन्हीं बुरे नीच लागों ने मेरे बारे में आपसे कुछ बुरा कहा है?"

मिलित्रीसा बोली — "मुझे तुम्हारे अन्दर कोई बुराई नजर नहीं आती। मैंने तुमको जेल में केवल इसलिये रखा है क्योंकि तुमने ज़ार दादों की बेइज़्ज़ती की है जिसने हमारे राज्य को हमारे दुश्मनों से बचाया है जबकि तुम यह काम करने के लिये अभी छोटे थे।

पर मैं तुमको बहुत जल्दी ही आजाद कर दूँगी। अभी मैं तुम्हारे लिये कुछ मिठाई और मॉस भेजती हूँ। तुम उसमें से जितना चाहो उतना खा सकते हो।"

"मुझे बहुत अफसोस है मॉ कि आपने मुझे जेल में क्यों रखा हुआ है?"

पर मिलित्रीसा महल में चली गयी और गेहूँ के आटे के और सॉप के तेल के दो केक बनाने में लग गयी। वे केक उसने बेक

किये और उनको अपनी एक दासी चरनावका[85] के हाथों बोवो कोरोलेविच को भेजे।

पर जब वह दासी बोवो के पास आयी तो उसने बोवो से कहा — "छोटे मास्टर, अपनी मॉ के भेजे हुए ये केक मत खाना। इन्हें कुत्तों को खिला देना क्योंकि इनमें जहर मिला हुआ है। तुम यह रोटी खाओ यह मेरी अपनी बनायी हुई है।"

सो बोवो ने दासी से वे केक ले लिये और कुत्तों को फेंक दिये जैसे ही उन्होंने वे केक खाये वे मर गये। बोवो ने जब चरनावका की दया और वफादारी देखी तो उसने उसकी बनायी काली डबल रोटी उससे ली और खायी।

उसने उससे यह भी प्रार्थना की कि वह जेल का दरवाजा न बन्द करे सो उसने उसे खुला ही छोड़ दिया। जब वह दोबारा से मिलित्रीसा के पास आयी तो उसने उसे बताया कि उसने वे केक बोवो को दे दिये थे।

जैसे ही वह दासी जेल से गयी बोवो जेल से बाहर निकल गया और अपना दुख भूलने के लिये बन्दरगाह पर जा बैठा। वहॉ कुछ पियक्कड़ लोगों ने उसे पकड़ लिया और उसको जहाज़ पर ले गये।

जहाज़ पर जा रहे सौदागरों ने उससे पूछा कि वह वहॉ कैसे आया। बोवो बोला कि वह एक "गरीब" था और उसकी मॉ अजनबियों के कपड़े धो धो कर अपना पेट पालती थी।

---

[85] Chernavka – name of the servant maid of Militrisa

जब नाविकों ने यह सुना तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि वह तो बहुत सुन्दर लगता था। वे सोचने लगे कि वे उसको कैसे अपने साथ रख सकते थे। अब वे उसके लिये आपस में ही लड़ने लगे कि उसका मास्टर कौन बनेगा।

पर जैसे ही बोवो ने उनके इरादे ताड़े उसने उनसे कहा कि उनको उसके लिये लड़ने की जरूरत नहीं है क्योंकि वह उन सबकी बारी बारी से सेवा करेगा।

बोवो अरमेनियन देश में

उसके बाद जहाज़ वालों ने अन्तोन शहर छोड़ दिया और समुद्र में राजा सैन्सिब्री अन्द्रोनोविच के अरमेनियन राज्य[86] चले गये। वहाँ जा कर उन्होंने जहाज़ का लंगर डाल दिया।

सब लोग अपने अपने काम से शहर में चले गये बोवो किनारे पर चला गया। वहाँ वह इधर उधर घूमता रहा और अपनी ल्यूट[87] बजाता रहा।

इस बीच बन्दरगाह के औफीसर लोग जहाज़ पर आये। उनको राजा सेन्सिब्री ने यह जानने के लिये भेजा था कि वह जहाज़ कब आया था उनमें आये सौदागर कौन थे और वे वहाँ क्या करने आये थे।

[86] The Kingdom of Sensibri Andronovich
[87] Lute is a musical string instrument looking like a violin. Its picture is given above.

पर जब उन्होंने बोवो कोरोलेविच को ल्यूट बजाते हुए सुना और उसकी सुन्दरता देखी तो वे तो यह भी भूल गये कि वे वहाँ क्यों आये थे।

वे ऐसे ही राजा सैन्सिब्री के पास चले गये और उसको जा कर बताया कि वहाँ उन्होंने एक असाधारण सुन्दर नौजवान देखा जो बहुत ही अच्छी ल्यूट बजाता था – इतनी अच्छी कि वे उसकी ल्यूट सुनते थक ही नहीं सकते थे।

साथ में उन्होंने यह भी कहा कि उसको देख कर और उसकी ल्यूट सुन कर तो वे यह देखना भी भूल गये कि उनके जहाज़ में क्या क्या सामान था।

जब राजा ने यह सुना तो वह खुद उस जहाज़ पर गया और जब उसने बोवो को देखा तो उसने उसे खुद खरीदना चाहा। पर जहाज़ के सौदागर उसे किसी भी कीमत पर बेचने को तैयार ही नहीं हो रहे थे।

उन्होंने राजा को बताया कि उन्होंने उसको समुद्र के किनारे कैसे पकड़ा था और कहा कि वह उन सबका बराबर का था।

यह सुन कर तो राजा सैन्सिब्री को बहुत गुस्सा आया। उसने उन सबको अपने राज्य से बाहर निकाल देने के हुक्म दिया और फिर वहाँ कभी न आने के लिये कहा।

यह हुक्म सुन कर वे सौदागर बोवो कोरोलेविच को 300 सोने की बार में बेचने के लिये तैयार हो गये।

जब बोवो को दरबार में लाया गया तो राजा ने उसे बुलाया और उससे पूछा — "ओ नौजवान तुम ज़रा यह तो बताओ कि तुम किस क्लास के हो और तुम्हारा नाम क्या है।"

बोवो बोला — "हे राजा सैन्सिब्री अन्द्रोनोविच[88], मैं "गरीब" क्लास का हूँ। बहुत जल्दी ही मेरे पिता की मौत हो गयी। मेरी माँ अजनबियों के कपड़े धो धो कर अपना और मेरा गुजारा करती है। मेरा नाम अनहूसी[89] है। आगे से मैं आपकी सेवा वफादारी से करूँगा।"

जब राजा ने यह सुना तो वह बोला — "क्योंकि तुम सबसे नीची क्लास के हो और तुम्हें अपन पिता की याद नहीं है तो तुम मेरे अस्तबल में चले जाओ वहाँ तुम मेरे सारे घोड़ों की देखभाल करने वालों के सरदार रहोगे।"

बोवो ने राजा को सिर झुकाया और राजा के अस्तबल में चला गया।

बोवो अक्सर अपने साथियों के साथ राजा के "वर्जित घास के मैदान" में घोड़ों के लिये घास लाने के लिये जाया करता था पर वह अपने साथ घास खोदने के लिये कोई हँसिया[90] ले कर नहीं जाता था।

[88] King Sensibri Andronovich
[89] Anhusei – the name Bova told the King
[90] Translated for the word "Sickle". See its picture above.

वह सारी घास अपने हाथ से ही खींच कर ही निकालता था और इकट्ठी करता था और इतनी सारी निकालता था जितनी कि 10 आदमी निकाल सकते थे। जब दूसरे घोड़ों की देखभाल करने वालों ने यह देखा तो वे तो उसकी ताकत पर आश्चर्य करने लगे।

उसकी यह बात राजा की बेटी सुन्दरी द्रष्नेवना[91] तक पहुँची तो वह खुद उसको देखने आयी तो जैसे ही उसने बोवो को देखा तो वह उसकी असाधारण सुन्दरता देख कर उस पर मोहित हो गयी।

एक दिन उसने राजा से कहा — "पिता जी, आप तो बहुत ताकतवर हैं और बहुत मशहूर हैं और केवल अपने राज्य में ही नहीं बल्कि पास और दूर दोनों के देशों में भी हैं। कोई राजा नहीं कोई ज़ार नहीं और कोई नाइट नहीं जो आपका मुकाबला कर सके।

पर हे राजा कोई ऐसा विश्वास का और चतुर आदमी आपके घर में नहीं है जिस पर हम लोग विश्वास कर सकें। पर अब मैंने सुना है कि एक नौजवान लड़का हमारे शाही अस्तबल में है जिसको आपने जहाज़ के कुछ आदमियों से खरीदा है। उसका नाम अनहूसी है।

मुझे लगता है कि इस लड़के पर विश्वास किया जा सकता है और यह हमारी सेवा के लिये ठीक रहेगा। तो आप हुक्म दें कि उसको आपके अस्तबल से निकाल कर अपने घर में रख लिया जाये।"

---

[91] Drushnevna – the daughter of King Sensibri Andronovich

राजा सैन्सिब्री बोला — “मेरी प्यारी बच्ची मैंने तुम्हारी किसी इच्छा को मानने से कभी मना नहीं किया। सो इस मामले में भी तुम अपनी इच्छा के अनुसार जो चाहे करने के लिये आजाद हो।”

जब राजकुमारी द्रष्नेवना ने यह सुना तो उसने बोवो को बुलवाने का हुक्म दिया और उसको उसका पुराना काम छोड़ने का और उसको उसका नया काम सॅभालने का हुक्म दिया।

इस तरह बोवो अस्तबल का काम छोड़ कर अब राजा के घर में काम करने लगा।

अगले दिन राजकुमारी द्रष्नेवना ने बोवो को बुलाया और कहा — “सुनो अनहूसी कल मेरे पिता एक दावत देने जा रहे हैं। उसमें सब राजकुमार बोयर्स और नाइट्स खाने पीने और आनन्द मनाने के लिये आयेंगे। तो तुम मेरा कहा मानने के लिये मेरे पास ही खड़े रहना।”

इस पर बोवो ने राजकुमारी को सिर झुकाया और वहॉ से जा ही रहा था कि द्रष्नेवना ने उसको फिर से बुलाया और उससे पूछा — “मुझे सच सच बताओ ओ नौजवान कि तुम किस क्लास के हो, बोयर के या किसी शाही खानदान के? या फिर किसी बहादुर नाइट के बेटे हो या फिर किसी विदेशी सौदागर के? और तुम्हारा असली नाम क्या है?

क्योंकि मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम किसी मामूली आदमी के बेटे हो जैसा कि तुमने मेरे पिता से कहा है।”

बोवो बोला — "राजकुमारी जी मैंने आपके पिता को अपना नाम और हाल ठीक बताया है। मैं उसको आपको केवल दोबारा बता सकता हूँ।" और यह कह कर वह कमरे से चला गया।

अगले दिन राजा के यहाँ एक बड़ी दावत का इन्तजाम था। बोवो को राजकुमारी द्रष्नेवना के लिये एक भुना हुआ हंस पकड़ कर रखना था जिसको कि राजकुमारी को काटना था। पर हंस काटते समय जान बूझ कर राजकुमारी ने अपना चाकू फर्श पर गिरा दिया।

बोवो ने तुरन्त ही उसको उठा लिया और जैसे ही उसको राजकुमारी को देने के लिये अपना हाथ राजकुमारी की तरफ बढ़ाया तो राजकुमारी ने उसके सिर पर उसे चूम लिया।

जैसे ही दावत खत्म हुई बोवो सोने के लिये लेट गया और तीन दिन और तीन रात तक सोता रहा। जब वह जागा तो बाहर खुले मैदान की तरफ चला गया।

वह "वर्जित घास के मैदान" में टहलता रहा। वहाँ से उसने कुछ सुन्दर फूल इकट्ठे किये उनकी माला सी बनायी और उसको अपने सिर पर रख लिया और ऐसा कर के वह शहर में चला गया।

राजकुमारी ने जब इस तरह से उसे सजते जाते देखा तो उसे अपने पास बुलाया और उससे वह माला उसके सिर से उतारने के लिये और उसे अपने सिर पर रखने के लिये कहा।

पर बोवो ने यह नहीं किया बल्कि उसने अपने सिर से वह माला उतारी ओर तोड़ कर जमीन पर फेंक दी। फिर वह कमरे का दरवाजा बन्द करता हुआ कमरे में से बाहर निकल गया।

कमरे का दरवाजा भी उसने इतनी ज़ोर से बन्द किया कि उसका चॉदी का हैंडिल भी निकल गया और दीवार का एक पत्थर भी उसके सिर पर गिर गया जिससे उसके सिर में एक घाव हो गया।

यह देख कर द्रष्नेवना ने उसके सिर के घाव का अपनी दवाओं से इलाज किया और जब वह घाव ठीक हो गया तो वह फिर सोने के लिये लेट गया। इस बार वह पॉच दिन और पॉच रात सोया।

इसी समय राजा मार्कोब्रून दोन राज्य[92] से भी दूर से अपने कई लाख सिपाही ले कर वहॉ आया। उसने सेन्सिब्री के अरमेनियन शहर[93] को चारों तरफ से घेर लिया।

उसने अपना एक दूत सेन्सिब्री के पास भेजा कि वह अपनी बेटी द्रष्नेवना की शादी उससे कर दे। बदले में उसने वायदा किया कि वह उसको कुछ इनाम देगा और उसकी रक्षा भी करेगा।

पर अगर उसने उसको मना कर दिया तो उसने उसे धमकी दी कि वह उसके शहर को अपनी तलवार से और आग लगा कर तहस

[92] King Marcobrun came from the kindom beyond the Don Kingdom

[93] King Sensibri was the King of Armenian Kingdom

नहस कर देगा। उसको जेल में डाल देगा और उसकी बेटी को जबरदस्ती उठा कर ले जायेगा।

इस पर राजा सैन्सिब्री ने जवाब दिया — "अपने मालिक मशहूर राजा मार्कोब्रून से कह देना कि आज के दिन तक मैंने उसकी किसी बात को मना नहीं किया बल्कि हमेशा दोस्ती और भले तरीके से रहा हूँ।

और आज भी मेरी उससे झगड़ा करने की केई इच्छा नहीं है पर अच्छा होता अगर यह सब दोस्ती से कहा जाता बजाय इसके कि यह धमकी से कहा गया।

फिर भी उसकी जवानी को देखते हुए मैं इस बात के लिये उसे माफ करता हूँ और उसको अपने शाही महल में रोटी और नमक खाने के लिये और अपनी बेटी के साथ उसकी शादी का जश्न मनाने के लिये बुलाता हूँ।"

यह कह कर राजा सैन्सिब्री ने दूत को वापस भेज दिया और शहर के दरवाजे खोलने का हुक्म दे दिया। खुद वह राजा मार्कोब्रून की अगवानी के लिये चल दिया।

वह राजा को उसके सफेद हाथों से पकड़ कर संगमरमर के महल में ले गया। वहाँ जा कर उसको ओक की मेज पर बिठाया जिस पर चैक का मेजपोश बिछा हुआ था जिस पर बहुत सारी मिठाइयाँ रखी हुई थीं। वहाँ उन्होंने खूब खाया ओर खूब पिया।

तभी बोवो कोरोलेविच अपनी पाँच दिन की नींद से जाग गया। उसने शहर के बाहर कुछ आदमियों की और घोड़ों के हिनहिनाने की आवाजें सुनीं।

सो वह राजकुमारी द्रष्नेवना के सफेद संगमरमर के महल में गया और उससे कहा — "राजकुमारी जी मैंने शहर के बाहर कुछ आदमियों की और घोड़ों के हिनहिनाने की आवाजें सुनी हैं।

लोग कह रहे हैं कि राजा मार्कोब्रून के कुलीन लोग किसी टूर्नामेन्ट का आनन्द मना रहे हैं। मैं भी उनके उस टूर्नामेन्ट को देखना चाहता हूँ। मुझे इजाज़त दें एक अच्छा सा घोड़ा दें ताकि मैं भी वे खेल देख सकूँ।"

राजकुमारी बोली — "ओ छोटे अनहूसी, तुम मार्कोब्रून के कुलीन लोगों के साथ घोड़े की सवारी कैसे कर सकते हो तुम तो अभी बहुत छोटे हो और जल्दी से घोड़े पर बैठ भी नहीं सकते हो।

फिर भी अगर तुम्हारी उसको देखने की इतनी ही इच्छा है तो कोई अच्छा सा घोड़ा चुन लो और वह खेल देखने के लिये चले जाओ। पर कोई हथियार नहीं ले जाना और उनके खेलों में हिस्सा भी नहीं लेना।"

जैसे ही बोवो को खेल देखने की इजाज़त मिली वह तुरन्त ही घुड़साल की तरफ भागा। वह एक झाड़ू के ऊपर चढ़ा और शहर के बाहर की तरफ चल दिया।

जैसे ही मार्कोब्रून के कुलीन लोगों ने बोवो कोरोलेविच को झाड़ू पर चढ़ कर आते देखा वे उसके ऊपर ज़ोर से हॅस पड़े और बोले — "देखो देखो राजा सैन्सिब्री की घुड़साल के घोड़ों की देखभाल करने वाले को देखो जो एक नकली घोड़े यानी एक झाड़ू पर चढ़ा चला आ रहा है – मैदान की सफाई करता हुआ और हमारे लिये जगह बनाता हुआ।"

पर बोवो ने उनके इन मजाकों को पसन्द नहीं किया और अपनी झाड़ू पर चढ़ कर उसको बचाते हुए अपने दॉये और बॉये लोगों के गिराते हुए, दो तीन लोगों से टकराते हुए उनके पास पहुॅच गया।

जब मार्कोब्रून के कुलीन लोगों ने उसका यह खेल देखा तो वे 10 और 10 से ज़्यादा की गिनती में बोवो की तरफ दौड़े पर जैसे ही वे उसकी तरफ आये उसने उनको आड़े हाथों लिया और सबको पछाड़ दिया।

इस पर दूसरे नाइट्स बहुत गुस्सा हो गये और उन्होंने 200 की गिनती में बोवो पर हमला कर दिया और उसको नीचे गिराने की कोशिश की पर बोवो तो उनसे हिला भी नहीं बल्कि उसने उन सबको और एक एक कर के 200 हजार लोगों को मार गिराया।

जब राजा की बेटी ने अपनी खिड़की से यह देखा तो वह अपने पिता के पास भागी गयी और बोली — "पिता जी अपने नौकर अनहूसी को वापस आने का हुक्म कीजिये। वह मार्कोब्रून के कुलीन

लोगों में हो रहे खेलों को देखने के लिये गया हुआ था पर वे तो उससे लड़ने ही बैठ गये और बहुत गुस्से में भर कर उस पर हमला कर रहे हैं।

अगर वह मारा गया तो यह हमारे लिये बड़े शर्म की बात होगी। वह तो अभी भी बच्चा ही है और उसमें इतनी ताकत भी नहीं है।"

सो राजा सेन्सिब्री अन्द्रोनोविच ने तुरन्त ही बोवो को बुलवा भेजा और उसको शहर आने का हुक्म दिया। बोवो ने राजा के हुक्म का पालन किया वह शहर लौट आया और आ कर सो गया।

इस बार वह नौ दिन ओर नौ रातों के लिये सोता रहा।

इस बीच ताकतवर लूकोपर नाइट[94] भी अरमेनियन शहर आया। लूकोपर नाइट का सिर बीयर के बैरल के बराबर बड़ा था। उसकी भौहें एक बालिश्त की दूरी पर थीं। उसके कन्धे एक तीर की लम्बाई के बराबर चौड़े थे और उसकी लम्बाई तो बस एक सफर था।

इससे पहले ऐसे किसी ताकतवर नाइट को किसी ने कहीं देखा नहीं था। और वह नाइट मार्कोब्रून की सेना की दोगुनी ताकत के साथ वहाँ आ गया।

[94] Lukoper Knight – he has a wonderfiul horse

उसने राजा सैन्सिब्री का शहर चारों तरफ से घेर लिया और उसको अपने दूत के हाथ यह सन्देश भेजा कि वह राजकुमारी द्रष्नेवना की शादी उसके साथ कर दे और अगर उसने ऐसा न किया तो...

तो उसने यह धमकी दी कि वह उसके शहर को आग और तलवार से बर्बाद कर देगा। उसके शहर के सारे लोगों को कैद में डाल देगा। मार्कोब्रून की सेना को जीत लेगा। दोनों राजाओं को मार देगा। और राजकुमारी द्रष्नेवना को ले जायेगा।

पर अगर राजा ने उसकी मॉग पूरी कर दी तो वह उसकी सहायता करेगा और उसकी रक्षा करेगा।

जब राजा सैन्सिब्री ने यह सन्देश सुना तो वह तो उसको मना करने की हिम्मत ही नहीं कर सका और उस दूत को बिना किसी जवाब के वापस भेज दिया।

उसके बाद उसने मार्कोब्रून को बुलाया और उससे सलाह ली। दोनों ने यह तय किया कि वे दोनों मिल कर लूकोपर का मुकाबला करेंगे।

ऐसा सोच कर उन्होंने अपने अपने घोड़ों को तैयार करने का हुक्म दिया। दोनों ने अपने अपने दॉये हाथ में लोहे की तलवार पकड़ी और बॉये हाथ में भाला पकड़ा और दोनों शहर के बाहर चले गये।

जब ज़ार लूकोपर ने दोनों को आते देखा तो वह अपना खुट्टल[95] भाला ले कर उनकी तरफ दौड़ा। उसने एक के बाद एक दोनों को जीत लिया और उन दोनों को बन्दी बना लिया।

उसने उनको अपने पिता सलतान सलतानोविच[96] के पास भेज दिया जो अपनी सेना के साथ समुद्र के किनारे कैम्प लगा कर ठहरा हुआ था।

उसके बाद लूकोपर मार्कोब्रून और सैन्सिब्री दोनों की सेनाओं पर टूट पड़ा और उन सबको बड़ी बेरहमी से मार डाला। उसके शानदार घोड़े ने भी बहुतों को अपने पैरों के नीचे कुचल दिया। कुछ ही देर में सारा "वर्जित घास का मैदान" लाशों से पट गया।

इसी समय बोवो कोरोलेविच अपनी नौ दिन और नौ रात की नींद से जागा और उसने लूकोपर की सेना का और घोड़ों के हिनहिनाने का शोर सुना।

उठ कर वह राजकुमारी द्रष्नेवना के पास गया और उससे बोला — "राजकुमारी जी मैंने लूकोपर की सेना का शोर सुना जो आपके पिता और मार्कोब्रून को जीत कर आनन्द मना रहे हैं। उनको उसने बन्दी बना कर समुद्र के किनारे अपने पिता ज़ार सलतान सलतानोविच के पास भेज दिया है।

[95] Translated for the word "Blunt" – means without any sharp end.

[96] Saltan Saltanovich – name of the father of Tzar Lukoper

आपका वफादार नौकर होने के नाते मैं आपके पास आपके शाही अस्तबल से एक बहुत अच्छा घोड़ा जो शाही ढंग से सजा हो लेने की इजाज़त लेने के लिये आया हूँ। साथ में मुझे एक तलवार और एक भाला भी चाहिये।

मुझे लूकोपर की सेना का मुकाबला करने जाने की, अपनी ताकत को उसकी ताकत से तौलने की और उसके अपनी शान बघारने वाले योद्धाओं की शान देखने की इजाज़त दीजिये।"

राजकुमारी बोली — "मैं तुम्हारी इच्छा तो पूरी कर दूँगी ओ नौजवान पर तुम मुझे सच सच यह तो बताओ कि तुम किस क्लास के हो और तुम्हारा असली नाम क्या है।

मैं तुमसे फिर कह रही हूँ कि तुमने मेरे पिता को सब कुछ सच नहीं बताया था। तुम्हारी यह सुन्दर शक्ल और बहादुरी के काम साफ बताते हैं कि तुम किसी गरीब घर से नहीं हो।"

बोवो कोरोलेविच बोला — "राजकुमारी जी मैं आपको अपनी सच्ची पहचान और नाम नहीं बताता पर क्योंकि मैं अब ज़िन्दगी और मौत की लड़ाई पर जा रहा हूँ पता नहीं मैं वहाँ से ज़िन्दा लौटता हू या नहीं इसलिये मैं आपको अब अपने बारे में सब सच सच बताता हूँ।

मेरे पिता राजा गिदौं एक बहुत ही मशहूर राजा थे – लड़ाई के मैदान में एक बहुत ही ताकतवर राजा और अपनी प्रजा के लिये

एक दयालु राजा। मेरी मॉ का नाम रानी मिलित्रीसा है जो ज़ार किरबित वरसूलोविच की बेटी हैं। और मेरा नाम बोवो है।

मैं जब बहुत छोटा था तभी मैंने अपना देश छोड़ दिया था जब राजा दादौं ने हमारे देश को बरबाद किया था। उसने मेरे पिता को बड़ी बेरहमी से मार दिया था और उनका राज्य छीन लिया था।

उसने मारने के लिये मुझे भी ढूँढा पर मैं भाग निकला। कुछ नाविकों के साथ जहाज़ पर चढ़ कर आपके राज्य में आ गया। और आपके पिता ने मुझे खरीद लिया।"

जब राजकुमारी ने उसकी यह कहानी सुनी तो वह बोवो कोरोलेविच को पहले से भी ज़्यादा प्यार करने लगी।

वह बोली — "ओ बहादुर नाइट तुम जब ज़ार लूकोपर से लड़ोगे तो यह बिल्कुल ठीक है कि तुम उससे ज़िन्दगी और मौत की लड़ाई लड़ोगे। पर शायद तुम यह नहीं जानते कि वह कितना ताकतवर है और उसके पास कितनी बड़ी सेना है।

इसके अलावा तुम अभी बहुत छोटे हो। तुममें तो अभी आदमी की ताकत भी नहीं है। अच्छा होगा कि तुम मेरे शहर में ही ठहरो। मुझसे शादी कर लो और मेरे देश की हमारे दुश्मनों से रक्षा करो।"

बोवो के ऊपर उसकी बात का कोई असर नहीं पड़ा। उसने उससे फिर प्रार्थना की कि वह उसको एक घोड़ा और एक जिरहबख्तर दे दे और उसको लूकोपर से लड़ने की इजाज़त दे।

जब राजकुमारी द्रष्नेवना ने देखा कि वह कितनी वफादारी से यह सब मॉग रहा है तो उसने दीवार पर से एक लड़ाई वाली तलवार उतारी और अपने हाथ से उसकी कमर पर लगा दी।

फिर उसने उसको जिरहबख्तर पहनाया और उसको घोड़ा लेने के लिये पत्थर के बने अस्तबल में ले गयी जो 12 लोहे के दरवाजों और 12 बड़े बड़े तालों के पीछे था।

तब उसने घोड़ों के रखवालों से उसके ताले खोलने के लिये कहा पर जैसे ही घोड़े ने यह महसूस किया कि उसके ऊपर चढ़ने के लायक कोई आदमी आ गया तो उसने अपने खुरों से दरवाजे को पीटना शुरू कर दिया और सब दरवाजे तोड़ दिये।

वह तुरन्त ही बाहर भाग गया और बोवो के सामने अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और इतनी ज़ोर से हिनहिनाया कि सुन्दर द्रष्नेवना और उसके पास खड़े लोग सब बेहोश हो कर गिरते गिरते बचे।

जब बोवो ने घोड़े को उसकी गर्दन के काले भूरे बालों से पकड़ा और थपथपाना शुरू किया। वह वहॉ बिल्कुल बिना हिले डुले खड़ा रहा जैसे उसकी जड़ें उस जगह में जम गयी हों।

यह देख कर बोवो कोरोलेविच ने उसके ऊपर एक बहुत ही बढ़िया जीन रखी जिसमें फारस के रेशम की रस्सियॉ लगी थीं और सोने के बक्सुए[97] लगे हुए थे।

---

[97] Translated for the word "Buckles".

वह घोड़े की जीन पर बैठा, उसने राजकुमारी द्रष्नेवना से विदा ली और राजकुमारी ने उसको गले लगा कर चूम कर विदा दी।

शाही चैम्बरलेन जिसका नाम औरलौप[98] था जब उसने यह देखा तो वह राजकुमारी को बुरा भला कहने लगा। इससे बोवो को इतना गुस्सा आया कि उसने उसको अपने भाले के खुट्टल सिरे से ही उसको अधमरा कर के जमीन पर फेंक दिया और शहर से बाहर चला गया। उसने घोड़े के एक तरफ मारा जिससे वह कूदा और तुरन्त ही शहर की दीवार पार कर गया।

शहर के बाहर उसने ज़ार लूकोपर का कैम्प देखा तो उसमें तो उसके तम्बू के डंडे इतने मोटे थे जैसे किसी पेड़ के तने होते हैं। सो उसने अपनी लड़ाई वाली तलवार और गदा निकाली और सीधा ताकतवर ज़ार की तरफ चल दिया।

दो पहाड़ भी जब टकरायें और एक दूसरे के ऊपर गिरें तो शायद उनके गिरने की भी इतनी आवाज नहीं होती होगी जितनी कि इन दोनों ताकतवर नाइट्स के आपस में लड़ने की हो रही थी।

लूकोपर ने अपना भाला बोवो के दिल में मारा तो बोवो ने उसे अपनी ढाल से बचा लिया और उसके भाले के टुकड़े टुकड़े कर दिये। उसके बाद बोवो ने अपनी तलवार से लूकोपर के सिर में मारा और उसके शरीर को उसी के घोड़े की जीन से बाँध दिया।

---

[98] Orlop – name of the Royal Chamberlain

उसके बाद वह लूकोपर की सेना पर टूट पड़ा और अपनी लड़ाई वाली कुल्हाड़ी से ही बहुतों को मार डाला। उसके घोड़े के खुरों के नीचे आ कर भी बहुत सारे लोग मर गये।

इस तरह बोवो बिना आराम किये पाँच दिनों तक लड़ा और लूकोपर की करीब करीब सारी सेना को मार दिया केवल कुछ सिपाही ही बच कर निकल कर भाग पाये।

बचे हुए सिपाही ज़ार सल्तान के पास पहुँचे और बोले — "ओ हमारे ज़ार सल्तान सल्तानोविच, जब हमने ज़ार सेन्सिब्री और ज़ार मार्कोब्रून को बन्दी बनाया और अपने दुश्मनों को मार भगाया तो सैन्सिब्री के शहर से एक बहुत ही सुन्दर नौजवान दौड़ा आया और हमारे बहादुर बेटे लूकोपर को अकेले ही मार दिया। और सारी सेना को इधर उधर बिखरा दिया।

अब वह हमारे पीछे पड़ा है। हम सबको मारने के बाद वह फिर शायद आपके पास आयेगा।"

यह सुन कर तो ज़ार सल्तान बहुत डर गया और अपने तम्बू और अपना खजाना वहीं छोड़ कर अपनी सेना को ले कर जहाज़ पर चढ़ गया। उसने तार काट दिये और अरमेनियन राज्य से तुरन्त ही चल दिया।

पर अभी उसने किनारा छोड़ा ही था कि बोवो उसके कैम्प में आ पहुँचा। पर वहाँ तो उसको कोई भी नहीं मिला सिवाय राजा

सैन्सिब्री और राजा मार्कोब्रून के जो सल्तान के तम्बू के बराबर में वहाँ हाथ और पैर बँधे पड़े थे।

बोवो कोरोलेविच ने उनके हाथ पैर खोल कर उनको आजाद किया और उनको ले कर अरमेनियन राज्य में लौट आया।

रास्ते में राजा सैन्सिब्री अन्द्रोनोविच ने बोवो से कहा — "ओ मेरे वफादार नौकर अनहूसी, अब मुझे तुम्हारी शान और वफादारी पता चली। मैं तो केवल तुम्हारी वजह से ही आजाद हूँ। मुझे नहीं मालूम कि मैं तुम्हें इसका इनाम कैसे दूँ। तुम मुझसे जो कुछ तुम्हारी इच्छा हो माँग लो। मेरा सारा खजाना तुम्हारी इच्छा पर है।"

बोवो बोला — "ओ राजा मैं तो आपके केवल शाही दया से ही खुश हूँ। इससे ज़्यादा मैं आपसे और कुछ नहीं चाहता। जहाँ तक मुझसे हो सकेगा मैं अपनी पूरी वफादारी से आपकी सेवा करूँगा।"

ऐसी ही बातें करते करते वे अरमेनियन शहर आ गये जहाँ आ कर उन्होंने बहुत अच्छा खाना खाया और आनन्द मनाया। उसके बोवो फिर सोने चला गया और फिर नौ दिन और नौ रात सोया।

काफी दिनों के बाद जब राजा सैन्सिब्री और मार्कोब्रून खाते खाते और आनन्द मनाते मनाते थक गये तो वे तीन दिन के लिये मैदान में शिकार के लिये गये।

इस बीच ऐसा हुआ कि चैम्बरलेन औरलौप बोवो को जो शाही दया मिली थी उससे जलता था सो उसने **30** आदमी बुलाये और उनसे कहा — "दोस्तो तुमने देखा, इस गधे अनहूसी ने हमारे राजा

सैन्सिब्री और राजकुमारी द्रष्नेवना को किस तरह से धोखा दिया है। जो उनका प्यार हमको मिलना चाहिये था वह उसने खुद ले लिया है। और इस तरीके से उनका प्यार हमसे हटा लिया है।

तुम मेरे साथ अस्तबल में आओ जहाँ वह सोता है। हम उसको वहीं मारते हैं और मैं तुमको सोना चाँदी जवाहरात और बढ़िया कपड़े इनाम में दूँगा।"

जब चैम्बरलेन औरलौप ने उनको अपना यह प्लान बताया तो उन **30** लोगों में से एक आदमी बोला — "जब अनहूसी सो रहा होता हो तो हम लोग उसको मारने के लिये काफी ताकतवर नहीं हैं। क्योंकि अगर वह जाग गया तो वह हम सबको मार देगा।

इससे अच्छा प्लान तो यह होगा कि हममें से एक राजा के बिस्तर पर लेट जाये जबकि वह बाहर गया हुआ हो और फिर अनहूसी को बुलाया जाये और उसको ज़ार सलतान सलतानोविच के नाम एक चिट्ठी दी जाये कि वह उसको मार दे।

जब चैम्बरलेन औरलौप ने यह प्लान सुना तो वह खुशी से उछल पड़ा। उसने उसको गले से लगाया जिसने उसको इतनी अच्छी नीच सलाह दी थी और उसने उसको दूसरों से ज़्यादा इनाम दिया।

जब ऐसी एक चिट्ठी तैयार कर ली गयी तो औरलौप राजा सैन्सिब्री के पलंग पर जा कर लेट गया। उसने बोवो को बुलाया और उससे कहा — "मेरा एक काम करो अनहूसी। यह चिट्ठी ले

जाओ और ज़ार सल्तान को अपने हाथ से देना। जब तुम वहाँ से लौट आओगे तो मैं तुम्हें जिस तरीके से चाहोगे उस तरीके से बहुत सारा इनाम दूँगा।"

बोवो जो आधा सोया हुआ था उसका धोखा नहीं जान सका सो उसने उससे वह चिट्ठी ली अस्तबल में गया एक अच्छा सा घोड़ा देख कर उस पर जीन कसी और ज़ार सल्तान के राज्य की ओर चल दिया।"

बोवो दो महीने तक चलता रहा जब तक कि वह एक रेगिस्तान में आया जहाँ न तो कोई नदी थी न कोई पानी का स्रोत था। वह प्यास से परेशान हो गया। काफी देर बाद उसे एक यात्री मिला जिसके पास एक चमड़े की बोतल भर कर पानी था।

उसने उससे प्रार्थना की वह उसकी प्यास बुझाने के लिये उसको घूँट भर कर पानी पिला दे। उस बूढ़े ने उससे छिपा कर उस पानी में सोने की एक दवा डाल दी और वह पानी बोवो को पिला दिया। जैसे ही उसने वह पानी पिया उसका असर उसके ऊपर होने लगा।

वह अपने घोड़े से गिर पड़ा और एक मरे हुए आदमी की तरह से सो गया। तब बूढ़े ने बोवो की लड़ाई वाली तलवार ली बोवो के घोड़े पर चढ़ा और वहाँ से भाग लिया। बोवो को उसने वहीं बीच रेगिस्तान में अकेला और बिना हथियार के सोता हुआ छोड़ दिया।

बोवो वहाँ 10 दिन तक सोता रहा और जब वह अपनी नींद से जागा तो उसने देखा कि उसका घोड़ा उसकी तलवार उसकी लड़ाई वाली कुल्हाड़ी वहाँ तो कुछ भी नहीं था।

वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा और बोला — "ऐसा लगता है कि मुझे तो बस इस सेवा में अब मरना ही है। और ऐसा लगता है कि मेरी वफादारी के बदले में राजा सैन्सिब्री ने मुझे ज़ार सलतान के पास मरने के लिये भेजा है।"

फिर वह पैदल ही चल दिया। उसका सिर उसके कन्धों से भी नीचे लटका हुआ था। जब बोवो कोरोलेविच ज़ार सलतान के सामने पहुँचा तो उसने उसको जमीन तक झुक कर नमस्ते की और वह चिट्ठी उसको दे दी।

वह बोला — "भगवान आपको लम्बी उम्र दे ज़ार सलतान सलतानोविच। मुझे राजा सैन्सिब्री ने योर मैजेस्टी के पास आपकी तन्दुरुस्ती की खबर लाने के लिये भेजा है। और आपसे यह जानने के बाद आपको यह चिट्ठी देने के लिये कहा है।"

सलतान ने उससे वह चिट्ठी ली उसकी सील तोड़ी और उसको पढ़ने के बाद ज़ोर से बोला — "मेरे बहादुर नाइट्स कहाँ हैं मेरे वफादार नौकर और योद्धा कहाँ हैं? राजा सैन्सिब्री के इस दूत को पकड़ लो और इसको फाँसी तक ले जाओ क्योंकि इसने मेरे प्यारे बेटे लूकोपर को मारा है और मेरी ताकतवर सेना को नष्ट किया है।"

इस पर सलतान के 60 नाइट्स वहाँ आये और बोवो को चारों तरफ से घेर लिया फिर वे उसको खुले मैदान में फाँसी पर लटकाने के लिये ले गये।

रास्ते में बोवो ने अपने मन में सोचा कि वह ऐसी शर्मनाक मौत का अधिकारी कैसे हो सकता है और अपनी इस उभरती जवानी के दिनों में कैसे मर सकता था

इससे तो ज़्यादा अच्छा यह रहता अगर मेरी माँ मुझे अन्तोन शहर में ही मार देती। या फिर मार्कोब्रून के कुलीन लोग ही मुझे मार डालते। या फिर लूकोपर के लोग मार देते।

ऐसा सोच कर वह उठा और उसने सारे 60 नाइट्स को उठा कर फेंक दिया और उस राज्य से बाहर भाग गया।

जब सलतान ने यह सुना तो उसने तुरन्त ही बिगुल बजाने का हुक्म दिया। उसने 100 हजार नाइट्स इकट्ठे किये और बोवो कोरोलेविच का पीछा किया। जल्दी ही उन्होंने उसको चारों तरफ से घेर लिया।

अब बोवो के पास न तो कोई घोड़ा था न तो केई तेज़ तलवार थी और न ही कोई लोहे का भाला था। उसके पास तो कुछ भी नहीं था जिससे वह अपना बचाव कर सके।

तो उसने सलतान का एक योद्धा पकड़ लिया और उससे लड़ना शुरू कर दिया। पर उसने यह देख लिया था कि वह सबको नहीं मार सकता था सो उसने अपने आपको पकड़वा दिया।

लोगों ने उसे पकड़ लिया उसके हाथ बॉध दिये और उसको ज़ार सलतान सलतानोविच के पास ले चले। जैसे ही ज़ार ने बोवो को देखा उसने उसको फॉसी लगाने के लिये फॉसी लगाने वालों को बुला भेजा।

तभी ज़ार की सुन्दर बेटी राजकुमारी मिलिहेरिया[99] वहॉ आ गयी और अपने पिता के सामने अपने घुटनों पर बैठ कर बोली — "पिता जी आप बोवो को फॉसी मत दीजिये। मुझे पहले उससे बात कर लेने दीजिये क्योंकि उसकी मौत मेरे भाई को या आपकी सेना को फिर से ज़िन्दा नहीं कर देगी।

बल्कि उसको ज़िन्दगी दीजिये हमारे धर्म में उसका विश्वास जगाइये और उसको अपना वारिस बनाइये। तब वह आपके बुढ़ापे में आपकी लड़ाइयों में आपकी रक्षा करेगा।"

ज़ार बोला — "मेरी प्यारी बेटी मिलिहेरिया, तुमने मुझे अपने कोमल शब्दों से बहुत तसल्ली दी है और बहुत ही अच्छी सलाह दी है। मैं बोवो को तुम्हारे हाथों में देता हूॅ।

अगर उसको हमारे धर्म में विश्वास हो जाये तो वह मेरा वारिस और तुम्हारा पति बन जायेगा। मैं उसको अपने सारे शहर और गॉव और खजाना और जवाहरात दे दूॅगा।"

ज़ार की बेटी ने अपने पिता को सिर झुकाया और कमरे से बाहर चली गयी और बोवो को अपने सामने लाने का हुक्म दिया।

---

[99] Princess Miliheria – daughter of Tzar Saltan Saltanovich and sister of Orlop

जब बोवो उसके सामने आया तब उसने अपनी मीठी बोली में उसको अपना धर्म अपनाने के लिये कहा।

पर बोवो बोला कि उसको चाहे सारा राज्य मिल जाये खजाना मिल जाये पर वह अपना धर्म कभी नहीं बदलेगा। तो मिलिहेरिया ने उसको जेल भेज दिया। और उसका दरवाजा रेत से बन्द करवा दिया और हुक्म दिया कि उसको पॉच दिन तक कोई खाना और पानी नहीं मिलना था।

पॉच दिन के बाद उसने जवाहरातों से सजी सुनहरी कढ़ाई की एक पोशाक पहनी और जेल गयी। वहॉ जा कर उसने जेल के दरवाजे के सामने की रेत हटवायी और दरवाजा खुलवाया।

वह जेल के अन्दर गयी और बोवो से पूछा — "अब बताओ ओ नौजवान क्या तुमने उस मामले पर फिर से विचार किया? क्या तुम अपना धर्म बदल कर जीने के लिये और मेरे पिता के राज्य पर राज करने के लिये तैयार हो? और या फिर तुम अपनी जिद नहीं छोड़ोगे और फॉसी पर चढ़ कर अपनी ज़िन्दगी खत्म करना चाहते हो?"

बोवो बोला — "जब तक मैं ज़िन्दा हूॅ मैं अपना धर्म कभी नहीं छोड़ूॅगा। और तुम्हारे धर्म के लिये तो बिल्कुल नहीं छोड़ूॅगा। मुझे तुम अपने चालाकी भरे शब्दों से और वायदों से बेकार में ही लालच मत दो। मुझे मरना ज़्यादा पसन्द है बजाय अपना धर्म बदलने के।"

राजकुमारी मिलिहेरिया बोवो की यह बात सुन कर बहुत गुस्सा हुई। वह तुरन्त ही वहाँ से अपने पिता के पास गयी और बोली — "मेरे मालिक और मेरे पिता, मैं इस अविश्वासी कैदी की ज़िन्दगी के बीच में दखल देने के लिये अपनी गलती स्वीकार करती हूँ।

मैं सोचती थी कि शायद में इसका धर्म बदलने में कामयाब हो जाऊँगी और इसको योर मैजेस्टी की प्रजा का एक बहुत ही अच्छा आदमी बना दूँगी। पर अब मैं देखती हूँ कि यह तो बहुत जिद्दी है।

अब मैं उसकी तरफ से उसकी वकालत नहीं करूँगी बल्कि उसको मैं अब आपको ही वापस करती हूँ। आप उसके साथ जैसा चाहें वैसा करें।"

यह कह कर वह वहाँ से चली गयी। यह सुन कर सलतान सलतानोविच ने फिर से **30** बहादुर नाइट्स बुलाये और उनको जेल भेजा।

पर जब वे जेल आये तो वे उसके दरवाजे पर पड़ा रेत नहीं हटा पाये क्योंकि ज़ार की बेटी गुस्से में भर कर वहाँ बहुत सारा रेत डाल गयी थी। सो उन्होंने सोचा कि वे उस जेल की छत हटा कर बोवो को उसमें से खींच लेंगे।

इससे बोवो कोलोरेविच बहुत दुखी हुआ और रोते रोते बोला — "अफसोस मैं तो आदमियों में भी सबसे ज़्यादा बदकिस्मत आदमी हूँ। मेरे पास न तो तलवार है न लड़ने वाली कुल्हाड़ी है जबकि मेरे

दुश्मन अनगिनत हैं। इसके अलावा मैं पाँच दिन से भूख और बन्द रहने की वजह से कमजोर भी हूँ।"

यह सोच कर वह जेल के एक कोने में बैठ गया। वहाँ उसको महसूस हुआ कि उसके पास लोहे की एक तलवार पड़ी है। उसने उसे उठा लिया और खुशी खुशी उसे इधर उधर घुमाया। अपने इस बिना देखे हुए इनाम पर उसको मुश्किल से विश्वास हुआ।

फिर वह उस जगह गया जहाँ सलतान के लोग जेल में उसकी छत से अन्दर उतरने वाले थे। जैसे ही वे वहाँ उतरे उसने उस तलवार से उनके सिर काट दिये और उनका ढेर लगा दिया।

इस बीच सलतान अपने उन नाइट्स का इन्तजार करता रहा जिनको उसने बोवो के पीछे भेजा था। जब वे बहुत देर तक नहीं आये तो उसने और बहुत सारे लोग उनकी सहायता के लिये भेजे। पर बोवो ने उनको भी उसी तरीके से मार दिया और उनके शरीरों के ढेर लगा दिये।

इस ढेर पर चढ़ कर वह जेल के बाहर निकल गया और वहाँ से भाग निकला। भागता भागता वह फिर से बन्दरगाह पहुँचा और वहाँ जा कर बहुत जोर से चिल्लाया — "हो मास्टर, एक ईमानदार आदमी को अपने जहाज़ पर अपने साथ ले चलो। मुझे एक बेरहम मौत से बचा लो मैं तुमको बहुत सारा पैसा इनाम में दूँगा।"

जब सौदागरों ने यह सुना तो उन्होंने एक नाव किनारे पर भेज दी और बोवो कोरोलेविच को अपने जहाज़ में बिठा लिया।

उसी समय उसके पीछा करने वाले उसको ढूँढते हुए वहाँ आये। उनके साथ था सलतान सलतानोविच खुद।

सलतान वहीं से जहाज़ के सौदागरों से चिल्ला कर बोला — "ओ विदेशी सौदागरों तुमने एक अपराधी को अपने जहाज़ पर शरण दे रखी है उसको हमें दे दो।

वह हमारा कैदी है और हमारी जेल से भाग गया है। उसने तुम्हारे जहाज़ पर शरण ले रखी है। उसको हमें दे दो वरना हम तुम्हें यहाँ फिर कभी नहीं आने देंगे और न अपने राज्य में फिर कभी व्यापार करने देंगे बल्कि तुमको भी पकड़ने का हुक्म दे देंगे और तुमको बुरी मौत मारेंगे।"

सौदागर यह धमकी सुन कर बहुत डर गये सो वे बोवो को वापस किनारे पर भेजने ही वाले थे कि उसने अपने कोट में से अपनी तलवार निकाल ली और दाँये बाँये चला कर जहाज़ के लोगों को मारना शुरू कर दिया।

यह देख कर तो बाकी बचे हुए लोग अपने घुटनों पर बैठ गये और उससे वायदा किया कि वे उसके साथ उसी जगह चले जायेंगे जहाँ वह कहेगा। इस पर बोवो ने उनको जहाज़ को खुले समुद्र में खेने के लिये कहा सो वे उधर ही चल दिये।

बोवो और मार्कोब्रून

तीन महीने की यात्रा के बाद वे दौन[100] राज्य में आ पहुँचे। पर वे खुद यह नहीं जानते थे कि वे किसके राज्य में थे सो उन्होंने एक मछियारे से पूछा कि वह पास वाला राज्य किसका था। मछियारे ने जवाब दिया कि वह राज्य सैदोनिक राज्य[101] था और उसके राजा का नाम राजा मार्कोब्रून था।

बोवो ने उससे फिर पूछा — "क्या यह वही मार्कोब्रून है जो राजा सैन्सिब्री की बेटी का हाथ माँगने गया था।"

मछियारा वोला — "हाँ यह वही मार्कोब्रून है जो राजा सैन्सिब्री की बेटी का हाथ माँगने गया था। पर इसको गये हुए बहुत दिन हो गये हैं और अभी तक यह अपनी पत्नी राजकुमारी द्रष्नेवना के साथ लौट कर नहीं आया है।उनकी शादी तो बहुत जल्दी होने वाली थी पता नहीं फिर क्या हुआ।"

यह सुन कर बोवो कोरोलेविच तो काँप गया और कुछ समय तक बोल ही नहीं सका। जब वह सँभला तो उसने मछियारे से कहा — "भले आदमी तुम मुझे इसके दूसरी तरफ पर उतार दो मैं तुमको बहुत सारे पैसे दूँगा।"

---

[100] Don Kingdom

[101] Sadonic Kingdom

फिर उसने उन सौदागरों का सामान उस जहाज़ के लोगों से बॉट लिया जिनको उसने मारा था और उनसे विदा ले कर सैदोनिक राज्य में उतर गया।

उस राज्य में उतर कर बोवो सीधा मार्कोब्रून के शहर गया। वहॉ पहुॅचने के लिये वह वहॉ से दो दिन तक चलता रहा। इस बीच उसको रास्ते में कोई नहीं मिला।

तीसरे दिन उसको वही यात्री मिला जिसने उसे सोने वाला पाउडर खिलाया था और जिसने उसकी तलवार लड़ाई वाली कुल्हाड़ी और घोड़ा चुरा लिया था।

बोवो ने तुरन्त ही उसको पकड़ कर जमीन पर गिरा दिया और बोला — "ओ बुरे आदमी, तूने मुझे एक लोटा पानी के बदले में लूटा? मेरा बहादुर घोड़ा ले गया और मुझे उस रेगिस्तान में जंगली जानबरों के खाने के लिये मजबूरी की हालत में छोड़ गया। ले अब उसका इनाम ले और मर।"

तब इस यात्री ने बोवो से दया की भीख मॉगी — "ओ बहादुर नाइट मेरे ऊपर दया करो और मेरी ज़िन्दगी बख्श दो। मैं तुम्हारा घोड़ा तुम्हारी तलवार और लड़ाई वाली कुल्हाड़ी सब वापस कर दूॅगा।

और अपने जुर्म के बदले में मैं तुमको तीन पाउडर दूॅगा। इनमें से एक पाउडर से अगर तुम नहाओगे तो तुम बूढ़े हो जाओगे। इससे तुम्हें कोई पहचान नहीं पायेगा।

दूसरे पाउडर से नहाने पर तुम फिर से जवान हो जाओगे। और तीसरा पाउडर अगर तुम किसी को पिला दोगे तो वह इतनी गहरी नींद सो जायेगा जैसे कि वह नौ दिन सोया हो।"

जब बोवो कोरोलेविच ने यह सुना तो उसने उस यात्री से वे तीनों पाउडर अपनी तलवार और कुल्हाड़ी तो ले लिये पर घोड़ा उसी के पास छोड़ दिया। उसने उसको अपने कपड़े भी दे दिये।

उसके बाद वह पहले वाले पाउडर से नहाया और शाही महल में पहुँच कर उनके रसोईघर में बोवो कोरोलेविच के नाम पर भीख माँगने लगा।

यह सुन कर एक रसोइये ने भट्टी में से जलती हुई एक लकड़ी निकाली और यह कहते हुए बोवो के सिर पर दे मारी — "चल हट यहाँ से ओ बेकार के आदमी। बोवो के नाम पर यहाँ भीख माँगने मत आना। उसका नाम इस देश में लेना मना है क्योंकि उसका नाम लेने की सजा मौत है।"

बोवो को उस जलती हुई लकड़ी का कोई असर नहीं हुआ बल्कि उसने उसकी वह जलती हुई लकड़ी पकड़ ली और फिर उसी लकड़ी से उस रसोइये को मारा और उससे पूछा — "क्या मतलब है इस बात से तुम्हारा? क्या मैं तुम्हारी और ज़्यादा पिटायी करूँ? तुमको अपने शब्द कहने से पहले सोच लेने चाहिये थे।"

पर इससे पहले कि वह कुछ बोलता वह तो मर चुका था। जब उसके साथियों ने यह देखा तो वे वहाँ से बाहर भाग गये और जा

कर अपने हैड रसोइये से कहा तो वह रसोईघर में आया और बोवो से पूछा कि क्या मामला था।

बोवो बोला — "ओ भले आदमी मैं इस देश के रीति रिवाज नहीं जानता और मैं यह भी नहीं जानता कि यहाँ क्या करना या कहना मना है।

मैंने तो केवल यह समझते हुए कि बोवो कोरोलेविच अपनी शान के लिये हर जगह मशहूर है रसोइये से उसके नाम पर केवल भीख माँगी थी पर उसने तो मुझे बिना एक शब्द भी कहे जलती हुई लकड़ी से पीटा।

मैंने उसकी मार का जवाब दिया तो वह तो मर ही गया। मेरा उसको मारने का कोई इरादा बिल्कुल नहीं था।"

जब हैड रसोइये ने यह सुना तो उसका गुस्सा बोवो के लिये दया में बदल गया। वह बोला — "सुनो ओ बूढ़े अभी के बाद फिर कभी बोवो के नाम पर भीख नहीं माँगना। हमको यह हुक्म मिला है कि इस देश में जो कोई भी उसके गुण गाये हम उसी को मार दें। तुमको हम तुम्हारी अज्ञानता पर माफ करते हैं।

तुम सीधे महल के पीछे चले जाओ वहाँ तुमको राजकुमारी द्रष्नेवना मिल जायेंगी जो तुम्हारे जैसे भिखारी को दान देती हैं। तीन दिन में उनकी शादी राजा मार्कोब्रून से होने वाली है।"

बोवो ने हैड रसोइये को सिर झुकाया और सीधा महल के पीछे चला गया। वहाँ उसको राजकुमारी द्रष्नेवना दिखायी दे गयी। पर

वहाँ तो भिखारियों की इतनी भीड़ लगी थी कि वह तो वहाँ तक पहुँच ही नहीं सकता था। और बहुतों ने तो उस बूढ़े को धक्का भी दिया और मारा भी।

यह देख कर बोवो बहुत गुस्सा हो गया और उसने भी लोगों को धक्का देना शुरू कर दिया। इससे वह जल्दी ही सुन्दर द्रष्नेवना के पास पहुँच गया। वहाँ जा कर उसने कहा — "ओ सुन्दर राजकुमारी, ओ राजा मार्कोब्रून की होने वाली पत्नी, मुझे बोवो कोरोलेविच के नाम पर भीख दो।"

जब राजकुमारी ने ये शब्द सुने तो उसके चेहरे का रंग बदल गया और उसके हाथ से पैसों का बर्तन नीचे गिर पड़ा। वह काँप गयी और मुश्किल से खड़ी हो पा रही थी।

सो उसने अपनी एक दासी को भिखारियों को भीख देने का काम सौंपा, बोवो को अपने पास बुलाया और उससे पूछा कि वह बोवो के नाम पर भीख क्यों माँग रहा था।

बोवो बोला — "ओ सुन्दर राजकुमारी, मैं बोवो कोरोलेविच को बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ क्योंकि मैं ज़ार सलतान के राज्य में उसके साथ उसी जेल में था। हमने काली रोटी भी एक साथ खायी और गन्दा पानी भी एक साथ पिया। हमने भूख और ठंड भी एक साथ सही।

उसने मुझसे यह भी कहा ओ सुन्दर राजकुमारी, कि आप उसको बहुत प्यार करती थीं और आपने यह सोच रखा था कि आप

उसी के साथ शादी करेंगी और किसी से नहीं। इसी लिये मैंने उसके नाम पर आपसे भीख माँगने की जुर्रत की।"

द्रष्नेवना बोली — "ओ भले आदमी तुमने बोवो कोरोलेविच को कहाँ छोड़ा? काश अगर मैं जानती कि वह इस समय कहाँ है तो मैं अभी इसी समय उसको ढूँढने चली जाती चाहे वह थ्राइस नाइन देश पार कर के तीसवें देश[102] में ही क्यों न होता।"

बोवो कोरोलेविच आगे बोला — "वह जेल से मेरे साथ ही छूटा था। मैं भी उसी के साथ साथ यहाँ इस देश में आ गया। वह कहीं पीछे रह गया। अब वह कहाँ है मुझे नहीं मालूम पर मैं घूमते घूमते यहाँ इस शहर में आ गया।"

जब वह इस तरह से बात कर रहा था कि मार्कोब्रून वहाँ आ गया। उसने द्रष्नेवना की आँखों में आँसू देखे तो उससे पूछा कि वह क्यों रो रही थी। क्या किसी ने उसको कुछ कहा है।

"नहीं राजा मार्कोब्रून मैं इस आदमी से केवल यह सुन कर रो पड़ी थी कि मेरे पिता की हालत बहुत खराब है वह मरने वाले हैं।"

यह सुन कर मार्कोब्रून ने बोवो को वहाँ से जाने के लिये कहा और राजकुमारी को दिलासा देते हुए कहा — "प्रिय द्रष्नेवना, तुम अपने पिता की बीमारी की वजह से दुखी न हो। वह जल्दी ही ठीक हो जायेंगे।

---

[102] It seems that this "Through thrice nine lands to the thirtieth country" is some kind of specific land. It has been mentioned in "Seven Simeons" folktales also. This folktale is given in this book as its Tale No 2. It has been mentioned in several Russian folktales.

तुम्हारे दुखी होने से होगा भी क्या। यह तो केवल तुम्हारी तन्दुरुस्ती ही खराब करेगा। तुम्हारी काली गहरी आँखें आँसुओं से धुँधली पड़ जायेंगी और यह दुख तुम्हारी सुन्दरता को नष्ट कर देगा।"

जब राजा राजकुमारी से यह सब कह रहा था तो बोवो उसके अस्तबल में चला गया जहाँ उसके भरोसे का घोड़ा **12** जंजीरों से बँधा खड़ा था। जब घोड़े ने अपने बहादुर सवार को आते सुना तो उसने लोहे के दरवाजे और अपनी जंजीरें तोड़ने की कोशिश करनी शुरू कर दी।

और आखिर उसने उनको तोड़ दिया और खुले मैदान में भाग गया। भागते भागते वह बोवो के पास आ पहुँचा और अपने पिछले पैरों पर बैठ कर उसको गले लगाने की कोशिश करने लगा। बोवो ने भी उसे उसकी गर्दन के बालों से पकड़ लिया और उसकी गर्दन सहलाने लगा।

घोड़ों के रखवालों ने जब यह देखा तो वे यह सब मार्कोब्रून से कहने गये। यह सुन कर मार्कोब्रून तुरन्त ही मैदान में आया और बोवो और घोड़े को देखा तो उसने बोवो को बुलाया और उसको हुक्म दिया कि वह उसके लड़ाई वाले घोड़े की देखभाल करे।

जब राजकुमारी द्रष्नेवना ने यह सुना तो उसने बोवो को बुलाया और उससे कहा कि वह उस घोड़े को पालतू बनाने का काम कैसे ले

सकता है क्योंकि उसके गुस्से की वजह से यह काम अभी तक कभी किसी ने लिया ही नहीं था।

बोवो बोला — "ओ राजकुमारी जी। यह घोड़ा राजा मार्कोब्रून घोड़ों की देखभाल करने वालों के लिये भयानक है जो इस पर पहले कभी चढ़े ही नहीं हैं पर यह घोड़ा सैन्सिब्री अन्द्रोनोविच के राज्य में अपने ऊपर पुराने चढ़ने वाले के लिये वैसा नहीं है और यह तो उसका हुक्म भी मानता है।

इस घोड़े ने मुझे दूर से पहचान लिया है और आपने जिसने मुझसे तीन बार बात की है मुझे नहीं पहचाना कि मैं बोवो कोरोलेविच हूँ।"

ऐसा कह कर वह जाने लगा पर राजकुमारी ने उसे रोक लिया — "ओ बूढ़े तुम मुझे ऐसी बेवकूफी की बातें कर के परेशान मत करो और न ही मेरे दुख का मजाक उड़ाओ। मैं बोवो कोरोलेविच को बहुत अच्छी तरह से जानती हूँ। वह तो जवान है और बहुत सुन्दर है पर तुम तो बूढ़े हो और तुम्हारे तो बाल भी सफेद हैं।"

बोवो बोला — "अगर आपको मेरी बात पर विश्वास नहीं होता तो आप थोड़ा पानी मँगवाऐं और फिर देखें कि मैं सच बोल रहा हूँ या नहीं।"

सो राजकुमारी ने अपने नौकरों से पानी लाने के लिये कहा तो वे एक बड़े से बर्तन में पानी ले आये। बोवो ने उस बूढ़े का दिया हुआ पाउडर उस पानी में मिलाया और द्रष्नेवना के सामने ही उससे

नहाया तो तुरन्त ही वह पहले की तरह से जवान और सुन्दर हो गया।

जब राजकुमारी ने उसको देखा तो वह तो खुशी के मारे उछल पड़ी और बोवो के गले में अपनी बॉहें डाल दीं और बोली — “ओ मेरे दोस्त बोवो कोरोलेविच, केवल तुम्हारे लिये मैंने तीन साल तक अपने पिता का हुक्म नहीं माना और राजा मार्कोब्रून की बात सुनी।

पर बहुत दिनों तक तुम्हारे बारे में कुछ न सुनने की वजह से मुझे लगा कि तुम मर गये हो सो अपनी इच्छा के खिलाफ मजबूरन मुझे मार्कोब्रून के साथ उसके राज्य आना पड़ा।

यहॉ आ कर भी मैं राजा मार्कोब्रून को हर दिन इस उम्मीद में टालती आ रही हूँ कि शायद कभी मुझे तुम्हारी कोई खबर मिल जाये। पर अब जब मैं तुम्हें अपने सामने देख रही हूँ तो मैं मार्कोब्रून को सीधे सीधे मना कर सकती हूँ और तुम्हारे साथ दुनियॉ में कहीं भी जा सकती हूँ।”

बोवो कोरोलेविच बोला — “मेरी प्यारी द्रष्नेवना, तुम मेरी बहादुरी पर भरोसा कर सकती हो। पर हम अब यह जगह खुले रूप से नहीं छोड़ सकते क्योंकि एक तो मार्कोब्रून के सिपाही लोग सारे में घूम रहे हैं। और दूसरे शहर में इतने सारे आदमी हैं जिनको दसियों ताकतवर नाइट्स भी नहीं मार सकते।

पर यह पाउडर लो और इसको मार्कोब्रून के किसी पेय में मिला देना। उसको पी कर वह नौ दिन के लिये सो जायेगा और इस बीच हम उसके राज्य से भाग जायेंगे।”

जैसे ही बोवो ने राजकुमारी से यह कहा और वह उसको पाउडर दे कर गया राजा मार्कोब्रून वहाँ आ गया। राजकुमारी द्रष्नेवना ने उससे प्यार से और बहुत ही मुलायमियत से बात की और चाँदी की एक तश्तरी में उसके लिये एक गिलास मीठा पानी ले कर आयी।

उस पानी में उसने सोने वाला पाउडर मिलाया और उसको पीने को दिया। मार्कोब्रून उसकी सुन्दरता पर मोहित हो कर वह पानी पी गया। तुरन्त ही उस पाउडर के असर से वह सो गया।

राजकुमारी द्रष्नेवना बाहर गयी और अपने वफादार नौकरों से एक बहुत अच्छा थैला और बोवो कोरोलेविच के लिये एक शाही घोड़ा लाने के लिये कहा। उसने बोवो को एक बहुत अच्छा जिरहबख्तर दिया और रात के अँधेरे में दोनों उस घोड़े पर सवार हो कर उस राज्य से भाग निकले।

तीन दिन तक वे बिना रुके हुए घोड़े पर चलते रहे। चौथे दिन उन्होंने एक सुन्दर सी जगह देखी जहाँ एक साफ पानी की नदी बह रही थी। उन्होंने वहीं अपन तम्बू गाड़ दिया और थके होने की वजह से तुरन्त ही सो गये।

एक बहुत सुन्दर सुबह को जब बोवो अपने घोड़े को पानी पिला रहा था कि अचानक ही घोड़ा हिनहिनाने लगा और जमीन पर अपने पैर पटकने लगा। इससे बोवो को समझ में आ गया कि उसका दुश्मन वहीं कहीं पास में ही था।

तुरन्त ही उसने अपने घोड़े पर जीन कसी, अपना जिरहबख्तर पहना, अपनी कमर में अपनी लड़ाई वाली तलवार लटकायी, अपने तम्बू में घुसा और राजकुमारी द्रष्नेवना से विदा लेते हुए बोला — "प्रिय राजकुमारी मैं एक बहुत बड़ी सेना से लड़ने के लिये बाहर जा रहा हूँ। पर मेरे लिये दुख नहीं करना। सूरज छिपने से पहले पहले ही मैं उन लोगों को जीत कर तुम्हारे पास लौट आऊँगा।"

ऐसा कह कर वह दुश्मनों से लड़ने चला गया। वहाँ उसने सबको हरा दिया केवल तीन आदमी बच गये।

और जब उसने यह सुना कि यह सेना राजा मार्कोब्रून ने उसका पीछा करने के लिये भेजी हुई थी तो उसने उन तीनों नाइट्स से कहा — "राजा मार्कोब्रून से कहना कि वह मेरा पीछा न करे कहीं ऐसा न हो कि उसको अपनी सारी सेना खोनी पड़े क्योंकि उसको अच्छी तरह मालूम है कि मैं कौन हूँ।"

इस पर वे तीनों नाइट्स अपने राजा के पास वापस चले गये और राजा को बताया कि बोवो ने उसकी **300** हजार लोगों की सेना मार दी है और उनमें से केवल वे ही तीन बचे हैं।

तब मार्कोब्रून ने बिगुल बजाने का हुक्म दिया और चार मिलियन लोगों की सेना को तैयार होने का हुक्म दिया और अपने बोयर्स से कहा — "मेरे वफादार नौकरों, बोवो का पीछा करो और उसको और द्रष्नेवना को मेरे पास ज़िन्दा ले कर आओ।"

सारा राज्य एक आवाज में बोला — "हमारे मालिक और राजा, आपके पास एक नाइट है पोलकान[103] जो कई सालों से जेल में पड़ा है। शायद वह बोवो को जीत सके क्योंकि केवल वही एक ऐसा आदमी है जो एक कूद में सात वर्स्त[104] जा सकता है। सिर से कमर तक तो वह आदमी की शक्ल में है कमर से नीचे वह घोड़े की शक्ल में है।"

नाइट्स से यह सुन कर मार्कोब्रून ने तुरन्त ही पोलकान को बुलवा भेजा। उसके आने पर उससे कहा — "जनाब पोलकान, बोवो कोरोलेविच के पीछे जाओ और उसको और द्रष्नेवना को मेरे पास ले कर आओ।"

पोलकान ने उसके हुक्म का पालन करने का वायदा किया और बोवो और राजकुमारी को पकड़ने के लिये उनके पीछे चल दिया।

एक दिन बोवो अपने तम्बू के पास मैदान में टहल रहा था कि उसने पोलकान के भाग कर आने की आवाज सुनी तो वह अपने तम्बू में गया और द्रष्नेवना से बोला — "राजकुमारी जी मुझे एक

---

[103] Polkan – a being half man above the waist and half horse below the waist.

[104] Verst is Russian measure of length – 0.66 mile or 1.1 Kms.

बहुत ही ताकतवर नाइट के आने की आवाज सुनायी पड़ रही है जो मार्कोब्रून के राज्य से इसी तरफ चला आ रहा है। पर मुझे यह नहीं मालूम कि वह कोई दोस्त है या दुश्मन।"

द्रष्नेवना बोली — "इसमें कोई शक नहीं है कि यह जरूर ही कोई मार्कोब्रून का भेजा हुआ आदमी है जो उसने हमारा पीछा करने के लिये भेजा है। और जहाँ तक मेरा ख्याल है यह पोलकान ही होगा जो एक बार में सात वर्स्त की कूद लगा सकता है। वह तो हमको बहुत जल्दी पकड़ लेगा।"

बोवो ने अपनी लड़ाई वाली तलवार ली अपने घोड़े पर चढ़ा और आगे बढ़ चला। पोलकान उसे रास्ते में ही मिल गया। पोलकान चिल्ला कर उससे बोला — "अरे ओ गधे अब तुम मेरे हाथ से बच नहीं सकते।"

ऐसा कह कर उसने 100 साल पुराना ओक का एक पेड़ जड़ से उखाड़ा और उससे बोवो के सिर पर वार किया पर बोवो तो उसके इस वार से हिला भी नहीं। उसने दोनों हाथों से अपनी तलवार पकड़ी और पोलकान को मारने के लिये उसे उठाया पर उसका निशाना चूक गया और उसकी तलवार जमीन में आधी घुस गयी। बोवो अपने घोड़े से गिर गया।

पोलकान ने उसका घोड़ा पकड़ लिया पर घोड़े ने अपने पैरों से उससे लड़ना और अपने दाँतों से उसे काटना शुरू कर दिया यहाँ तक कि पोलकान वहाँ से भाग लिया।

घोड़े ने उसका पीछा किया जब तक कि पोलकान और नहीं भाग सका और वह अधमरा हो कर बोवो कोरोलेविच के तम्बू के पास नहीं गिर पड़ा।

बोवो पोलकान के पास गया और उससे पूछा कि वह ज़िन्दा रहना चाहता है या मरना चाहता है। पोलकान बोला — "भाई बोवो हमको आपस में दोस्ती कर लेनी चाहिये और भाइयों की तरह से रहना चाहिये। अगर हम ऐसा कर लें तो फिर इस इतनी बड़ी दुनियाँ में हमारे मुकाबले का कोई नहीं रहेगा।"

सो बोवो ने पोलकान के साथ यह समझौता कर लिया और बोवो बड़ा भाई बन गया और पोलकान छोटा भाई बन गया।

फिर बोवो अपने बढ़िया वाले घोड़े पर चढ़ा द्रुष्नेवना अपने मामूली घोड़े पर चढ़ी और पोलकान उनके पीछे पीछे चल दिया। इस तरह वे बहुत दूर तक और बहुत समय तक चले।

वे अब कोस्तल शहर[105] आ पहुँचे थे जहाँ ज़ार यूरिल[106] राज्य करता था। जब ज़ार यूरिल ने उनके आने की खबर सुनी तो उसने अपने शहर के दरवाजे जल्दी से बन्द करने का हुक्म दिया।

पर पोलकान भागा और शहर की दीवार के ऊपर से कूद कर शहर के दरवाजे खोल दिये। बोवो और द्रुष्नेवना दोनों शहर में अन्दर घुस गये।

---

[105] Kostel City

[106] Tsar Uril

ज़ार यूरिल ज़ारीना के साथ उनसे मिलने के लिये आया और इज़्ज़त के साथ उनको अपने महल में ले गया। वहॉ जा कर वे सब अच्छा खाना खाने में और आनन्द मनाने मे लग गये।

इधर मार्कोब्रून को पता चला कि बोवो और द्रष्नेवना कोस्तल शहर में हैं तो वह 300 हजार आदमी ले कर कोस्तल शहर की तरफ बढ़ा और ज़ार यूरिल को अपना एक दूत भेजा कि वह तुरन्त ही बोवो द्रष्नेवना और पोलकान को उसके हवाले कर दे।

यह सुन कर ज़ार यूरिल ने अपनी सेना इकट्ठी की साथ में अपने दो बेटे लिये और मार्कोब्रून से लड़ने जा पहुॅचा। हालॉकि वे बहुत बहादुरी से लड़े फिर भी मार्कोब्रून ने उनको लड़ाई के मैदान से उखाड़ फेंका। उसने ज़ार यूरिल और उसके दोनों बेटों को बन्दी बना लिया।

तब ज़ार यूरिल ने उसको बोवो द्रष्नेवना और पोलकान देने का वायदा किया और अपने दोनों बेटों को उसके पास बन्धक छोड़ दिया। सो मार्कोब्रून ने ज़ार यूरिल को छोड़ दिया और उसको अपने सेना में से डेढ़ मिलियन सेना बोवो और पोलकान को लाने के लिये दे दी।

तब ज़ार यूरिल अपने कमरे में सोने के लिये जा कर लेट गया पर पोलकान उसके दरवाजे के पास यह सुनने के लिये आया कि ज़ार अपनी पत्नी से क्या कहता है।

ज़ार यूरिल ने ज़ारीना को बताया कि कैसे वह राजा मार्कोब्रून के पास अपने दोनों बेटे बन्धक रख आया है और उसको बोवो द्रष्नेवना और पोलकान देने का वायदा कर आया है।

इस पर ज़ारीना बोली — "प्रिय उनको देना नामुमकिन है।"

यह सुन कर ज़ार यूरिल ने उसके गाल पर हल्की सी चपत लगायी और बोला — "स्त्रियों के बाल तो लम्बे होते हैं पर उनको अक्ल कम होती है।"

जब पोलकान ने यह सुना तो वह बहुत नाराज हुआ। वह दरवाजा खोल कर कमरे में घुस गया। उसने ज़ार यूरिल को उसके सिर से पकड़ कर जमीन पर पटक दिया और मार दिया।

पोलकान ने बाहर देखा तो उसने देखा कि चारों ओर मार्कोब्रून के सिपाही भरे पड़े थे। सो उसने बिना किसी हिचक के बोवो की तलवार उठायी और दस हजार लोगों को मार दिया। बाकी बचे लोगों को शहर के बाहर खदेड़ दिया।

यह सब कर के उसने शहर के दरवाजे बन्द किये और उनकी कस कर चटखनी लगा दी। फिर वह अपने किले में लौट आया और बोवो कोरोलेविच को जगाया और उसे सब कुछ बताया कि क्या हुआ था। बोवो ने उसे गले लगाया और उसको उसकी वफादार सेवाओं के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

उसके बाद दोनों ने अपने अपने हथियार लिये और मार्कोब्रून की सेना का सामना करने के लिये शहर के बाहर निकल गये। बोवो

दॉयी तरफ गया और पोलकान बॉयी तरफ। उन दोनों ने सारी सेना को तितर बितर कर दिया और ज़ार यूरिल के दोनों बेटों को छुड़ा लाये।

राजा मार्कोब्रून सैदोनिक राज्य में भाग गया। उसने उसके बच्चों ने और उसके पोतों ने कसम खायी कि वे आगे से बोवो का पीछा नहीं करेंगे।

बोवो और पोलकान ज़ार यूरिल के बेटों को ले कर कोस्तल शहर लौटे और जब वे किले में आये तो बोवो ने ज़ारीना से कहा — "ज़ारीना ये आपके बच्चे हैं।"

ज़ार यूरिल की जो सेना बच गयी थी बोवो ने उससे कहा कि वह यूरिल के बेटों की वफादार रहे और इस तरह से पहले के तरीके से ही राजकाज चलने लगा।

तब बोवो पोलकान और राजकुमारी द्रष्नेवना के साथ अपने नौकर सिम्बाल्दा के पास सुमीन शहर लौट पड़ा ताकि वह वहॉ राजा दादौं के खिलाफ एक छोटी सी सेना बना सके और उसको अन्तोन शहर से निकाल बाहर कर सके।

वे लोग बहुत देर तक चलते रहे। आखिर वे एक घास के मैदान में आ कर रुके और वहॉ अपने आराम करने के लिये सफेद तम्बू लगाये। द्रष्नेवना ने यहॉ दो बेटों को जन्म दिया। बोवो ने एक का नाम रखा लिचारदा और दूसरे का नाम रखा सिम्बाल्दा।

एक दिन जब बोवो पोलकान के साथ अपने तम्बू के आसपास घूम रहा था तो दूर उन्होंने धूल का एक घना बादल देखा।

बोवो पोलकान से बोला — "जल्दी करो पोलकान और देख कर बताओ कि क्या यह कोई सेना आ रही है। या फिर कोई बहादुर नाइट इस रास्ते से हो कर जा रहा है।" पोलकान यह सुन कर बाहर की तरफ गया और कुछ सिपाहियों को बॉध कर ले आया।

बोवो ने उनसे पूछा — "तुम लोग मुझे बिना किसी झिझक के बताओ कि तुमको किस राजा ने किस देश से भेजा है। तुम्हारा राजा कौन है और उसने तुम्हें किस लिये भेजा है।"

सिपाहियों ने जवाब दिया — ओ बहादुर नाइट, हमें राजा दादौं ने एक बहुत बड़ी सेना के साथ अरमेनिया के राज्य ज़ार सैन्सिब्री अन्द्रोनोविच के पास अपने सौतेले बेटे को लाने भेजा है जो बचपन में ही भाग गया था। हमारे राजा का नाम दादौं है और उसके सौतेले बेटे का नाम बोवो है।"

"मुझे देखो और अपनी सेना के कमान्डर से कहो कि वे अरमेनिया राज्य न जायें पर उस जगह पर मेरा इन्तजार करें जहॉ तुम लोग उससे मिलोगे। मैं ही बोवो कोरोलेविच हूँ और तुरन्त ही तुम्हारी सेना को देखने के लिये आता हूँ।"

ऐसा कह कर बोवो ने उन कैदियों को वापस भेज दिया और पोलकान से कहा — "दोस्त अब मैं राजा दादों की सेना से लड़ने जाता हूँ जिसको उसने मुझे पकड़ने के लिये भेजा है।

मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम दुश्मनों और जंगली जानवरों से मेरी पत्नी की रक्षा करने के लिये मेरे तम्बू के पास ही रहना। पर मेरी पत्नी से यह नहीं कहना कि मैं लड़ाई लड़ने गया हूँ।

क्योंकि मैं बहुत जल्दी ही तुम्हारी वफादार सेवाओं का इनाम देने के लिये वापस आता हूँ। और अगर जरूरत पड़ी तो मैं तुम्हारे लिये अपनी जान भी दे दूँगा।"

ऐसा कह कर बोवो ने पोलकान से विदा ली अपने घोड़े पर चढ़ा और राजा दादों की सेना का मुकाबला करने चला गया। वहाँ जा कर उसने अपनी तलवार दाँये बाँये घुमानी शुरू की और बहुत सारे सिपाहियों को मार डाला केवल कुछ ही सिपाही बचे। वे अपने घुटनों पर गिर कर बोवो से दया की भीख माँगने लगे।

जब बोवो यहाँ सिपाहियों के साथ यह सब कर रहा था तो द्रष्नेवना अपने तम्बू में बैठी हुई थी। कि दो बड़े शेर जंगल में से दौड़ते हुए आये और पोलकान की तरफ उसको फाड़ खाने के लिये दौड़े।

पोलकान ने बड़ी बहादुरी से उनका सामना किया और एक शेर को एक ही वार में मार दिया। पर दूसरे शेर को वह इतनी आसानी से नहीं जीत सका। काफी देर की लड़ाई के बाद दोनों ही मर गये।

कुछ देर के बाद ही द्रष्नेवना अपने तम्बू से बाहर निकली तो उसने क्या देखा कि पोलकान और शेर दोनों मरे पड़े हैं। उसको लगा कि इन जंगली जानवरों ने बोवो को भी मार दिया होगा।

बस उसने अपने दोनों बेटों को उठाया अपने घोड़े पर बैठी जो उसके तम्बू से बॅधा हुआ था और उस डरावनी जगह से जितनी तेज़ भाग सकती थी भाग ली।

जब द्रष्नेवना ज़ार सलतान सलतानोविच के शहर आयी तो वह अपने घोड़े से उतरी और उसे यह कहते हुए खुला छोड़ दिया — "जाओ अब तुम जहॉ चाहे जाओ जब तक तुम्हें तुम्हारा कोई अच्छा मालिक न मिल जाये।"

फिर वह एक नदी के किनारे गयी और काले पाउडर से नहायी तो अचानक ही काले रंग की एक थकी हुई स्त्री बन गयी और अपने इसी रूप में वह शहर की ओर चल दी।

इधर बोवो कोरोलेविच राजा दादों की सेना को नष्ट करने के बाद अपने तम्बू की तरफ लौटा जहॉ वह अपने पत्नी और बच्चों को अपने साथ सुमीन शहर ले जाने के लिये छोड़ गया था।

जब वह अपने तम्बू के पास आया तो वह तो यह देख कर बहुत डर गया कि वहॉ तो पोलकान और शेरों के मरे हुए शरीर पड़े थे। इसके अलावा द्रष्नेवना और बच्चों को भी वहॉ न देख कर उसको लगा कि शेरों ने पोलकान और उसकी पत्नी दोनों को मार डाला है।

इससे बोवो का दिल बहुत दुखी हो गया और इसके लिये उस खराब जगह पर बहुत देर तक बहुत ज़ोर से रोने के बाद वह अपने वफादार नौकर सिम्बाल्दा के पास सुमीन शहर चल पड़ा।

जब वह सुमीन शहर आया तो सिम्बाल्दा ने उसका बहुत ज़ोर शोर से स्वागत किया। बोवो ने आ कर एक सेना बनायी सिम्बाल्दा के बेटे तरविस[107] को लिया और अन्तोन शहर पर हमला करने चल दिया।

इस समय राजा दादौं अन्तोन शहर में ही रह रहा था। यहाँ उसको कोई चिन्ता नहीं थी कोई परेशानी नहीं थी। वह पल पल वहाँ राजा सैन्सिब्री के बोवो को वापस कर देने का इन्तजार कर रहा था। उसको तो यह सपने में भी यह अन्दाज़ नहीं था कि उसकी भेजी सेना नष्ट कर दी गयी है।

कि अचानक कुछ लोग उसके पास यह कहने के लिये दौड़े हुए आये कि बोवो कोरोलेविच अन्तोन शहर के ऊपर चारों तरफ से कब्जा कर रहा है। जब राजा दादौं ने यह सुना तो उसने तुरन्त ही अपनी पूरी सेना को इकट्ठी होने का हुक्म दिया। उसने तीन सौ हजार सिपाहियों की सेना इकट्ठी की और लड़ाई के लिये चल दिया।

पर बोवो बेकार में ही खून बहाना नहीं चाहता था सो उसने अपने सारे सिपाहियों को वहीं उसी जगह खड़े रहने का हुक्म दिया।

---

[107] Tervis – name of Simbalda's son

इतने में उसने देखा कि राजा दादौं अपने घोड़े पर सवार उसी की तरफ चला आ रहा है। उसने तुरन्त ही राजा दादौं के सिर पर वार किया। हालाँकि वह वार हल्का ही था पर उसने उसकी खोपड़ी तोड़ दी और दादौं मर कर अपने घोड़े से गिर पड़ा।

बोवो ने उसके शरीर को वहाँ से अन्तोन शहर ले जाने हुक्म दिया ताकि रानी मिलित्रीसा खुद अपनी आँखों से उसका अन्त देख सके।

इस बीच वह अपने पिता की कब्र पर गया और वहाँ जा कर बहुत देर तक रोता रहा। फिर वह सुमीन शहर चला गया।

जब राजा दादौं का शरीर रानी मिलित्रीसा के पास लाया गया तो उसको देख कर तो वह बहुत ज़ोर से रो पड़ी। वह इतना रोयी कि उसके आँसुओं से राजा का खून भी धुल गया। तब उसको लगा कि राजा तो अभी भी ज़िन्दा है।

उसने तुरन्त ही अपने वफादार नौकरों को राजा दादौं का इलाज करने के लिये डाक्टर लाने के लिये सब राज्यों में भेजा और उनसे कहा कि वह उनको बहुत सारा इनाम देगी।

जब बोवो को यह पता चला कि राजा दादौं अभी भी ज़िन्दा है और रानी मिलित्रीसा ने उसके लिये डाक्टर बुलवाये हैं तो उसने खुद ही डाक्टर बन कर राजा दादौं को मारने के लिये अन्तोन शहर जाने का फैसला किया।

वह तुरन्त ही काले पाउडर से नहाया तो वह तुरन्त ही एक बूढ़े के रूप में बदल गया। उसने एक डाक्टर के से कपड़े पहने तरविस[108] और अपनी तलवार अपने साथ ली और अन्तोन शहर चल दिया।

बोवो ने राजा दादों को कहलवाया कि विदेश से कुछ डाक्टर उसके घावों का इलाज करने आये हैं। जब राजा ने यह सुना तो उसने तुरन्त ही हुक्म दिया कि उन अजनबियों को उसके समाने लाया जाये। और उसने यह वायदा भी किया कि अगर उन्होंने उसके घाव ठीक कर दिये तो उनको भारी इनाम मिलेगा।

सो बोवो कोरोलेविच उसके सामने पहुँचा और जा कर सिर झुकाया और कहा कि वह राजा का इलाज बहुत जल्दी कर देगा पर उसके आसपास जो लोग वहाँ खड़े हैं वे वहाँ से चले जायें और राजा को उसके साथ अकेला छोड़ दें।

राजा दादों तुरन्त ही राजी हो गया। जैसे ही राजा दादों वहाँ अकेला रह गया बोवो ने उसको उसकी दाढ़ी से पकड़ लिया। अपने कोट के अन्दर से तलवार निकाली और बोला — "ओ दुश्मन, रानी मिलित्रीसा की सुन्दरता के असर में आ कर जो तूने मेरे पिता का खून किया अब उसका इनाम ले।"

---

[108] Tervis – the son of Bova's servant Simbalda

ऐसा कह कर बोवो ने राजा दादों का सिर काट दिया और उसे एक चाँदी की तश्तरी में रख दिया। फिर वह अपनी माँ मिलित्रीसा के पास गया।

जब वह उसके कमरे में घुसा तो उसने उससे कहा — "मेरी आदरणीय माँ, मैं आपको यह बताने आया हूँ कि आपके प्यारे पति के घाव अब ठीक हो गये हैं। और यह बताने के लिये उन्होंने हमें अब इस भेंट के साथ यहाँ भेजा है।"

कह कर उसने वह चाँदी की तश्तरी उसके हाथ में रख दी जिसमें राजा दादों का सिर रखा हुआ था।

जैसे ही रानी मिलित्रीसा ने उस चाँदी की तश्तरी पर से कपड़ा हटाया तो वह तो उसे देख कर इतनी डर गयी कि कुछ देर तक तो वह कुछ बोल ही नहीं सकी। काफी देर बाद उसने अपने सिर के बाल नोचने और कपड़े फाड़ने शुरू किये।

उसने उसी समय यह कसम खायी कि वह उसको राजा दादों को मारने के लिये और अपने आपको उसका बेटा कहने के लिये बोवो कोरोलेविच को मार कर ही रहेगी।

तब बोवो ने थोड़ा सा पानी लिया और सफेद पाउडर से नहाया धोया जिससे वह फिर से जवान और सुन्दर हो गया। रानी मिलित्रीसा ने उसको पहचान लिया। वह उसके पैरों पर गिर गयी और उससे माफी माँगने लगी।

पर बोवो ने तरविस को हुक्म दिया कि वह रानी मिलित्रीसा को ले जा कर एक बक्से में कीलों से गाड़ दे और समुद्र में फेंक दे।

यह कर के उसने सारे बोयर्स को राजकुमारों को वहाँ बुलाया और बताया कि वह बोवो कोरोलेविच है अपने पिता राजा गिदों की राजगद्दी का सच्चा मालिक। वह अभी विदेश से लौट कर आया है और उनसे उनकी वफादारी चाहता है।

सारे बोयर्स और राजकुमारों ने तुरन्त ही बोवो के प्रति वफादार रहने की कसम खायी और उसके शुभ राजतिलक की कामना की। उसके बाद राजा ने एक पूरे महीने तक दावत खाने और खुशियाँ मनाने का हुक्म दिया।

इन सब दावतों और खुशियाँ मनाने के बाद बोवो ने सलतान सलतानोविच के पास कुछ भेंट ले कर अपना एक दूत भेजा और उसकी बेटी राजकुमारी मिलिहेरिया का हाथ माँगा। क्योंकि उसको लग रहा था कि द्रष्नेवना को तो शेर फाड़ कर खा गये हैं।

सो सलतान ने अपनी बेटी को बुलाया और कहा — "मेरी बच्ची, मुझे अभी अभी उस नाइट की चिट्ठी मिली है जिसको तुमने जेल में बन्द कर दिया था और जिसका तुमने धर्म बदलने की कोशिश की थी।

वह एक राजा का बेटा है और अब अपने राज्य पर राज कर रहा है। उसने मुझे कुछ भेंट भेजी है और तुम्हारा हाथ माँगा है। अब तुम मुझे बताओ कि तुम्हारी क्या मर्जी है।"

यह सुन कर राजकुमारी मिलिहेरिया तो बहुत खुश हो गयी और बोली कि वह अपने पिता का हुक्म मानने के लिये बिल्कुल तैयार है। सलतान ने उसी दिन दूत से भेंट ली और यात्रा की तैयारियाँ शुरू कर दीं।

इधर जब यह सब चल रहा था तो द्रष्नेवना भी उसी शहर में रह रही थी। वह दूसरों के कपड़े धो धो कर अपना पेट पाल रही थी और इस तरह से अपने दोनों बेटों को बड़ा कर रही थी जो केवल दिन ब दिन ही नहीं बल्कि हर घंटे बढ़ रहे थे। उसके बच्चे बहुत सुन्दर थे।

उसने सोचा ही नहीं था कि बोवो कोरोलेविच अभी ज़िन्दा होगा पर जब इत्तफाक से उसने सुना कि उसने ज़ार सलतान को उसकी बेटी का हाथ माँगने के लिये एक दूत भेजा है और सलतान ने उसकी माँग स्वीकार कर ली है।

तो उसने अपने दोनों बेटों को लिया और अन्तोन शहर गयी जहाँ वह राज करता था। वह बहुत धीरे धीरे जा रही थी क्योंकि वह बहुत थक गयी थी।

आखिर वह उसी दिन वहाँ आ पहुँची जिस दिन बोवो की शादी राजकुमारी मिलिहेरिया से होने वाली थी। उसने सफेद पाउडर से नहाया धोया जिससे वह फिर से बहुत सुन्दर हो गयी।

उसने अपने दोनों बेटों को बोवो कोरोलेविच से मिलने के लिये महल में भेजा और उनसे अपना हाल और कारनामे बताने के लिये कहा।

लिचारदा और सिम्बाल्दा वहाँ जा कर खड़े हो गये जहाँ से बोवो अपने बोयर्स और राजकुमारों के साथ खाना खाने के लिये गुजरने वाला था।

जब वह अपने महल में घुसने वाला था कि उसकी नजर उन दोनों लड़कों पर पड़ी तो उसने पूछा कि वे दोनों लड़के कौन थे और वे वहाँ किसका इन्तजार कर रहे थे।

तो उसके बड़े बेटे ने उसको सिर झुकाया और बोला — "हम ओ राजा सारी दुनियाँ के एक बहुत बड़े मशहूर नाइट और हीरो बोवो कोरोलेविच और सुन्दर रानी द्रष्नेवना के बेटे हैं। हमारे प्यारे पिता ने हमें तभी एक खुले मैदान में एक तम्बू में हमारी माँ और पोलकान के साथ छोड़ दिया था जब हम बहुत छोटे थे।

पोलकान को शेर ने मार डाला था पर हम लोग अपनी माँ के साथ उस जगह से भाग निकले और तबसे हम अपने पिता की तलाश में कई देशों में इधर उधर घूम ही रहे हैं।"

यह सुन कर बोवो तो बहुत खुश हो गया उसने तुरन्त ही उनको गले से लगा लिया — "मेरे बच्चों मेरे बच्चों मैं ही तुम्हारा पिता हूँ मुझे तो यह बिल्कुल उम्मीद ही नहीं थी कि मैं तुमको फिर

से ज़िन्दा भी देख पाऊँगा। पर मेरी प्यारी पत्नी कहाँ है, तुम्हारी माँ?"

तब लिचारदा ने उसको बताया कि वे उसको कहाँ छोड़ कर आये थे। बोवो ने तुरन्त ही अपने कुछ बोयर्स को उसको अपने महल लाने के लिये भेजा।

जब बोवो ने उसे फिर से देखा तो वह तो बहुत ही खुश हो गया। इस अचानक खुशी में उसने दुगुनी दावत का हुक्म दिया। उसने दो महीने के टैक्स भी अपनी जनता को माफ कर दिये।

खुश हो कर उसने अपने वफादार नौकर सिम्बाल्दा को कई शहर दे दिये। और उसके बेटे तरविस को उसने राजकुमारी मिलिहेरिया सल्तानोवना दे दी।

फिर उसने उन दोनों को मिलिहेरिया के पिता के पास भेज दिया कि वे अपने दामाद को बहुत प्यार करें और इज़्ज़त दें। साथ में उसने यह भी कहा कि उसके लिये यह शादी करना नामुमकिन हो गया था क्योंकि उसकी अपनी पत्नी द्रष्नेवना वापस आ गयी थी।

तब बोवो और सिम्बाल्दा का भाई ओहैन[109] एक सेना के साथ औरलौप से जीतने के लिये अरमेनियन राज्य गये। बोवो ने औरलौप को मरवा दिया और वहाँ का राज्य ओहैन और उसके वारिसों को दे दिया।

---

[109] Ohen was the brother of Simbalda, the faithful servant of Bovo

पर वह खुद अन्तोन शहर में ही रहा और वहाँ उसने खुशी खुशी बहुत दिनों तक राज किया।

8 सीधा आदमी और उसकी चालाक पत्नी[110]

एक बार की बात है कि रूस के एक गॉव में एक किसान और उसकी पत्नी रहते थे। वे बहुत गरीब थे। उनमें पति तो बछड़े की तरह सीधा था जबकि उसकी पत्नी सॉप की तरह से चालाक थी। वह अपने पति को छोटी छोटी बातों पर बुरा भला कहती रहती थी।

एक दिन डबल रोटी बनाने के लिये वह अपनी पड़ोसन से कुछ मक्का मॉग कर लायी। वह मक्का उसने अपने पति को पिसवाने के लिये चक्की पर ले जाने के लिये दी।

चक्की वाले ने मक्का पीस दी पर उससे उनकी गरीबी की वजह से उसकी पिसाई के कुछ भी पैसे नहीं लिये। किसान अपना आटे से भरा बर्तन सिर पर रख कर घर लौटने लगा कि अचानक बहुत तेज़ हवा चल निकली और एक पल में ही बर्तन में से उसका सारा आटा उड़ गया।

वह घर गया और सारी बात अपनी पत्नी को बतायी। पत्नी तो यह सुन कर बहुत गुस्सा हो गयी। उसने अपने पति को केवल बहुत डॉटा ही नहीं बल्कि उसको बड़ी बेरहमी से पीटा भी। वह उसको बराबर धमकी भी देती रही।

---

[110] The Mild Man and His Cantankerous Wife (Tale No 8)
https://www.worldoftales.com/European_folktales/Russian_Folktale_1.html

आखिर जब वह यह करते करते थक गयी तब उसने उसको हवा के पास जाने के लिये कहा जिसने उनका आटा उड़ाया था और कहा कि वह हवा से या तो उसके बदले में पैसे माँग कर लाये या फिर उतना ही आटा ले कर आये जितना कि उसके बर्तन में था।

बेचारा किसान जिसकी हड्डियाँ अब तक पत्नी की मार से दुख रही थीं रोता हुआ और अपने हाथों को मलता हुआ घर से बाहर चल दिया। पर वह किधर को जाये यह उसको पता नहीं था।

चलते चलते आखिर वह एक बड़े अँधेरे जंगल में आ गया जिसमें वह इधर उधर घूमता रहा। काफी देर तक इधर उधर घूमने के बाद उसको एक बुढ़िया मिली।

वह बोली — "ओ भले आदमी तुम कहाँ जा रहे हो और यहाँ इस अँधेरे जंगल में अपना रास्ता कैसे ढूँढोगे। तुम इस देश में आये ही क्यों हो जहाँ कोई चिड़िया भी नहीं उड़ती और कोई जंगली जानवर भी कभी कभी ही दिखायी देता है।"

आदमी बोला — "ओ मेरी अच्छी माँ, मुझे यहाँ जबर्दस्ती खदेड़ा गया है। मैं कुछ मक्का ले कर उसे पिसवाने के लिये चक्की पर गया था।

जब उसका आटा पिस गया तो मैंने उसको अपने बर्तन में भर लिया और घर जाने लगा कि तभी बहुत ज़ोर से हवा चली और वह मेरे बर्तन का सारा आटा उड़ा कर ले गयी। जब मैं बिना आटे के

घर पहुँचा और अपनी पत्नी को सब बताया तो उसने मुझे खूब डाँटा और खूब मारा।

फिर उसने मुझे हवा को ढूँढने भेजा और कहा कि मैं उससे कहूँ कि या तो वह मेरा आटा वापस करे या फिर उसके बदले में पैसे दे। इसलिये मैं हवा को ढूँढता हुआ इधर उधर घूम रहा हूँ। मुझे यह भी नहीं पता कि वह मुझे कहाँ मिलेगा।"

बुढ़िया बोली — "आओ मेरे साथ आओ। मैं हवाओं की माँ हूँ। मेरे चार बेटे हैं – पहला है पूर्वी हवा, दूसरा है दक्षिणी हवा, तीसरा है पश्चिमी हवा और चौथा है उत्तरी हवा। अब मुझे यह बताओ कि कौन से हवा ने तुम्हारा आटा उड़ाया है?"

किसान बोला — "माँ दक्षिणी हवा ने।"

तब बुढ़िया उस किसान को उस जंगल में और अन्दर तक ले गयी और एक छोटे से मकान तक ले आयी और बोली — "देखो मैं यहाँ रहती हूँ ओ किसान, तुम यहाँ कम्बल लपेट कर अँगीठी के पास बैठ कर थोड़ा गर्म हो मेरे बच्चे अभी आते ही होंगे।"

"पर कम्बल में लिपट कर क्यों?"

"क्योंकि मेरा बेटा उत्तरी हवा बहुत ठंडा है वह जब आयेगा तो उसके आने से तुम जम जाओगे।"

कुछ देर बाद ही उस बुढ़िया के बेटे घर आने लगे। सबसे बाद में आया दक्षिणी हवा। बुढ़िया ने किसान को अँगीठी के पास से बुलाया और अपने बेटों से कहा — "दक्षिणी हवा मेरे बेटे, तुम्हारे

खिलाफ एक शिकायत आयी है। तुम गरीब लोगों को क्यों परेशान करते हो। तुमने इस आदमी के बर्तन से इसका आटा उड़ा दिया है। तो या तो इसको उसके बदले में पैसा दो या फिर जैसे तुम चाहो वैसे उसका बदला चुकाओ।"

दक्षिणी हवा ने जवाब दिया — "ठीक है माँ। मैं इसके आटे के बदले में इसको कुछ दूँगा।"

फिर उसने किसान को बुलाया — "सुनो ओ मेरे छोटे किसान लो यह टोकरी लो। इस टोकरी में वह सब कुछ है जिसकी इच्छा तुम कर सकते हो – पैसा रोटी सब तरीके का खाना पीना।

तुमको इससे बस यह कहना है "ओ टोकरी तुम मुझे यह दो या वह दो।" और यह टोकरी तुम्हारी हर इच्छा पूरी कर देगी। तुमको तुम्हारे आटे का बदला मिल गया अब तुम घर जाओ।"

किसान ने दक्षिणी हवा को सिर झुकाया और अपने घर की तरफ चल दिया। जब वह अपने घर वापस आया तो उसने वह टोकरी अपनी पत्नी को दे दी — "लो प्रिये यह टोकरी लो। यह टोकरी तुम्हारे लिये है। इसमें तुम्हारे लिये वह सब कुछ है जिसकी इच्छा तुम कर सकती हो। बस इससे वह माँग लो और यह टोकरी तुम्हें वह सब कुछ दे देगी।"

सो उस भली स्त्री ने वह टोकरी ली और बोली — "मुझे रोटी बनाने के लिये बहुत अच्छा सा आटा दो।"

तुरन्त ही टोकरी ने उसको उतना ही आटा दे दिया जितना उसको चाहिये था। फिर उसने उस टोकरी से कभी यह माँगा तो कभी वह माँगा और उस टोकरी ने उसको वह सब कुछ पल भर में ही दे दिया जो भी उसने उससे माँगा।

कुछ दिनों के बाद उधर से एक कुलीन आदमी गुजरा तो उस भली स्त्री ने अपने पति से कहा कि वह उसको अपने घर शाम को खाना खाने के लिये बुलाये। और अगर वह उसे नहीं लाया तो वह उसको इतना पीटेगी कि वह अधमरा हो जायेगा।

किसान बेचारा अपनी पत्नी की मार से डरता था सो वह गया और उस कुलीन आदमी को शाम के खाने के लिये बुलाने के लिये चला गया।

इस बीच उस भली स्त्री ने उस टोकरी से बहुत सारे तरीके के खाने और पीने की चीज़ें माँगीं और उनको मेज पर सजा दिया और खुद वह खिड़की के पास बैठ कर अपने हाथ अपने गोद में रख कर अपने पति और मेहमान का धीरज से इन्तजार करने लगी।

कुलीन आदमी को इस तरह से उस किसान के बुलावे को पा कर बहुत आश्चर्य हुआ। वह हँसा और किसान के साथ उसके घर नहीं गया।

बल्कि बजाय इसके कि वह खुद किसान के घर जाता उसने अपने नौकरों को जो उसके साथ थे हुक्म दिया कि वे किसान के

साथ उसके घर खाना खाने जायें और उसको आ कर बतायें कि उसने उनके साथ कैसा बर्ताव किया।

मालिक का हुक्म पा कर कुलीन आदमी के नौकर किसान के साथ उसके घर चले गये।

जब वे उसके मकान में घुसे तो वे तो बहुत ही आश्चर्यचकित रह गये। क्योंकि उसके मकान से तो ऐसा लगता था कि वह बहुत गरीब होगा पर उसके खाने की मेज पर जो खाना लगा था उससे तो वह ऐसा लगता था जैसे वह कोई बहुत बड़ा आदमी हो। वे खाना खाने बैठ गये और बहुत आनन्द से खाना खाया।

पर उन्होंने देखा कि किसान की पत्नी को जब भी कभी भी कोई भी खाना चाहिये होता था तो वह एक टोकरी से मॉग लेती थी और जो वह मॉगती थी वह उसको तुरन्त ही मिल जाता था।

यह देख कर वे सब वहॉ से एक साथ नहीं गये। उन्होंने किसान और उसकी पत्नी के जाने बिना छिप कर अपने एक साथी को घर भेजा ताकि वह जल्दी से जल्दी वैसी ही एक टोकरी ले कर वहॉ आये।

इस पर वह आदमी तुरन्त ही दौड़ा गया और वैसी ही एक टोकरी ले कर वहॉ लौटा जैसी कि उस किसान की पत्नी के पास थी। और जब वह उस टोकरी को ले कर लौटा तो मेहमानों ने चुपके से किसान की टोकरी उठायी और अपनी लायी टोकरी उसकी जगह रख दी।

फिर उन्होंने किसान और उसकी पत्नी से विदा ली और अपने मालिक के पास लौट गये। उन्होंने उसे जा कर बताया कि उसने उनकी कितने अच्छे तरीके से खातिरदारी की थी।

उनके जाने के बाद किसान की पत्नी ने बचा हुआ खाना फेंक दिया और अगले दिन के लिये ताजा खाना बनाने की सोची।

सो अगले दिन वह टोकरी के पास गयी और उससे खाना माँगना शुरू किया जो उसको चाहिये था पर उसने देखा कि उसकी टोकरी ने तो उसको कुछ भी नहीं दिया।

तो उसने अपने पति को बुलाया और बोली — "ओ बूढ़े सफेद दाढ़ी वाले, यह तुम मेरे लिये किस तरह की टोकरी ले कर आये हो। यह ठीक है कि इसने हमारी एक बार सेवा की है पर ऐसी टोकरी का क्या फायदा जो अब और कुछ नहीं देती।

तुम वापस हवा के पास जाओ और उससे हमारा आटा वापस करने के लिये कहो नहीं तो मैं तुम्हें मार मार कर मार दूँगी।"

सो बेचारा किसान हवा के पास फिर से गया। जब वह हवाओं की माँ बुढ़िया के पास पहुँचा तो उसने उससे अपनी पत्नी की शिकायत की। बुढ़िया ने कहा कि वह उसके बेटे का इन्तजार करे वह अब जल्दी ही आने वाला होगा।

दक्षिण हवा जल्दी ही आ गया तो किसान ने अपनी पत्नी की शिकायत उससे भी की। हवा बोला — "ओ बूढ़े मुझे बहुत अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि तुम्हारी पत्नी बहुत ही खराब

और नीच है फिर भी मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। इसके बाद वह तुम्हें फिर नहीं मारेगी।

तुम यह सन्दूकची लो और घर जाओ और जब तुम्हारी पत्नी तुम्हारी पिटायी करे तो अपने सामने यह सन्दूकची रख लेना और ज़ोर से बोलना "पाँच सन्दूकची से बाहर निकलो और मेरी पत्नी को मारो।" और जब वे उसको खूब मार चुकें तब बोलना "पाँचों सन्दूकची के अन्दर जाओ।"

किसान ने हवा को बहुत नीचे तक सिर झुकाया और अपने घर चला गया।

जब वह घर आया तो वह बोला — "प्रिये देखो अबकी बार मैं तुम्हारे लिये बजाय टोकरी के एक सन्दूकची ले कर आया हूँ।"

यह सुन कर तो वह भली स्त्री और ज़्यादा गुस्से से भर गयी और बोली — "ओह सन्दूकची, वह तो ठीक है पर मैं इसका करूँगी क्या। तुम अपना आटा वापस क्यों नहीं लाये?"

कह कर उसने एक लोहे की सलाख उठा ली और उससे बूढ़े को मारने जा ही रही थी कि बूढ़ा चुपचाप सन्दूकची के पीछे खड़ा हुआ बोला "पाँच सन्दूकची से बाहर निकलो और मेरी पत्नी को मारो।"

पल भर में पाँच नौजवान उस सन्दूकची में से बाहर निकल पड़े और उसकी पत्नी को मारने लगे। और जब पति ने देखा कि उन्होंने उसकी पत्नी को काफी मार लिया और उसकी पत्नी उससे दया की

भीख मॉगने लगी तो वह बोला "पॉचों सन्दूकची के अन्दर जाओ।" तुरन्त ही वे पॉचों सन्दूकची में अन्दर चले गये।

अब किसान ने अपनी टोकरी के नुकसान के बारे में सोचा जिसे कुलीन आदमी के नौकर चुरा ले गये थे तो उसने सोचा कि वह उस कुलीन आदमी के पास जायेगा और अपने नुकसान की भरपाई करेगा। वह उसे लड़ने के लिये चुनौती देगा। सो वह उस कुलीन आदमी के पास पहुंच गया।

वहॉ जा कर उसने उसको लड़ाई की चुनौती दी तो वह आदमी किसान की बेवकूफी पर हॅसा फिर भी उसने उसको लड़ाई के लिये मना नहीं किया क्योंकि वह भी कुछ खेल खेलना चाहता था। उसने किसान को मैदान में आने के लिये कहा।

किसान ने भी अपनी सन्दूकची अपनी बगल में दबायी और मैदान में आ पहुॅचा और कुलीन आदमी का इन्तजार करने लगा।

कुलीन आदमी अपने कई नौकरों के साथ घोड़े पर सवार हो कर वहॉ आ पहुॅचा। और जब वह किसान के पास आया तो उसने अपने नौकरों को मजाक में हुक्म दिया कि वह किसान को मारें।

किसान ने देखा कि वे सब उसकी हॅसी उड़ा रहे थे और उसे मार रहे थे। यह देख कर वह कुलीन आदमी से बहुत गुस्सा हो गया और बोला — "आइये जनाब और मेरी टोकरी इसी समय मुझे वापस कर दीजिये नहीं तो आप सबका बहुत बुरा होगा। मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूॅ।"

फिर भी उन्होंने उसकी पिटायी करनी नहीं छोड़ी तो वह चिल्लाया “पॉच सन्दूकची से बाहर निकलो और इन सबको अच्छी तरह से मारो।”

तुरन्त ही उस सन्दूकची से पॉच मजबूत नौजवान बाहर निकल पड़े और उन्होंने कुलीन आदमी के नौकरों की पिटायी करनी शुरू कर दी।

कुलीन आदमी को लगा कि वे तो उन लोगों को मार ही डालेंगे सो वह अपनी पूरी ताकत लगा कर बोला — “रुक जाओ रुक जाओ ओ मेरे अच्छे दोस्त रुक जाओ, सुनो तो। तुम अपने आदमियों को रोको और इनको फिर से सन्दूकची में बन्द करो। मैं तुम्हारी टोकरी अभी देता हूँ।”

इस पर किसान बोला — “पॉचों सन्दूकची के अन्दर जाओ।”

यह सुन कर सन्दूकची में से निकले पॉचों आदमी सन्दूकची के अन्दर चले गये। कुलीन आदमी ने अपने नौकरों को किसान की टोकरी लाने का और उसको किसान को देने का हुक्म दिया। किसान ने अपनी टोकरी ली और अपने घर वापस चला गया।

उसके बाद से वह हमेशा अपनी पत्नी के साथ शान्ति से रहा और गरीब भी नहीं रहा क्योंकि अब उसके पास उसकी टोकरी थी न।

9 सोने के अंडों वाली बतख की कहानी[111]

एक बार की बात है कि रूस में एक बूढ़ा रहता था जिसका नाम अब्रोसिम था। उसके साथ उसकी एक पत्नी रहती थी जिसका नाम था फ़तीनिया और पन्द्रह साल का एक बेटा रहता था जिसका नाम था इवानुष्का।[112] वे लोग बहुत गरीब थे।

एक दिन बूढ़ा अब्रोसिम अपनी पत्नी और बेटे के लिये एक रोटी का टुकड़ा ले कर आया और उसको काटने ही वाला था कि चूल्हे के पीछे से "दुख"[113] निकल आया और उसके हाथों से वह रोटी छीन ली और भाग गया।

यह देख कर बूढ़े ने दुख को सिर झुकाया और उससे अपनी रोटी वापस देने की भीख माँगी क्योंकि अगर उसने उसकी वह रोटी नहीं दी तो उनके पास खाने के लिये कुछ भी नहीं था।

बूढ़ा दुख बोला — "मैं तुमको तुम्हारी रोटी नहीं दूँगा बल्कि मैं तुमको एक बतख दूँगा जो एक सोने का अंडा रोज देती है।"

अब्रोसिम बोला — "यह तो बहुत अच्छी बात है। मैं रोज ही बिना खाना खाये सोने जाता हूँ। तुम अबकी बार मुझे धोखा मत देना। बताओ मुझे वह बतख कहाँ मिलेगी।"

---

[111] Story of the Duck With Golden Eggs (Tale No 9)

[112] Abrosim, Fetinia and Ivanushka – the old man, his wife and his 15-year old son

[113] Translated for the word "Krutchina"

दुख बोला — “सुबह सवेरे जब तुम उठो तो शहर जाना तो वहाँ एक तालाब में तुमको एक बतख दिखायी देगी। उसे तुम पकड़ लेना और अपने घर ले आना।”

जब अब्रोसिम ने यह सब सुना तो वह सोने चला गया। अगले दिन वह बूढ़ा सुबह सवेरे जल्दी उठा और शहर की तरफ चल दिया। वह सीधा तालाब पर पहुँचा तो यह देख कर बहुत खुश हो गया कि उस तालाब में तो एक बतख तैर रही थी।

उसने उसको बुलाना शुरू किया और जल्दी ही पकड़ लिया। पकड़ कर वह उसको घर ले आया। घर आ कर उसने उस बतख को फ़तीनिया को दे दिया।

फ़तीनिया ने बतख को रख लिया और अपने पति को बताया कि वह अंडा देने वाली है। अब्रोसिम और फ़तीनिया दोनों बहुत खुश थे। फ़तीनिया ने बतख को एक बड़े बर्तन में रख दिया था और एक चलनी से ढक दिया था।

उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उस बतख ने सोने का एक अंडा दिया। उन्होंने बतख को कुछ देर तक फर्श पर घूमने दिया और फिर अब्रोसिम उसका अंडा ले कर उसे बेचने के लिये शहर चला गया जहाँ उसने उसे सौ रूबल[114] का बेचा।

पैसे ले कर वह बाजार चला गया जहाँ से उसने बहुत सारी सब्जियाँ खरीदीं और घर वापस आ गया।

---

[114] Rouble is the currency of Russia

अगले दिन बतख ने एक और सोने का अंडा दिया। अब्रोसिम ने यह अंडा भी बेच दिया। इस तरह से बतख अंडे देती रही अब्रोसिम उन्हें बेचता रहा। धीरे धीरे वह बहुत अमीर हो गया।

अब उसने अपने लिये एक बहुत बड़ा मकान बनवा लिया। कई सारी दूकानें खरीद लीं। बेचने के लिये बहुत सारा सामान खरीद लिया और व्यापार करने लगा।

अब कुछ ऐसा हुआ कि फ़तीनिया की एक नौजवान दूकान वाले से दोस्ती हो गयी जो उस बूढ़ी फ़तीनिया की परवाह तो बिल्कुल भी नहीं करता था पर उसके पीछे पड़ कर वह उससे पैसे ले लेता था।

एक दिन जब अब्रोसिम अपने व्यापार के लिये कुछ सामान खरीदने के लिये बाहर गया हुआ था फ़तीनिया ने उस दूकानदार को गप मारने के लिये अपने घर बुलाया।

नौजवान दूकानदार ने इत्तफाक से उस बतख को देख लिया तो उसे अपने हाथ में उठा लिया तो उसने उसके पंखों के नीचे सुनहरे अक्षरों में लिखा देखा "जो इस बतख को खायेगा वह ज़ार[115] बन जायेगा।"

उस नौजवान ने फ़तीनिया से इस बारे में तो कुछ नहीं कहा पर अपने प्यार की खातिर उससे उस बतख को भूनने के लिये कहा ताकि वह उसे खा सके और खुद ज़ार बन सके।

---

[115] Tzar or Tsar is the title for the King of Russia before 1917.

तो फ़तीनिया ने उसे बताया कि वह उस बतख को नहीं मार सकती थी क्योंकि उनकी सारी खुशकिस्मती तो उसी बतख के ऊपर निर्भर थी।

यह सुनने के बाद भी वह नौजवान दूकानदार उससे उस बतख को और जल्दी मारने की जिद करता रहा। अखिर उसके नम्रता भरे शब्द और खुशामद से फ़तीनिया राजी हो गयी। उसने बतख को मार दिया और उसको स्टोव में भुनने के लिये रख दिया।

इसके बाद दूकानदार ने यह कह कर फ़तीनिया से विदा ली कि वह जल्दी ही लौट कर आता है। फ़तीनिया भी फिर शहर चली गयी।

ठीक इसी समय इवानुष्का घर लौटा तो उसको बहुत भूख लगी थी। उसने खाने के लिये इधर उधर कुछ ढूँढा तो इत्तफाक से उसको स्टोव में भुनी हुई बतख रखी दिखायी दे गयी। उसने उसको बाहर निकाला और उसको सारी की सारी खा गया और अपने काम पर लौट गया।

उसके जाने के थोड़ी देर बाद ही दूकानदार लौट कर आया और फ़तीनिया को पुकार कर उससे बतख बाहर निकालने के लिये कहा। फ़तीनिया ओवन के पास दौड़ी गयी तो उसने देखा कि वहाँ तो ओवन खाली पड़ा है। उसमें तो कोई बतख नहीं है।

यह देख कर वह डर गयी और दूकानदार को बताया कि बतख तो वहाँ से गायब हो गयी।

इस पर दूकानदार उससे बहुत नाराज हुआ और बोला — "अगर यह बतख तुमने खायी है तो मैं इसका तुमसे बदला लूँगा।" कह कर वह तुरन्त ही वहाँ से चला गया।

रात को अब्रासिम और उसका बेटा इवानुष्का घर लौटे और बतख को बेकार ही ढूँढते रहे। अब्रासिम ने अपनी पत्नी से भी पूछा कि बतख का क्या हुआ।

फ़तीनिया ने झूठ बोला कि वह बतख के बारे में कुछ नहीं जानती कि वह कहाँ है पर इवानुष्का बोला — "मेरे पिता और माँ, जब मैं शाम को खाना खाने के लिये घर आया तो माँ घर पर नहीं थी।

मुझे बहुत भूख लगी थी मैंने ओवन में झाँक कर देखा तो वहाँ मुझे एक भुनी हुई बतख दिखायी दी। मैंने उसको निकाला और खा लिया। पर सचमुच में मुझको यह नहीं पता था कि वह बतख हमारी वाली थी या कोई और थी।"

यह सुन कर अब्रोसिम को अपनी पत्नी पर गुस्सा आ गया और उसको इतना पीटा कि वह अधमरी हो गयी। और अपने बेटे को घर से बाहर निकाल दिया। छोटा इवान बेचारा सड़क पर घूमता फिरा। जहाँ जहाँ उसको रास्ता दिखायी देता गया वह उसी तरफ चलता गया।

इस तरह से वह दस दिन और दस रात तक चलता रहा। आखिरकार वह एक बड़े शहर के फाटक पर आ गया।

जैसे ही वह उस फाटक के अन्दर घुस रहा था तो उसने देखा कि वहाँ बहुत बड़ी भीड़ जमा थी। पता चला कि वहाँ का ज़ार मर गया था और वे लोग यह तय नहीं कर पा रहे थे कि अब वे अपना ज़ार किसे चुनें।

तब उन्होंने यह तय किया कि जो कोई भी शहर के फाटक के अन्दर सबसे पहले घुसेगा वे उसी को अपना ज़ार चुनेंगे। और बस इसी समय अपना छोटा इवान शहर के फाटक में घुसा। जैसे ही वह फाटक में घुसा सब लोग चिल्लाये "हमारा ज़ार आ गया। हमारा ज़ार आ गया।"

वहाँ के लोगों में से बड़े आदमी इवानुष्का को हाथ पकड़ कर शाही महल में ले गये। वहाँ उसको ज़ार के कपड़े पहनाये उसको ज़ार की गद्दी पर बिठाया ज़ार की तरह से उसकी इज़्ज़त की और उसका हुक्म लेने के लिये खड़े हो गये।

इवानुष्का को तो लगा कि वह कोई सपना देख रहा है। पर जब वह अपने आप में आया तो उसको लगा कि यह सपना नहीं बल्कि यह तो सच था कि वह ज़ार बन चुका था।

फिर तो वह दिल से खुशियाँ मनाने लगा और बोला — "मेरे वफादार नौकरों और बहादुर नाइट लूगा[116] मेरी एक सेवा करो। तुम लोग मेरे देश जाओ, सीधे उस देश के राजा के पास जाओ। उनसे

[116] Brave Knight Luga

मेरी नमस्ते कहना और उनसे प्रार्थना करना कि वह अब्रोसिम व्यापारी को और उसकी पत्नी को मेरे पास भेज दें।

अगर वह उनको दे देता है तो उनको वहाँ से मेरे पास ले आओ। और अगर नहीं देता है तो उसको धमकी देना कि मैं उसका राज्य आग और तलवार से बर्बाद कर दूँगा और उसको बन्दी बना लूँगा।

सो वे इवानुष्का के देश आये और वहाँ के ज़ार के पास गये। उन्होंने उससे अब्रोसिम और फ़तीनिया को देने के लिये कहा।

वहाँ के ज़ार को पता था कि अब्रोसिम वहाँ का एक बहुत ही अमीर व्यापारी था और उसी के शहर में रहता था सो वह उसको कहीं जाने नहीं देना चाहता था।

पर उसे यह भी पता था कि इवानुष्का का राज्य उसके राज्य से कहीं ज़्यादा बड़ा और ताकतवर था इसलिये उसका विरोध करना ठीक नहीं था सो उसने इन दोनों को नाइट लूगा को दे दिया।

नाइट लूगा ने उन दोनों को ज़ार से लिया और उनको ले कर अपने राज्य वापस लौट आया।

जब वह उनको इवानुष्का के सामने लाया तो ज़ार उनसे बोला — "यह सच है कि आपने मुझे अपने घर से निकाल दिया पर मैं आज आपका अपने घर में स्वागत कर रहा हूँ। आप और माँ अब ज़िन्दगी भर मेरे साथ खुशी से यहाँ रहें।"

अब्रोसिम और फ़तीनिया यह देख कर बहुत खुश हुए कि उनका बेटा अब ज़ार बन गया है। वे उसके साथ बहुत सालों तक रहे फिर मर गये।

इवानुष्का ने भी वहाँ तीस साल तक राज किया। वह तन्दुरुस्त और खुश रहा। उसकी प्रजा उसको उसके आखिरी समय तक प्यार करती रही।

10 बहादुर साथी बुलाट की कहानी[117]

एक बार की बात है कि रूस में एक ज़ार रहा करता था जिसका नाम था कोदोर। उसके एक ही बेटा था इवान ज़ारेविच।[118] जब उसका बेटा बड़ा हुआ तो पिता कोदोर ने उसको पढ़ाने के लिये लिये कई मास्टरों का इन्तजाम किया जो उसको एक अच्छा नाइट[119] बनने की शिक्षा देते थे।

जब इवान बड़ा हो गया तो उसने अपने पिता से विनती की कि वह उसको दूसरे देशों को घूमने इजाज़त दे दें ताकि वह दुनियाँ देख सके। ज़ार कोदोर ने उसको इजाज़त दे दी और उससे कहा कि वह बाहर जा कर अपनी सारी कुशलताऐं इस्तेमाल करे और अपने पिता का नाम ऊँचा करे।

तब इवान ज़ारेविच एक बढ़िया घोड़ा चुनने के लिये शाही घुड़साल में गया ताकि वह उस पर चढ़ कर इतना लम्बा सफर कर सके। उसका घोड़ा रास्ते में ही धोखा न दे जाये। उसको केवल एक ही घोड़ा चाहिये था।

सो उसने सारे घोड़े देखे पर उसको अपने मन का कोई घोड़ा दिखायी नहीं दिया। सो वह दुखी हो कर वहाँ से चला आया।

---

[117] Story of Bulat the Brave Companion (Tale No 10)

[118] Chodor – the Tsar. He had only one son – Ivan Tsarevich

[119] A knight is a person granted an honorary title of knighthood by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity.

उसने अपना तीर कमान लिया और अपना दुख कम करने के लिये मैदान में चला गया।

जब वह ऐसा कर रहा था तो उसने हवा में उड़ता हुआ एक हंस देखा। उसने अपनी कमान पर तीर रखा कमान खींची और एक तीर उसको मार दिया।

पर उसका तीर हंस को नहीं लगा और वह उसकी नजर के सामने से गायब भी हो गया। इवान अपने एक प्रिय तीर के खो जाने पर और ज़्यादा दुखी हो गया। उसकी ऑखों में ऑसू आ गये।

ऑखों में ऑसू लिये लिये वह उस तीर को सारे मैदान में खोजने लगा। उसे खोजते खोजते वह एक छोटी सी पहाड़ी के पास आ गया। वहॉ आ कर उसने एक आदमी की आवाज सुनी जो उसी से कुछ कह रही थी — "इवान ज़ारेविच इधर आओ।"

इवान ने इधर उधर देखा कि यह आवाज कहॉ से आ रही थी उसको कौन बुला रहा था पर किसी को वहॉ न देख कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। पर वह आवाज फिर से आयी तो वह आवाज की तरफ चल पड़ा।

उसने देखा कि उस पहाड़ी में एक खिड़की थी जिसमें लोहे की जाली लगी हुई थी। और उस जाली के पीछे एक आदमी था जो उसको अपने हाथ के इशारे से अपने पास बुला रहा था। जब इवान

वहाँ पहुँचा तो वह बोला — "ओ मेरे अच्छे लड़के इवान ज़ारेविच। तुम इतने दुखी क्यों हो।"

इवान बोला — "अगर मैं दुखी न होऊँ तो क्या होऊँ। मेरा प्रिय तीर खो गया है। मुझे वह कहीं नहीं मिल रहा। मेरा दुख और ज़्यादा इसलिये है कि मुझे कोई मेरा मनपसन्द अच्छा सा घोड़ा नहीं मिल रहा।"

आदमी बोला — "अरे यह तो इतने दुख की कोई बात नहीं हुई। मैं तुम्हें एक बहुत अच्छा घोड़ा दूँगा। और साथ में तुम्हारा तीर भी दूँगा क्योंकि वह तीर उड़ कर मेरे पास आ गया था। पर तुम मुझे उसके बदले में क्या दोगे।"

इवान बोला — "अगर तुम मुझे वह दोगे जिनको देने का तुमने मुझसे वायदा किया है तब जो भी तुम चाहो।

आदमी बोला — "नहीं नहीं। मुझे इससे ज़्यादा और कुछ नहीं चाहिये कि बस तुम मुझे इस जगह से आजाद कर दो।"

इवान ने पूछा — "तुम्हें यहाँ किसने कैद किया और तुम यहाँ कैसे कैद हुए।"

आदमी बोला — "मुझे यहाँ तुम्हारे पिता ने कैद किया है। मैं एक बहुत ही मशहूर डाकू था। मेरा नाम बहादुर साथी बुलाट है। तुम्हारे पिता मुझसे बहुत गुस्सा थे। उन्होंने हुक्म दिया कि मुझे बन्द कर दिया जाये। अब मैं **33** साल से यहाँ बन्द हूँ।"

इवान बोला — "ओ बहादुर साथी बुलाट। मैं अपने पिता की इजाज़त के बिना तुमको यहाँ से आजाद नहीं कर सकता। अगर उनके पता चल गया तो वह बहुत गुस्सा होंगे।"

बुलाट बोला — "तुम डरो नहीं। तुम्हारे पिता को इस बात का कभी पता नहीं चलेगा। क्योंकि जैसे ही तुम मुझे आजाद करोगे मैं यहाँ नहीं रहूँगा और यहाँ से कहीं दूर देश चला जाऊँगा।"

इवान बोला — "ठीक है। तब मैं तुम्हें आजाद कर दूँगा पर उसी शर्त पर कि तुम मुझे मेरा तीर वापस कर दोगे और मुझे बताओगे कि मुझे कोई बढ़िया घोड़ा कहाँ मिल सकता है।"

बहादुर साथी बुलाट ने कहा — "तुम खुले मैदान में चले जाओ। तुमको वहाँ तीन हरे ओक के पेड़ खड़े दिखायी देंगे। इन तीनों पेड़ों के नीचे तुम्हें एक लोहे का दरवाजा दिखायी देगा जिसमें ताँबे का एक छल्ला पड़ा होगा।

इस दरवाजे के नीचे एक घुड़साल है। वहाँ एक बहुत बढ़िया घोड़ा खड़ा हुआ है। वह 12 लोहे के दरवाजों के पीछे है। और उन 12 लोहे के दरवाजों में 12 लोहे के ताले लगे हुए हैं। बारहों दरवाजों को खोलना तब तुम्हें तुम्हारा मन पसन्द घोड़ा मिल जायेगा। तुम उस पर चढ़ कर मेरे पास आना। मैं तुम्हें तुम्हारा तीर वापस कर दूँगा। इस तरह से तुम मुझे यहाँ से आजाद कर सकते हो।"

यह सुनने के बाद इवान ज़ारेविच खुले मैदान में गया तो उसको तीन हरे ओक के पेड़ खड़े दिखायी दे गये। उसके नीचे इसको लोहे का दरवाजा भी दिखायी दे गया जिसमें एक तॉबे का छल्ला पड़ा था।

सो उसने वह दरवाजा ऊपर उठाया और फिर बारहों ताले खोल कर बारहों दरवाजे खोले और एक घुड़साल में घुसा। वहॉ उसको एक नाइट के चढ़ने के लायक घोड़ा मिल गया। उसी के साथ एक मजबूत जिरहबख्तर भी था।

इवान ज़ारेविच ने घोड़े पर अपना हाथ फेरा तो घोड़ा घुटनों पर तो नहीं बैठा पर वह थोड़ा सा झुक गया। जब घोड़े ने देखा कि वह एक नाइट के आगे खड़ा है तो वह ज़ोर से हिनहिनाया और उसको अपने ऊपर साज सजाने दिया और लगाम लगाने दी।

इवान ने घोड़ा लिया लड़ने वाली कुल्हाड़ी ली और तलवार और घोड़े को घुड़साल से बाहर निकाला। बाहर निकल कर वह उसके ऊपर बैठ गया। उसकी सिल्क की लगाम अपने हाथों में ले ली।

इवान ने उस घोड़े को जॉचना चाहा सो उसने उसको ऐड़ लगायी तो वह घोड़ा जंगलों के ऊपर पर बादलों से नीचे उड़ चला। आखीर में इवान ज़ारेविच बुलाट के पास आया और बोला — "लाओ अब मेरा तीर अब मुझे वापस करो और मैं तुम्हें इस पिंजरे से आजाद कर दूँगा।"

बुलाट ने तुरन्त ही उसको उसका तीर वापस कर दिया और इवान ने उसको आजाद कर दिया।

बुलाट बोला — “मुझे यहाँ से आजाद कराने का तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद इवान। बदले में मैं तुम्हारी सेवा करूँगा। जब भी तुम किसी मुश्किल में हो तो मुझे याद करना मैं तुम्हारी सहायता के लिये आ जाऊँगा। बस तुम्हें यह कहना है “मेरा बहादुर साथी बुलाट कहाँ है।” मैं तुरन्त ही तुम्हारी सेवा में हाजिर हो जाऊँगा।”

यह कह कर बुलाट ज़ोर से चिल्लाया —

सिवका बुरका, हे
वसन्त के लोमड़े प्रगट हो घास के पत्ते की तरह यहाँ मेरे सामने खड़ा हो

तुरन्त ही एक घोड़ा उसके सामने आ कर खड़ा हो गया और बुलाट उसके कान में घुस गया। वहाँ पेट भर कर खा पी कर वह उसके दूसरे कान से निकल आया। अब वह एक इतना सुन्दर नौजवान हो गया था कि उसके बारे में कुछ लिखा नहीं जा सकता।

बुलाट अपने घोड़े पर चढ़ा और यह कह कर अपना घोड़ा कुदाता हुआ चला गया कि “अच्छा अभी के लिये विदा इवान ज़ारेविच।”

इवान भी अपने बढ़िया वाले घोड़े पर चढ़ा और अपने पिता के पास चल दिया। वहाँ उसने रोते हुए अपने पिता से विदा ली और

अपने साथ एक बड़े जमींदार[120] को अपने साथ ले कर दूसरे देशों के लिये चल दिया। कुछ दूर चलने के बाद वे एक जंगल में आये।

दिन बहुत साफ और गर्म था। इवान ज़ारेविच को प्यास लग आयी थी। वे पानी की खोज में जंगल में इधर उधर घूमते रहे पर उन्हें पानी कहीं नहीं मिला।

आखिर उन्हें एक बहुत ही गहरा कुँआ मिल गया जिसमें थोड़ा बहुत पानी था। इवान ने अपने साथी से कहा — "कुँए में नीचे जा कर पानी ले कर आओ। मैं तुम्हें एक रस्सी के सहारे पकड़े रहूँगा ताकि तुम डूब न जाओ।"

साथी बोला — "नहीं इवान ज़ारेविच। मैं आपसे वजन में भारी हूँ। आप मुझे पकड़ कर नहीं रख सकते। इससे तो अच्छा यह है कि आप पानी में उतर जाइये क्योंकि मैं आपको सँभाल सकता हूँ।"

इवान ज़ारेविच ने अपने साथी की बात मानी और वह पानी में उतर गया। जब इवान ने पेट भर कर पानी पी लिया उसने साथी से कहा कि वह अब उसको कुँए से बाहर खींच ले।

साथी बोला — "नहीं मैं आपको तब तक बाहर नहीं खींचूँगा जब तक आप मुझे यह लिख कर नहीं देंगे कि आप मेरे नौकर हैं और मैं आपका मालिक हूँ। कि मेरा नाम इवान ज़ारेविच है। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो मैं आपको कुँए में डुबो दूँगा।"

---

[120] Translated for the word "Squire"

इवान ज़ारेविच बोला — "मेरे प्यारे साथी। मेहरबानी कर के मुझे मत डुबोओ। मुझे ऊपर खींच लो। मैं जो कुछ तुम कहोगे वही करूँगा।"

साथी बोला — "नहीं मुझे तुम्हारा विश्वास नहीं होता। कसम खाओ।"

इवान ने कसम खायी कि वह वही करेगा जो वह कहेगा। यह सुन कर साथी ने इवान को ऊपर खींच लिया। फिर इवान ज़ारेविच ने एक कागज लिया उस पर उसके साथी ने जो लिखवाया वह उसने लिखा और कागज उसे दे दिया।

फिर उन्होंने अपने अपने शाल बदल लिये और अपने रास्ते चले गये। कुछ दिनों बाद वे एक ज़ार पंथुई[121] के राज्य में आये। जब ज़ार ने सुना कि इवान ज़ारेविच उसके राज्य में आया है तो वह उससे मिलने के लिये बाहर आया।

उसने नकली इवान का स्वागत किया और उसे अपने संगमरमर के बने हुए बड़े बड़े कमरों में ले आया। उसको अपनी ओक की मेज पर बिठाया। वहाँ उन्होंने खूब अच्छा खाना खाया और आनन्द मनाया। उसके बाद ज़ार पंथुई ने नकली इवान से पूछा कि वह उसके राज्य में किस काम से आया है। उसने जवाब दिया कि वह उसकी सुन्दर बेटी ज़ीरिया[122] से शादी करने आया है।

[121] Tsar Panthui

[122] Tseria – name of the daughter of Tsar Panthui

ज़ार पंथुई बोला — “मैं खुशी से अपनी बेटी की शादी आपसे कर दूँगा।”

बातों ही बातों में नकली इवान ने ज़ार से कहा — “मेहरबानी कर के मेरे नौकर को अपने रसोईघर में नीचे काम करने दीजिये क्योंकि उसने मुझे रास्ते में बहुत परेशान किया है।”

सो ज़ार ने असली इवान को बहुत छोटे छोटे कामों पर लगा दिया जबकि नकली इवान ज़ार के साथ मौज मनाता रहा।

इसके कुछ ही दिनों बाद ज़ार पंथुई पर किसी ने हमला बोल दिया और उसको धमकी दी कि वह उसका राज्य नष्ट कर देगा और उसको बन्दी बना लेगा।

इस पर ज़ार पंथुई ने नकली इवान को बुलाया और उससे कहा — “ओ मेरे प्यारे होने वाले दामाद। एक राजा ने मेरे राज्य पर हमला कर दिया है सो मेहरबानी कर के मेरे इस दुश्मन को पीछे हटाओ। मैं तुम्हें अपनी बेटी दे दूँगा पर बस इसी शर्त पर।”

नकली इवान ने कहा — “कोई बात नहीं यह काम हो जायेगा पर मैं केवल रात को ही यह काम कर सकूँगा क्योंकि दिन में मेरी किस्मत साथ नहीं देती।”

जैसे ही रात हुई और किले में हर कोई सोने चला गया तो नकली इवान महल के खुले ऑगन में चला गया। उसने असली राजकुमार को बुलाया और कहा — “इवान ज़ारेविच। तुम मुझसे गुस्सा मत होना कि मैंने तुम्हारी जगह ले ली है। इस समय तुम इस

बात को भूल जाओ और मेरा एक काम कर दो। दुश्मन ने इस राज्य पर हमला कर दिया है तुम उसे पीछे खदेड़ दो।"

असली इवान बोला — "जाओ तुम आराम से सोओ और तुम्हारा यह काम मैं पूरा कर दूँगा।" सो उसका साथी चला गया और जा कर सो गया।

फिर असली इवान ज़ोर से बोला "कहाँ है मेरा बहादुर साथी बुलाट कहाँ है।"

एक पल में ही बुलाट उसके सामने खड़ा था। उसने उससे पूछा — "मै तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ। तुम्हें क्या परेशानी है।"

तब इवान ने उसको सारा हाल बताया तब बुलाट ने उससे उसके घोड़े को तैयार करने के लिये कहा और उसे भी जिरहबख्तर पहन कर तैयार होने के लिये कहा।

फिर वह ज़ोर से चिल्लाया —

सिवका बुरका, हे
वसन्त के लोमड़े प्रगट हो घास के पत्ते की तरह यहाँ मेरे सामने खड़ा हो

तभी जमीन हिली और उसमें से घोड़ा निकला। उसके कानों से भाप निकल रही थी और उसके नथुनों से लपटें निकल रही थीं। जब वह बुलाट के पास तक आया तो वह सीधा खड़ा था। बुलाट अपने घोड़े पर चढ़ गया और इवान अपने घोड़े पर बैठ गया और दोनों वहाँ से चल दिये।

इस बीच राजकुमारी ज़ीरिया जो अभी तक सोयी नहीं थी खिड़की पर बैठी बाहर देख रही थी। उसने नकली इवान असली इवान और बुलाट के बीच की सब बातें सुन ली थीं।

जैसे ही वे दुश्मन की सेना तक पहुँचे तो बुलाट ने इवान से कहा कि वह दॉयी तरफ से उनके ऊपर हमला बोले और मैं उनके ऊपर बॉयी तरफ से हमला करता हूँ।

इस तरह से इन दोनों ने दुश्मन की सेना को तलवार से मारना शुरू कर दिया। बहुत सारे लोग उनके घोड़ों के खुरों के नीचे आ कर मर गये। एक घंटे में ही उन दोनों ने 100 हजार लोग नीचे गिरा दिये।

दुश्मन अपनी थोड़े से बचे हुए सिपाहियों को ले कर वहॉ से अपने राज्य भाग गया। इवान ज़ारेविच अपने बहादुर साथी बुलाट के साथ महल लौट आया। अपने घोड़े का साज उतारा उसे सफेद गेहूँ खाने को दिया। उसके बाद उसने बुलाट से विदा मॉगी और रसोईघर की तरफ सोने चला गया।

अगले दिन सुबह ज़ार दुश्मन की सेना देखने के लिये बाहर अपने छज्जे पर गया तो उसने देखा कि उसके दुश्मन की सारी सेना तो कटी पड़ी है।

उसने नकली इवान को बुलाया और उसे अपने देश को बचाने के लिये उसे बहुत बहुत धन्यवाद दिया। उसने उसको बहुत कीमती भेंटें दीं और अपनी बेटी जल्दी ही देने का वायदा किया।

दो हफ्ते बाद वही ज़ार फिर से इस ज़ार के ऊपर हमला बोलने आ गया। उसने सारे शहर को घेर लिया। ज़ार पंथूरी ने फिर से नकली इवान की शरण ली।

उसने कहा — "मेरे दोस्त इवान ज़ारेविच। मेहरबानी कर के एक बार मुझे इसके हमले से और बचा लो और इनको यहाँ मार भगाओ। इसके बाद मैं तुम्हें तुरन्त ही अपनी बेटी दे दूँगा।"

सो इस बार भी पहले की तरह से हुआ। इस बार भी यह काम असली इवान ज़ारेविच और उसके बहादुर साथी बुलाट ने कर दिया। दुश्मन भाग गया था। पर वह तीसरी बार भी वहाँ आ पहुँचा। इस बार वह वहाँ मारा गया।

इवान ज़ारेविच और उसका बहादुर साथी बुलाट ने वापस आ कर अपने घोड़ों से साज उतारे और उनको घुड़साल में रख दिया। इसके बाद बुलाट ने इवान से विदा ली और बोला — "अब तुम मुझे कभी नहीं देखोगे।"

कह कर वह अपने घोड़े पर चढ़ा और चला गया। इवान अपने रसोईघर में जा कर सो गया।

अगले दिन सुबह जल्दी उठ कर ज़ार फिर से अपने छज्जे पर गया और देखा कि दुश्मन की सारी सेना नष्ट हो गयी है तो उसने अपने होने वाले दामाद नकली इवान को बुला भेजा और कहा — "अब मैं तुमसे अपनी बेटी की शादी करूँगा।"

शादी की तैयारियाँ होने लगीं।

कुछ दिन बाद ही नकली इवान की शादी सुन्दर ज़ीरिया से हो गयी। जब वे लोग चर्च से वापस आये और खाने की मेज पर बैठे हुए थे तो असली इवान ने बड़े रसोइये से कहा कि वह उसको खाने के कमरे में उसके मालिक और मालिक की पत्नी ज़ीरिया को मेज पर बैठे हुए देखने के लिये जाने दे।

रसोइया मान गया। इवान ने रसोइये के कपड़े पहन लिये और कमरे में दूसरे मेहमानों के पीछे खड़ा हो गया अपने साथी और ज़ीरिया को घूरने लगा।

लेकिन ज़ीरिया ने इवान को देख लिया और तुरन्त ही पहचान लिया। वह अपनी कुर्सी से उठी उसका हाथ पकड़ा और अपने पिता से कहा — "पिता जी यही मेरा सच्चा दुलहा और आपके राज्य को बचाने वाला है। यह नहीं जिसको आपने मुझे दे दिया है।"

इस पर ज़ार पंथूरी ने अपनी बेटी से पूछा कि इस सबका क्या मतलब था और उससे सारा भेद बताने के लिये कहा। राजकुमारी ज़ीरिया ने तब ज़ार को वे सारी बातें बतायीं जो कुछ भी उसने देखी और सुनी थीं।

यह सब सुनने के बाद ज़ार ने असली इवान ज़ारेविच को बुला कर अपने साथ मेज पर बिठाया और उसके साथी को फाटक पर ले जा कर मार दिया गया।

इवान ने राजकुमारी ज़ीरिया से शादी कर ली और फिर वह अपने पिता के राज्य लौट आया। ज़ार कोदोर ने जब उन दोनों को देखा तो वह बहुत खुश हुआ। उसने अपना ताज उतार कर अपने बेटे के सिर पर रख दिया। इवान ने राजगद्दी पर बैठ कर बहुत दिनों तक राज किया।

11 राजकुमार मलनद्राश और राजकुमारी सैलीकल्ला की कहानी[123]

एक देश में एक शहर में जिसका नाम अन्दैरिका था एक ज़ार राज करता था। उसका नाम अब्राहम टुक्सालामोविच[124] था। वह ज़ार बहुत होशियार था। उसने अपने राज्य पर 30 साल तक राज किया पर उसके कोई बच्चा नहीं था।

आखिर अब्राहम ने भगवान की रो रो कर प्रार्थना की कि वह उसको एक बेटा दे दे। भगवान ने उसकी प्रार्थना सुनी और उसको एक बहुत ही छोटा सा पर बहादुर बेटा दिया। उसका उन्होंने नाम रखा मलनद्राश अब्राहमोविच।

छोटे से बच्चे ने बढ़ना शुरू किया तो वह दिन ब दिन ही नहीं बल्कि हर घंटे बढ़ने लगा जैसे खमीर डालने के बाद कूटू का आटा उठता है।[125]

ज़ार ने अपने बेटे को बहुत तरह की शिक्षा दिलवायी। जब बेटा बड़ा हो गया तो वह अपने पिता के पास गया और बोला — "मेरे मालिक और मेरे पिता। आपने मुझे बहुत तरह

[123] Story of the Prince Malandrach and the Princess Salikalla (Tale No 11)

[124] There was a Tsar named Abraham Tuksalamovich in the Anderika city.

[125] Translated for the phrase "As buck-wheat flour rises" (in the process of making bread of risen dough). See the picture of buck-wheat above.

की शिक्षा दिलवायी है पर एक चीज़ है जो मैंने अभी तक नहीं सीखी है।

ज़ार बोला — "मेरे प्यारे और बहादुर बेटे। मुझे बताओ कि तुम और क्या सीखना चाहते हो। मैं तुम्हारे लिये उसी को सिखाने के लिये लायक गुरू रख दूॅगा।"

इस पर ज़ारेविच बोला — "मेरे मालिक और मेरे पिता। कल मैं स्वीडन[126] की एक किताब पढ़ रहा था जिसमें लिखा था कि दुनियॉ में ऐसे लोग हैं जो पंख लगा कर हवा में उड़ सकते हैं। मेरी बड़ी इच्छा है कि मैं यह कला सीखूॅ। मैं आपसे विनती करता हूॅ कि आप मेरे लिये ऐसे गुरू रख दें जिनसे मैं यह कला सीख सकूॅ।"

ज़ार बोला — "मेरे बहादुर बच्चे। यह तो नामुमकिन है कि आदमी का बच्चा हवा में उड़ सकता हो। तुम कुछ ऐसी ही काल्पनिक किताब पढ़ रहे होगे या परियों की कहानी पढ़ रहे होगे। तुम ऐसी कहानियों में विश्वास मत करो।

फिर भी मैं बहुत सारे देशों में अपने आदमी भेजूॅगा ताकि वे ऐसा कोई आदमी ढूॅढ सकें जो तुम्हें यह कला सिखा सके। अगर उनमें से किसी को कोई ऐसा आदमी मिल गया तो मैं तुम्हें उसको यहॉ बुला कर उससे तुम्हें यह कला अवश्य ही सिखवा दूॅगा।"

---

[126] Sweden is situated in far North of Europe continent as one of five Norse countries – Denmark, Finland, Iceland, Norway and Sweden

जब ज़ार कोई काम करना चाहता है तो वह बीयर बनने के समय का इन्तजार नहीं करता और न ही वह ब्रैन्डी बनने का इन्तजार करता है।

बस उसने तुरन्त ही अपने बहुत सारे आदमी किसी ऐसे आदमी को ढूँढने के लिये चारों तरफ भेज दिये जो उसके बेटे को पंख लगा कर हवा में उड़ना सिखा सके। और अगर उनको कोई ऐसा आदमी मिल जाये तो उसको उसने लाने के लिये भी कह दिया।

तीन साल बाद एक आदमी को एक ऐसा आदमी औस्ट्रिपा[127] शहर में मिल गया। वह उसे ज़ार अब्राहम के पास ले आया। मनन्द्राश ने उसे देखा तो वह तो बहुत खुश हो गया।

ज़ार ने उस आदमी से पूछा कि "क्या तुम उड़ने की कला जानते हो?"

तो आदमी ने जवाब दिया — "ओ शान वाले राजा। हालाँकि यह मेरे लिये ठीक नहीं है कि मैं अपनी तारीफ अपने आप ही करूँ पर मैं आपको यह बता दूँ कि अपने देश में मैं इस काम को करने वाला पहला आदमी हूँ।

अगर यौर मैजेस्टी चाहते हैं कि मैं राजकुमार को यह कला सिखाऊँ तो एक बहुत ही बड़ा कमरा बनवायें जो 200 ऐल लम्बा[128] हो और इतना ही चौड़ा हो और 100 ऐल ऊँचा हो। यह

---

[127] Austripa City

[128] Unit to measure the length. 1 ell = 45". So 200 ell = 9,000" = 250 yards

कमरा बिल्कुल खाली हो। इसमें कई खिड़कियाँ हों और उसके बराबर में एक बहुत छोटा सा कमरा[129] हो।

जब ज़ार ने यह सुना तो उसने तुरन्त ही एक ऐसा कमरा बनाने का हुक्म दे दिया। जब यह कमरा बन गया तो उस उड़ने वाले ने दो जोड़ी बड़े बड़े पंख बनाये – एक जोड़ी अपने लिये दूसरी जोड़ी मलन्द्राश के लिये।

उसने अपने और मलनद्राश के दोनों के पंख बाँधे और राजकुमार को उड़ना सिखाना शुरू कर दिया। जब उसने पढ़ाना छोड़ा तो वे पंख उसने बड़े कमरे के बराबर वाले छोटे कमरे में बन्द कर दिये। उसे ताला लगा दिया और उसकी चाभी अपने साथ ले गया।

लेकिन एक दिन ऐसा हुआ कि जब ज़ारेविच ने अपना पाठ पढ़ लिया और मास्टर ने पंख कमरे में बन्द कर दिये और मलन्द्राश ने यह देख लिया तो बिना अपने गुरू को बताये हुए वह अपने पिता के पास गया। इत्तफाक से उसी समय ज़ार ने एक बड़ी दावत का इन्तजाम किया हुआ था और उसमें बहुत सारे मेहमान आये हुए थे।

मलन्द्राश बिना किसी से कुछ कहे हुए बड़े कमरे की तरफ दौड़ गया। वहाँ के छोटे कमरे में से उसने पंख निकाले अपने कन्धों पर बाँधे आँगन में आया अपने पंख फड़फड़ाये और वह उस बड़े कमरे

---

[129] Closet

के ऊपर उड़ने लगा। फिर उस कमरे के ऊपर उतर गया। वहॉ वह कुछ देर रुका अपने पिता के राज्य को वहॉ से देखा।

उसके बाद उसने वहॉ से जमीन पर उतरना चाहा तो अचानक से उसके सारे शरीर में फुरफुरी उठ गयी। उसको इतनी ऊॅचाई से नीचे उतरने में डर लगने लगा।

अब वह बजाय नीचे आने के ऊपर और और ऊपर जाने लगा। और अन्त में वह इतना ऊॅचा पहुॅच गया कि वहॉ से उसको धरती एक सेब की तरह नजर आने लगी।

तभी एक बहुत तेज़ हवा आयी और मलन्द्राश को उड़ा कर एक अनजाने देश में ले गयी। वहॉ पहुॅच कर उसकी ताकत ने काम करना बन्द कर दिया। वह अपने पंखों को सॅभाल नहीं सका और फिर उसने नीचे गिरना शुरू कर दिया।

उसने नीचे देखा तो नीचे तो उसको बहुत बड़ा समुद्र नजर आया। यह देख कर वह डर गया। उसने अपनी बची हुई ताकत बटोरी और फिर ऊपर उठने की कोशिश की।

थोड़ा ऊपर उठ कर उसने चारों तरफ देखा कि कहीं उसको धरती का कोई किनारा नजर आ जाये। थोड़ी दूर उसको एक टापू का किनारा नजर आया सो वह उधर की तरफ उड़ चला। वहॉ पहुॅच कर उसने अपने पंख निकाल दिये और उनको अपनी बगल में दबा लिया।

इसके बाद वह उस टापू पर खाने की खोज में इधर उधर घूमने लगा क्योंकि इस समय तक उसको बहुत ज़ोर की भूख लग आयी थी।

इत्तफाक से उसको एक पेड़ मिल गया जिस पर मीठे फल लगे हुए थे। उस पेड़ से फल तोड़ कर उसने पेट भर कर खाये फिर वहीं घास पर लेट कर वह सो गया। वह वहाँ अगले दिन सुबह तक सोता रहा।

सुबह को जब मलन्द्राश सो कर उठा और अपने पंख अपने कन्धों से बॉधने ही वाला था कि उसकी बॉहें इतनी दर्द करने लगीं कि वह वहॉ से 10 दिन तक नहीं हिल सका।

ग्यारहवें दिन किसी तरह उसने वे पंख बॉधे अपने आपको अशीर्वाद दिया और हवा में ऊँचा उड़ गया। ऊपर पहुॅच कर उसने अपने पिता का राज्य ढूॅढा पर वह तो उसे न दिखायी दे सका पर शाम आते आते उसको धरती का एक किनारा दिखायी दे गया।

धरती के उस टुकड़े पर बहुत ही घना जंगल था। वह वहॉ उतर गया और उसने अपने पंख निकाल दिये। एक रास्ता ले कर वह एक शहर के फाटक के पास आया। उसने अपने पंख एक झाड़ी में छिपा दिये और शहर के अन्दर चला गया और बाजार ढूॅढने लगा।

बाजार पहुॅच कर उसने एक लम्बा शाल खरीदा और शाल ले कर फिर जंगल वापस आ गया।

उसने अपने पंख फिर अपने बगल में दबाये फिर वापस शहर चला गया। वहाँ उसे एक आदमी मिला जिससे उसने पूछा कि क्या वहाँ पर उसको कोई मकान किराये पर मिल सकता है।

उस आदमी ने जवाब दिया — "यकीनन तुम कोई अजनबी हो।"

मलन्द्राश ज़ारेविच ने कहा — "जैसा तुम कहो। मैं हिन्दुस्तान का एक व्यापारी हूँ। मैं वहाँ से जहाज़ में अपने समान के साथ था कि हमारा जहाज़ तूफान में फँस कर टूट गया। मेरे हाथ में एक लकड़ी का तख्ता आ गया तो मैं उसके सहारे इस जमीन के किनारे लग गया।

वह अजनबी बोला — "अगर तुम्हें अच्छा लगे तो तुम मेरे साथ रह सकते हो। मैं तुम्हें अपने बेटे की तरह रखूँगा।"

मलन्द्राश इस बात पर राजी हो गया और उस अजनबी के साथ चला गया। वहाँ वह उसके साथ एक महीना रहा पर वह उसके घर के कम्पाउंड से कभी बाहर नहीं गया।

अजनबी ने जब ऐसा देखा तो उससे पूछा — "तुम कभी शहर घूमने क्यों नहीं जाते। जाओ और जा कर नयी पुरानी बिल्डिंगें देखो।" मलन्द्राश ने अजनबी से जिसका नाम अक्रोन[130] था कहा कि वह उसके साथ चले और उसको शाही महल दिखा कर लाये। सो उसका मेजबान उसको अपने साथ शहर ले गया।

---

[130] Achrone – name of the person living on the island

घूमते घूमते उन दोनों को शाम हो गयी आ कर वे लोग सो गये। अगले दिन मलनद्राश सुबह सो कर उठा तो नहाया धोया अपनी पूजा की, चारों दिशाओं को सिर झुकाया और फिर अकेले ही चल दिया।

चलते चलते वह शहर के बाहर आ गया। वहाँ उसने पत्थर की एक बड़ी बिल्डिंग देखी। उसके चारों तरफ बाड़े की दीवार बनी हुई थी। वह उस बाड़े के चारों तरफ घूमा पर उसको उसके अन्दर घुसने का कोई फाटक नहीं दिखा दिया।

उसमें उसको केवल एक बहुत ही छोटा सा दरवाजा दिखायी दिया जो बड़ी मजबूती से ताले से बन्द था। राजकुमार मलन्द्राश को यह बिल्डिंग बहुत अच्छी लगी। उसको देख कर वह घर वापस आ गया और अपने मेजबान से पूछा कि वह बिल्डिंग कैसी थी।

मेजबान बोला कि वह एक शाही बिल्डिंग है। इसमें ज़ार की बेटी रहती है जिसका नाम सैलीकल्ला[131] था। पर वह वहाँ उसमें बन्द क्यों थी यह उसको नहीं पता था।

जब मलनद्राश ज़ारेविच ने यह सुना तो उसने अपने पंख निकाले और अगले दिन फिर से वह उसी पत्थर की बिल्डिंग के पास गया। वहाँ उसने शाम तक इन्तजार किया फिर अपने पंख बाँधे और बिल्डिंग की दीवार लाँघ कर अन्दर पहुँच गया।

---

[131] Salikalla – name of the daughter of Tsar

अन्दर जा कर वह एक पेड़ पर उतर गया। वहाँ से उसने उस खिड़की की तरफ देखा जिसमें सैलीकल्ला बैठती थी।

सैलीकल्ला अब सोने चली गयी थी। खिड़की उसने खुली छोड़ दी थी। मलनद्राश पहले तो उसको देखता रहा। एक घंटे के बाद वह खिड़की की तरफ उड़ गया। वह बड़ी धीरे से ज़ारेवना के पास गया। उसने देखा कि वह सोयी हुई है।

उसने चाहा कि वह उसको चूम कर जगा दे पर उसकी हिम्मत नहीं हुई। वह वहाँ खड़ा खड़ा उसकी सुन्दरता को देखता रहा जब तक कि सुबह नहीं हो गयी।

फिर वह वहाँ से इस डर से चला गया कि कहीं राजकुमारी जाग न जाये और उसे देख न ले। सो वह वहाँ से चुपचाप चला गया। अपने पीछे वह एक निशान छोड़ गया ताकि वह जब जागे तो शायद उसकी निगाह उस पर पड़ जाये तो वह यह समझ जायेगी कि वहाँ कोई आया था।

यह निशान यह था कि उसने राजकुमारी के जूते उसके बिस्तर पर रख दिये थे। उसके बाद वह खिड़की से बाहर चला गया। फिर घर चला गया और सो गया।

अगले दिन सुबह जब ज़ारेवना उठी तो उसने अपने जूते अपने बिस्तर पर रखे देखे तो उसने सोचा कि शायद उसकी नौकरानी ने उनको वहाँ रख दिया होगा। यह नौकरानी उसके बराबर वाले कमरे में सोती थी।

सो उसने नौकरानी से पूछा पर उसने कहा कि उसने उनको उसके बिस्तर पर नहीं रखा था। राजकुमारी को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि अगर नौकरानी ने जूते उसके बिस्तर पर नहीं रखे तो फिर किसने रखे।

अगले दिन शाम को राजकुमार मलनद्राश फिर से पत्थर के महल गया अपने पंख बाँधे और खिड़की से उड़ कर राजकुमारी के कमरे में पहुँच गया और बहुत देर तक राजकुमारी को देखता रहा।

सुबह होने से पहले पहले उसे फिर से घर लौटना पड़ा। उसने उसके जूते फिर से उसके बिस्तर पर सिरहाने की तरफ रखे खिड़की से बाहर आया और घर चला गया।

अगले दिन जब सैलीकल्ला सुबह को उठी तो उसने फिर से अपने बिस्तर पर जूते रखे देखे। उसने अपनी नौकरानी से फिर पूछा कि क्या वे जूते उसके बिस्तर पर उसने रखे थे पर उसने फिर मना कर दिया कि उसने नहीं रखे थे।

सो उस रात उसने न सोने का फैसला किया कि आज वह देखेगी कि उसके जूते उसके बिस्तर पर कौन रखता है।

अगले दिन शाम को राजकुमार मलनद्राश फिर से पत्थर के महल गया। जब उसने यह पक्का कर लिया कि राजकुमारी अब सो गयी है तो उसने अपने पंख बाँधे और खिड़की से उड़ कर राजकुमारी के कमरे में पहुँच गया।

पर वह मुश्किल से उसके बिस्तर के पास उसको चूमने के लिये पहुँचा ही था कि ज़ारेवना ने उसे अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया और चिल्लायी "तू कौन है। तूने यहाँ आने की हिम्मत कैसे की।"

राजकुमार को उसे जागा हुआ देख कर इतना आश्चर्य हुआ कि उसकी तो बोली ही नहीं निकली। वह उससे माफी की भीख माँगने लगा। उसने उसको जाने ही नहीं दिया जब तक कि धमकी दे कर उसने उससे यह नहीं जान लिया कि वह कौन है और वह महल के अन्दर कैसे आया।

तब राजकुमार ने उसको शुरू से ले कर आखीर तक सब कुछ सच सच बता दिया। ज़ारेवना सैलीकल्ला उससे यह सब सुन कर इतनी खुश हुई कि उसने खुद ही राजकुमार को चूम लिया। उसने उससे वहीं रहने के लिये कहा और अपने इस व्यवहार पर उससे माफी माँगी।

मलन्द्राश बोला — "ओ मेरी सबसे प्यारी और सुन्दर ज़ारेवना। तुम मुझे सच सच बताओ कि तुम इस महल में इस तरह से अकेली बन्द क्यों हो।"

तब राजकुमारी ने उसको अपनी ज़िन्दगी की कहानी सुनायी। उसने कहा — "जब मैं पैदा हुई थी तो मेरे पिता ने सारे देशों के सारे बुद्धिमान लोगों को बुलाया और उनसे पूछा कि मैं कितने दिन ज़िन्दा रहूँगी।

उन्होंने मेरे पिता से कहा कि मैं **15** साल की उम्र तक खुशी खुशी ज़िन्दा रहूँगी। पर उसके बाद मेरे ऊपर कोई बुरा साया पड़ेगा इसलिये उन्होंने मेरे लिये यह महल बनवाया और जब मैं **10** साल की हो गयी तब उन्होंने मुझे इस महल में रख दिया।

अब यहाँ यह मेरा छठा साल है। महीने में एक बार मेरी माँ मुझसे मिलने आती है और तीन महीने में एक बार मेरे पिता मुझसे मिलने आते हैं। मेरे पास एक नौकर है जो उन्होंने हर समय मेरी देखभाल के लिये रखा हुआ है। मेरी माँ को आने में अभी एक हफ्ता है। पिय राजकुमार तब तक तुम यहाँ रहो और मेरे अकेलेपन को दूर करो।

ज़ारेविच मलन्द्राश यह सुन कर बहुत खुश हुआ। तरह तरह का आनन्द करते और बातचीत करते हुए दोनों का समय बहुत जल्दी बीत गया। दोनों ने एक दूसरे से शादी करने की कसम खायी।

इस तरह रहते रहते उन लोगों को साथ साथ रहते हुए एक साल से ऊपर हो गया। इस समय के बीच वे बस तभी अलग होते थे जब ज़ारेवना के माता पिता उससे मिलने के लिये आते थे।

एक दिन ज़ारेवना ने अपनी माँ को अपने महल की तरफ उससे मिलने के लिये अचानक आते देखा तो उसन ज़ारेविच मलन्द्राश से तुरन्त कहा कि वह वहाँ से चला जाये।

जैसे ही उसने वहाँ से जाने के लिये अपने पंख लगाये और खिड़की से बाहर उड़ कर जाने लगा कि ज़ारीना ने उसको देख लिया। वह तो यह देख कर ही आश्चर्यचकित रह गयी कि कोई आदमी पंख लगा कर उड़ा रहा था।

उसने अपनी बेटी से पूछा कि इसका क्या मतलब था। उसने उसको धमकी दे कर बताने के लिये मजबूर किया। इस पर सैलीकल्ला ने आखिर ज़ारेविच मलन्द्राश के वहाँ आने की कहानी सुना दी कि वह किस तरह उसके कमरे की खिड़की से उड़ कर अन्दर आया था।

जब ज़ारीना ने सुना तो वह तुरन्त ही ज़ार के पास गयी और उसे वह सब बताया तो ज़ार ने मलनद्राश को अपनी बेटी के महल में पकड़ने के लिये बहुत सारे आदमी भेजे और उनसे कहा कि वे उसको पकड़ कर उसके सामने ले कर आये।

सो उसके आदमी वहाँ गये जहाँ मलन्द्राश रहता था। उन्होंने उसको पकड़ा और ज़ार के पास ले गये। ज़ार ने उससे पूछा कि वह किसका बेटा था। वह किस देश से आया था और उसका क्या नाम था।

ज़ारेविच ने सब कुछ साफ साफ सच सच बता दिया। तब ज़ार ने अपनी बेटी सैलीकल्ला को बुलवाया और उससे पूछा कि क्या यह वही आदमी है जो उसकी खिड़की से उड़ा कर उसके पास आया था।

उसने कहा “जी हॉ यह वही है।” उसने साथ ही यह भी कहा कि “मैं इसको अपने दिल से प्यार करती हूॅ।”

तब ज़ार ने अपनी बेटी का हाथ पकड़ा और उसे ज़ारेविच मलनद्राश के हाथ में देते हुए कहा — “मेरे प्यारे दामाद जी। मेहरबानी कर के मेरी बेटी का हाथ सॅभालिये और उसे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकर कीजिये। उसके बाद उसने एक जहाज़ तैयार करवाया और दोनों को उनके देश भेज दिया।

जब वे दोनों अपने देश आये तो मलन्द्राश का पिता अपने बेटे को देख कर बहुत खुश हुआ। उसने अपने बेटे से पूछा कि वह कहॉ और कैसे रहा। वह कैसे उसके राज्य में घूमता रहा। ज़ारेविच मलन्द्राश ने उनको सब कुछ बता दिया।

ज़ार अब्राहम टुक्सालोमोविच अब बहुत बूढ़ा हो चुका था सो उसने अपने बेटे के सिर पर ताज रखा और उसे ज़ार घोषित कर दिया। कुछ दिन बाद ही वह मर गया।

ज़ार मलन्द्राश और उसकी ज़ारीना सैलीकल्ला ने राज्य पर जब तक ज़िन्दा रहे शान्ति से और खुशी खुशी राज्य किया।

12 एक जूता बनाने वाले और उसके नौकर पृतुइट्शकिन की कहानी[132]

धरती के किसी हिस्से में एक बहुत ही मशहूर राजकुमार रहता था जिसका नाम था मिस्ताफोर स्कुरलातोविच[133]। उसके पास एक नौकर था जिसका नाम था गोरिया जिसके पिता का नाम था कुतशिनिन।[134]

मिस्ताफोर ने गोरिया के लिये जूता बनाना सिखाने के लिये एक बहुत ही अच्छा मास्टर रख दिया था। गोरिया ने उससे कई साल तक जूता बनाना सीखा। अब वह इतना बढ़िया जूता बनाना सीख गया था कि अपने मास्टर से भी अच्छा जूता बनाने लगा था।

एक दिन मिस्ताफोर स्कुरलातोविच उसको अपने घर ले आया और उसको कुछ जूते बनाने का आर्डर दिया। सो उसने 20 दर्जन जूते बनाये। पर उनमें से कोई भी जूते का जोड़ा मिस्ताफोर को खुश नहीं कर सका। उसने गोरिया को इतना मारा इतना मारा कि वह बेचारा अधमरा हो गया और फिर 10 हफ्ते तक बिस्तर पर पड़ा रहा।

---

[132] Story of a Shoemaker and His Servant Prituitshkin (Tale No 12)
[133] Mistafor Skurlatovich – name of the Prince
[134] The Prince had a servanr named Goria whose father's name was Krutshinin

जब गोरिया की हालत कुछ सँभलने लगी तो मिस्ताफोर स्कुरलातोविच ने फिर से उसको कुछ और जूते बनाने के लिये दिये।

जब वे जूते बन गये तो गोरिया उनको मिस्ताफोर को दिखाने के लिये ले गया। पर इस बार भी उसको कोई जूता पसन्द नहीं आया तो मिस्ताफोर स्कुरलातोविच ने जूते गोरिया के सिर पर दे मारे और उसे इतना मारा कि उसके चेहरे से खून टपकने लगा।

बेचारे गोरिया की जेब में ताँबे का केवल एक अल्टीन का सिक्का था वह बेचारा उसको सड़क के किनारे एक दूकान पर खर्च करने गया। वह वहाँ जा कर बैठ गया और अपने मन में सोचने लगा कि "काश कोई शैतान मेरे इस मालिक से मुझे आजाद करा दे।"

कि अचानक उसके सामने एक अजनबी आ कर खड़ा हो गया। उसने गोरिया से पूछा — "मेरे बच्चे तुम इतने दुखी क्यों हो।"

गोरिया बोला — "मैं क्या करूँ। मेरा मालिक बहुत ही बेरहम है। वह तो बस एक पागल कुत्ता है। तुम देख नहीं रहे कि उसने किस तरह मेरे कपड़े फाड़ दिये हैं। और 10 हफ्ते पहले तो उसने मुझे अबकी बार से भी ज़्यादा मारा था।"

अजनबी ने पूछा — "पर वह तुमको मारता ही क्यों है।"

इस पर गोरिया बोला — "उसने मुझे जूते बनाने की कला सिखवायी। मैंने भी अपने मास्टर से अच्छे जूते बनाने सीख लिये। फिर मेरे मालिक ने मुझसे कुछ जूते बनाने के लिये कहा।

पर हालाँकि जहाँ तक अच्छा मुझसे हो सकता था मैंने उसके लिये काम करने की कोशिश की पर मैं उसको खुश नहीं कर सका और न ही कर सकता हूँ। वह मुझे उस काम के लिये धन्यवाद देता इसकी बजाय उसने मुझे देखो कितना पीटा।"

अजनबी बोला — "मैं तुम्हारे मास्टर को खूब अच्छी तरह जानता हूँ। तुमको उसकी बेरहमी से आजाद होना ही चाहिये। अगर तुम चाहो मिस्ताफोर की बेटी की शादी मैं तुमसे करा देता हूँ बजाय इसके कि वह उसकी शादी किसी राजकुमार से करे।"

गोरिया बोला — "क्या तुम पागल हो गये हो। तुम कैसी बेमतलब की सी बात कर रहे हो।"

अजनबी बोला — "तुम मेरे ऊपर भरोसा तो रखो। मैं यह सब कर सकता हूँ।"

पर जूते बनाने वाले को उसकी इस बात पर विश्वास ही नहीं हुआ वह बोला — "तुम बातें कर सकते हो। तुम वायदा भी कर सकते हो तुम जो चाहे कर सकते हो पर मैं तुम्हारी किसी भी बात का विश्वास नहीं करता।"

अजनबी बोला — "तुम चाहे विश्वास करो या न करो पर तुम देख लेना जो कुछ मैंने कहा है वह मैं तुम्हें कर के दिखाऊँगा।"

इसके बाद अजनबी ने जूता बनाने वाले से अपनी आखें बन्द करने के लिये कहा और सूरज के सामने जमीन पर लेट जाने के लिये कहा। फिर उससे दो कदम पीछे हटने के लिये कहा।

जब गोरिया ने इतना कर लिया तो अजनबी ने ने गोरिया से खुद की तरफ देखने के लिये कहा। गोरिया ने जब अपने आपको देखा तो वह तो अपनी ऑखें पर विश्वास ही नहीं कर सका।

उसने बहुत मॅहगी पोशाक पहनी हुई थी। उसके मुॅह से तुरन्त ही निकला — "तुम आदमी की शक्ल में जरूर ही कोई शैतान हो।"

अजनबी बोला — "यकीनन मैं एक शैतान का बच्चा हूॅ। तुमने मुझे बुलाया सो तुम्हारे बुलाने पर मैं आया। मैं तुम्हारी सेवा करूॅगा और तुम्हारी शादी मिस्ताफोर की बेटी से कराऊॅगा।"

गोरिया बोला — "यह कैसे मुमकिन है। मुझे तो सब लोग बहुत दिनों से जानते हैं। यहॉ तक कि गली का कुत्ता कुत्ता तक मुझे अच्छी तरह जानता है।"

अजनबी बोला — "नहीं नहीं ऐसी बात नहीं है। मैं वायदा करता हूॅ कि तुम्हें कोई नहीं पहचानेगा। सब तुम्हें राजकुमार दर्दवान[135] समझेंगे जिससे मिस्ताफोर की बेटी दोगदा की शादी पक्की हुई है।"

---

[135] Dardavan – name of the Prince with whome the marriage of Dogda, the daughter of Tsar Mistafor, was settled.

गोरिया बोला — "अरे वाह यह तो बड़ी अच्छी बात है। अगर जो तुम कह रहे हो उसे साबित कर देते हो तो... ।"

अजनबी बोला — "तुम देखना ऐसा ही होगा।"

तब अजनबी ने गोरिया को तीन कदम पीछे हटने फिर अपनी ऑखें बन्द कर लेने और फिर खोल लेने के लिये कहा। अचानक ही गोरिया ने अपने सामने एक सफेद संगमरमर का महल देखा।

वह आश्चर्य में भर कर चिल्लाया — "तुम तो सचमुच में शैतान लगते हो तुम आदमी नहीं हो क्योंकि कोई आदमी ऐसे काम कर ही नहीं सकता।"

अजनबी बोला — "देखा न। मैंने तुमसे सच ही कहा था। मैं तुम्हें धोखा नहीं दे रहा। अब मैं यह संगमरमर का महल तुमको भेंट में देता हूँ। मैं अब हमेशा ही तुम्हारे पास रहूँगा और वफादारी से तुम्हारी सेवा करूँगा। तुम मुझे पृतुइट्शकिन[136] कह कर पुकार सकते हो।"

इसके बाद नौकर अपने नये मालिक जूते बनाने वाले गोरिया को नये महल के कम्पाउंड में ले गया जहॉ उसने बहुत सारे लोग घोड़े और गाड़ियॉ खड़ी देखीं। सब नौकरों ने उसे सलाम किया जैसे वे किसी राजकुमार को कर रहे हों। गाने बजाने वालों ने संगीत छेड़ा और जब संगीत बन्द हो गया तो जूते बनाने वाला गोरिया संगमरमर के महल के अन्दर गया।

---

[136] Prituitshkin – name of the Devil

वहाँ जा कर उसने एक मेज देखी जिस पर तरह तरह के खाने लगे हुए थे। बस वह जा कर उस मेज पर बैठ गया और पेट भर कर खाया और पिया। वह उस महल में एक राजकुमार की तरह से रहता रहा।

इस सबके बीच राजकुमार दर्दवान जिसकी शादी राजकुमारी दोगदा से तय हो चुकी थी किसी दूसरे शहर में अपने काम के सिलसिले में घूम रहा था।

तो गोरिया के भरोसे वाले नौकर पूतुइट्शकिन ने सोचा कि यह मौका अच्छा था जब गोरिया की शादी राजकुमारी दोगदा से करवा दी जाये। सो वह अपने जूता बनाने वाले मालिक के पास गया और कहा कि अब अच्छा मौका है दोगदा से शादी करने का। अब हमें कुछ ऐसा करना चाहिये जिससे तुम दर्दवान लगो।

ऐसा कह कर वह महल के सामने गया उसके सामने उसने एक बड़ा सा तम्बू खड़ा किया और सारे बाजे बजाने वालों से कहा कि वह एक ही समय पर अपने वाद्यों को बजाना शुरू करें।

जब ऐसा हुआ तो मिस्ताफोर ने इतने सारे संगीत वाद्यों की मिली जुली आवाज सुनी तो उसको लगा कि राजकुमार दर्दवान आ गया है। उसने अपने आदमियों के यह बात पक्की करने के लिये बाहर भेजा।

जैसे ही उसने यह सुना कि राजकुमार दर्दवान वहाँ आ पहुँचा है उसने तुरन्त ही अपने प्यारे दामाद को खाने के लिये बुला भेजा। वे

लोग गोरिया के पास गये और उन्होंने उससे कहा कि मिस्ताफोर स्कुरलातोविच ने उन्हें बुलाया है।

गोरिया बोला — "जाओ और जा कर अपने राजा से कह दो कि हम अभी आते हैं।"

सो दूत ने गोरिया को नीचे तक सिर झुकाया और वापस चला गया। जा कर उसने राजा से वह कहा जो राजकुमार दर्दवान ने कहा था और जो कुछ उसने वहाँ देखा था।

जब मिस्ताफोर के लोग चले गये तो पृतुइट्शकिन गोरिया के पास गया और बोला — "अब तुम्हारा समय आ गया है जब तुम्हें मिस्ताफोर के पास जाना चाहिये। अब तुम वह सुनो जो तुम्हें अब करना चाहिये।

जब तुम उसके कम्पाउंड में पहुँचो तो तुम अपने घोड़े से उतर जाना मगर उसको बाँधना नहीं और न उसे किसी को पकड़ाना। बस केवल जोर से खाँसना और अपनी पूरी ताकत के साथ अपना पैर जमीन पर ज़ोर से मारना।

जब तुम कमरे में घुसो तो तुम उस कुर्सी पर बैठना जिस पर "एक"[137] लिखा हो। शाम को जब तुम सोने जाओ तो पीछे रहना। जैसे ही तुम्हारा बिस्तर लग जाये उस पर तभी मत लेट जाना क्योंकि राजकुमार दर्दवान केवल उस बिस्तर पर लेटता है जो **100** पूद[138]

---

[137] "One"

[138] 100 Pood (in Russian "pud" pronounced as "put"). 1 Pood = 16.4 Kg

भारी होता है। मैं तुम्हें ऐसा एक पलंग ला कर दूँगा। और अगर मुझे उसे लाने में देर हो जाये तो तुम मुझे मिस्ताफोर और उसकी बेटी के सामने खुब मारना।

जब तुम बिस्तर पर लेट जाओगे तो नौकर लोग बहुत सारी रोशनी ले कर आयेंगे तुम सबको वापस भेज देना और मुझे एक पत्थर लाने का हुक्म देना क्योंकि राजकुमार दर्दवान हमेशा उसे अपने बराबर वाली मेज पर रख कर सोता है।

तब मैं तुम्हें पत्थर ला कर दूँगा जिससे हजार मोमबत्तियों की रोशनी से भी ज़्यादा रोशनी निकलती है।"

जब जूता बनाने वाले गोरिया ने यह सुना तो उसने वायदा किया कि वह वैसा ही करेगा। सो वह महल के कम्पाउंड में पहुँचा तो पृतुइट्शकिन उसके लिये तैयार घोड़ा ले आया। गोरिया उस घोड़े पर चढ़ गया। पृतुइट्शकिन दूसरे घोड़े पर चढ़ गया। दोनों मिस्ताफोर स्कुरलातोविच से मिलने के लिये चल पड़े।

जब वे मिस्ताफोर के महल के कम्पाउंड में घुसे तो मिस्ताफोर अपने होने वाले दामाद को लेने के लिये बाहर आया। जूता बनाने वाला अपने बहादुर घोड़े से उतरा पर उसने उसे बाँधा नहीं। ना ही उसने उसे किसी को पकड़ने के लिये दिया।

उसने बहुत ज़ोर से खाँसा और अपना पैर जमीन पर बहुत ज़ोर से मारा। इससे कुछ ऐसा हुआ कि घोड़ा वहाँ ऐसे चिपक कर खड़ा हो गया जैसे उसे किसी ने उसको वहाँ कीलों से जड़ दिया हो।

इसके बाद गोरिया कमरे में गया। वहाँ पहुँच कर उसने चारों दिशाओं को सिर झुकाया अपने मेजबान को चूमा और जा कर उस कुर्सी पर बैठ गया जिस पर "एक" लिखा हुआ था।

मिस्ताफोर अपनी बेटी दोगदा को लाने के लिये गया और उससे बाहर आने और अपने होने वाले पति राजकुमार दर्दवान का स्वागत करने के लिये कहा।

पर दोगदा बहुत होशियार लड़की थी। उसने बाहर देख कर कहा अपने पिता से कहा — "मेरे मालिक और पिता। यह राजकुमार दर्दवान नहीं है। यह तो गोरिया क्रुतशिनिन है अपना जूता बनाने वाला।"

मिस्ताफोर बोला — "यह तुम क्या बेकार की बात कर रही हो। मैंने राजकुमार दर्दवान को आमने सामने देखा है। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ। यह राजकुमार दर्दवान ही है जूता बनाने वाला नहीं।"

दोगदा बोली — "ठीक है ठीक है। मैं उनका स्वागत करने के लिये चलती हूँ पर मैं एक बात कहे दे रही हूँ कि यह राजकुमार दर्दवान नहीं है। यह केवल हमारा जूता बनाने वाला गोरिया उसके वेश में है राजकुमार दर्दवान नहीं।

और एक बात और। जब हम लोग खाना खाने बैठेंगे तो आप उसके लिये मैदा और आटे दोनों की रोटी मँगवाइयेगा और फिर देखियेगा कि अगर यह पहले आटे की रोटी काटता है तो

समझियेगा कि यह राजकुमार दर्दवान नहीं है बल्कि गोरिया है। क्योंकि राजकुमार दर्दवान पहले सफेद रोटी खाते हैं।"

मिस्ताफोर बोला — "ठीक है मैं देखूँगा।"

तब उसने गोरिया को खाना खाने के लिये मेज पर बुलाया। जब सब बैठ गये तो आटे और मैदा दोनों की रोटियाँ ला कर मेज पर रखी गयीं। गोरिया ने पहले आटे की रोटी काटी। मिस्ताफोर और दोगदा दोनों ने इस बात को देखा।

मिस्ताफोर बोला — "मेरे प्यारे और आदरणीय दामाद ए राजकुमार दर्दवान जी। ऐसा कैसे हुआ कि आज आपने आटे की रोटी इतनी सारी काटी और मैदा की बिल्कुल नहीं।"

जब गोरिया के नौकर पृतुइट्शकिन ने यह सुना तो वह अदृश्य रूप से गोरिया के पास गया और उससे कहा कि वह मिस्ताफोर से यह कहे कि "मेरे पिता जब मेज पर बैठते थे तो रोटी का पहला टुकड़ा गरीबों को बाँटा करते थे। और नमक की बजाय एक सोने का थैला दिया करते थे।" इतना कह कर मुझे एक सोने का थैला लाने के लिये कहना।

गोरिया ने उस बात को वैसा का वैसा ही राजा से कह दिया और अपने नौकर से एक सोने का थैला लाने के लिये कहा। फिर उसने आटे की रोटी के कुछ और टुकड़े काटे।

पृतुइट्शकिन पल भर में ही एक सोने का थैला ले आया जो उसने मिस्ताफोर के खजाने से ही चुराया था। गोरिया ने उससे फिर कुछ गरीब लोगों को बुलाने के लिये कहा।

नौकर भागा भागा गया और पल भर में ही बहुत सारे भूखे लोगों को ले आया। गोरिया ने एक एक टुकड़ा रोटी का और एक एक सोने का सिक्का उनको बॉट दिया। जब उसने सारी रोटी और सिक्के बॉट दिये तब उसने अपना खाना शुरू किया।

खाना खाने के बाद मिस्ताफोर ने अपनी बेटी से कहा — "अब तुम क्या कहती हो। क्या यह राजकुमार दर्दवान नहीं है?"

दोगदा फिर बोली — "नहीं। यह राजकुमार नहीं है यह तो जूता बनाने वाला गोरिया कुतशिनिन है।"

जब शाम होने को आयी और देर होने लगी तो मिस्ताफोर ने उसके लिये सबसे अच्छा बिस्तर बनाने के लिये कहा और उससे कहा कि अब बहुत देर हो रही है आप चल कर सोयें।

यह सुन कर गोरिया सोने के कमरे में गया तो उसने देखा कि वहॉ वह पलंग तो नहीं था जिसका पृतुइट्शकिन ने जिक्र किया था। उसने तुरन्त ही अपने नौकर को बुलाया और राजा और राजा की बेटी के सामने ही उसको डॉटा।

"अरे ओ बेवकूफ। तूने मेरा बिस्तर पहले से ही ठीक क्यों नहीं किया। तू तो पहले ही से जानता है कि मैं अपने 100 पुद वाले

पलंग पर सोता हूँ। चल जा और जल्दी से जा कर उसे ले कर आ।"

सो पृतुइट्शकिन तुरन्त ही दौड़ा गया और पल भर में ही उसका पलंग ले कर आ गया। यह उसने राजकुमार दर्दवान का खुद का पलंग चुराया था।

उसके बाद गोरिया ने अपने कपड़े उतारे और पलंग पर लेट गया। दोगदा ने उसको एक बार फिर से जॉचने के लिये उसके कमरे में बहुत सारी रोशनी भेज दी।

पर गोरिया ने तुरन्त ही उन सब रोशनियों को वापस भेज दिया और अपने नौकर पृतुइट्शकिन को कहा कि वह उसका पत्थर ले कर आये। नौकर वह पत्थर भी राजकुमार दर्दवान के महल से चुरा कर ले आया और गोरिया के पास वाली मेज पर रख दिया। उसकी रोशनी तो आसमान के एक मीटियोर से भी कहीं ज़्यादा थी।

आधी रात को दोगदा ने अपनी एक दासी को गोरिया के सोने के कमरे में भेजा ताकि वह गोरिया के कमरे से वह पत्थर चुरा सके जो उसकी मेज पर रखा था। पर दासी उस कमरे में घुसी ही थी और पत्थर ले कर भागने ही वाली थी कि...

गोरिया का नौकर पृतुइट्शकिन जो कमरे के दरवाजे के बाहर ही सो रहा था उठ गया और चिल्ला कर बोला — "तुम्हें शर्म नहीं आती ओ सुन्दर लड़की अपने होने वाले मास्टर और राजा की चीज़

चुराते हुए। अब तुम अपने किये की माफी माँगो और यहाँ से निकलो।"

ऐसा कह कर उसने दासी के जूते और उसके सिर पर पहने हुए कपड़े निकाल लिये और बाहर खदेड़ दिया। दासी अपनी मालकिन के पास गयी और जा कर उसे सब बताया पर दोगदा यह सुन कर निराश नहीं हुई।

एक घंटे बाद यह सोच कर कि सब अब फिर से सो गये होंगे उसने अपनी किसी दूसरी दासी को यह काम करने के लिये भेजा।

जब यह लड़की गोरिया के सोने के कमरे में घुसी तो पृतुइट्शकिन फिर से जाग कर कूद कर खड़ा हो गया। उसने फिर से उसके जूते और सिर पर पहनने वाला कपड़ा उतार लिया और उसको वहाँ से भेज दिया।

लेकिन एक घंटे बाद ही दोगदा ने फिर से यही सोचा कि अब तो वे दोनों सो गये होंगे सो अबकी बार वह खुद उसका पत्थर चुराने के लिये उसके कमरे में गयी।

मुश्किल से वह जूता बनाने वाले के कमरे में घुसी होगी और पत्थर उठाने के लिये हाथ बढ़ाया होगा कि पृतुइट्शकिन कूद कर फिर से वहाँ आ गया।

उसने उसका हाथ पकड़ लिया और बोला — "इतने बड़े राजा की बेटी को यह शोभा नहीं देता कि वह इस तरह की चालें खेले।

इसलिये ओ सुन्दर लड़की मैं आपसे विनती करता हू कि आप मेरे सामने कसम खायें।"

दोगदा ने तुरन्त ही कसम खायी कि वह अबसे ऐसा काम नहीं करेगी।

पृतुइट्शकिन ने उसकी भी जैकेट सिर का कपड़ा और जूते निकाल लिये और दोगदा को वहॉ से शर्मनाक और अपमान की हालत में भेज दिया।

अगले दिन जब जूता बनाने वाला गोरिया उठा तो उसके नौकर पृतुइट्शकिन ने उसे वह सब कुछ बताया जो रात को हुआ था।

इसके बाद उसने उसको सलाह दी कि जब मिस्ताफोर उससे कोई पहेली पूछे तो उससे कहना "तुम पहेली पूछो या मत पूछो पर मैं तुम्हें एक पहेली बूझने के लिये देता हूॅ –

"मैं तुम्हारे हरे घास के मैदान में घूमने गया। वहॉ मैंने तीन बकरियॉ पकड़ीं और उनमें से मैंने हर एक की तीन तीन खाल निकाल ली।"

अगर मिस्ताफोर को कोई शक हो जैसे कि अगर वह यह कहे कि एक बकरी की तीन खालें कैसे हो सकती हैं तब तुम मुझे पुकारना कि मैं उसे वे खालें ला कर दिखाऊॅ।"

जब गोरिया ने अपने नौकर से ये बातें सीख लीं तो वह मिस्ताफोर के पास गया तो मिस्ताफोर ने तुरन्त ही उसको एक पहेली बूझने के लिये कहा।

पर गोरिया बीच में ही बोला — “मैं आपको एक पहेली देता हूँ “मैं तुम्हारे हरे घास के मैदान में घूमने गया। वहाँ मैंने तीन बकरियाँ पकड़ीं और उनमें से मैंने हर एक की तीन तीन खाल निकाल ली।”

जैसा कि पृतुइट्शकिन ने कहा था वैसा ही हुआ। राजा बोला — “यह कैसे हो सकता है। किसी बकरी की तीन खालें कैसे हो सकती हैं।”

गोरिया बोला — “हर बकरी की तीन खालें ही होती हैं।”

कह कर उसने पृतुइट्शकिन को आवाज लगायी कि वह वे तीनों खालें ला कर राजा को दिखाये। नौकर तुरन्त ही गया और वह तीनों खालें ले कर आ गया।

जब मिस्ताफोर ने अपनी बेटी की पोशाक देखी तो वह मन ही मन बहुत नाराज हुआ। उसने नकली ज़ारेविच से पूछा कि उसकी यह पोशाक उसके पास कहाँ से आयी। जूता बनाने वाले ने जो कुछ देखा था वह सब राजा को बता दिया।

मिस्ताफोर को उस पर बहुत गुस्सा आया। उसने उससे कहा — “क्या तुमने यह नहीं कहा था कि यह राजकुमार दर्दवान नहीं हैं बल्कि जूता बनाने वाला गोरिया कुतशिनिन है। मेरा धीरज अब खत्म हो गया है। अपनी शादी की तैयारी करो।”

और जूता बनाने वाले गोरिया कुतशिनिन की शादी उसी दिन राजा मिस्ताफोर की बेटी दोगदा से हो गयी।

इसके कुछ समय बाद पृतुइट्शकिन गोरिया के पास आया और बोला — "क्योंकि अब मैंने तुम्हारी किस्मत बना दी है तो अब बदले में मेरे लिये कुछ करो। मेरी तुमसे एक विनती है। तुम्हारे बागीचे में एक तालाब है जहाँ मैं पहले रहता था।

एक दिन एक लड़की वहाँ कपड़े धोने के लिये आयी। उसने अपनी ॲगूठी अपने हाथ से निकाल कर उस तालाब में गिरा दी और उसके सहारे उसने मुझे उसमें से खींच लिया।

तो अब तुम हुक्म करो कि उस तालाब का सारा पानी निकाल लिया जाये और तालाब साफ कराया जाये। जिस किसी को वह ॲगूठी मिल जाये वह उसे तुम्हारे पास लाये। जब वह ॲगूठी मिल जाये तो उस तालाब को फिर से साफ पानी से भरवा दिया जाये।

फिर एक नाव बनायी जाये और उस नाव में हम तीनों यानी तुम मैं और तुम्हारी पत्नी बैठ कर घूमें। फिर मैं अपने आपको उस पानी में गिरा दूँगा।

उस समय तुम्हारी पत्नी यह कहे कि "अरे देखो नौकर पृतुइट्शकिन पानी में गिर गया।" तो केवल यह कहना कि "शैतान उसको ले जा।"

गोरिया ने जब यह सब सुना तो उसने वह तालाब खाली करवाया और साफ कराया। जिस किसी को जो कुछ मिला वह उसे गोरिया के पास लाया। एक लड़के को ॲगूठी मिली तो वह उसे गोरिया के पास लाया।

गोरिया ने फिर से तालाब को भरने के लिये और एक नाव बनाने के लिये कहा। नाव बन जाने के बाद तीनों उस नाव में बैठ कर तालाब की सैर करने निकले।

बीच तालाब में अचानक ही पृतुइट्शकिन तालाब में कूद गया। यह देख कर दोगदा चिल्लायी — "ओह देखो यह पृतुइट्शकिन नौकर तो पानी में डूब गया।"

गोरिया बोला — "शैतान इसे ले जा। मुझे अब इसकी जरूरत नहीं है।"

राजकुमार दर्दवान को जो राजकुमारी दोगदा का असली होने वाला पति था लड़ाई पर भेज दिया गया। वहाॅ वह मारा गया। फिर गोरिया हमेशा उसी के नाम से जाना जाता रहा और दोगदा के साथ बहुत सालों तक खुशी खुशी रहा।

13 बेवकूफ इमैल्यान[139]

एक बार की बात है कि एक बहुत दूर के देश में, रूस में ही कहीं किसी जगह एक किसान रहता था जिसके तीन बेटे थे। उसके दो बेटे तो होशियार थे पर उसका तीसरा बेटा जिसका नाम इमैल्यान था कुछ बेवकूफ सा था।

किसान बहुत दिनों तक जिया और जब वह बहुत बूढ़ा हो गया तो उसने अपने तीनों बेटों को अपने पास बुलाया और कहा — "मेरे प्यारे बच्चों मुझे लगता है कि अब मैं जल्दी ही मर जाऊँगा सो मैं तुमको अपना घर और जानवर देता हूँ जिन्हें तुम तीनों आपस में बराबर बराबर बाँट लेना। मैंने तुम तीनों को सौ सौ रूबल[140] और भी दिये हैं।"

इसके कुछ दिन बाद ही वह बूढ़ा मर गया। उसके तीनों बेटों ने उसको दफ़ना दिया और कुछ दिन आराम से रहते रहे।

कुछ अमय बाद इमैल्यान के दोनों बड़े भाइयों का मन किया कि वे शहर जायें और अपने पिता के दिये हुए सौ रूबल से कुछ व्यापार करें। सो उन्होंने इमैल्यान से कहा — "ओ बेवकूफ हम लोग व्यापार करने शहर जा रहे हैं इसलिये हम तेरे सौ रूबल भी

---

[139] Emelyan the Fool (Tale No 13)
This tale is just like "Bevakoof Ivan Aur Pike Machhlee" given in "Roos Ki Lok Kathayen-1" by Sushma Gupta in Hindi language.

[140] Rouble is the Russian currency.

अपने साथ लिये जा रहे हैं। अगर हम अपने व्यापार में कामयाब हो गये तो हम तेरे लिये एक लाल कोट एक जोड़ी लाल बूट और एक लाल टोपी ले कर आयेंगे।

पर तू इस सारा समय घर पर ही रहना और जब हमारी पत्नियाँ यानी तेरी भाभियाँ तुझसे कोई काम करने के लिये कहें तो तू उनका काम कर देना।"

उस बेवकूफ को लाल कोट लाल जूते और लाल टोपी बहुत अच्छी लगती थी सो वह उनका कहा मानने के लिये तैयार हो गया कि वह घर पर ही रहेगा और अपनी भाभियों का कहा सारा काम कर देगा।

इस तरह उसके दोनों भाई व्यापार करने शहर चले गये और वह अपनी भाभियों के पास घर में ही रह गया।

एक दिन जब जाड़ा आने वाला था और ठंड बहुत पड़ रही थी तो उसकी भाभियों ने उससे कहा कि वह उनके लिये पानी ले आये। पर वह तो अपनी अँगीठी पर ही लेटा रहा और बोला — "अरे तुम हो कौन?"

इस पर उसकी भाभियों ने उसको बहुत डाँटा और कहा — "हम क्या हैं यह तुम अब देखोगे ओ बेवकूफ। तुम्हें पता है न कि कितनी ठंड पड़ रही है और पानी लाना तो आदमी का काम है।"

"पर मुझे बहुत आलस आ रहा है।"

उसकी भाभियॉ बोलीं — "तुमने क्या कहा कि तुम आलसी हो। तो क्या तुमको खाना नहीं खाना? अगर हमारे पास पानी नहीं है तो हम खाना नहीं बना सकते।

पर कोई बात नहीं जब हमारे पति आयेंगे तो हम उनसे कह देंगे कि वह इसको इसके लिये लाया हुआ लाल कोट और और सब सामान न दें।"

बेवकूफ ने जब यह सब सुना जो उन्होंने कहा तो उसको लगा कि उसको उनके लिये पानी लाने जाना ही चाहिये क्योंकि उसको लाल कोट और लाल टोपी पहनने की बहुत इच्छा थी।

सो वह ॲगीठी के ऊपर से नीचे उतरा और बाहर जाने के लिये अपने जूते मोजे पहनने शुरू किये। तैयार होने पर उसने अपनी कुल्हाड़ी और बालटियॉ उठायीं और पास की नदी की तरफ पानी लाने के लिये चल दिया।

नदी पर पहुॅच कर उसने नदी में एक बहुत बड़ा सा छेद खोदा और अपनी बालटियों में पानी भरने लगा और उनको बरफ पर रखने लगा। फिर उसने वहीं खड़े खड़े उस छेद के पानी की तरफ देखा तो उसने देखा कि बड़ी सी पाइक मछली उस पानी में तैर रही थी।

अब इमैल्यान कितना भी बेवकूफ था पर उसकी इच्छा हुई कि वह इस पाइक मछली को पकड़ ले। उसने तुरन्त ही हाथ बढ़ा कर उसको पकड़ लिया और पानी से बाहर निकाल लिया।

उसको उसने अपनी छाती के पास रख लिया और उसको ले कर घर की तरफ जल्दी जल्दी चल दिया।

तो पाइक मछली चिल्लायी — "तुमने मुझे क्यों पकड़ा?"

"तुमको घर ले जाने के लिये और अपनी भाभियों को देने के लिये ताकि वे तुमको पका सकें।"

"ओ बेवकूफ मुझे अपने घर मत ले जाओ मुझे तुम पानी में ही फेंक दो। मैं तुम्हें बहुत अमीर बना दूँगी।"

पर बेवकूफ इस बात के लिये तैयार ही नहीं हुआ और कूदता हुआ अपने घर की तरफ चलता चला गया।

जब पाइक ने देखा कि वह बेवकूफ तो उसको जाने ही नहीं दे रहा तो वह फिर बोली — "अरे बेवकूफ तू मुझे वापस पानी में छोड़ दे मैं तेरे लिये वह सब कुछ करूँगी जो तू खुद नहीं करना चाहता। तुझको केवल यह इच्छा प्रगट करनी होगी कि तुझे क्या करवाना है और तेरा काम हो जायेगा।"

यह सुन कर वह बेवकूफ बहुत बहुत बहुत खुश हो गया क्योंकि वह खुद तो बहुत ही आलसी था। उसका काम कोई और कर दे इससे अच्छी बात उसके लिये और क्या हो सकती थी।

उसने सोचा "अगर पाइक मेरा वह सब काम कर दे जो मैं नहीं करना चाहता या जिसमें मुझको बहुत मेहनत लगती है तो यह तो बहुत ही अच्छा है।"

सो उसने पाइक से कहा — "मैं तुमको पानी में जरूर फेंक देता हूँ अगर तुम वह सब करो जिसका तुमने वायदा किया है।"

पाइक बोली — "पहले मुझे जाने दो उसके बाद ही मैं अपना वायदा निभाऊँगी।"

बेवकूफ बोला — "नहीं पहले तुम अपना वायदा निभाओ तभी मैं तुमको वहाँ छोड़ूँगा।"

जब पाइक ने देखा कि इमैल्यान उसको पानी में नहीं छोड़ रहा तो वह बोली — "अगर तुमको मुझसे कोई काम कराना है तो तुमको उस इच्छा को पहले मुझसे कहना पड़ेगा।"

यह सुन कर वह बेवकूफ बोला — "मेरी इच्छा है कि मेरी पानी की बालटियाँ बिना पानी छलकाये नदी से पहाड़ी के ऊपर अपने आप चल कर पहुँच जायें।"

इस पर पाइक बोली — "इस तरह से नहीं। अब सुनो और इन शब्दों को याद रखना जो मैं अब तुमसे कहती हूँ तभी तुम अपनी इच्छा पूरी करवा सकोगे – "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से बालटियों तुम अपने आप पहाड़ी पर जाओ।"

इमैल्यान ने जैसे ही पाइक के ये शब्द दोहराये तो बालटियाँ उठ कर अपने आप पहाड़ी के ऊपर चल दीं। वह तो यह देख कर हक्का बक्का रह गया। उसने पाइक से पूछा — "क्या ऐसा हर बार होता रहेगा?"

पाइक बोली — "हॉ जब भी तुम कोई भी इच्छा प्रगट करोगे तुम्हारी वह इच्छा उसी समय पूरी हो जायेगी। पर तुम उन शब्दों को हमेशा याद रखना जो मैंने तुम्हें बताये हैं तभी तुम्हारी वह इच्छा पूरी होगी।"

तब इमैल्यान ने मछली को पानी में छोड़ दिया और अपनी बालटियों के पीछे पीछे अपने घर चला गया।

उसके पड़ोसी तो यह तमाशा देख कर आश्चर्य में पड़ गये। वे एक दूसरे से कहने लगे — "इस बेवकूफ की बालटियॉ तो नदी से घर तक अपने आप ही चल कर आ गयी हैं और यह खुद उनके पीछे पीछे आराम से चल कर आ रहा है।"

पर इमैल्यान ने उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और अपने रास्ते अपने घर चला गया। बालटियॉ अब तक घर पहुँच चुकी थीं और अपनी जगह बैन्च पर जा कर बैठ गयी थीं सो बेवकूफ फिर से अपनी ऍगीठी पर जा कर लेट गया।

कुछ समय बाद उसकी भाभियों ने उससे फिर कहा — "इमैल्यान तुम वहॉ आलसी बने क्यों पड़े हो। उठो और जा कर थोड़ी सी लकड़ी काट लाओ।"

पर बेवकूफ बोला — "तुम? और तुम होती कौन हो?"

उसकी भाभियॉ बोलीं — "तुमको दिखायी नहीं देता कि जाड़ा आ गया है और अगर तुम लकड़ियॉ नहीं काटोगे तो तुम ठंड से जम जाओगे।"

बेवकूफ बोला — "हॉ मैं आलसी हूँ।"

उसकी भाभियॉ बोलीं — "क्या? तुम आलसी हो। अगर तुम तुरन्त ही लकड़ी काटने नहीं गये तो हम अपने अपने पतियों से कह देंगी कि वे तुमको लाल कोट लाल बूट और लाल टोपी ला कर न दें।"

अब बेवकूफ की तो बड़ी इच्छा थी कि वह लाल कोट लाल बूट और लाल टोपी पहने तो उसके लिये उसको लकड़ी काटने के लिये बाहर जाना पड़ेगा और इस समय तो कड़ाके की ठंड पड़ रही थी और वह अपनी ॲगीठी के ऊपर से नीचे नहीं उतरना चाहता था सो उसने दबे मुँह से पाइक मछली वाले शब्द दोहरा दिये —

"पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से कुल्हाड़ी तुम उठो और लकड़ी काट कर लाओ। और तुम सब लट्ठे ॲगीठी में आ कर अपने आप लग जाओ।"

बस उसका यह कहना था कि उसकी कुल्हाड़ी उठी और कूद कर उनके घर के पीछे के मैदान में लकड़ी काटने चली गयी। उसके काटे हुए लट्ठे अपने आप आ कर घर में ॲगीठी में इकट्ठे होने लगे।

जब उसकी भाभियों ने यह देखा तो वह तो अपने बेवकूफ की होशियारी पर हैरान रह गयीं। और क्योंकि कुल्हाड़ी भी लकड़ी अपने आप ही काट रही थी तो अब इमैल्यान को जब भी मौका मिलता वह काम से आराम पा जाता।

कुछ देर बाद सारी लकड़ी खत्म हो गयी तो उसकी भाभियों ने कहा — "इमैल्यान अब हमारे पास कोई लकड़ी नहीं है सो अब तुम जंगल जाओ और कुछ लकड़ी काट कर लाओ।"

पर बेवकूफ बोला — "अरे तुम हो कौन?"

उसकी भाभियों ने कहा — "जंगल तो बहुत दूर है और आजकल जाड़ा है। हमारे जाने के लिये अब बहुत ठंडा है।"

पर बेवकूफ ने जवाब दिया — "मुझे तो बहुत आलस आ रहा है।"

वे चिल्लायीं — "तुम इतने आलसी क्यों हो? पता है अगर तुम लकड़ी काट कर नहीं लाये तो तुम इस ठंड में जम जाओगे। इसके अलावा हम यह भी देख लेंगे कि जब हमारे पति आयेंगे तो वे तुमको लाल कोट लाल बूट और लाल टोपी न दें।"

अब क्योंकि बेवकूफ को तो लाल कोट लाल बूट और लाल टोपी चाहिये थी तो उसको लगा कि उसको जंगल लकड़ी काटने जाना ही चाहिये।

सो वह ॲंगीठी से नीचे उतरा अपने जूते मोजे पहने और कपड़े पहन कर तैयार हुआ। तैयार हो कर बाहर वाले मैदान में गया शैड से स्ले[141] निकाली साथ में एक रस्सी और एक कुल्हाड़ी ली और अपनी भाभियों से बोला — "फाटक खोलो।"

---

[141] Sleigh is a wheelless carriage drawn by two or four horses or deer for the people in icy regions.

जब उसकी भाभियों ने देखा कि उनका देवर तो बिना घोड़े जोते ही स्ले को ले कर जा रहा है तो उन्होंने कहा — "अरे इमैल्यान तुम तो स्ले बिना घोड़े जोते ही ले कर जा रहे हो।"

पर उसने जवाब दिया कि उसको घोड़ों की जरूरत ही नहीं थी और उनसे उनसे केवल घर का फाटक खोलने के लिये ही कहा। सो उन्होंने घर का फाटक खोल दिया।

बेवकूफ ने शब्द दोहराये "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से मेरी यह स्ले जंगल की ओर चले।"

स्ले तुरन्त ही मैदान के बाहर इस तेज़ी से कूदी कि गाँव के लोगों ने जब उसे देखा तो वे तो इमैल्यान की बिना घोड़ों की स्ले की सवारी देख कर बहुत आश्चर्य में पड़ गये। और वह स्ले भी इतनी तेज़ी से जा रही थी कि दो घोड़े भी उसको इतनी तेज़ नहीं खींच सकते थे।

बेवकूफ को जंगल शहर के बीच से हो कर जाना था और वह अपनी पूरी गति से जा रहा था।

पर उस बेवकूफ को यह पता नहीं था कि जब वह इतनी तेज़ गति से जा रहा था तो उसको शहर वालों को पहले से ही उसके रास्ते से हट जाने के लिये सावधान कर देना चाहिये था कि "रास्ता छोड़ो।" ताकि वह किसी से टकराये नहीं।

पर वह तो ऐसे ही चला गया सो वह कई लोगों के ऊपर चढ़ कर चला गया। हालाँकि कई लोग उसके पीछे दौड़े भी पर कोई

उसको पकड़ नहीं पाया क्योंकि वह बहुत तेज़ जा रहा था और इसलिये उसको वापस भी नहीं ला पाया।

आखिरकार इमैल्यान शहर से बाहर निकल गया और जंगल में आ गया। वहाँ आ कर उसने अपनी स्ले रोक दी और कहा "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से कुल्हाड़ी तुम जाओ और लकड़ी काटो।"

उसके मुँह से ये शब्द निकले ही थे कि कुल्हाड़ी उठी और जंगल में लकड़ी काटने जा पहुँची। वहाँ से कटे लट्ठे अपने आप स्ले में आ कर इकट्ठे होने लगे।

जब कुल्हाड़ी ने अपना काम कर लिया तो वह स्ले पर बैठा और बोला "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से अब तुम उठो और घर की तरफ चलो।" और स्ले अपनी सबसे तेज़ गति से दौड़ चली।

जब वह शहर में आया जहाँ उसने कई लोगों को अपनी स्ले से घायल किया था तो उसने देखा कि वहाँ तो उसको पकड़ने के लिये बहुत सारी भीड़ जमा थी। जैसे ही वह शहर के फाटक में घुसा उन्होंने उसे पकड़ लिया।

उन्होंने उसे स्ले में से बाहर खींच लिया और नीचे गिरा कर खूब पीटा। जब बेवकूफ ने देखा कि लोग उसके साथ कैसा बर्ताव कर रहे थे तो उसने मुँह ही मुँह में कहा "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से ओ डंडे इन्हें खूब मारो।"

तुरन्त ही डंडा उठा और उसने उनको चारों तरफ से मारना शुरू कर दिया। डंडे की मार खाते ही वे सब लोग वहाँ से भाग गये। उनके वहाँ से भागते ही बेवकूफ भी वहाँ से अपने घर भाग आया। डंडा उनको भगाने के बाद उसके पीछे पीछे घर आ गया। और इमैल्यान अपनी अँगीठी के ऊपर जा कर लेट गया।

जब इमैल्यान शहर से चला गया तो वहाँ के सारे लोग एक दूसरे से आपस में बात करने लगे कि किस तरह से वह बिना घोड़ों की स्ले पर कितनी तेज़ी से जा रहा था। आखिर यह बात राजा के पास भी पहुँची।

और जब राजा ने यह सुना तो उसकी भी उसको देखने की इच्छा हो आयी। उसने अपना एक औफीसर अपने कुछ सिपाहियों के साथ उसको ढूँढने के लिये भेजा। औफीसर तुरन्त ही उसकी खोज में चल दिया।

उसने भी वही रास्ता लिया जो बेवकूफ ने लिया था। वह भी उसी गाँव में आ पहुँचा जिसमें इमैल्यान रहता था। वहाँ वह गाँव के सरदार के पास गया और उससे कहा "मुझे राजा ने फलाँ फलाँ बेवकूफ को लाने के लिये भेजा है।"

सरदार ने तुरन्त ही उसको बेवकूफ का घर दिखा दिया। औफीसर उस घर के अन्दर गया और पूछा कि बेवकूफ कहाँ है। अब वह तो अपनी रोजमर्रा की जगह याने अँगीठी के ऊपर लेटा हुआ था। उसने वहीं से पूछा "तुम्हें मुझसे क्या चाहिये।"

औफीसर बोला — "क्या? मुझे तुमसे क्या चाहिये। तुम अभी अभी उठो तैयार हो और मेरे साथ राजा के पास चलो।"

इमैल्यान ने पूछा — "मगर क्यों?"

औफीसर उसके इस बदतमीजी के जवाब से बहुत गुस्सा हो गया कि उसने उसके गाल पर एक थप्पड़ मार दिया। बेवकूफ को भी गुस्सा आ गया वह बोला — "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से ओ डंडे उठ और इनको मार।"

डंडा तुरन्त ही उठा और उन सबको चारों तरफ से मारने लगा। औफीसर को भी वहाँ से जितनी तेज़ी से वह भाग सकता था भाग जाना पड़ा। भागता भागता जब वह राजा के सामने आया तो उसने उसे बताया कि कैसे उसको उस बेवकूफ ने डंडे से मारा।

राजा ने उसकी तारीफ तो बहुत की पर उसकी कहानी पर विश्वास नहीं किया।

तब राजा ने अपने एक अक्लमन्द आदमी को बुलाया और उससे उस बेवकूफ को चालाकी से लाने के लिये कहा। अक्लमन्द आदमी इमैल्यान के गाँव गया और उस गाँव के सरदार के पास पहुँचा

उसने उससे कहा — "मुझे तुम्हारे गाँव के बेवकूफ को राजा के पास ले जाने का हुक्म हुआ है। इसलिये मुझे बताओ कि वह किसके साथ रहता है।"

सरदार दौड़ा हुआ गया और बेवकूफ की भाभियों को बुला लाया। अक्लमन्द आदमी ने उनसे पूछा कि बेवकूफ को क्या पसन्द था।

वे बोलीं — "ओ कुलीन जनाब, अगर हमारे बेवकूफ को कोई उसकी पसन्द की कोई चीज़ देना चाहता है तो पहले एक दो बार तो वह बिल्कुल ही मना कर देता है पर हॉ तीसरी बार में वह राजी हो जाता है।

उसके बाद तो आप उससे वह करा सकते हैं जो आप कराना चाहते हैं। हॉ अगर उससे कोई बुरी तरीके से बर्ताव करे तो उसको अच्छा नहीं लगता।"

राजा के दूत ने उनको विदा किया और उनसे यह कहने को मना कर दिया कि वह उससे यह न कहें कि राजा के दूत ने उससे मिलने से पहले उनको बुलाया था।

उसके बाद उसने कुछ किशमिश कुछ भुने हुए आलूबुखारे और कुछ अंगूर खरीदे और उनको ले कर वह बेवकूफ के पास जा पहुँचा। वह उस समय भी अपनी ॲगीठी पर लेटा हुआ था।

वहॉ जा कर वह उससे बोला — "अरे इमैल्यान तुम यहॉ क्यों लेटे हुए हो?" कहते हुए उसने उसको किशमिश भुने हुए आलूबुखारे और अंगूर दिये।

वह आगे बोला — "इमैल्यान हम दोनों एक साथ राजा के पास चलेंगे। मैं तुमको अपने साथ ले जाऊॅगा।"

पर बेवकूफ ने जवाब दिया — "मैं यहाँ ठीक से गर्म हूँ।" क्योंकि बेवकूफ को इससे ज़्यादा कुछ और अच्छा लगता ही नहीं था।

तब दूत ने उसकी खुशामद करनी शुरू की — "ओ भले इमैल्यान चलो चलते हैं न। तुमको उनका दरबार देख कर बहुत अच्छा लगेगा।"

बेवकूफ बोला — "नहीं मैं बहुत आलसी हूँ।"

पर दूत ने एक बार उसकी और खुशामद की — "तुम मेरे साथ चलो तो। वहाँ एक और बहुत अच्छा आदमी है। और फिर राजा तुमको एक बहुत बढ़िया लाल कोट लाल टोपी ओर बहुत अच्छे लाल बूट भी तो देगा।"

जैसे ही बेवकूफ ने लाल कोट का नाम सुना तो बोला — "ठीक है तुम आगे आगे चलो मैं तुम्हारे पीछे पीछे आता हूँ।" यह सुन कर दूत ने उससे ज़्यादा जिद नहीं की और वहाँ से चला गया।

वह वहाँ से निकल कर उसकी भाभियों के पास गया और उनसे पूछा कि अब ऐसा कोई खतरा तो नहीं था कि वह न आये। भाभियों ने उसको चिश्वास दिलाया कि नहीं अब ऐसी कोई बात नहीं थी। वह वहाँ जरूर पहुँच जायेगा।

इमैल्यान ने जो अभी तक अँगीठी के ऊपर लेटा हुआ था सोचा "उफ़ मुझे राजा के पास जाने में बिल्कुल अच्छा नहीं लगता।" पर

फिर एक मिनट के बाद ही कुछ सोच कर वह बोला "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से ओ ॲगीठी तू उठ और शहर चल।"

तुरन्त ही दीवार खुल गयी और ॲगीठी वहाँ से बाहर निकल आयी। अब वह बाहर की तरफ चल दी और जैसे ही उसने घर का मैदान पार किया तो वहाँ से तो वह बहुत तेज़ भाग ली। उसको तो कोई पकड़ ही नहीं सकता था।

तुरन्त ही उसने राजा के दूत को पकड़ लिया और उसके साथ साथ ही राजा के महल में घुस गयी।

जब राजा ने बेवकूफ को आते देखा तो वह और उसके सारे दरबारी उससे मिलने के लिये आगे गये।

जब राजा और उसके दरबारियों ने देखा कि बेवकूफ तो ॲगीठी पर चढ़ कर आया है तो सबने दाँतों तले उँगली दबा ली। पर बेवकूफ बिना हिले डुले वहीं पड़ा रहा और कुछ बोला भी नहीं।

राजा ने उससे पूछा — "जब तुम जंगल जा रहे थे तो तुमने इतने सारे लोगों को परेशान क्यों किया?"

बेवकूफ बोला — "इसमें मेरा कोई कुसूर नहीं है यह उन्हीं की गलती है। वे लोग रास्ते से हटे क्यों नहीं?"

इत्तफाक से उसी समय राजा की बेटी अपनी खिड़की पर आ गयी। इमैल्यान ने भी अचानक ही ऊपर देखा तो देखा कि राजकुमारी तो बहुत सुन्दर थी। बस तुरन्त ही वह फुसफुसाया

“पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से यह सुन्दर लड़की मेरे प्रेम में पड़ जाये।”

जैसे ही उसने ये शब्द कहे लो वह तो उसके प्रेम में पड़ गयी। उसके बाद वह बोला “पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से ओ ॲगीठी अब तुम उठो और घर चलो।”

तुरन्त ही ॲगीठी वहॉ से उठी और शहर में हो कर बेवकूफ के घर की तरफ चल दी। घर जा कर वह अपनी जगह लग गयी और इमैल्यान वहॉ कुछ समय तक शान्ति और खुशी से रहा।

पर अब शहर कुछ अलग हो गया था क्योंकि इमैल्यान के कहने पर राजा की बेटी अब इमैल्यान के प्रेम में पड़ गयी थी। वह अब अपने पिता से जिद कर रही थी कि उसको उस बेवकूफ से शादी करनी थी। और राजा उन दोनों से बहुत गुस्सा था पर नहीं जानता था कि वह बेवकूफ को कैसे पकड़े।

तब उसके मन्त्री ने उसको एक सुझाव दिया कि उसे उसी आदमी को उस बेवकूफ को पकड़ने के लिये सजा के तौर पर फिर से भेजना चाहिये कि क्योंकि पहली बार उसका काम ठीक से नहीं हुआ था इसलिये वह उसको दोबारा वहॉ ले कर आये।

यह सलाह राजा को अच्छी लगी और उसने अपने ऑफीसर को बुलाया और कहा — “दोस्त, मैंने तुम्हें पहले भी उस बेवकूफ को यहॉ लाने के लिये भेजा था और तुम उसको बिना लिये ही चले आये थे सो अब तुम्हारी सजा यही है कि तुम वहॉ दोबारा जाओ

और उसे अपने साथ ले कर आओ। अबकी बार अगर तुम उसको ले आये तो मैं तुम्हें इनाम दूँगा और अगर तुम उसको नहीं ला पाये तो मैं तुम्हें सजा दूँगा।"

जब ऑफीसर ने यह सुना तो वह राजा के पास से तुरन्त ही उस बेवकूफ को ढूँढने चल दिया। जब वह गाँव आया तो वह फिर से गाँव के सरदार से मिला।

उसने उसे कुछ पैसे दिये और कहा — "लो यह पैसे लो और इससे एक बहुत ही बढ़िया खाने का इन्तजाम करो। फिर इमैल्यान को खाना खाने के लिये बुलाओ और जब वह आ जाये तो उसको इतनी पिलाओ कि वह सो जाये।"

सरदार को पता था कि यह ऑफीसर राजा के पास से आया है इसलिये वह उसका काम करने पर मजबूर था। उसने एक खाने के लिये जो कुछ भी जरूरी था वह सब खरीदा और इमैल्यान को खाना खाने के लिये बुलाया। इमैल्यान ने कहा कि वह आयेगा। यह सुन कर ऑफीसर बहुत खुश हुआ।

अगले दिन इमैल्यान शाम को सरदार के घर खाना खाने आया। अपने प्लान के अनुसार सरदार ने उसको इतनी पिलायी कि वह सो गया।

जब ऑफीसर ने यह देखा कि बेवकूफ अब सो गया है तो उसने गाड़ी बुलायी बेवकूफ को उसमें डाला और शहर की तरफ चल दिया। वह सीधा महल पहुँच गया।

जैसे ही राजा ने सुना कि उसका ऑफीसर बेवकूफ को ले आया है तो उसने तुरन्त ही एक बहुत बड़ा सा बक्सा[142] मॅगवाया जो मजबूत लोहे के छल्लों से बॅधा हुआ हो।

राजा के हुक्म से बक्सा तुरन्त ही आ गया। जब राजा ने देखा कि वहॉ सब कुछ उसकी मर्जी के मुताबिक तैयार है तो उसने हुक्म दिया कि बेवकूफ को और उसकी बेटी को दोनों को उस बक्से में रख दिया जाये। फिर उसको मजबूती से बन्द कर दिया गया और जब यह सब हो गया तो उस बक्से को समुद्र में उसकी उछलती कूदती लहरों की दया पर फेंक दिया गया।

यह सब कर के राजा अपने महल वापस लौट गया।

बक्सा समुद्र की लहरों पर नाचता रहा। इस सबके बीच बेवकूफ सोता ही रहा। जब उसकी ऑख खुली तो उसने देखा कि उसके चारों तरफ तो ॲधेरा ही ॲधेरा है। उसको लगा कि वह अकेला ही है तो उसने सोचा "मैं कहॉ हूॅ।"।

इस पर राजकुमारी बोली — "तुम एक बक्से में हो इमैल्यान और मैं तुम्हारे साथ इसके अन्दर हूॅ।"

बेवकूफ ने पूछा — "और तुम कौन हो?"

राजकुमारी बोली — "मैं राजा की बेटी।" फिर उसने उसको यह भी बताया कि वह उसके साथ वहॉ बन्द क्यों है और उससे

---

[142] Translated for the word "Cask". It might be like a barrel. See its picture above

प्रार्थना की कि वह अपने आपको और उसे दोनों को उस बक्से में से आजाद करे।

वह बेवकूफ बोला — “पर क्यों? मैं तो बहुत अच्छे से गर्म हूँ।”

राजकुमारी बोली — “ठीक है। तुम यहाँ पर गर्म हो तो हो पर मेरा एक काम तो कर दो। मेरे आँसुओं पर रहम खाओ और कम से कम मुझे तो इससे बाहर निकाल दो।”

इमैल्यान बोला — “ऐसा क्यों? मैं तो बहुत आलसी हूँ।”

इस पर राजकुमारी ने उसको और ज़्यादा खुश करने की कोशिश की तो वह बोला — “ठीक है ठीक है मैं तुम्हारी खुशी के लिये यह कर देता हूँ।”

सो उसने बहुत ही धीरे से कहा “पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से ओ समुद्र हमको अपने किनारे पर फेंक दो जहाँ हम सूखी जमीन पर रह सकें। पर यह जगह हमारे देश के पास ही होनी चाहिये। और ओ बक्से तू भी किनारे पर जा कर टूट जाना।”

बेवकूफ के मुँह से ये शब्द निकले ही थे कि लहरें उठीं और उन्होंने बक्से को सूखी जमीन पर ले जा कर फेंक दिया। बक्सा भी वहाँ जा कर अपने आप ही टूट गया।

इमैल्यान उठा और जहाँ वे लोग जा कर पड़े थे उसके आस पास राजकुमारी के साथ इधर उधर घूमा। बेवकूफ ने देखा कि वे

तो एक बहुत ही सुन्दर टापू पर उतरे हैं। उस टापू पर बहुत सारे फलों के बहुत सारे पेड़ हैं।

जब राजकुमारी ने यह देखा तो वह तो बहुत ही खुश हो गयी और बोली — "पर इमैल्यान हम रहेंगे कहाँ? यहाँ तो कोई झोंपड़ी भी नहीं है।"

बेवकूफ बोला — "तुमको तो कुछ ज़्यादा ही चाहिये।"

अब तक राजकुमारी को यह पता चल गया था कि वह जो कुछ भी चाहता था वही कर सकता था सो वह बोली — "बस मेरा एक काम और कर दो। कम से कम एक छोटा सा मकान बनवा दो ताकि हम उसमें बारिश से बचने के लिये रह तो सकें।"

पर बेवकूफ बोला "मैं तो बहुत आलसी हूँ मुझसे यह सब नहीं होता।" फिर भी राजकुमारी उसकी खुशामद करती ही रही और आखिर इमैल्यान को वही करना पड़ा जो वह चाहती थी।

वह कुछ दूर पर खड़ा हुआ और बोला "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से इस टापू के बीच में राजा के किले से भी अच्छा एक किला बन जाये और यहाँ से राजा के किले तक क्रिस्टल का एक पुल बन जाये। इस किले में एक राजा के लायक जो जो लोग रहते हों वह सब लोग वहाँ आ जायें।"

उसने मुश्किल से ये शब्द बोले होंगे कि वहाँ एक बहुत ही शानदार किला बन कर खड़ा हो गया जहाँ से एक क्रिस्टल का पुल राजा के महल तक जाता था।

बेवकूफ राजकुमारी के साथ किले में दाखिल हुआ और देखा कि महल के कमरे तो सब बहुत अच्छी तरह से सजे हुए थे। बहुत सारे नौकर चाकर लोग और सब तरह के औफीसर उसके हुक्म के इन्तजार में हैं।

जब उसने इन सब आदमियों को आदमियों की तरह देखा तो वह अपने आपको बहुत बदसूरत और बेवकूफ लगा। वह उन सबसे अच्छा बनना चाहता था सो उसने एक बार फिर कहा "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से मैं अब इन सबसे सुन्दर और एक बहुत ही अक्लमन्द आदमी बन जाऊँ।"

बस जैसे ही उसने ये शब्द बोले कि वह तो एक इतना सुन्दर और अक्लमन्द नौजवान बन गया कि लोग तो उसे देख कर आश्चर्यचकित रह गये।

अब इमैल्यान ने अपना एक नौकर राजा के पास राजा को और उसकी सारे दरबार को अपने यहाँ बुलाने के लिये भेजा। वह नौकर उस क्रिस्टल के पुल पर से हो कर गया था जो बेवकूफ ने अपने किले से ले कर राजा के महल तक बनवाया था।

जब वह नौकर राजा के महल में पहुँचा तो उसके मन्त्री उसको ले कर राजा के दरबार में गये। वहाँ पहुँच कर इमैल्यान के दूत ने कहा — "योर मैजेस्टी हमारे राजा ने आपको खाने को लिये बुलाया है।"

राजा ने पूछा — "और तुम्हारे राजा कौन हैं?"

नौकर बोला — "योर मैजेस्टी मैं आपको अभी अपने मास्टर के बारे में कुछ नहीं बता सकता पर अगर आप उनके साथ खाना खायेंगे तो वह आपको अपने आप ही आपको बता देंगे कि वह कौन हैं।"

ऐसा उसने इसलिये कहा क्योंकि बेवकूफ ने उसे अपने बारे में बताने से मना किया था।

यह सुन कर राजा की उत्सुकता बहुत बढ़ गयी ऐसा कौन सा राजा हो सकता है जिसने उसे खाने पर बुलाया है। उसने उस नौकर को बोल दिया कि वह यकीनन वहाँ आयेगा। यह सुन कर नौकर चला गया। राजा भी अपने दरबारियों के साथ क्रिस्टल के पुल से हो कर बेवकूफ के घर चल दिया।

राजा को आते देख कर इमैल्यान उसके स्वागत के लिये आगे आया। उसको अपने सफेद हाथों से अन्दर ले गया उसके चीनी वाले होठों को चूमा और उन सबको ले जा कर ओक की मेजों के चारों तरफ बिठाया जिनके ऊपर बहुत बढ़िया किस्म के मेजपोश बिछे हुए थे और जिनके ऊपर बहुत सारी मिठाइयाँ और बहुत सारे मीठे मीठे पेय रखे हुए थे।

राजा और उसके मन्त्रियों ने खूब खाया पिया और आनन्द मनाया। खा पी कर जब वे सब वहाँ से उठे तो बेवकूफ ने राजा से कहा — "क्या योर मैजेस्टी को पता है कि मैं कौन हूँ?"

अब क्योंकि इमैल्यान ने बहुत ही अच्छे कपड़े पहन रखे थे और साथ में वह बहुत सुन्दर भी हो गया था तो उसको पहचानना किसी भी तरह मुमकिन नहीं था। राजा ने साफ कह दिया कि उसे बहुत अफसोस था कि वह उसको पहचान नहीं सका।

इस पर बेवकूफ बोला — “योर मैजेस्टी को याद होगा कि एक बार एक बेवकूफ अँगीठी पर सवार हो कर आपके महल आया था और आपने उसको अपनी बेटी के साथ एक बक्से में बन्द करवा कर समुद्र में फिंकवा दिया था। तो अब आप मुझे जान लीजिये कि मैं वही बेवकूफ हूँ। मेरा नाम इमैल्यान है।”

जब राजा ने उसको इस तरह देखा तो वह तो डर गया और सोचने लगा कि वह क्या करे। पर बेवकूफ राजकुमारी के पास गया और वह उसको अन्दर से बाहर ले आया।

राजा अपनी बेटी को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुआ। वह बोला — “मैंने तुम दोनों के साथ बहुत अन्याय किया है इसलिये अब मैं खुशी से अपनी बेटी तुमको देता हूँ।”

बेवकूफ ने नम्रतापूर्वक उसको धन्यवाद दिया और जब इमैल्यान ने शादी की सब तैयारियाँ कर लीं तो उनकी शादी बड़ी शानदार ढंग से मनायी गयी।

बेवकूफ ने मन्त्रियों और सब लोगों को एक बहुत बड़ी दावत दी। जब सब कुछ खत्म हो गया तो राजा अपना राज्य अपने दामाद को देना चाहता था पर इमैल्यान उसका ताज लेना नहीं चाहता था

सो राजा अपने राज्य वापस चला गया और वह बेवकूफ अपने किले में आराम से खुशी खुशी रहा।

14 शैम्याका का न्याय[143]

एक बार की बात है कि रूस के एक गॉव में आस पास में दो भाई रहते थे। उनमें से एक भाई अमीर था और एक भाई गरीब था।

एक दिन गरीब भाई अपने अमीर भाई से एक घोड़ा मॉगने गया ताकि वह उसके ऊपर जंगल से कुछ लकड़ी काट कर रख कर ला सके। उसके भाई ने घोड़ा दे दिया पर गरीब भाई ने उससे घोड़े का कालर भी मॉगा। इस पर अमीर भाई नाराज हो गया और उसको घोड़े का कालर नहीं दिया।

इस पर गरीब भाई ने उस घोड़े के पीछे स्ले[144] लगायी और उसको जंगल ले चला। वहॉ जा कर उसने इतनी सारी लकड़ी काटी कि घोड़ा उसको मुश्किल से खींच पा रहा था।

जब वह घर आया तो उसने अपने घर का फाटक खोला पर उसका नीचे वाला तख्ता हटाना भूल गया जो उसके इधर उधर के खम्भों में बर्फ अन्दर आने से बचाने के लिये लगे हुए थे। घोड़ा उस तख्ते से टकराया तो उसकी पूँछ कट गयी।

---

[143] The Judgment of Shemyaka (Tale No 14)
https://www.worldoftales.com/European_folktales/Russian_Folktale_1.html
This tale is given in the book "Russian Popular Tales" also, by Anton Dietrich. It is availabale at Internet
["Tale of Shemyaka's Trial" is one of the best-known 17th century Russian novels.]

[144] Sleigh is a wheelless vehicle which is used in icy regions and is drawn by horses or powerful dogs – see its picture above.

अपना काम खत्म होने के बाद गरीब आदमी अपने भाई का घोड़ा वापस करने गया। पर जब उसके भाई ने अपना घोड़ा बिना पूँछ के देखा तो उसने उसको लेने से मना कर दिया और जज शैम्याका के पास जा कर इस बात की शिकायत करने का फैसला किया।

गरीब आदमी को लगा कि अब जज उसको बुला भेजेगा और वह तो अब मुसीबत में पड़ जायेगा। वह बहुत देर तक सोचता रहा। उसके पास देने के लिये कुछ नहीं था सो उसने अपने भाई के साथ पैदल जाने का ही फैसला किया।

जब वे लोग जा रहे थे तो रात हो गयी सो वे एक सौदागर के घर रुके। अमीर भाई रात के खाने के लिये ले जाया गया और उसका ठीक से स्वागत हुआ। पर गरीब भाई को खाने को कुछ भी नहीं मिला और उसको रात को ॲगीठी के ऊपर सोने को मिला।

सारी रात वह भूख से करवटें बदलता रहा। और आखिर वह ॲगीठी पर से नीचे एक पालने में गिर पड़ा जो उसके बराबर में ही रखा हुआ था। उस पालने में सौदागर का बच्चा था। उसके गिरने से वह बच्चा मर गया। जब सौदागर को यह पता चला तो वह बहुत नाराज हुआ।

अगली सुबह उनके साथ गरीब भाई को सजा दिलवाने के लिये वह भी जज शैम्याका के पास जाने के लिये तैयार हुआ।

अब ऐसा हुआ कि शहर जाने के रास्ते में तीनों को एक पुल पर से गुजरना था। गरीब भाई इस सबसे इतना ज़्यादा डरा हुआ था कि यह सोचते ही कि शैम्याका उसके साथ जाने क्या करेगा वह अपनी ज़िन्दगी खत्म करने के लिये पुल से नीचे कूद गया।

पर उसी समय एक नौजवान अपने बीमार पिता को नहलाने के लिये नहाने के घर ले जा रहा था। पुल से नीचे कूदते ही वह गरीब भाई उसकी स्ले में जा पड़ा और उसके गिरने से उस नौजवान का बीमार पिता कुचल गया और मर गया।

सो यह नौजवान बेटा भी सौदागर और अमीर भाई के साथ साथ यह शिकायत करने के लिये शैम्याका के पास चल दिया कि इस आदमी ने उसके पिता को मार डाला।

अमीर आदमी जज शैम्याका के सामने पहले आया और उसने शिकायत की कि उसके भाई ने उसके घोड़े की पूँछ खींच ली है।

गरीब भाई ने एक पत्थर लिया उसको एक तौलिये में बाँधा और अपने भाई के पीछे खड़े हो कर उसको अपने हाथ में जज को मारने इरादे से जज के सामने ऊपर उठाया कि अगर उसने उसकी तरफ अपना फैसला न सुनाया तो वह जज को उससे मार देगा।

जज को लगा कि वह पोटली रूबल[145] से भरी हुई थी और अगर उसने उस गरीब भाई की तरफ अपना फैसला सुनाया तो वह उसको वह रूबल से भरा तौलिया दे देगा।

---

[145] Rouble is the currency of Russia.

सो उसने अमीर भाई से कहा कि वह अपना घोड़ा अपने भाई के पास ही रहने दे जब तक उसकी पूँछ फिर से बढ़ती है।

इसके बाद सौदागर अपने बच्चे के मरने की शिकायत करने के लिये आया तो गरीब भाई ने फिर से उसी तौलिये को ऊपर उठाया तो जज शैम्याका को फिर से यही लगा कि यह इस मामले के लिये भी मुझे कुछ पैसे देगा।

सो उसने फैसला सुनाया — "ओ सौदागर, तुमको अपनी पत्नी को इस गरीब भाई के घर भेज देना चाहिये जब तक इसके वहाँ बच्चा होता है। जब इसके बच्चा हो जायेगा तो फिर तुम पहले की ही तरह हो जाओगे।"

इसके बाद वह बेटा आया जिसके पिता के ऊपर यह गरीब भाई पुल पर से गिर पड़ा था और इस गिरने की वजह से वह मर गया था। उसने शिकायत की कि इस आदमी ने उसके पिता को कुचल कर मार डाला था।

गरीब भाई ने अपनी पत्थर बँधी पोटली वाला हाथ फिर जज के सामने उठाया तो जज को लगा कि यह आदमी इस मामले के लिये भी मुझे सौ रूबल देगा।

सो उसने फैसला सुनाया कि वह बेटा उसी पुल पर खड़ा हो जाये और जब वह गरीब आदमी उस पुल के नीचे से गुजरे तो वह भी उसी तरीके से उस गरीब आदमी के ऊपर कूद कर उसको मार दे।

जज की सुनायी सजा के अनुसार गरीब भाई अमीर भाई के पास बिना उसका बिना पूँछ का घोड़ा लेने के लिये आया ताकि वह उसको तब तक रख सके जब तक उसकी पूँछ बढ़ती है।

पर अमीर भाई अपना घोड़ा देने के लिये बिल्कुल तैयार नहीं था सो बजाय अपना घोड़ा देने के उसने अपने भाई को पाँच रूबल, तीन बुशैल[146] मक्का और एक दूध देती हुई बकरी दे कर मामला सिलटाया।

फिर वह गरीब भाई सौदागर की पत्नी लेने के लिये सौदागर के पास गया तो सौदागर भी किसी भी हालत में अपनी पत्नी उसे देने को तैयार नहीं था सो उसने उसको 50 रूबल, एक गाय उसके बछड़े सहित और एक घोड़ी उसके बच्चे के साथ दे कर अपना मामला सिलटाया।

अब वह गरीब भाई उस बेटे के पास गया जिसका पिता उससे मर गया था और बोला — "आओ, जज ने कहा है कि तुम उसी जगह पर खड़े हो जाओ जहाँ मैं खड़ा हुआ था और मैं उसके नीचे खड़ा होता हूँ। फिर तुम मेरे ऊपर कूदो और मुझे मार दो।"

[146] Bushel is a unit of dry measure containing 4 pecks, equivalent in the US for 35.24 liters and in Great Britain for 36.38 liters (Imperial bushel). See its picture above.

बेटे ने सोचा “कौन जानता है कि जब मैं पुल से नीचे कूदूँ तो मै इसके ऊपर ही गिरूँ। मैं इसके ऊपर गिरने की जगह नीचे जमीन पर भी तो गिर सकता हूँ और खुद भी तो मर सकता हूँ।”

सो उसने उस गरीब भाई से शान्ति से समझौता कर लिया। उसने उसको दो सौ रूबल, एक घोड़ा और पाँच माप मक्का दी और उससे छुटकारा पाया।

15 सोने की चाभी वाले राजकुमार पीटर और राजकुमारी मैगिलीन की कहानी[147]

एक बार की बात है कि फ्रांस में एक ऊँचे कुल में पैदा हुआ राजकुमार वोल्चवान अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसकी पत्नी का नाम था पैट्रोनीडा। उनके एक बेटा था जिसका नाम था पीटर।

जब पीटर छोटा ही था तो उसकी यह इच्छा थी कि उसको अन्दर एक नाइट[148] की ताकत आये और वह लड़ाई में अपने कारनामे दिखाये। सो जब वह बड़ा हुआ तो वह केवल बहादुरी के कारनामे ही करना चाहता था।

एक दिन ऐसा हुआ कि वहाँ नैपिल्स[149] राज्य से रुइगैन्डुइस[150] नाम का एक नाइट आया। उसने पीटर की बहादुरी देखी तो उससे कहा — "राजकुमार पीटर, नैपिल्स में एक राजा है जिसकी मैगिलीन[151] नाम की एक बहुत सुन्दर बेटी है। और यह राजा उन सब नाइट्स को बहुत सारा इनाम देता है जो उसकी बेटी की तरफ से लड़ते हैं।"

---

[147] Story of Prince Peter With Golden Keys and the Princess Magilene (Tale No 15)
https://www.worldoftales.com/European_folktales/Russian_Folktale_1.html
[My Note: It seems that this story is a short version of some large text as its coherency is not so good.]

[148] A knight is a person granted an honorary title of knighthood by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See its picture above.

[149] Naples is a historical town of Italy situated on the south-western shore of the country.

[150] Ruiganduis – name of a Knight

[151] Megilene – name of the Princess of the King of Naples

यह सुन कर पीटर अपने माता पिता के पास गया और नैपिल्स राज्य जाने के लिये उनका आशीर्वाद माँगा ताकि वह वहाँ जा कर एक नाइट के जैसे बहादुरी के काम सीख सके। और साथ में वहाँ के राजा की सुन्दर बेटी मैगिलीन की सुन्दरता भी देख सके।

बड़े दुख के साथ उन्होंने पीटर को नैपिल्स के लिये विदा किया। उन्होंने उससे कहा कि वह केवल भले लोगों से ही दोस्ती करे। फिर उन्होंने उसको कीमती जवाहरात जड़े तीन छल्ले दिये और एक सोने की जंजीर दी और विदा किया।

जब पीटर नैपिल्स राज्य में आया तो उसने एक होशियार काम करने वाले को एक नाइट की पोशाक और एक हैल्मैट बनाने के लिये कहा जिसमें उसने उसको दो सोने की चाभियाँ बाँधने के लिये कहा।

उसके बाद वह टूर्नामैन्ट की जगह आया और वहाँ आ कर उसने अपना नाम सोने की चाभियों वाला पीटर बताया और दूसरे नाइट्स के पीछे जा कर बैठ गया।

पहले सर अन्द्री स्क्रिन्तोर[152] मैदान में आया और उसके मुकाबले में आया इंगलैंड के राजा का बेटा हेनरी[153]। अन्द्री ने हेनरी को इतनी ज़ोर से मारा कि वह तो अपने घोड़े से ही गिर पड़ा। फिर

---

[152] Andrie Skrintor – name of Knight

[153] Henry – name of the son of the King of England

एक राजा का बेटा लैंडियोट[154] आया और उसने राजा के बेटे स्क्रिन्तोर को नीचे गिरा दिया।

जब राजकुमार पीटर ने यह देखा तो वह लैंडियोट की तरफ दौड़ा और बहुत तेज़ आवाज में चिल्लाया — "सुन्दर राजकुमारी मैगिलीन और मैजेस्टीज़ अमर रहें और खुश रहें।"

और वह लैंडियोट पर इतनी गुस्से से और इतनी ज़ोर से गिरा कि उसने उसको और उसके घोड़े दोनों को जमीन पर गिरा दिया। और अपना भाला उसके दिल में घुसा दिया।

पीटर के इस काम की राजा ने बहुत तारीफ की और राजकुमारी मैगिलीन और वहाँ बैठे सभी लोगों ने तो उसकी बहुत ही ज़्यादा तारीफ की। इसके बाद वह राजा के बड़े बड़े नाइट्स में गिना जाने लगा।

जब राजकुमारी मैगिलीन ने उसकी वह शान और सुन्दरता देखी तो वह उसके प्यार करने लग गयी। उसने सोच लिया कि वह शादी करेगी तो उसी से करेगी। उसने यह बात अपनी दासी से भी कही।

उस दिन के बाद से पीटर राजकुमारी मैगिलीन से रोज ही मिलने लगा। इस बीच अपने प्यार की निशानी के तौर पर उसने राजकुमारी को तीन अँगूठियाँ दीं और उसको साथ ले कर शहर के बाहर चला गया।

---

[154] King's son Landiot

वे अपने साथ काफी सारा सोना चॉदी ले कर अपने बढ़िया घोड़ों पर सवार हुए चले जा रहे थे। वे सारी रात चलते रहे। चलते चलते वे एक बहुत ही घने जंगल में आ पहुॅचे जो पहाड़ों में फैला पड़ा था और समुद्र तक चला गया था।

यहॉ आ कर वे आराम करने के लिये रुक गये। राजा की बेटी घास पर लेट गयी। वह बहुत थक गयी थी सो लेटते ही सो गयी। पर राजकुमार पीटर उसके पास बैठ गया और उसको सोते हुए देखता रहा।

जब वह सो रही थी तो उसने देखा कि उसकी सोने की एक जंजीर में एक गॉठ बॅधी हुई है। उस गॉठ को खोलने पर उसने देखा कि उसमें तो वे तीन ॲगूठियॉ हैं जो उसने उसको दी थीं।

उसने उनको घास पर रख दिया और बस कुछ इत्तफाक ऐसा हुआ कि एक काला रैवन उड़ता हुआ वहॉ आया और उन ॲगूठियों को ले कर उड़ कर एक पेड़ पर बैठ गया।

पीटर उस चिड़िया को पकड़ने के लिये पेड़ पर चढ़ा पर जैसे ही वह उसको पकड़ पाता कि वह एक दूसरे पेड़ पर जा कर बैठ गया। इस तरह से वह एक पेड़ पर से दूसरे पेड़ पर उड़ कर बैठता रहा और फिर समुद्र के ऊपर उड़ गया जहॉ उसने वे ॲगूठियॉ पानी में गिरा दीं। इसके बाद वह खुद एक टापू पर आ कर बैठ गया।

राजकुमार पीटर ने उस रैवन का समुद्र के किनारे तक पीछा किया पर फिर उसने इधर उधर देखा तो उसको उस टापू तक ले जाने के लिये एक मछली पकड़ने वाली नाव मिल गयी। उसने उस नाव में बैठ कर टापू पर जाना चाहा पर उसको उसको चलाने के लिये उसके पतवार नहीं दिखायी दिये।

पतवार न दिखायी देने पर वह उसको हाथ से ही खे कर टापू की तरफ बढ़ा चला कि तभी अचानक बहुत तेज़ हवा चली और वह उसको टापू की तरफ ले जाने की बजाय खुले समुद्र की तरफ ले गयी।

जब पीटर ने देखा कि वह जमीन से काफी दूर निकल आया है तो वह अपने बच जाने से बहुत नाउम्मीद हुआ और ऑसुओं और लम्बी लम्बी सॉसों के बीच बोला "ओह अपना दुश्मन तो मैं खुद ही हूँ। मैंने वे ॲगूठियॉ उनकी सुरक्षा की जगह से क्यों निकालीं। मैंने तो अपनी खुशी अपने आप ही बर्बाद कर ली।

मैं सुन्दर राजकुमारी को भी ले आया और उसको उस घने जंगल में अकेला छोड़ दिया। अब वहॉ तो जंगली जानवर उसको फाड़ खा जायेंगे। या फिर वह वहॉ रास्ता भूल जायेगी और भूख से मर जायेगी। मैं तो खूनी हो गया जिसने एक सीधे सादे आदमी का खून बहा दिया।"

यह सोचते सोचते वह बहुत दुखी हो गया और लहरों में डूबने उतराने लगा।

तभी तुर्की देश का एक जहाज़ उधर आ निकला। जब उस जहाज़ के नाविकों ने एक आदमी समुद्र में डूबते उतराते देखा तो उस अधमरे आदमी को उठा कर अपने जहाज़ पर चढ़ा लिया।

वे तब तक जहाज़ खेते रहे जब तक वे अलैक्ज़ेन्ड्रिया[155] नहीं आ गये जहाँ उन्होंने पीटर को तुर्की के पाशा[156] को बेच दिया। पर पाशा ने पीटर को भेंट के तौर पर तुर्की के सुलतान को दे दिया।

तुर्की के सुलतान ने जब पीटर का सुन्दर रूप और खास व्यवहार देखा तो उसको अपना सीनेटर[157] बना लिया। उसके सुन्दर व्यवहार ने उसके लिये सबका प्यार जीत लिया।

अब हम राजकुमारी मैगेलीन के पास चलते हैं। जब राजकुमारी मैगिलीन नींद से जागी तो उसने पीटर को ढूँढा। उसने अपने चारों तरफ देखा पर उसे पीटर तो कहीं दिखायी ही नहीं दिया। वह दुख और नाउम्मीद सी रो पड़ी और जमीन पर गिर पड़ी।

आखिरकार वह उठी और अपनी पूरी ताकत लगा कर

चिल्लायी — "ओ भले राजकुमार पीटर तुम कहाँ गये?" और इस तरह से रोती रोती वह बहुत देर तक इधर उधर भटकती रही। इस भटकने में उसकी मुलाकात एक नन[158]

[155] Alexandria is the coastal and a large town of Egypt on its far Northern coast on Mediterranean Sea.
[156] Pasha of Turkey
[157] Senator – a kind of Minister
[158] A nun is a member of a religious community of women, typically one living under vows of poverty, chastity, and obedience. She may have decided to dedicate her life to serving all other living beings, or she might be an ascetic who voluntarily chose to leave mainstream society and live her life in prayer and contemplation in a monastery or convent.

से हुई तो उसने उससे अपनी एक हलके रंग की पोशाक के बदले में उसकी काले रंग की पोशाक माँगी।

उस काले रंग की पोशाक को पहन कर वह एक बन्दरगाह पर आयी। जहाँ से उसने एक जहाज़ पकड़ा और उस देश आयी जहाँ पीटर के माता पिता रहते थे।

वहाँ आ कर वह एक कुलीन स्त्री सुज़ाना[159] के साथ ठहर गयी। वहाँ उसने पहाड़ों में एक कौनवैन्ट[160] बनाया जिसका उसने नाम रखा "सेन्ट पीटर ऐन्ड पौल"। उसमें उसने एक अस्पताल खोला जिसमें वह अजनबियों को रखती थी। इस तरह मैगिलीन को उसकी दया और अच्छाइयों की वजह से सब लोग चाहने लगे।

और फिर एक दिन पीटर के माता पिता उसको मिलने के लिये आये और उसके लिये तीन ॲगूठियाँ ले कर आये। उन्होंने उसको बताया कि उनके रसोइये ने एक मछली खरीदी जिसके अन्दर उसको ये तीन ॲगूठियाँ मिलीं।

और क्योंकि ये तीनों ॲगूठियाँ उन्होंने अपने बेटे पीटर को दी थीं इसलिये उनको डर है कि उनका बेटा पीटर समुद्र में डूब गया है। यह कह कर वे बहुत ज़ोर से रो पड़े।

उधर राजकुमार पीटर तुर्की के सुलतान के दरबार में बहुत दिनों तक रहा। फिर उसने सुलतान से अपने देश जाने की इजाज़त माँगी

[159] Susanna, a noble lady

[160] Convent is a community of persons devoted to religious life under a superior – normally of females. Wherever they live that building is also called Convent. There Superior is called Abbess.

तो सुलतान ने सोने चॉदी और कीमती जवाहरात की बहुत सारी भेंटें दे कर उसको विदा किया।

पीटर ने फ्रांस का एक जहाज़ पकड़ा। उसने **14** सन्दूकचियॉ खरीदीं उनमें नीचे थोड़ा सा नमक रखा और उसके ऊपर सोना और चॉदी रखा फिर उनके ऊपर नमक रखा और उन्हें बन्द कर दिया। नाविकों से उसने कहा कि उनमें केवल नमक था।

वह अपने देश तक बिना किसी परेशानी के चलता चला गया। जहाज़ ने फ्रांस के पास ही एक टापू पर जा कर लंगर डाला क्योंकि पीटर को समुद्र की बीमारी[161] थी।

वह उस टापू के किनारे पर ही घूम रहा था पर वहॉ वह अपना रास्ता भूल गया सो वह एक जगह जा कर लेट गया और सो गया। नाविक उसको बहुत देर तक उसका नाम पुकारते हुए उसको ढूँढते रहे पर जब वह उनको नहीं मिला तो वे अपने रास्ते चले गये।

आखिर वे कौनवैन्ट आये और वहॉ उन्होंने उसकी वे नमक की सन्दूकचियॉ जमा कर दीं।

एक बार कौनवैन्ट में नमक की कमी पड़ी तो मैगिलीन ने उन सन्दूकचियों को खोलने का हुक्म दिया और जब वे खोली गयीं तो उनमें तो बहुत सारा खजाना मिला।

उस टापू पर जिस पर पीटर रह गया था वहॉ उसको कुछ और नाविक मिल गये। वे उसको कौनवैन्ट ले गये जहॉ वह राजकुमारी

---

[161] Translated for the words "Sea Sickness" – in this sickness a person gets dizzy and vomits a lot.

मैगिलीन के अस्पताल में रख दिया गया। वहाँ वह एक महीने रहा पर मैगिलीन को नहीं पहचान पाया क्योंकि उसका चेहरा हमेशा ही एक काले परदे से ढका रहता। पीटर वहाँ रोज रोता। इत्तफाक से राजकुमारी मैगिलीन भी पीटर को नहीं पहचान सकी।

एक दिन मैगिलीन अस्पताल में आयी और पीटर को रोते हुए देखा तो उसने उससे उसके रोने की वजह पूछी। पीटर ने उसके साथ जो कुछ भी हुआ था वह सब उसको बता दिया।

तब मैगिलीन उसको पहचान गयी और उसके पिता वोल्चवान और माता पैट्रोनीडा को यह कहते हुए बुला भेजा कि उनका बेटा सही सलामत था। उसके माता पिता जल्दी ही कौनवैन्ट दौड़े चले आये।

राजा की बेटी ने तब उनका अपनी शाही पोशाक में स्वागत किया। पीटर ने जब अपने माता पिता को देखा तो वह उनके पैरों पर गिर पड़ा फिर उनके गले लग कर रोया। वे भी उसके साथ बहुत रोये।

लेकिन पीटर उठा उनके हाथ चूमे और बोला — “मेरे मालिक और पिता और मेरी माँ यह लड़की नैपिल्स के राजा की बेटी है जिसके लिये मैं इतनी दूर आया।”

उसके बाद उनकी शादी हो गयी और वे बहुत दिनों तक सुख से रहे।

16 ज़िला ज़ारेविच और सफेद स्मोक वाला इवाश्का[162]

एक बार की बात है कि एक ज़ार था जिसका नाम था चोटी।[163] इस ज़ार के तीन बेटे थे – पहला ऐस्पर ज़ारेविच दूसरा ऐडम ज़ारेविच और तीसरा ज़िला ज़ारेविच।

एक बार दोनों बड़े बेटों ने अपने पिता से विदेश घूमने की और दुनियॉ देखने की इजाज़त मॉगी। उसके बाद सबसे छोटे बेटे ज़िला ने भी अपने पिता से अपने भाइयों के साथ जाने की इजाज़त मॉगी।

पर चोटी बोला — "मेरे प्यारे बेटे। तुम अभी बहुत छोटे हो। यात्रा में बहुत मुश्किलें आती हैं तुम अभी उनको सहने लायक नहीं हो। अभी तुम उसके बारे में सोचो भी नहीं।"

पर उसने पिता से इतनी ज़्यादा विनती की कि पिता को उसको दोनों बड़े भाइयों के साथ बाहर जाने की इजाज़त देनी ही पड़ी। अपने दोनों बड़े बेटों की तरह से उसको जहाज़ भी देना ही पड़ा।

जैसे ही वे तीनों अपने अपने जहाज़ पर चढ़े उन्होंने जहाज़ को खेने का हुक्म दे दिया। जब वे खुले समुद्र में पहुँचे तो सबसे बड़े भाई ऐस्पर का जहाज़ सबसे आगे था। बीच वाले भाई ऐडम का जहाज़ बीच में था और सबसे छोटे भाई का जहाज़ सबसे पीछे।

---

[162] Sila Tsarevich and Ivashka With White Smock (Tale No 16)

[163] Tsar Chotie

यात्रा के तीसरे दिन उन्होंने एक ताबूत समुद्र में बहा जाता देखा जिसके चारों तरफ लोहे की पत्तियाँ लगी हुई थीं। दोनो बड़े भाइयों ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया पर जैसे ही सबसे छोटे भाई ज़िला ज़ारेविच की निगाह उस पर पड़ी तो उसने अपने मल्लाहों से कह कर उसको समुद्र में से उठवा लिया और उसको जमीन पर ले चलने के लिये कहा।

अगले दिन एक भारी तूफान उठा। उससे ज़िला ज़ारेविच का जहाज़ अपने रास्ते से भटक गया। वह किसी अनजान टापू के अनजान किनारे पर जा लगा। ज़िला ने अपने लोगों से कहा कि वे वह ताबूत किनारे पर ले जायें। वह खुद उनके पीछे पीछे चला। उसको उन्होंने वहीं कहीं दफ़ना दिया।

उसके बाद ज़िला ने जहाँ जहाज़ टूटा था अपने कैप्टेन को उधर ही भेज दिया और कहा कि वह वहाँ उसका तीन साल तक इन्तजार करे। साथ में उसने यह भी कहा कि अगर वह तीन साल तक नहीं आये तो वह घर जाने के लिये आजाद था।

इतना कह कर ज़िला ने अपने कैप्टेन और जहाज़ चलाने वाले दूसरे लोगों से विदा ली और आगे ही चलता चला गया। वह काफी दिनों तक चलता रहा पर उसे कोई दिखायी नहीं दिया।

काफी दिनों बाद उसने एक आदमी की आवाज सुनी जो उसके पीछे पीछे आ रहा था। उसके सारे कपड़े सफेद थे। ज़िला ज़ारेविच ने पीछे मुड़ कर देखा तो उसने देखा कि एक आदमी उसके पीछे

पीछे आ रहा है। उसने तुरन्त ही अपने हाथ से तलवार खींच ली। वैसे ही सफेद कपड़े पहने वाला आदमी उसके पास तक आ गया और ज़िला के पैरों में गिर पड़ा। उसने ज़िला को अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये धन्यवाद दिया।

ज़िला ने उससे पूछा कि उसने उसके लिये ऐसा क्या किया था जिसके लिये वह उसे धन्यवाद दे रहा था। अब अजनबी उठा और ज़िला से कहा — "आह ज़िला ज़ारेविच मैं तुम्हें जितना भी धन्यवाद दूँ मेरे लिये वह उतना ही कम है। मैं उस ताबूत में लेटा हुआ था जिसको तुमने समुद्र में से उठाया और जमीन में गाड़ दिया था।

अगर तुमने मुझे न देख लिया होता और वहाँ से न उठा लिया होता तो मैं पता नहीं कब तक समुद्र की लहरों पर ही तैरता रहता। हो सकता है 100 साल या और ज़्यादा।"

ज़िला ने पूछा — "पर तुम उस ताबूत में पहुँचे कैसे।"

अजनबी बोला — "मेरा नाम इवाष्का है। सुनो मैं तुम्हें अपनी कहानी सुनाता हूँ। मैं एक बहुत बड़ा जादूगर[164] था। मेरी माँ बताती थी कि उसके पास मेरी बदमाशियों की कई शिकायतें आया करती थीं। मैं अपनी कला से लोगों को बहुत तंग किया करता था।

तो एक दिन उन्होंने मुझे इस ताबूत में बन्द कर के खुले समुद्र में बहा दिया। सौ साल से भी ज़्यादा से मैं इस ताबूत में बन्द समुद्र

---

[164] Translated for the word "Magician"

के ऊपर तैरता रहा हूँ। देखा तो मुझे बहुत लोगों ने होगा पर किसी ने मुझे उठाया नहीं। पर तुम मुझे बचाने के जिम्मेदार हो। इसलिये मैं अबसे तुम्हारी सेवा करूँगा और वे सब सेवाऐं करूँगा जो मैं कर सकता होऊँगा।

अब यह बताओ कि क्या तुम शादी करना नहीं चाहते? मैं एक सुन्दर रानी रानी त्रूदा[165] को जानता हूँ जो तुम्हारी पत्नी बनने के लायक है।"

ज़िला बोला — "अगर यह रानी सचमुच बहुत सुन्दर है तो वह उससे शादी करना जरूर चाहेगा।" इवाष्का ने उसे बताया कि वह दुनियाँ की सबसे सुन्दर स्त्री थी।

जब ज़िला ने यह सुना तो उसने इवाष्का ने उससे विनती की कि वह उसके साथ रानी के राज्य चले। सो वे रानी के राज्य की तरफ चल दिये। वे उसके राज्य में आ पहुँचे।

उसके राज्य के चारों तरफ एक बाड़[166] लगी हुई थी और उसकी बाड़ के हर खम्भे पर एक आदमी की खोपड़ी लगी हुई थी। उस बाड़ के केवल एक ही खम्भे पर खोपड़ी नहीं लगी थी। ज़िला ने जब यह सब देखा तो वह तो बहुत डर गया।

---

165 Queen Truda

166 Means "Fencing". A row of wooden stakes or iron railings to enclose something for defense. See its picture above. This particular picture is of Baba Yaga's hut, but Truda's kingdom was also surrounded by a similar fence.

उसने इवाष्का से पूछा कि इस बात का क्या मतलब था। इवाष्का ने बताया कि ये सिर उन हीरो लोगों के थे जो रानी त्रूदा से शादी की इच्छा से वहाँ आये थे।

यह सुन कर ज़िला तो बहुत ज़ोर से काँपने लगा। उसकी इच्छा हुई कि वह त्रूदा को देखे बिना ही वहाँ से चला जाये पर इवाष्का ने उसे समझाया कि उसे डरने की कोई जरूरत नहीं है। उसको उसके साथ बहादुरी से जाना चाहिये। सो ज़िला उसके साथ चलता चला गया।

जब वे उसके राज्य में घुसे तो इवाष्का ने ज़िला से कहा — “सुनो ज़िला ज़ारेविच। मैं तुम्हारा नौकर रहूँगा। जब तुम शाही कमरे में घुसो तो बहुत ही आदर सहित राजा सालोम[167] को सलाम करना। वह तुमसे पूछेंगे कि तुम कहाँ से आ रहे हो और तुम किसके बेटे हो और तुम यहाँ क्यों आये हो।

तुम सब कुछ साफ साफ बता देना उनसे कुछ छिपाने की जरूरत नहीं है। बल्कि तुम उनसे यह कहना कि तुम उनकी बेटी का हाथ माँगने आये हो। वह तुम्हें उसको बड़ी खुशी से दे देंगे।”

सो ज़िला उनके महल में गया। जैसे ही राजकुमार सालोम को पता चला तो वह खुद उसको लेने के लिये बाहर गया और उसे हाथ पकड़ कर अन्दर संगमरमर के कमरों में ले गया।

---

[167] King Salom – father of the Queen Truda

वहाँ ले जा कर उससे पूछा — “तुम कहाँ से आ रहे हो। तुम किसके बेटे हो और तुम यहाँ क्यों आये हो।”

ज़िला बोला — “मेरा नाम ज़िला है मेरे पिता का नाम ज़ार चोटी है। मैं अपने राज्य से ही आ रहा हूँ। मैं आपकी बेटी का हाथ माँगने आया हूँ।”

राजा सालोम ने जब यह सुना तो वह बहुत खुश हुआ कि इतने बड़े ज़ार का बेटा उसका दामाद बनने वाला हो रहा था। उसने तुरन्त ही अपनी बेटी से शादी की तैयारियाँ करने के लिये कहा।

और जब शादी का दिन आया तो राजा ने अपने सब राजकुमारों और बोयर्स[168] को महल में इकट्ठा होने के लिये कहा। फिर वे सब मिल कर चर्च गये और सुन्दर रानी त्रूदा की शादी ज़िला ज़ारेविच के साथ हो गयी। फिर वे सब महल लौट आये। महल में आ कर सब लोगों ने खाना खाया और खूब आनन्द किया।

जब रात को आराम करने का समय आया इवाष्का ज़िला को एक तरफ ले गया और उसके कान में कहा — “सुनो ओ ज़िला। जब तुम आराम करने जाओ तो अपनी पत्नी से एक शब्द भी नहीं बोलना वरना तुम ज़िन्दा नहीं बचोगे और तुम्हारा सिर उस बचे हुए खम्भे पर लगा होगा।

इसके अलावा वह तुमको हर तरह से गले से लगाने की कोशिश करेगी। पर तुम मेरी बात ध्यान में रखना।”

---

[168] Boyars – high status people in the King’s court next to Princes

ज़िला ने इवाष्को से पूछा कि उसने उसे ये सब बातें क्यों बतायीं। इवाष्का बोला — “वह एक बुरी आत्मा के असर में है जो उसके पास हर रात एक आदमी के रूप में आती है लेकिन छह सिर वाले ड्रैगन के रूप में हवा में उड़ जाती है।

अगर वह तुम्हारी छाती पर अपना हाथ रख कर उसे दबाने की कोशिश करे तो तुम कूद पड़ना और उसको एक डंडी से पीटना जब तक वह बिल्कुल बेबस न हो जाये। मैं तुम्हारे कमरे के दरवाजे पर ही रहूँगा और तुम्हें देखता रहूँगा।”

यह सब सुनने समझने के बाद ज़िला अपनी नयी पत्नी के साथ आराम करने गया। जैसा कि इवाष्का ने कहा था वैसा ही हुआ। रानी त्रूदा ने हर तरह से उसको उकसाया कि वह रानी को चूमे पर ज़िला बिल्कुल चुपचाप लेटा रहा। वह एक शब्द भी नहीं बोला।

त्रूदा ने अपना हाथ ज़िला की छाती पर रख कर उसे दबाने की कोशिश की। इतना ज़्यादा कि ज़िला को साँस लेने में परेशानी होने लगी।

सो इवाष्का की बात याद कर के वह उठा उसने वह डंडी उठायी जिसे इवाष्का ने उसके लिये पहले ही तैयार कर के रखा हुआ था और जितनी ज़ोर से मार सकता था मारना शुरू कर दिया।

कि अचानक से एक ऑधी सी आयी और एक छह सिर वाला ड्रैगन खिड़की से उड़ता हुआ वहाँ आया और उसने ज़िला को मारने के प्लान से उसकी तरफ बढ़ा कि इवाष्का ने एक तलवार उठा ली

और फिर उसकी ओर बढ़ कर उस पर हमला कर दिया। वे तीन घंटे तक लड़ते रहे। उसने उसके दो सिर काट दिये। सिर कटने पर वह ड्रैगन वहाँ से उड़ कर भाग गया।

इसके बाद इवाष्का ने ज़िला से कहा कि अब वह आराम से सो जाये। ज़िला उसकी बात मान कर लेट गया और सो गया।

अगले दिन सुबह राजा सालोम देखने के लिये गया कि उसका प्यारा दामाद ज़िन्दा है या नहीं। जब उसने देखा कि ज़िला ज़िन्दा है तो वह खुशी से नाच उठा क्योंकि वह पहला आदमी था जो उसकी बेटी के हाथ से ज़िन्दा निकल पाया था।

उसने ज़िला को तुरन्त ही बुलवाया और फिर सारा दिन उन्होंने खुशियाँ मनाने में बिता दिया।

उससे अगली रात को भी इवाष्का ने ज़िला को वही सलाह दी जो उसने उसे पहली रात के लिये दी थी कि वह अपनी पत्नी से बोलेगा नहीं और रात को वह उसके सोने के कमरे के बाहर पहरा देता रहेगा।

सो उस रात भी वैसा ही हुआ जैसा कि पहली रात को हुआ था। जब ज़िला ने रानी को मारना शुरू किया अचानक वही ड्रैगन फिर से उड़ता हुआ कमरे में आ गया।

वह ज़िला को मारने ही वाला था कि एक बार फिर इवाष्का तलवार लिये दरवाजे के पीछे से भागा और उसके दो सिर और काट दिये। उसके बाद ड्रैगन उड़ गया और ज़िला सो गया।

अगले दिन राजा सालोम ने फिर ज़िला को अपने पास बुलवाया और पहले दिन की तरह से उस दिन भी सारा दिन खुशियाँ मनायी गयीं। तीसरी रात को भी यही हुआ और इस बार इवाष्का ने उसके आखिरी दो सिर काट कर उस ड्रैगन को मार दिया। फिर उसने ड्रैगन के सारे सिरों को जला कर उनकी राख मैदानों में बिखेर दी।

समय गुजरता रहा। ज़िला ज़ारेविच अपने ससुर के पास ही रहता रहा। वहाँ रहते रहते उसको एक साल हो गया। वह अभी तक अपनी पत्नी से बोला भी नहीं था।

तब एक दिन इवाष्का ज़िला के पास गया और उससे कहा कि वह राजा सालोम के पास जाये और अपने ससुर से प्रार्थना करे कि अब वह उसको उसके घर जाने देने की इजाज़त दे दे।

सो ज़िला राजा सालोम के पास गया और उससे जाने की इजाज़त माँगी तो उसने उसके साथ के लिये बहुत सारे सैनिक दे कर उसको विदा किया। तब ज़िला ने अपने ससुर से विदा ली और अपनी पत्नी को साथ ले कर अपने घर चल दिया।

जब वे रास्ते में आधी दूर पहुँच गये तो इवाष्का ने ज़िला से वहाँ अपना एक कैम्प लगाने के लिये कहा। ज़िला ने उसका कहना माना और हुक्म दिया कि वहाँ ठहरने का इन्तजाम किया जाये।

अगले दिन इवाष्का ने कुछ लकड़ी काटी और ज़िला के तम्बू के आगे रख दी। फिर उसने उनमें आग लगा दी। उसके बाद वह रानी त्रूदा को तम्बू में से खींच कर बाहर लाया और अपनी तलवार

निकाल कर उसको दो हिस्सों में काट दिया। ज़िला ज़ारेविच तो यह देख कर बेहोश सा ही हो गया। जब कुछ होश आया तो रोने लगा।

इवाष्का बोला — "रोओ नहीं। वह फिर ज़िन्दा हो जायेगी।"

उसी समय रानी के शरीर से सब तरह की बुरी चीज़ें बाहर निकल आयीं। इवाष्का ने उन सबको इकट्ठा कर के आग में फेंक दिया।

फिर वह ज़िला ज़ारेविच से बोला — "क्या तुम ये सब बुरी आत्माऐं नहीं देख रहे। ये तुम्हारी पत्नी को परेशान कर रही थीं। अब इसको इन सब बुरी चीज़ों के असर से छुट्टी मिल गयी।"

यह कह कर उसने त्रूदा के शरीर के हिस्से जोड़ कर रख दिये उन पर "ज़िन्दगी का पानी"[169] छिड़का। रानी तुरन्त ही ज़िन्दा हो गयी।

उसके बाद इवाष्का बोला — "अब विदा ज़िला ज़ारेविच। अब तुम देखना कि तुम्हारी पत्नी तुमको सच्चा प्यार करेगी। पर अब तुम मुझे फिर कभी नहीं देखोगे।"

यह कह कर वह गायब हो गया।

ज़िला ज़ारेविच ने अपना कैम्प उखड़वाया और फिर अपने देश की तरफ चल दिया। अब वह उस जगह आया जहाँ उसका जहाज़ टूटा था और जहाँ उसके जहाज़ का कप्तान उसके लिये इन्तजार

[169] Water of Life

कर रहा था। वह अपनी सुन्दर पत्नी त्रूदा के साथ जहाज़ पर चढ़ा। उन सब सिपाहियों को विदा किया जो उसके ससुर ने उसके साथ भेजे थे और जहाज़ को समुद्र में खे दिया।

जब वह अपने घर पहुँचा तो तोपों से उसको सलामी दी गयी। ज़ार चोटी खुद महल से बाहर आ कर अपने बेटे और बहू को महल में ले गया। वहाँ जा कर सब एक मेज पर बैठ गये। वहाँ उन्होंने बहुत अच्छे अच्छे खाने खाये और आनन्द मनाया।

ज़ारेविच ज़िला अपने पिता के पास दो साल रहा फिर वह अपने ससुर राजा सालोम के राज्य लौट गया। वहाँ राजा सालोम ने उसको राजा बना दिया। उसने वहाँ जब तक वह जिया हँसी खुशी राज किया।

17 नाइट यारोस्लाव लाज़ारेविच और राजकुमारी अनास्तासिया की कहानी[170]

किसी देश में कारतौज़[171] नाम का एक ज़ार रहा करता था। उसके पास 12 नाइट्स थे। उन सब नाइट्स के ऊपर उनका एक सरदार था जिसका नाम था राजकुमार लाज़ार लाज़ारेविच।[172]

राजकुमार लाज़ार और उसकी पत्नी राजकुमारी ऐपिस्तीमिया 70 साल तक ज़िन्दा रहे पर उनके कोई बच्चा नहीं था। तब उन्होंने आँखों में आँसू भर कर भगवान से प्रार्थना की कि उनके बुढ़ापे के सहारे के लिये और उनके मर जाने के बाद उनके लिये प्रार्थना करने के लिये कम से कम एक बच्चा दे दें।

आखिर उनकी इच्छा पूरी हुई और भगवान ने उनको एक बच्चा दिया जिसका नाम लाज़ार ने रखा यारोस्लाव[173]। बच्चे का चेहरा गुलाबी रंग का था। उसके बाल सफेद थे और आँखें चमकीली थीं।

उसके माता पिता उसको देख कर बहुत खुश हुए और उन्होंने एक बहुत बड़ी दावत दी। जब यारोस्लाव 15 साल का हुआ तो वह

---

[170] Story of the Knight Yaroslav lasarevich and the Princess Anastasia (Tale No 17)

[171] Kartaus named Tsar (Tzar) – Tsar is the title of the Emperor of Russia before 1917.

[172] Prince Lasar Lasarevich. His wife's name was Princess Epistemia.

[173] Yaroslav – name of the son of Lasar

अक्सर ज़ार के दरबार में जाया करता था और वहाँ दूसरे राजकुमारों और बोयर्स के बच्चों के साथ खेला करता था।

एक बार राजकुमारों ने आपस में सलाह की और वे सब ज़ार के पास गये और बोले — "ओ हमारे राजा और दुनियाँ के मालिक। मेहरबानी कर के आप हमारे ऊपर अपनी शाही कृपा करें। योर मैजेस्टी के पास एक नाइट है राजकुमार लाज़ार जिसका बेटा यहाँ दरबार में हमारे बच्चों के साथ खेलने के लिये आता है। पर उसके खेल शैतानी भरे होते हैं।

जब भी कभी वह किसी को सिर से पकड़ता है तो उसका सिर ही नीचे गिर जाता है। उसकी यह हरकत हमको बहुत परेशान और दुखी करती है।

ओ ज़ार। मेहरबानी कर के हमारे ऊपर कृपा कीजिये। या तो यारोस्लाव को किसी दूसरे राज्य में भेज दीजिये नहीं तो हमें यहाँ से जाने की इजाज़त दीजिये। क्योंकि हम लोग अब यारोस्लाव के साथ नहीं रह सकते।"

यह सुन कर ज़ार कारतौज़ ने तुरन्त ही राजकुमार लाज़ार को अपने दरबार में बुलाया। उसने उसको उन शिकायतों के बारे में बताया जो दूसरे राजकुमार उससे आ कर कर गये थे और उससे राज्य छोड़ कर जाने के लिये कहा।

जब लाज़ार ने यह हुक्म सुना तो वह बहुत दुखी हुआ और सिर झुका कर वहाँ से चला गया।

यारोस्लाव जब अपने पिता से मिलने के लिये आया तो उसने नीचे तक झुक कर उसको सलाम किया और बोला — "आप बहुत सालों तक खुश रहें मेरे पिता जी। आप इतने उदास क्यों हैं। क्या ज़ार ने आपसे कुछ कह दिया है।"

राजकुमार लाज़ार बोला — "हॉ मेरे बच्चे यारोस्लाव। मुझे वाकई ज़ार ने कुछ कड़वे शब्द कहे हैं। दूसरे बच्चे जब बड़े हो जाते है तो वे अपने अपने पिता के लिये खुशी लाते हैं, उनकी सहायता करते हैं और जब वे मर जाते हैं तो उनकी यादों को ताजा रखते हैं।

पर तुम्हारे साथ ऐसा नहीं है मेरे बेटे। तुम ज़ार के दरबार में जाते हो और वहॉ दूसरे राजकुमारों के बेटों के साथ शैतानी के खेल खेलते हो। उन्होंने तुम्हारे खिलाफ ज़ार से शिकायत की है और उन्होंने तुम्हें अपने राज्य से निकाल दिया है।"

यह सुन कर यारोस्लाव हॅस पड़ा और बोला — "पिता जी। आप मेरे लिये चिन्ता मत कीजिये कि ज़ार ने मुझे राज्य से निकाल दिया है। मैं अब 15 साल का हूॅ। मुझे अभी तक आपकी घुड़साल में कभी कोई अच्छा घोड़ा देखने को नहीं मिला जो हमेशा मेरी सेवा कर सके।"

फिर वे अपने संगमरमर के कमरे में चले गये। यारोस्लाव लाज़ारेविच ने फिर अपने पिता से विनती की वह उसे दुनियॉ घूमने के लिये बाहर जाने दें ताकि वह अपने आपको दिखा सके और खुद

दूसरे लोगों को देख सके। आखिर उसके माता पिता ने उसे इजाज़त दे दी और साथ में उसको 20 लड़के दे दिये और 50 होशियार मकान बनाने वाले दे दिये ताकि वे उसके लिये समुद्र के किनारे संगमरमर का एक महल बना सकें।

इन मकान बनाने वालों अगले तीन दिनों में ही एक महल बना कर खड़ा कर दिया और राजकुमार लाज़ार और राजकुमारी ऐपिस्तीमिया के पास एक दूत भेजा कि महल तैयार था। सो यारोस्लाव ने अपने माता पिता से विदा ली।

उसके माता पिता उसके जाने पर बहुत रोये। उन्होंने उसको आशीर्वाद दिया और विदा किया। यारोस्लाव अपने महल में आ गया जो उसके लिये समुद्र के किनारे बनवाया गया था। उसके माता पिता ने उसे सब कुछ दिया था – सोना चाँदी जवाहरात घोड़े नौकर। पर यारोस्लाव को इनमें से कुछ भी नहीं चाहिये था।

उसने अपने साथ केवल एक बूढ़ा घोड़ा, उस पर सजाने का साज, उसके मुँह में लगाने वाली एक रस्सी, एक चमड़े का कोड़ा और एक कम्बल लिया। बस इसी के साथ वह अपने महल में आया।

उसने घोड़े के साज का तकिया बनाया कम्बल ओढ़ा और बाहर जा कर सो गया। अगली सुबह वह उठ कर घूमने के लिये समुद्र के किनारे गया जहाँ उसने कई जंगली बतखें हंस और बगुले मारे। यही उसने खाया भी।

ऐसे उसने एक महीना दो महीना तीन महीने गुजारे।

एक दिन वह एक इतनी चौड़ी सड़क पर गया जिसके पार वह अपना तीर नहीं मार सकता था। वह इतनी दूर तक चली गयी थी कि वह एक बहादुर घोड़े के कानों तक जाती थी।

यारोस्लाव ने सड़क की तरफ देखा और मन ही मन में बोला "इस सड़क पर कौन जायेगा कोई बड़ी फौज या फिर ताकतवर नाइट।"

उसी समय एक बूढ़ा नाइट अपने भूरे घोड़े पर सवार उधर आया। यारोस्लाव को देखते ही वह अपने घोड़े पर से उतर पड़ा और जमीन पर लेट कर उसे सलाम करते हुए बोला — "यारोस्लाव लाज़ारेविच आप बहुत दिन जियें और खुश रहें। आप कैसे हैं मेरे मालिक। और आप यहाँ इस बियाबान जगह में कैसे?"

यारोस्लाव ने पूछा — "बड़े भाई आपका क्या नाम है?"

बूढ़ा बोला — "मेरा नाम इवाष्का है मालिक। और मेरे घोड़े का नाम अलोत्यागिली है।[174] मैं बहुत सारे ताकतवर नाइट्स में बहुत बड़ा और ताकतवर कुश्ती लड़ने वाला नाइट हूँ।"

यारोस्लाव ने पूछा — "मगर तुम मेरा नाम कैसे जानते हो।"

इवाष्का बोला — "मैं आपके पिता जी का एक पुराना नौकर हूँ। मैंने उनके घोड़ों की **33** साल तक देखभाल की है। मैं आपके

---

[174] Alotyagilie – name of the horse of Ivashka

पिता जी के पास साल में एक बार अपनी तनख्वाह लेने के लिये जाया करता था। इस तरह से मैं आपको जानता हूँ।"

यारोस्लाव बोला — "मैं ज़रा शिकार के लिये जा रहा हूँ इसी लिये में खुले में घूम रहा हूँ। जिसने कभी कड़वा न चखा हो वह मीठे की कीमत नहीं जान सकता। मैं जब एक बार छोटा ही बच्चा था तो मैं अपने कम्पाउंड में भाग गया था।

वहाँ जा कर मैं दूसरे राजकुमारों और बोयर्स के बेटों के साथ खेल रहा था कि जब मैं किसी बच्चे को उसके सिर से पकड़ लेता तो उसका सिर नीचे गिर पड़ता। और जब भी मैं किसी को उसके हाथ से पकड़ता तो उसका हाथ गिर जाता। ज़ार को यह बात अच्छी नहीं लगी सो उसने मुझे अपने राज्य से निकाल दिया।

पर यह सजा तो उस दर्द के सामने कुछ भी नहीं थी जो मुझे अब होता है। मैं अब 15 साल का हो गया हूँ पर मुझे अपने पिता की घुड़साल में कोई अच्छा घोड़ा नहीं मिलता जो मेरी ज़िन्दगी भर सेवा कर सके।"

इवाष्का बोला — "मेरे मालिक यारोस्लाव लाज़ारेविच। मेरे पास एक घोड़ा हे जिसका नाम है पोडलाज़। पर उसको आपको पकड़ना पड़ेगा। वह आपकी हमेशा बल्कि एक दिन और ज़्यादा सेवा करेगा। अगर आप उसे अभी नहीं पकड़ पायेंगे तो फिर आप उसको कभी नहीं पकड़ पायेंगे।"

यारोस्लाव ने पूछा — "बड़े भाई मैं उसको कहॉ देख सकता हूॅ।"

इवाष्का बोला — "यारोस्लाव लाज़ारेविच आप उसे सुबह देख सकते हैं जब मैं घोड़ों को पानी पिलाने के लिये समुद्र की तरफ ले जाता हूॅ। पर अगर आप उसे देख लें तो आप उसको वहीं की वहीं पकड़ लें। अगर आप उसे उसी जगह नहीं पकड़ पाये तो फिर आप उसे कभी नहीं पकड़ पायेंगे।"

इसके बाद यारोस्लाव लाज़ारेविच अपने संगमरमर के महल में चला गया। अपने घोड़े का कपड़ा अपने नीचे बिछाया साज अपने सिर के नीचे लगाया कम्बल ऊपर से ओढ़ा और सो गया।

अगली सुबह वह बहुत जल्दी उठ गया। उठ कर वह मैदान में गया। घोड़े का सारा साज वह अपने साथ ले गया था। वह एक ओक के पेड़ के नीचे छिप गया।

तभी उसने इवाष्का को घोड़ों को पानी पिलाने के लिये आते देखा। वह समुद्र की तरफ देख रहा था तो उसने देखा कि जहॉ एक घोड़ा पानी पी रहा था वहॉ लहरों के बहुत सारे झाग बन गये थे और कुछ शोर हो रहा था।

ओक के पेड़ के ऊपर जो गरुड़ बैठे थे वे चीखने लगे। पहाड़ों पर शेर दहाड़ने लगे। कोई उस जगह तक नहीं पहॅुच सका। यारोस्लाव को बड़ा आश्चर्य हुआ जब घोड़ा अपने आप ही आ कर उसके सामने खड़ा हो गया।

यह देख कर वह भी तुरन्त ही ओक के पेड़ से कूदा और घोड़े को अपने हाथ के पीछे की तरफ से सहलाया तो घोड़ा उसके पैरों पर गिर पड़ा।

यारोस्लाव ने उसको उसकी गरदन के बालों से पकड़ कर उठाया और बोला — "अगर मैं तेरे ऊपर नहीं चढ़ूँगा तो फिर कौन चढ़ेगा।"

यह कह कर उसने उसके ऊपर साज सजाया लगाम लगायी और अपने महल की तरफ चल दिया। इवाष्का उसके पीछे पीछे चला। "मैं इस घोड़े का क्या नाम रखूँ।"

इवाष्का बड़ी शालीनता से बोला — "मालिक से ज़्यादा अच्छा नाम कोई नौकर कैसे जान सकता है।"

सो यारोस्लाव ने उसका नाम "उरोश्च वैश्ची"[175] रख दिया। फिर वह इवाष्का से बोला — "आप मेरे पिता राजकुमार लाज़ार के पास जायें और उनको बतायें कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ और मुझे एक बहुत ही भरोसे का घोड़ा मिल गया है।"

उसके बाद यारोस्लाव लाज़ारेविच अपने बढ़िया वाले घोड़े पर सवार हुआ और रूसी नाइट इवान की तरफ चल दिया और उसके पीछे पीछे चल दिया इवाष्का अपनी पूरी रफ्तार से।

इवाष्का ज़ार कारतौज़ के राज्य में आया और फिर यारोस्लाव के माता पिता के घर गया। उसने उनको उनके बेटे का हाल बताया

---

[175] Urohstch Veschei – name of Yaroslav's horse

तो वे बहुत खुश हुए। उन्होंने उसको काफी भेंटें दे कर विदा किया। लेकिन यारोस्लाव लाज़ारेविच वहाँ से आगे चलता ही गया। वह तो तीन महीने तक चलता चला गया।

वह एक ऐसी जगह आ पहुँचा था जहाँ एक बहुत बड़ी फौज मरी हुई पड़ी थी। वहाँ वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "क्या यहाँ कोई ज़िन्दा है।"

तुरन्त ही एक आदमी वहाँ उठ कर खड़ा हो गया और बोला — "हाँ मैं हूँ यारोस्लाव लाज़ारेविच। तुम यहाँ किसको ढूँढ रहे हो।"

"मुझे एक ज़िन्दा आदमी चाहिये।" फिर उसने मालूम करने की कोशिश की यह फौज किसकी थी और इसे किसने मारा था।

उसने कहा कि वह फौज ड्रैगन ज़ार फ़ियोदुल की थी और इसे रूस के नाइट राजकुमार इवान ने मारा था।[176] क्योंकि राजकुमार इवान ने ड्रैगन ज़ार फ़ियोदुल की बेटी राजकुमारी कन्दौला फ़ियोदुलावना का हाथ माँगा था।

अब क्योंकि उसने अपनी इच्छा से उसको इवान को नहीं दिया तो इवान ने उसे लड़ कर लेना तय किया।"

इस पर यारोस्लाव ने उससे पूछा कि इवान कहाँ रहता है।

वह आदमी बोला — "ओ यारोस्लाव लाज़ारेविच। राजकुमार इवान आपकी पहुँच से बहुत दूर चला गया है। अगर आप इस

[176] This army belonged to Feodul the Dragon Tsar and it was killed by Prince Ivan the Russian Knight.

फौज के चारों तरफ चक्कर काटें तो आपको उसके पैरों के निशान मिल जायेंगे।"

सो यारोस्लाव उस फौज के चारों तरफ चक्कर काट कर आया तो उसको उसके घोड़े के पैरों के निशान दिखायी दे गये क्योंकि जहाँ जहाँ उसके घोड़े के खुरों के निशान थे वहाँ वहाँ से मिट्टी कुछ ज़रा ज़्यादा ही उखड़ गयी थी।

वह उन निशानों के साथ साथ चलता चला गया तो कुछ दूर जा कर उसको एक और फौज मरी पड़ी मिली। उसने वहाँ भी जा कर चिल्ला कर पूछा कि "क्या यहाँ कोई आदमी ज़िन्दा बचा है।"

तो एक आदमी चिल्लाया — "मेरे मालिक यारोस्लाव लाज़ारेविच। एक घोड़े से दो घोड़े ज़्यादा अच्छे हैं। एक नौजवान से दो ज़्यादा अच्छे हैं।"

यारोस्लाव लाज़ारेविच फिर अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ चल दिया। वह फिर एक या दो या तीन महीने तक चलता गया।

आखिर वह एक खुले देश में आ गया। वहाँ उसने एक सफेद तम्बू लगा देखा और उसके पास ही खड़ा देखा एक बहुत अच्छा घोड़ा। उस घोड़े के आगे एक सफेद कपड़े पर कुछ अनाज बिखरा पड़ा था।

यारोस्लाव अपने घोड़े से उतरा और अपने घोड़े को खाना खाने दिया। वह खुद उस तम्बू में अन्दर गया। जब वह अन्दर गया तो उसने उसमें एक सुन्दर नौजवान सोता हुआ देखा। वह इवान था तो

उसने अपनी तलवार निकाली और उसको मारने ही वाला था कि रुक गया।

उसने सोचा कि एक सोते हुए आदमी को मारने में कोई बहादुरी नहीं है सो वह भी उसी तम्बू में इवान के पास ही लेट गया।

जब इवान की ऑख खुली तो वह अपने तम्बू में से बाहर गया तो उसने देखा कि उसका अपना घोड़ा तो खाने की जगह से भगा दिया गया है और वह दूर घास चर रहा है और कोई अजनबी घोड़ा उसके घोड़े का दाना खा रहा है।

वह तुरन्त ही अपने तम्बू में वापस आया तो उसने देखा कि एक नौजवान उसके तम्बू में गहरी नींद सो रहा है। इवान ने उसकी तरफ बड़े गुस्से से देखा पर फिर अचानक सोचा कि सोते हुए आदमी को मारने तो कोई हिम्मत की बात नहीं है।

सो वह चिल्ला कर बोला — "उठो ओ नौजवान। और अपने आपको बचाओ। तुमने दूसरे के घोड़े का खाना अपने घोड़े को क्यों दिया। और तुम दूसरे के तम्बू में आ कर क्यों सो गये। इसका जवाब तुम्हें अपनी जान दे कर देना पड़ेगा।"

यारोस्लाव यह सुन कर जाग गया। राजकुमार इवान ने उसका नाम पूछा वह कहॉ से आया है यह पूछा और फिर उसके माता पिता कौन हैं यह सब पूछा।

यारोस्लाव लाज़ारेविच बोला — "मैं ज़ार कारतौज़ के राज्य से आ रहा हूॅ। मैं राजकुमार लाज़ार और राजकुमारी ऐपिस्तीमिया का

बेटा हूँ और मेरा नाम यारोस्लाव है। तुम्हारे घोड़े को मैंने नहीं भगाया है बल्कि मेरे घोड़े ने भगाया है।

अच्छे लोग अजनबियों से भी खराब भाषा में बात नहीं करते हैं बल्कि उनकी खातिर ही करते हैं। अगर तुम्हारे पास एक गिलास पानी है तो मुझे पानी पिलाओ क्योंकि अभी मैं तुम्हारा मेहमान हूँ।"

इवान बोला — "तुम अभी छोटे हो। और यह मेरा काम नहीं है कि मैं तुम्हें पानी ला कर दूँ। बल्कि मेरे लिये पानी तो तुमको लाना चाहिये।"

यारोस्लाव बोला — "तुम तो चिड़िया को पकड़ने से पहले ही उसके पर निकाल रहे हो। तुम दूसरों पर इलजाम लगा रहे हो।"

इवान बोला — "मैं तो राजकुमारों का भी राजकुमार हूँ और नाइट्स का भी नाइट हूँ। तुम तो केवल एक कौज़ैक[177] हो।"

यारोस्लाव बोला — "तुमने ठीक बोला। तुम राजकुमार तो अपने तम्बू में हो। पर जब हम खुले मैदान में मिलते हैं तब देखते हैं कि कौन कौन है क्योंकि वहाँ हम बराबर के होंगे।"

राजकुमार इवान ने देखा कि उसका दुश्मन कोई डरपोक नहीं है। उसने सोने की बोतल उठायी और पानी ला कर उसे पिलाया। फिर वे अपने अपने घोड़ों पर सवार हुए और खुले मैदान में आ गये।

---

[177] Cossack means a person from Southern Russia and Ukraine, noted for their horsemanship and military skill.

और जब उन्होंने लड़ाई शुरू की तो यारोस्लाव ने इवान को अपने भाले के पीछे के हिस्से से मारा और उसे जमीन पर गिरा दिया। फिर उसने अपने घोड़े को ज़ोर से घुमाया और भाले की नोक इवान के सीने पर रख दी और बोला — "राजकुमार इवान। तुम जीना चाहते हो या मरना।"

इवान बोला — "यारोस्लाव लाज़ारेविच। तुम मेरे बड़े भाई की तरह से हो। मुझे छोड़ दो।"

यारोस्लाव अपने घोड़े से उतरा रूसी नाइट राजकुमार इवान को अपना छोटा भाई कह कर हाथ पकड़ कर उठाया और गले से लगा लिया। फिर वे वहाँ से अपने अपने घोड़ों पर चढ़ कर इवान के तम्बू की तरफ चले गये। फिर वे खाने पीने और खुशियाँ मनाने में लग गये।

यारोस्लाव बोला — "मेरे लौर्ड भाई राजकुमार इवान। जब मैं इस जगह घूम रहा था तो मैंने यहाँ दो मरी हुई फौजें देखीं।"

इवान बोला — "भाई यारोस्लाव। पहली फौज ज़ार फ़ियोदुल की थी। मैंने उसको तब मारा जब उसने मुझे अपनी बेटी कन्दौला को देने से मना कर दिया। मेरा पक्का इरादा था कि मैं उसको जबरदस्ती ले लूँगा क्योंकि मैंने सुन रखा था कि उस जैसी सुन्दर लड़की दुनियाँ भर में नहीं है।

कल मैं उससे अपनी आखिरी लड़ाई लड़ने जाऊँगा। कल तुम मेरी बहादुरी और शान देखना।"

अगली सुबह इवान जल्दी उठा अपना घोड़ा तैयार किया और उस पर सवार हो कर ज़ार फ़ियोदुल के राज्य चल दिया।

यारोस्लाव पैदल गया और जा कर एक ओक के पेड़ के नीचे छिप गया। वहाँ पहुँच कर राजकुमार इवान ने ज़ार फ़ियोदुल को बहुत ज़ोर से पुकारा तो ज़ार फ़ियोदुल ने भी अपने ढोल आदि बजाने का हुक्म दिया।

ज़ार फ़ियोदुल राजकुमार के सामने था और उसके आगे पीछे बहुत सारे नाइट्स और दूसरे घुड़सवार थे। राजकुमार ने एक हाथ में अपनी ढाल पकड़ी और दूसरे हाथ में अपना भाला। जैसे बाज़ हंसों बतखों और सारसों पर टूट पड़ता है वैसे ही राजकुमार इवान भी उस बड़ी फौज पर टूट पड़ा।

जितने लोग उसने खुद ने मारे उससे दोगुने लोग उसके घोड़े के पैरों के नीचे आ कर मर गये। उसने वहाँ के सारे लोगों को मार दिया सिवाय बूढ़ों और बच्चों के जो अपना बचाव खुद नहीं कर सकते थे।

उसने ज़ार फ़ियोदुल को पकड़ कर बन्दी बना लिया फिर उसे मार दिया। वह जल्दी से उसके राज्य में गया और राजकुमारी कन्दौला को वहाँ से उसके हाथ पकड़ कर ले आया। उसने उसके होठों को चूमा और अपने तम्बू में ले आया।

जल्दी ही यारोस्लाव लाज़ारेविच भी वहाँ आ गया। बस फिर तीनों खाने पीने और खुशियाँ मनाने में लग गये।

जब यारोस्लाव तम्बू से बाहर चला गया तो इवान कन्दौला से बोला — "प्रिय राजकुमारी। मुझे बताओ क्या दुनियाँ तुमसे सुन्दर भी कोई है। या फिर मेरे भाई यारोस्लाव लाज़ारेविच से ज़्यादा बहादुर है। मैं बहुत घूमा हूँ पर मैंने तुम्हारे बराबर सुन्दर लड़की कोई नहीं देखी।"

राजकुमारी कन्दौला बोली — "ऐसा नहीं है। मुझसे भी सुन्दर लड़कियाँ हैं। खुले मैदान में एक सफेद तम्बू लगा हुआ है जिसमें ज़ार बोग्रीगोर की तीन बेटियाँ रहती है। सबसे बड़ी का नाम है प्रोदोरा[178] दूसरी है तिवोब्रिगा और सबसे छोटी है लीजिया। वे मुझसे दस गुना सुन्दर हैं। अगर उनसे मेरा मुकाबला किया जाये तो मैं तो दिन के सामने रात लगूँगी।

जब मैं अपने माता पिता के पास थी तो मैं बहुत सुन्दर थी पर अब मैं दुख की वजह से उतनी सुन्दर नहीं हूँ। और हिन्दुस्तान की तरफ जो सड़क जाती है वहाँ पर ज़ार दलमात के राज्य में एक नाइट रहता है जिसका नाम है इवाष्का व्हाइटमैन्टिल सैरासैन्स कैप।[179]

मैंने अपने पिता से सुना है कि उसने **33** साल तक हिन्दुस्तान के राज्य की रक्षा की है। उसके रहते कोई नाइट या यात्री वहाँ से नहीं जा सकता। कोई जानवर वहाँ नहीं पहुँच सकता। यहाँ तक कि

---

[178] Prodora, Tivobriga and Legia – the three daughters of Tsar Bogrigor

[179] In the Kingdom of Tsar Dalmat a Knight lives named Ivashka Whitemantle Saracen's-Cap

कोई चिड़िया भी पर नहीं मार सकती। उससे ज़्यादा बहादुर को मैं नहीं जानती। मैंने कभी यारोस्लाव लाज़ारेविच का नाम नहीं सुना।

यारोस्लाव लाज़ारेविच के कानों में यह बात पड़ी तो उसका बहादुर दिल इस बात को पचा नहीं सका। उसने तुरन्त ही अपना घोड़ा तैयार किया। रूसी नाइट इवान और राजकुमारी कन्दौला को गले लगाया और इवाष्का व्हाइटमैन्टिल से लड़ने के लिये ज़ार दालमौत के राज्य की तरफ चल दिया।

जब वह थोड़ी देर चल चुका तो उसे ख्याल आया कि वह ज़िन्दगी और मौत की बाजी लगाने जा रहा है और इसके लिये उसने अपने माता पिता की इजाज़त तो ली ही नहीं है। सो वह ज़ार कारतौज़ के राज्य की तरफ लौट पड़ा। वहाँ उसका सामना गोरे राजकुमार दानील[180] से हुआ। उसके साथ 3000 लोग थे।

राजकुमार दानील यह दावा कर रहा था कि वह कारदौज़ के राज्य को जीत कर के ही रहेगा। वह राजकुमार लाज़ार को उसके 12 नाइट्स के साथ बन्दी बना कर अपने देश ले जायेगा।

सो यारोस्लाव तुरन्त ही सीधे शहर पहुँचा तो उसने देखा कि राजकुमार लाज़ार अपनी सेना तैयार कर रहे हैं। वह अपने घोड़े से नीचे उतरा और जमीन पर लेट कर उसको सलाम किया और बोला — "मेरे लौर्ड और मेरे पिता। आप जुग जुग जियें। यह सब आपके साथ क्या हो रहा है। मेरे लौर्ड आप इतने दुखी क्यों हैं।"

---

[180] Daniil the White

राजकुमार लाज़ार बोले — “मेरे प्यारे बेटे। तुम मुझे सूरज की किरन की तरह से खुश करने के लिये कहाँ से आ गये। मैं दुखी कैसे न होऊँ। राजकुमार दानील ने हमारा राज्य लेने के लिये हम पर चढ़ाई कर दी है। वह कहता है कि वह ज़ार को और हम सबको बन्दी बना कर अपने देश ले जायेगा।”

यह सुन कर यारोस्लाव लाज़ारेविच ने कहा — “मेरे लौर्ड और पिता जी। आप मुझे अपना भाला और अपनी ढाल दे दीजिये। मैं अभी लड़ाई के मैदान में जाता हूँ और दुश्मन से लड़ाई लड़ता हूँ।”

राजकुमार लाज़ार बोला — “लेकिन बेटा तुम इतने बड़े दुश्मन से कैसे लड़ सकते हो तुमने तो कभी कोई लड़ाई लड़ी ही नहीं। तुम तो टार्टर्स[181] की दहाड़ की आवाज सुन कर ही डर जाओगे। और फिर वे तुम्हें मार देंगे।”

यारोस्लाव बोला — “पिता जी। जैसे बतखों को तैरना सिखाने की जरूरत नहीं पड़ती उसी तरह से किसी नाइट के बेटे को लड़ाई सिखाने की जरूरत नहीं पड़ती। बस आप मुझे वह दे दीजिये जो मैं आपसे माँग रहा हूँ और फिक्र बिल्कुल भी मत कीजिये।”

जैसे बाज़ बतखों और हंसों के ऊपर गिर पड़ता है यारोस्लाव भी गोरे राजकुमार दानील की फौज पर गिर पड़ा। उनमें से उसने तो इतने लोग मारे भी नहीं जितने कि उसके घोड़े के पैरों के नीचे आ कर मर गये।

[181] Tartars was a Tribe living in Southern Russia.

यारोस्लाव ने दानील को बन्दी बना लिया। उसने उससे यह कसम ले ली कि वह और उसके बच्चे या उनके भी बच्चे कभी ज़ार कारतौज़ के राज्य की तरफ आँख उठा कर भी नहीं देखेंगे। और उसने उसे उसके राज्य वापस भेज दिया।

फिर वह शहर में घुसा तो ज़ार कारतौज़ खुद यारोस्लाव को लेने के लिये बाहर तक आया तो यारोस्लाव ने जमीन पर लेट कर सलाम किया और बोला — "हमारे ज़ार कारतौज़ बहुत दिनों तक खुशी खुशी ज़िन्दा रहें।"

कारतौज़ बोला — "सर यारोस्लाव लाज़ारेविच। मैंने तुमको देश निकाला दे कर बहुत बड़ी गलती की। अबसे तुम यहीं रहो। तुम अपने लिये सबसे अच्छा शहर चुन लो सबसे सुन्दर गाँव चुन लो। मेरा सारा खजाना तुम्हारे लिये है। उसमें से तुम जितना चाहो उतना ले लो। तुम्हारी जगह अब मेरे पास है।"

यारोस्लाव बोला — "ओ ज़ार। मैं तो चारों तरफ घूमने के लिये बना है। नया नये करनामें करने और लड़ने के लिये बना हूँ। मैं यहाँ नहीं रुक सकता।"

फिर उसने ज़ार के साथ खाना खाया सबसे विदा ली और वहाँ से चला गया।

यारोस्लाव फिर एक या दो या तीन महीने चला और एक मैदान में पहुँच गया जहाँ एक सफेद तम्बू लगा हुआ था। वहाँ ज़ार

बोग्रीगोर की तीन सुन्दर बेटियाँ बैठी हुई थीं। उनकी जैसी सुन्दरता दुनियाँ भर में नहीं थी। वे सब अपने अपने काम में लगी थीं।

यारोस्लाव तम्बू में घुसा तो वहाँ का दृश्य देख कर वह इतना हक्का बक्का रह गया कि वह तो संतों की प्रार्थना करना ही भूल गया।

उसने सबसे बड़ी बेटी प्रोदोरा को हाथ पकड़ लिया और दूसरों को बाहर जाने के लिये कह कर उससे बोला — "मेरी सुन्दर राजकुमारी प्रोदोरा बोग्रीगोरोवना। क्या दुनियाँ में तुमसे सुन्दर भी कोई राजकुमारी है। या मुझसे बहादुर नाइट भी है।"

प्रोदोरा बोली — "यारोस्लाव लाज़ारेविच। ज़ार दलमात के हिन्दुस्तान राज्य की तरफ जाने वाले रास्ते में एक नाइट है जिसका नाम है इवाष्का व्हाइटमैन्टिल सैरासैन्स कैप।

मैंने अपने पिता से सुना है कि वह बहुत ताकतवर है। उसने **33** साल तक हिन्दुस्तान के राज्य की रक्षा की है। उसके रहते कोई नाइट या यात्री वहाँ से पैदल या घोड़े पर किसी तरह भी नहीं जा सकता।

कोई जानवर वहाँ नहीं पहुँच सकता। यहाँ तक कि कोई चिड़िया भी पर नहीं मार सकती। पर तुम भी तो बहुत बहादुर नाइट हो जिसने हमें तम्बू से बाहर निकाल लिया।"

यह सुन कर यारोस्लाव बहुत गुस्सा हो गया। उसने राजकुमारी का सिर झुकवाया और अपनी तलवार से काट दिया।

फिर उसने दूसरी राजकुमारी तिवोब्रिगा को बुलवाया। उसका हाथ पकड़ कर उससे पूछा — "मेरी सुन्दर राजकुमारी तिवोब्रिगा बोग्रीगोरोवना। क्या दुनियाँ में तुमसे सुन्दर भी कोई राजकुमारी है। या मुझसे बहादुर नाइट भी है।"

उसने भी वही जवाब दिया जो बड़ी राजकुमारी ने दिया था। सो उसका गला भी बड़ी राजकुमारी की तरह ही काट दिया। फिर उसने तीसरी राजकुमारी लीजिया को बुलाया और उसका हाथ पकड़ कर उससे भी वही पूछा जो उसकी बड़ी बहिनों से पूछा था।

लीजिया बोली — "सर यारोस्लाव। मैं न तो अच्छी हूँ और न सुन्दर हूँ। जब मैं अपने माता पिता के साथ थी तब मैं वैसी थी। पर अब मैं सुन्दर भी नहीं हूँ और मैं अच्छी भी नहीं हूँ।"

इसके बाद उसने उसे राजकुमारी अनास्तासिया के बारे में बताया जो ज़ार वोरशोलोमी की बेटी[182] थी। और इवाष्का के बारे में बताया।

यारोस्लाव बोला "ओ सुन्दर लड़की तुमने मुझे ये शब्द कह कर मुझे बहुत तसल्ली दी है।"

फिर वह तम्बू से बाहर चला गया। लीजिया से विदा ली अपने घोड़े पर चढ़ा और ज़ार दलमात और इवाष्का व्हाइटमैन्टिल से मिलने के लिये हिन्दुस्तान के राज्य की तरफ चल पड़ा।

---

[182] Princess Anastisia, the daughter of Tsar Worcholomei

वह फिर एक या दो या तीन महीने तक चला होगा कि वह एक शहर के पास आया तो वहाँ उसने एक मैदान में इवाष्का को एक भाले के सहारे खड़े देखा। उसने सैरासैन की एक टोपी पहन रखी थी और एक सफेद शाल ओढ़ रखा था।

यारोस्लाव उसके पास गया और उसने अपना कोड़ा उसकी टोपी पर मारा और बोला — "लेट जाओ और सो जाओ। खड़े रहने की कोई जरूरत नहीं है।"

इवाष्का बोला — "तुम कौन हो। तुम्हारा नाम क्या है। तुम कहाँ से आये हो।"

यारोस्लाव बोला — "मैं ज़ार कारतौज़ के राज्य से आया हूँ। मेरा नाम यारोस्लाव है। मैं ज़ार दलमात को सलाम करने हिन्दुस्तान के राज्य जा रहा हूँ।"

इवाष्का बोला — "कोई आदमी और जानवर इस रास्ते से नहीं गया और तुम ऐसा करने की सोचते भी कैसे हो? पहले हम तुम किसी मैदान में जा कर अपने अपने बाजुओं की ताकत आजमा लें फिर देखेंगे।"

दोनों मैदान में पहुँचे। भयानक लड़ाई हुई। बहुत देर लड़ने के बाद यारोस्लाव ने अपना भाला इवाष्का की छाती में घुसा दिया। और उसको घोड़े पर से उतार कर नीचे फेंक दिया। इवाष्का ओट्स की बाल की तरह से नीचे गिर गया। यारोस्लाव ने तुरन्त ही मार दिया।

यारोस्लाव फिर आगे चला और दलमौत के राज्य में आ पहुँचा। वह सीधा ज़ार दलमात के महल में गया और सलाम कर के बोला — "ओ ज़ार आप और आपका परिवार और सब नाइट्स और बोयर्स सब बहुत दिनों तक खुश खुश जियें। आप मुझे अपनी सेवा में रख लें।"

दलमात ने पूछा— "तुम कहाँ से आये हो। तुम्हारा नाम क्या है। तुम किसके बेटे हो।"

यारोस्लाव ने उसे सब बताया तो ज़ार ने उससे फिर पूछा — "तुम किस रास्ते से आये हो – जमीन के रास्ते या फिर पानी के रास्ते।"

यारोस्लाव बोला — "जमीन के रास्ते।"

ज़ार बोला — "जमीन के रास्ते पर तो हमारा एक नाइट है जो हमारे राज्य की 33 साल से रक्षा कर रहा है। कोई आदमी या कोई जानवर हमारे राज्य में उसके हुक्म के बिना नहीं गुजर सकता। न पैदल न घोड़े पर न पंख लगा कर। तुम कैसे अन्दर आ गये।"

यारोस्लाव बोला — "मैं उसको मार कर अन्दर आया हूँ। पर मुझे यह नहीं पता था कि वह आपका नाइट है।"

यह सुन कर ज़ार तो बहुत डर गया। उसने मन में सोचा "जिसने मेरे उस नाइट को मार दिया जो 33 साल से मेरे राज्य की रखवाली कर रहा था तो यह मेरा राज्य तो बहुत जल्दी हड़प सकता है। शायद यह मेरी राजगद्दी ही हड़पने आया है।"

यह सोच कर ज़ार बहुत दुखी हो गया। उसने अपने सभी लोगों को हुक्म दिया कि वे सब हर तरह से उसकी इज़्ज़त से पेश आयें और उसका हर तरह से ख्याल रखें। उसने उसको अपने गिलास से शराब पिलायी।

यह सब देख कर यारोस्लाव को लगा कि ज़ार दलमात उससे डर रहा है। वह किले से बाहर चला गया अपना घोड़ा सजाया और राज्य के बाहर चल दिया।

उसके जाने से ज़ार दलमात को बहुत ख़ुशी हुई कि वह चला गया। उसने तुरन्त ही अपने आदमियों को शहर के दरवाजे बन्द करने का हुक्म दे दिया।

यारोस्लाव ने अब तय किया कि वह राजकुमारी अनास्तासिया की सुन्दरता देखने जायेगा। वह एक या दो या तीन महीने तक चलता रहा।

उसने अपने मन में सोचा कि वह एक अनजाने देश में आया है, शायद राजकुमारी से शादी करने या फिर मरने। दोनों ही हालतों में उसने अपने माता पिता का आशीर्वाद नहीं लिया है। यह सोचते ही वह फिर से ज़ार कारतौज़ के राज्य की तरफ चल दिया।

वहाँ पहुँचने पर उसे पता चला कि उसको तो किसी ने जीत लिया है और बहुत सारे लोगों को मार दिया है और जगह जगह आग लगा दी है। अब वहाँ पर एक अकेला मकान खड़ा है। उसमें एक एक आँख वाला एक बूढ़ा रह रहा है।

यारोस्लाव उसके घर में घुसा और उस बूढ़े को सलाम कर के उससे पूछा — “ओ बूढ़े भाई यह सब यहाँ क्या हो गया।”

बूढ़ा बोला — “ओ बहादुर। तुम कहाँ से आ रहे हो। तुम्हारा क्या नाम है।”

यारोस्लाव बोला — “अरे आप मुझे नहीं जानते? मैं इसी राज्य में पैदा हुआ हूँ। मैं राजकुमार लाज़ार का बेटा हूँ और मेरा नाम यारोस्लाव है।”

यह सुन कर बूढ़ा जमीन पर गिर पड़ा और बोला — “जबसे तुम गये हो, बहुत समय पहले, गोरा दानील फिर वापस आया। उसके साथ 500 हजार लोग थे। बस उसने हमारे राज्य पर हमला कर दिया और तलवार और आग से नष्ट कर दिया। उसने 100 हजार लोगों को आनन फानन में मार दिया।

पाँच मिलियन जनता को जिनमें पादरी और सन्त भी शामिल थे खुले मैदान में जला कर मार दिया। बारह हजार बहुत छोटे छोटे बच्चे मार दिये। फिर वह ज़ार कारतौज़ और उसके 12 नाइट्स को बन्दी बना कर ले गया और ज़ारीना तुम्हारी माँ और राजकुमारी ऐपिस्तीमिया को मार दिया।

बस केवल अब मैं ही ज़िन्दा रह गया हूँ। नौ दिनों से डर के मारे अधमरा हुआ पड़ा हूँ।”

यह सुन कर यारोस्लाव तो बहुत रोया। फिर वह अपने घोड़े पर चढ़ा सन्तों की प्रार्थना की और गोरे दानील को ढूँढता हुआ गुप्त

रूप से उसके शहर में आ गया। केवल सड़क पर कुछ बच्चे खेल रहे थे उन्होंने उसको देखा।

उसने उन बच्चों से पूछा कि क्या उन्होंने ज़ार कारतौज़ को देखा है। जैसे वह उनको कोई भीख देने वाला हो।

उन्होंने उसको जेल का रास्ता दिखा दिया। बाहर फाटक पर एक पहरेदार खड़ा हुआ था। यारोस्लाव ने उसे मार कर जेल का दरवाजा खोल लिया।

खोलने पर उसने देखा कि ज़ार कारतौज़ उसका पिता लाज़ार और दूसरे 12 नाइट्स वहाँ बन्द हैं। वे सब अन्धे हो चुके थे। यह दृश्य देख कर तो वह रोता हुआ जमीन पर गिर पड़ा।

वह बोला — "ओ ज़ार मेरे पिता और आप 12 नाइट्स आप बहुत दिन तक जियें।"

उसकी आवाज सुन कर ज़ार कारतौज़ बोला — "बेटे मैं तेरी आवाज तो सुन पा रहा हूँ पर मैं तुझे देख नहीं पा रहा हूँ। तू यहाँ कहाँ से आया है तेरा नाम क्या है। और तू किसका बेटा है।"

तब यारोस्लाव ने बताया कि वह कौन है।

तो कारतौज़ बोला — "मुझसे दूर हट। मेरी हँसी मत उड़ा।"

यारोस्लाव बोला — "पिता जी। मैं सचनुच में यारोस्लाव हूँ। मैं आप सबको छुड़ने आया हूँ।"

कारतौज़ फिर बोला — "झूठ मत बोल। अगर यारोस्लाव ज़िन्दा होता तो आज हम यहाँ इस जेल में बन्द इस हालत में नहीं

होते। मैं अपने राज्य में लाज़ार और 12 नाइट्स के साथ राज कर रहा होता। पर क्योंकि यारोस्लाव मर गया है सो हमें हमारे पापों की सजा निल रही है। आज हम इस अँधेरे में अकेले बैठे हैं।

पर अगर तुम सचमुच में यारोस्लाव हो तो मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम शान्त पानी और गर्म समुद्र[183] के उस पार शैटिन[184] शहर जाओ जहाँ ज़ार फायरशील्ड[185] का राज्य है। उसको मारो और उसके खून की कुछ बूँदें लो।

जब तुम वहाँ से लौटो तब उसको हमारी आँखों पर मल देना तब हम देख सकेंगे और हमें तुम्हारे ऊपर भरोसा भी हो जायेगा।"

यारोस्लाव ने झुक कर ज़ार को सलाम किया और उनसे विदा ले कर शैटिन शहर की तरफ चल दिया।

पर सड़क पर खेलते हुए बच्चों ने यह देख लिया और जा कर यह अपने अपने पिताओं से कहा जिन्होंने फिर गोरे दानील से कहा — "ओ राजकुमार। हमारे शहर में एक बहुत ही बहादुर आदमी देखा गया है। उसका घोड़ा शेर की तरह से था। और वह खुद सिर से पाँव तक हथियारों से लैस था। वह जेल में से निकला जहाँ ज़ार कारतौज़ और उसके साथी बन्द हैं।"

तुरन्त ही राजकुमार दानील ने अपने नौकर मुरसा[186] को जेल भेजा ताकि वह यह सब बात ठीक से पता कर के लाये।

---

[183] Still Waters and Warm Sea

[184] Shtchetin city

[185] Tsar Fireshield reins there in Shtchetin city

[186] Mursa – name of servant of Prince Daneil the White

जब वह जेल में आया तो उसके दरवाजे खुले पड़े थे पहरेदार मरा पड़ा था। वह अन्दर घुसा और उसने ज़ार कारतौज़ से कहा — "ओ ज़ार कारतौज़। राजकुमार दानील ने मुझे यहाँ यह जानने के लिये भेजा है कि तेरे साथ कौन था। सो तू मुझे बता तेरे साथ यहाँ कौन था।"

कारतौज़ बोला — "भाई हम यह कैसे बता सकते हैं कि यहाँ कौन था। एक आदमी आया था और अपने आपको यारोस्लाव बताता था। पर वह उसकी आवाज नहीं थी।"

उसके बाद मुरसा राजकुमार दानील के पास लौट गया और उसे बताया जो कुछ भी ज़ार कारतौज़ ने उससे कहा था। राजकुमार गोरे दानील ने अपनी फौज को ढोल और बिगुल बजाने का ऐलान कर दिया। बहुत भारी संख्या में टार्टर्स वहाँ आ कर इकट्ठे होने लगे – **250** हजार की संख्या में।

उसने **30** घुड़सवारों को हुक्म दिया कि वह यारोस्लाव को कहीं भी ढूँढें और उसे पकड़ कर उसके सामने लायें। सो वे उसको ढूँढने गये तो कुछ देर के बाद यारोस्लाव उनको एक ओक के पेड़ के नीचे सोता हुआ मिल गया। उसका घोड़ा उसके पास खड़ा हुआ था।

घोड़े ने यह देख लिया कि टार्टर्स लोग उसके मालिक के पीछे हैं। वह बहुत ज़ोर से हिनहिनाया। उसकी हिनहिनाहट की आवाज सुन कर यारोस्लाव जाग गया।

उसने देखा कि नाइट्स अभी दूर थे सो वह अपने घोड़े पर चढ़ा और यह कहते हुए वहाँ से भाग लिया कि “पहले तुम मैदान में चलती हवा को तो पकड़ लो तब तुम मुझे पकड़ने की कोशिश करना।”

यह कह कर वह उनकी नजर से गायब हो गया और शान्त पानी और गर्म समुद्र के उस पार पोदोलिश होर्दे[187] शैटिन शहर की ओर चल दिया।

टार्टर्स ने आपस में सलाह की कि वे अब क्या करें। वे राजकुमार को जा कर क्या जवाब दें। उन्होंने सोचा कि वे राजकुमार से कह देंगे कि यारोस्लाव उनको कहीं दिखायी ही नहीं दिया।

यारोस्लाव को शैटिन पहुँचते पहुँचते छह महीने लग गये। पर वहाँ पहुँचने से पहले उसको एक पूरी फौज मरी हुई दिखायी दी। और उसके बीच में एक नाइट का सिर पड़ा हुआ था जो एक छोटी पहाड़ी के बराबर था।

यारोस्लाव ने इस फौज के चारों तरफ चक्कर लगाया और ऊँची आवाज में चिल्लाया — “क्या यहाँ कोई जिन्दा आदमी है।”

यह सुन कर नाइट का सिर बोला — “यारोस्लाव लाज़ारेविच। तुम्हें कौन चाहिये।”

---

[187] Podolish Horde – perhaps this was the country and Shtchetin is the city

यह सुन कर यारोस्लाव ने उसकी बहुत तारीफ की कि इतने में ही वह सिर फिर बोला — "तुम कोई आश्चर्य मत करो। तुम मुझे यह बताओ कि तुम घोड़े पर सवार हो कर कहाँ जा रहे हो और तुम किसको ढूँढ रहे हो।"

यारोस्लाव ने पूछा — "मगर तुम कौन हो। तुम कौन से राज्य में रहते हो और तुम्हारे माता पिता कौन हैं।"

वह सिर बोला — "मैं सादोनिक राज्य[188] से आता हूँ। मैं ज़ार प्रोचोज़[189] का बेटा हूँ। मेरा अपना नम रसलानी[190] है।"

यारोस्लाव ने पूछा — "यहाँ यह किसकी फौज मरी पड़ी है।"

सिर बोला — "ये सब ज़ार फ़ेयरशील्ड के हैं। अभी एक साल भी नहीं गुजरा है जब मैं यहाँ आया था और इनको मार दिया। इस लड़ाई की वजह यह थी कि ज़ार ने कुछ उन गाँवों पर कब्जा कर लिया था जो मेरे पिता के थे। लेकिन मुझे यह तो बताओ यारोस्लाव तुम कहाँ तक जा रहे हो।"

यारोस्लाव बोला — "मै ज़ार फ़ायरशील्ड को मारने के लिये शेटिन तक जा रहा हूँ।"

सिर बोला — "जल्दी ही तुम मारे जाओगे। मैं बहुत ताकतवर नाइट था जिससे सारे ज़ार और नाइट्स डरते थे। जब मैं पैदा हुआ

---

[188] Sadonic Kingdom

[189] Tsar Prochose

[190] Raslanei

तब मैं छह फीट लम्बा था। और इतना मोटा था जितना कि कोई आदमी अपने हाथ फैला कर घेरा बना सकता है।

जब मैं 10 साल का था तो मेरे सामने कोई जंगली जानवर कोई आदमी अपने पैरों पर या कोई नाइट अपने घोड़े पर खड़ा नहीं रह सकता था। अब तुम देख सकते हो कि मैं कितना बड़ा हो गया हूँ। मेरा शरीर अब 60 फीट लम्बा है। कन्धों के बीच की जगह 12 फीट है और मेरी भौंहों के बीच में एक छोटी मोटी डंडी तो आ ही सकती है।

मेरा सिर इतना बड़ा है जितना कि शराब बनाने वाले का बर्तन होता है। मेरी बाँहें 20 फीट लम्बी हैं। और मैं उस ज़ार के आगे जमीन पर खड़ा नहीं रह सका।

ज़ार खुद भी बहुत ताकतवर है और उसकी फौज भी बहुत ताकतवर है। भाले और तलवार उसको बींध नहीं पाते। आग उसे जला नहीं पाती। पानी उसे डुबो नहीं पाता।

पर फिर भी मेरे पास एक तलवार है जो उसे घायल कर सकती है पर बदकिस्मती से मैं उससे काम नहीं ले सका और उसने मुझे गिरा दिया। फिर भी मैं तुम्हारी अच्छी सेवा करूँगा। तुम्हें सलाह दूँगा।

जब तुम शैटिन शहर पहुँचोगे और जब ज़ार तुम्हें देखे और तुमसे कुछ सवाल पूछे तो बस तुम उसको एक यही जवाब देना कि तुम उसके पास उसकी सेवा करने के लिये आये हो। वह तुम्हें अपने

पीछे आने के लिये कहेगा। तुम ऐसा ही करना और वफादारी से उसकी सेवा करना।

जब वह कभी शिकार के लिये जाये तो उसके साथ जाना और मेरी बात कर के उसे मेरी याद दिलाना तो वह थोड़ा दुखी हो जायेगा। तुम कहना कि तुम उस तलवार को मेरे सिर के नीचे से निकाल कर ला सकते हो। वह तुम्हारी इस बात पर कभी विश्वास नहीं करेगा पर तुम अपनी बात पर कायम रहना।

फिर जितनी जल्दी हो सके तुम मेरे पास आना। मैं तुम्हें अपना सिर उठा कर वह रलवार तुम्हें दे दूँगा।"

यारोस्लाव ने उसको सिर झुकाया अपने घोड़े पर चढ़ा और शैटिन की ओर चल दिया। जब वह शहर के पास पहुँचा तो ज़ार ने उसे देखा और अन्दर आने से रोका।

यारोस्लाव अपने घोड़े से उतर गया और जमीन पर लेट कर उसे सलाम करते हुए बोला — "आप बहुत साल तक खुश खुश जियें ओ ज़ार। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मुझे अपनी सेवा में रख लीजिये।"

ज़ार ने पूछा कि वह कब आया। उसके माता पिता का क्या नाम है। उसका खुद का क्या नाम है।

यारोस्लाव बोला कि वह बहुत दूर घूमता फिरता यहाँ आया है और अब वह किसी अच्छे मालिक की सेवा करना चाहता है। वह

ज़ार कारतौज़ के राज्य में पैदा हुआ था और राजकुमार लाज़ार का बेटा है। उसका अपना नाम यारोस्लाव है।

यह सुन कर ज़ार बोला — "यारोस्लाव लाज़ारेविच। आओ मेरे शहर चलो। मुझे कुछ लोगों की जरूरत है।"

सो यारोस्लाव उसके साथ शहर में चला गया।

एक दिन ज़ार शिकार के लिये बाहर निकला तो अपने साथ अपने नाइट्स और बोयर्स को भी साथ ले गया। यारोस्लाव भी उनके साथ गया था। जब ये नाइट के सिर के पास पहुँचे तो यारोस्लाव उठा और उस दृश्य की बड़ी तारीफ करते हुए खड़ा रह गया।

ज़ार ने पूछा — "यारोस्लाव तुम यहाँ आ कर खड़े क्यों हो गये।"

यारोस्लाव बोला — "मुझे यहाँ एक बहुत बड़ी फौज मरी हुई दिखायी दे रही है और एक नाइट का सिर दिखायी दे रहा है। उस सिर के नीचे एक बहुत अच्छी तलवार रखी हुई है।"

ज़ार एक लम्बी साँस ले कर बोला — "इस नाइट ने मेरी बहुत सारी फौज को मार डाला इसलिये मैंने इस नाइट को मार दिया। अब इसकी तलवार इसके सिर के नीचे रखी हुई है और मैं इसको ले नहीं सकता। मुझे कोई तलवार घायल नहीं कर सकती मुझे कोई आग जला नहीं सकती मुझे कोई पानी डुबो नहीं सकता। केवल इसी तलवार में यह ताकत है कि यह मुझे मार सकती है।"

यारोस्लाव बोला — "ओ ज़ार। मेहरबानी कर के मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं यह तलवार आपके लिये ला सकूँ।"

ज़ार बोला — "तुम मेरा यह काम कर दो। मैं तुम्हें अपने नाइट्स का सरदार बना दूँगा। लेकिन अगर तुम यह बात ऐसे ही कह रहे हो तो देख लेना तुम न तो पानी में सुरक्षित रहोगे न धरती के नीचे और न ही पहाड़ों में।"

यह कह कर ज़ार तो शहर वापस लौट गया और यारोस्लाव नाइट के सिर की तरफ चल दिया।

वहाँ पहुँच कर वह बोला — "सर नाइट के सिर। मुझे आपके प्यार और दोस्ती पर पूरा विश्वास है कि आप अपनी यह तलवार मुझे देने का अपना वायदा पूरा करेंगे। क्योंकि अब मैंने ज़ार से कह दिया है कि मैं तुम्हें यह तलवार ला कर दूँगा। अगर मैंने ऐसा नहीं किया तो वह मुझे बड़ी बेदर्दी की मौत मार देगा।"

पर नाइट का सिर तो एक शब्द भी नहीं बोला। यह देख कर यारोस्लाव अपने घोड़े से नीचे उतरा और उसके सामने घुटनों के बल बैठ गया और बोला — "सर रसलानी। मुझे इस तरह बेकार में न मरने दीजिये। अपने सिर के नीचे रखी तलवार मुझे दीजिये।"

यह सुन कर नाइट रसलानी उठा तो यारोस्लाव ने उसके सिर को सिर झुका कर उसके सिर के नीचे से तलवार निकाल ली। फिर वह अपने घोड़े पर चढ़ा और शैटिन शहर की तरफ भाग गया।

रास्ते में वह सोचता जा रहा था "अब तक तो मैं कई ज़ारों और नाइट्स को जीतता आ रहा हूँ पर अबकी बार तो मैं किसी नाइट के सिर के आगे सिर झुकाने और उससे तलवार लेने पर मजबूर हो गया।"

रसलानी ने यह सुन लिया तो वह वहीं से बड़े ज़ोर से चिल्लाया — "ओ सर नाइट। वापस आओ।"

यह सुन कर यारोस्लाव वापस मुड़ा और फिर से सिर के पास पहुँचा तो सिर ने उसको बुरा भला कहते हुए कहा — "तुम्हारी तलवार तो मेरे किनारे को भी नहीं छू सकती।"

यारोस्लाव उसके सामने जमीन पर गिर पड़ा और बोला — "मैंने आपको नाराज किया मेहरबानी कर के मुझे माफ कर दीजिये।"

नाइट के सिर ने कहा — "यारोस्लाव लाज़ारेविच। तुम्हारी जवानी और तुम्हारी नासमझी ने तुम्हारे मुँह से ऐसी बात कहलवायी। तुमने मेरी तलवार तो ले ली है पर क्या तुम्हें मालूम है कि इसको लेने के बावजूद तुम्हारी जान जा सकती है।

फिर भी मैं तुम्हारे अच्छे की दुआ करता हूँ और तुम्हें समझदारी सिखाता हूँ। जब तुम शहर के पास पहुँचो और ज़ार तुम्हें देखेगा तो वह बड़ी खुशी खुशी अपने सिंहासन से उतर कर तुमसे मिलने के लिये आयेगा।

वह तुम्हारा अपने दरबार के बीच में स्वागत करेगा। तुमको सोना चाँदी और जवाहरात देगा। तभी तुम उसके सिर पर इस तलवार से एक बार ज़ोर से वार कर देना। ध्यान रहे तुम उस पर केवल एक ही वार करना दूसरा वार नहीं करना वरना वह ज़िन्दा हो जायेगा और फिर तुमको ही मार देगा।"

ऐसा सुन कर उसने तलवार लेने के लिये अपना हाथ बढ़ाया। तलवार ले कर यारोस्लाव ने नाइट के सिर को अपना सिर झुकाया और अपने घोड़े पर चढ़ कर शहर की ओर चल दिया।

जैसे ही वह किले के पास पहुँचा और ज़ार ने देखा कि यारोस्लाव तलवार ले कर लौट रहा है तो ज़ार ने अपना दंड फेंका अपनी राजगद्दी से उतरा और उसको अपने दरबार में ले आया।

वह बोला — "यारोस्लाव लाज़ारेविच। यह काम करने के बदले में मैं तुम्हें एक जगह अपने सामने की देता हूँ और दूसरी जगह तुम्हें अपने बराबर की देता हूँ और तीसरी जगह तुम अपनी इच्छा से चुन लो।

मेरा खजाना तुम्हारे लिये खुला हुआ है। तुम जितने चाहो शहर और गाँव ले लो। अगर चाहो तो मेरी बेटी नज़ारिया से शादी कर लो। मैं तुम्हें अपना आधा राज्य भी दे दूँगा।"

ऐसा कहते हुए तलवार लेने के लिये उसने अपना हाथ बढ़ाया पर यारोस्लाव ने उस तलवार से उसके सिर पर एक ऐसा वार किया जिससे उसका सिर फट गया और वह मर कर जमीन पर गिर पड़ा।

यह देखते ही सारे नाइट्स और बोयर्स चीख पड़े — "यारोस्लाव लाज़ारेविच इसको एक बार और मारो।"

पर उसने जवाब दिया — "एक नाइट केवल एक बार ही मारता है। उसके लिये उतना ही काफी है।"

इसके बाद तो बहुत सारे राजकुमार बोयर्स और **12** नाइट्स उसके ऊपर टूट पड़े और उसको मारने जा ही रहे थे कि यारोस्लाव ने अपना भाला तो अपनी बगल में दबा लिया और ज़ार को अपने बॉये हाथ से पकड़ कर अपने दॉये हाथ से वह राजकुमारों और बोयर्स को मारने लगा।

जल्दी ही दूसरे राजकुमार और शहर के रहने वाले ज़ोर से चिल्लाये — "ओ यारोस्लाव लाज़ारेविच। यह खून खराबा और मार काट छोड़ो। यह तो किस्मत की मर्जी है। अब तुम हमारे साथ रहो और हमारे देश पर राज करो।"

पर यारोस्लाव बोला — "तुम लोग आपस में ही किसी को अपना ज़ार चुन लो। मैं तुम्हारा ज़ार नहीं हूँ।"

फिर उसने मार धाड़ बन्द कर दी ज़ार का थोड़ा सा खून लिया उसको एक शीशी में बन्द किया और अपने घोड़े पर सवार हो कर शहर से बाहर निकल गया।

वहॉ से वह सर रसलानी के पास आया। वहॉ आ कर उसने बिना सिर वाले शरीर पर सिर रख कर जोड़ दिया। फिर उसने

उसके ऊपर थोड़ा सा खून छिड़क दिया वह तुरन्त ही ज़िन्दा हो गया जैसे कोई सपना देख कर जागा हो।

यारोस्लाव ने उसे गले से लगाया और उन्होंने एक दूसरे को भाई कह कर पुकारा। रसलानी बड़ा भाई था और यारोस्लाव छोटा। उसके बाद वे अलग हो गये और अपने अपने रास्ते चले गये।

यारोस्लाव अपने रास्ते चला गया और रसलान अपने सैडोनिक राज्य अपनी मॉ से आशीर्वाद लेने के लिये चला गया क्योंकि वह शैटिन के ज़ार की बेटी से शादी करना चाहता था और उस शहर पर राज करना चाहता था।

लेकिन यारोस्लाव छह महीने तक चलता रहा और गोरे व्हाइटमैन्टिल के किले में आ पहुॅचा। वहॉ पहुॅच कर वह सीधा जेल गया जिसकी एक बहुत ही ताकतवर पहरेदार पहरेदारी कर रहा था।

उसने उसको मार कर जेल का दरवाजा खोला जेल में अन्दर घुसा और बोला — "ज़ार कारतौज़ की जय हो। और मेरे पिता राजकुमार लाज़ार की भी। और तुम 12 नाइट्स की भी। भगवान ने आप सबको कैसे सुरक्षित रखा।"

ज़ार कारतौज़ बोला — "ओ आदमी। तुम कहॉ से आये हो। और तुम्हारा नाम क्या है।"

यारोस्लाव बोला — “ओ ज़ार। मैं आपके राज्य में पैदा हुआ था। मैं राजकुमार लाज़ार का बेटा हूँ। और मेरा नाम यारोस्लाव है। मैंने आपका हुक्म पूरा कर दिया है। मैंने उस ताकतवर ज़ार को मार दिया है और मैं उसका खून ले आया हूँ।”

ज़ार कारतौज़ बोला — “अगर तुम सचमुच में यारोस्लाव हो और तुमने ज़ार को मार दिया है और तुम उसका खून ले आये हो तो उसे हमारी ऑखों पर लगा दो। तभी हम सब रोशनी देख सकेंगे और तुम्हारा विश्वास कर सकेंगे।”

यारोस्लाव ने शीशी में से थोड़ा सा खून निकाला और उन सबकी ऑखों पर लगा दिया जिससे सब देखने लगे। वे सब बहुत खुश हो गये और ऑखों में ऑसू भरते हुए कहा कि “यह वाकई तुम हो यारोस्लाव।” फिर उन सबने उसको गले लगाया।

ज़ार कारतौज़ ने उससे पूछा — “पर तुम इतने दिन रहे कहॉ।”

यारोस्लाव बोला — “एक मिनट।”

कह कर वह जेल छोड़ कर चला गया। अपने घोड़े पर चढ़ा और शहर के बाहर चला गया।

अगली सुबह यारोस्लाव बहुत ज़ोर से चीखा। जब राजकुमार दानील ने यह आवाज सुनी तो उसने अपने बिगुल बाजे और ढोल बजाने का हुक्म दिया। यह सुन कर मर्सेज़ और टार्टर्स[191] सभी

[191] Murses and Tarters – people of two tribes

इकट्ठा होने लगे। दानील अपने और लड़ाई वाले लोगों को ले कर शहर के बाहर निकल आया।

यारोस्लाव ने अपना भाला और ढाल उठाया और बोला — "जैसे बाज़ सफेद हंसों और भूरी बतखों का शिकार करता है वैसे ही यारोस्लाव लाज़ारेविच गोरे दानील पर हमला कर रहा है। उसकी तलवार से बहुत सारे लोग मारे गये।

पर उसके घोड़े के पैरों के नीचे आ कर तो उससे भी ज़्यादा लोग मारे गये। उसने 10 हजार मर्सेज़ और 100 हजार टार्टर्स मार दिये। वह राजकुमार गोरे दानील को बन्दी बना कर शहर तक ले गया।

उसने 10 साल तक के सब बच्चों को ईसाई बनाया और उनके पुराने धर्म को बुरा कहा। उसके बाद उसने गोरे दानील की पत्नी को जान से मारने का हुक्म दिया क्योंकि उसने उसकी मॉ राजकुमारी एपिस्तीमिया को मारा था।

पर उसने दानील और उसके कुलीन लोगों को छोड़ दिया क्योंकि उसने ज़ार कारतौज़ और राजकुमार लाज़ार और 12 नाइट्स को नहीं मारा था। क्योंकि उसने केवल उनकी ऑखें हीं निकाली थी और उनको केवल जेल में बन्द कर के उन पर कड़ा पहरा बिठाया था।

शहर के सब नागरिक यारोस्लाव के पास आये और जमीन पर लेट कर सलाम किया और उससे विनती की कि वह उनका राजा

बन कर उन पर राज करे। पर यारोस्लाव ने गोरे दानील को उसकी गद्दी पर बिठाया।

राजकुमार लाज़ार और 12 नाइट्स अपनी अपनी जगह लौट गये। सब लोगों ने बहुत खुशियाँ मनायी गयीं और दावतें हुईं।

जब सब खाना खा चुके तो यारोस्लाव उठा और उसने सब सन्तों को सिर नवाया और ज़ार कारतौज़ और अपने पिता लाज़ार से विदा ली और चल दिया।

सारे लोग आँखों में आँसू भरे कुछ दूर तक उसके साथ गये कि वह उनको छोड़ कर न जाये पर वह अपने घोड़े पर चढ़ कर सबको सिर झुका कर डोब्री की तरफ चल दिया जहाँ उसको ज़ार वोरशोलोमी की बेटी अनास्तासिया से मिलना था उसकी सुन्दरता देखनी थी।[192]

अब उस देश में एक बहुत बड़ी झील थी जिसमें एक बहुत बड़ा तीन सिर वाला ड्रैगन रहता था जिसका काम उस झील में पड़े एक बहुत ही कीमती रत्न की रक्षा करना था। वह हर साल झील के किनारे पर आता था और बहुत सारे लोगों को खा जाता था।

ज़ार यह बात कई बार कह चुका था कि जो कोई उस ड्रैगन को मारेगा वह उसको बहुत सारा सोना चाँदी और गाँव देगा।

जब यारोस्लाव उस शहर में आया और उसने यह सुना तो वह सीधा उस झील पर पहुँच गया। जब ड्रैगन ने उसको किनारे पर

---

[192] In Dobri lived Tsar Vorcholomei, the father of the Princess Anastasia.

देखा तो वह बाहर निकल कर आया। उसको देख कर यारोस्लाव का घोड़ा डर गया और गिर पड़ा। यारोस्लाव भी जमीन पर गिर पड़ा। इतनी देर में ड्रैगन ने उसे पकड़ लिया और झील के अन्दर खींच लिया।

इस समय यारोस्लाव के पास कुछ नहीं था सिवाय लड़ने वाली तलवार के। वह कूद कर ड्रैगन के ऊपर पर बैठ गया और उस तलवार के एक ही वार से उसके दो सिर काट डाले।

वह उसका तीसरा सिर भी काटने वाला था कि ड्रैगन घूमा और उससे विनती की कि "ओ यारोस्लाव लाज़ारेविच। मेहरबानी कर के मेरी ज़िन्दगी बख्श दो। आज के बाद मैं फिर कभी झील के किनारे नहीं आऊँगा और किसी को नहीं खाऊँगा। बस झील की सतह पर ही पड़ा रहूँगा।"

यारोस्लाव बोला — "मुझे वह कीमती पत्थर ला कर दो तो मैं तुम्हें आजाद कर दूँगा।"

सो वह ड्रैगन यारोस्लाव को अपनी पीठ पर बिठाये बिठाये ही झील में अन्दर चला गया और वह कीमती पत्थर ला कर उसे दे दिया। यारोस्लाव ने उसको कहा कि वह उसको किनारे पर छोड़ दे। जैसे ही ड्रैगन ने उसे किनारे पर छोड़ा कि उसने ड्रैगन का तीसरा सिर भी काट दिया।

यह कर के वह फिर अपने घोड़े पर चढ़ा और ज़ार वोरशोलोमी के पास डोब्री शहर गया। वोरशोलोमी उसका स्वागत करने के लिये

बाहर आया और जब उसका नाम और काम सुना तो बहुत खुश हुआ।

शहर के बहुत सारे लोग ज़ार के पास उसकी तारीफ करने के लिये आये। छोटे छोटे बच्चे नाचने लगे। डोब्री शहर में बहुत खुशियाँ मनायी गयीं।

ज़ार ने यारोस्लाव की इज़्ज़त में बहुत बड़ी दावत दी जिसमें उसने सारे राजकुमारों नाइट्स और बोयर्स को उनकी पत्नियों और बच्चों के साथ बुलाया।

उसके बाद वह यारोस्लाव को हाथ पकड़ कर ले गया और मेज पर अपने साथ बिठाते हुए बोला — "सर यारोस्लाव लाज़ारेविच। आप मेरे और मेरे राज्य के ऊपर राज करेंगे। मेरा सारा खजाना आपके लिये खुला है। जो चाहे और जितना चाहें आप ले लें – सोना चाँदी गाँव शहर। इसके अलावा मैं आपको अपनी बेटी अनास्तासिया और आधा राज्य उसके दहेज में देता हूँ।"

यारोस्लाव यह सुन कर बहुत खुश हुआ। वह हँसी में बोला — "पहले मुझे अपनी बेटी दिखा तो दीजिये ज़ार वोरशोलोमी जी।"

ज़ार ने तुरन्त ही अपनी बेटी को तैयार हो कर उसके सामने आने का हुक्म दिया। जब वह आयी तो यारोस्लाव ने देखा कि वह तो इतनी सुन्दर थी कि कोई उसकी सुन्दरता के बारे में कल्पना भी नहीं सकता था।

वोरशोलोमी ने उसका हाथ पकड़ा और उसको यारोस्लाव के पास ले गया। वह उसके पास सोने के गिलास में वाइन लिये गयी।

यारोस्लाव बोला — "तुम्हारी तन्दुरुस्ती के लिये। प्रिय राजकुमारी। ओ दुनियाँ में सबसे सुन्दर लड़की, तुम दुनियाँ में बहुत दिनों तक खुश खुश जियो।" और उसने उसके होठों को चूम लिया।

राजकुमारी ने कहा — "तुमको भी तन्दुरुस्ती मिले ओ मेरे प्यारे और बहादुर नाइट।"

तब यारोस्लाव ज़ार वोरशोलोमी के पास गया और बोला — "ओ ज़ार। मुझे तुम्हारी सुन्दर बेटी बहुत अच्छी लगी मैं उसे अपनी पत्नी बनाने के लिये तैयार हूँ।"

वोरशोलोमी ने तुरन्त ही शादी की तैयारियाँ करने का हुक्म दे दिया और वे फिर खाने पीने और मौज मस्ती में लग गये।

अगले दिन सुबह ज़ार ने एक और दावत का इन्तजाम किया। वह यारोस्लाव को हाथ पकड़ कर बोला — "ओ बहादुर नाइट यारोस्लाव लाज़ारेविच। मैं शादी में तुम्हें अपनी सुन्दर बेटी अनास्तासिया देता हूँ।

उसे ठीक से प्यार करना और आपस में मिलजुल कर रहना। भगवान करे कि मैं तुम्हारी हँसती खेलती ज़िन्दगी देख सकूँ। मैं तुम्हें अपना सारा राज्य देता हूँ। बस दुश्मनों से उसकी रक्षा करना।"

फिर उसने अपनी बेटी से कहा — "प्रिय बेटी। अपने पति के साथ शान्ति और प्यार से रहना। हमेशा उसकी इज़्ज़त करना क्योंकि पति ही पत्नी का स्वामी होता है।"

इसके बाद उसने सबसे शादी के लिये चर्च चलने के लिये कहा। शादी के बाद सब महल लौटे। यारोस्लाव ने अपनी पत्नी का हाथ पकड़ा और उसको अपने ससुर ज़ार वोरशोलोमी के पास ले गया। सारे राजकुमार नाइट्स बोयर्स नये जोड़े के लिये कीमती कीमती भेंटें ले कर आये थे।

ज़ार ने उन सब भेंटों को स्वीकार किया और कहा — "मेरा बेटा और दामाद यारोस्लाव लाज़ारेविच और मेरी बेटी अनास्तासिया खुशी खुशी बहुत दिनों तक जियें।"

सब नाइट्स और बोयर्स आदि चिल्लाये "यारोस्लाव लाज़ारेविच और राजकुमारी अनस्तासिया की जय हो।"

एक दिन यारोस्लाव अनास्तासिया से बात कर रहा था — "मेरी प्यारी ज़ारीना। दुनियाँ की सबसे सुन्दर राजकुमारी। मैंने बहुत सारे राज्य देखे हैं और बहुत सारी लड़कियों के बारे में सुना है। पर अब तुम मुझे बताओ कि क्या तुमसे भी ज़्यादा सुन्दर कोई लड़की है? या मुझसे ज़्यादा बहादुर कोई नाइट है?"

राजकुमारी बोली — "मेरे प्यारे दोस्त। तुमसे ज़्यादा कोई और बहादुर ओर सुन्दर नाइट दुनियाँ में नहीं है। पर जहाँ तक मेरा सवाल है मुझमें ऐसा सुन्दर क्या है अच्छा क्या है। अमेज़न देश में

सूरज के शहर में एक ज़ारीना पोलीकारिया है[193] जो खुद ही देश पर राज करती है। उसके बराबर सुन्दर कोई और लड़की नहीं है।"

यारोस्लाव लाज़ारेविच ने जब यह सुना तो उसके दिमाग में ज़ारीना पौलीकारिया पोलीकारिया ही घूमने लगी। तो वह एक दिन सुबह सवेरे उठा और अपनी पत्नी से कहा — "प्यारी ज़ारीना। मैं फलॉ फलॉ देश की यात्रा को जा रहा हूँ। तुम यह कीमती पत्थर रख लो जिसे मैंने ड्रैगन से लिया था। अब विदा। अगर मैं ज़िन्दा रहा तो मैं तुम्हारे पास लौट कर आऊँगा। पर अगर मैं मर गया तो मेरे लिये एक मास[194] पढ़वा देना।"

यह सुन कर ज़ारीना तो बहुत ज़ोर ज़ोर से रो पड़ी जैसे वह दुख से अभी मर गयी हो। यारोस्लाव फिर ज़ार वोरशोलोमी के पास गया और उससे कहा कि वह अपने पिता राजकुमार लाज़ार से मिलना चाहता था सो उसने उससे इजाज़त ली अैर वहॉ से चल दिया।

यारोस्लाव नौ महीने तक चलता रहा। आखिर वह सूरज के शहर आ गया। वहॉ से वह महल आया तो अपने घोड़े से नीचे उतरा। जब पौलीकारिया ने एक सुन्दर नाइट को अपने किले के कम्पाउंड देखा तो वह डर गयी कि वह किस तरह वह वहॉ बिना उसकी इजाज़त के आ गया था।

---

[193] There is one Tsarina Polikaria in the City of the Sun in the country of Amazon. Read about the City of the Sun in the country of Amazon in my book "Dakshinee America Ki Lok Kathayen" in its folktale "The Children of the Sun".

[194] Mass – a Christian worhip in the Church

जब वह महल में घुसा तो उसने उससे कहा — “ओ बहादुर नाइट। तुम कहाँ से आये हो और तुम हमारे राज्य में क्या लेने आये हो।”

यारोस्लाव बोला — “मैं ज़ार कारतौज़ के राज्य से आया हूँ और मैं राजकुमार लाज़ार और राजकुमारी ऐपिस्तीमिया का बेटा हूँ और मेरा नाम यारोस्लाव लाज़ारेविच है। मैं आपको सलाम करने और आपकी सुन्दरता देखने आया हूँ।”

यह सुन कर ज़ारेवना पौलीकारिया बहुत खुश हुई। वह उसको हाथ पकड़ कर शाही कमरे में ले गयी और बोली — “सर यारोस्लाव लाज़ारेविच आप यहाँ रहें और मेरे राज्य पर राज करें। अब आपकी इच्छा ही मेरी इच्छा है।”

जैसे जैसे यारोस्लाव उसकी सुन्दरता देखता उसके दिल में कुछ कुछ होता रहता पर वह उसकी प्रार्थना को मना नहीं कर सका। सो वह वहीं रह गया और उसके राज्य पर राज करता रहा।

इस बीच ज़ारीना अनास्तासिया के एक बहादुर बेटा हुआ तो उसका पिता बहुत खुश हुआ। राज्य भर में बहुत खुशियाँ मनायी गयीं। उसके नाना ने उसका नाम यारोस्लाव रख दिया।

उसके गुलाबी गाल थे प्लेट जैसी आँखें थीं और मजबूत शरीर था। वह अपने पिता जैसा ही दिखता था। उसके जन्म पर ज़ार ने एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया।

जब छोटा यारोस्लाव छह साल का हुआ तो एक दिन वह अपने नाना ज़ार वोरशोलोमी के दरबार पहुँचा तो बच्चे उस पर हँसने लगे "यारोस्लाव तुम्हारे तो पिता ही नहीं है।"

इस बार पर उसको गुस्सा आ गया और वह उस बच्चे को पीटने लग गया। जब उसने एक बच्चे को उसके सिर से पकड़ा तो उसका तो सिर ही नीचे गिर गया। जब उसने किसी का हाथ पकड़ा तो उसका हाथ नीचे गिर गया और फिर जब उसने किसी का पैर पकड़ा तो उसका पैर नीचे गिर गया।

पर फिर भी राजकुमारों और बोयर्स के बच्चों ने ज़ार से शिकायत करने की हिम्मत नहीं की। तब छोटा यारोस्लाव अपनी माँ के पास गया और उसने उससे पूछा — "माँ मुझे सच सच बताओ कि मेरे पिता हैं कि नहीं।"

यह सुन कर अनास्तासिया ने एक आह भरी और बोली — "बेटा तुम्हारे पिता हैं – बहादुर नाइट यारोस्लाव लाज़ारोविच। वह एक बहुत लम्बी यात्रा पर गये हैं – अमेज़न देश के सूरज के शहर में।"

यह सुन कर छोटे यारोस्लाव ने अपना जिरहबख्तर पहना और बोला — "मैं अपने पिता को ढूँढने के लिये सूरज के शहर जाना चाहता हूँ।"

तब उसकी मॉ ने उसको एक सोने की ॲगूठी दी जिसमें कीमती पत्थर लगा हुआ था। यारोस्लाव ने अपना घोड़ा सजाया और अपनी मॉ और नाना से विदा ली और अपने पिता को ढूॅढने चल दिया।

अपनी नौ महीने की यात्रा के बाद छोटा यारोस्लाव एक दिन सुबह बहुत जल्दी ही वह सूरज के शहर में पहुॅच गया। उस समय बड़ा यारोस्लाव एक कैम्प में था। जब उसने एक अजनबी नाइट की आवाज सुनी तो उसने चिल्ला कर पूछा — "इधर यह घुड़सवार कौन आ रहा है। मैं उसको मार दूॅगा।"

बाज़ की सी तेज़ी के साथ दोनों बाप बेटे आपस में लड़ने लगे। छोटे यारोस्लाव ने अपने पिता को भाले के पीछे के हिस्से से मारा और उसे काफी दूर फेंक दिया।

तो यारोस्लाव ने कहा — "ओ बच्चे तू यहॉ से चला जा वरना मैं तुझे सजा दे दूॅगा।"

उसके बाद दोबारा लड़ाई शुरू हुई और यारोस्लाव लाज़ारेविच ने अपने बेटे को भाले के पीछे के हिस्से से मारा और उसे घोड़े से गिरा दिया। फिर उसने अपने बेटे के सीने पर भाले की नोक रख कर उसे मारना ही चाहता था कि छोटे यारोस्लाव ने उसका भाला अपने दॉये हाथ से पकड़ लिया।

उसके दॉये हाथ में उसकी मॉ की दी हुई कीमती पत्थर वाली ॲगूठी थी जो चमक उठी तो यारोस्लाव बोला — "तुम कहॉ से आये हो। तुम किसके बेटे हो और तुम्हारा नाम क्या है।"

छोटा यारोस्लाव बोला — मैं डोब्री शहर से आया हूँ जो ज़ार वोरशोलोमी के राज्य में है। मेरी माँ का नाम अनास्तीसिया है पर मैं अपने पिता का नाम नहीं जानता। इसी वजह से मैं यहाँ आया हूँ। मेरा नाम यारोस्लाव है।"

यह सुन कर तो उसका पिता अपने घोड़े पर से कूद पड़ा अपने बेटे को उठाया और उसको अपने गले से लगा लिया। फिर वे अपने अपने घोड़े पर चढ़ कर शहर आये। जहाँ उन्होंने सारे लोगों को दुखी देखा क्योंकि ज़ार वोरशोलोमी मर गया था।

पर लोगों ने नाइट्स को पहचान लिया और उनको अपना सिर झुकाया और बोले — "हमारे लौर्ड यारोस्लाव लाज़ारेविच और उनके बेटे की जय हो। हमारे ज़ार तो हमारा राज्य आपके लिये छोड़ कर जा चुके हैं।"

तब ज़ारीना अनास्तीसिया अपने महल से बाहर निकली और धरती पर गिर कर बोली — "ओ मेरे चमकीले सूरज। तुम हमारे दिल को खुश करने के लिये कब आये।"

उसके बाद वह उसे उसके गोरे हाथ पकड़ कर महल के अन्दर ले गयी। सारे नाइट्स बोयर्स और राजकुमार यारोस्लाव के लिये बहुत सारी भेंटें ले कर आये।

यारोस्लाव बड़ी शान से राजगद्दी पर बैठा। उसने अपना राजदंड अपने हाथ में लिया जामुनी रंग की पोशाक पहनी।

उसने अपने बेटे को बुला कर कहा — "मेरे प्यारे बच्चे। एक लड़ाई वाला घोड़ा लो। एक जिरहबख्तर पहनो, एक तलवार लो, एक भाला लो और चले जाओ। अपने घोड़े पर मजबूती से बैठना और एक बहादुर नाइट बनना जैसे कि मैं था।

तुम यहाँ से गोरे दानील के राज्य में अपने बाबा ज़ार कारतौज़ के पास जाना। मेरे मुँह बोले भाई रूसी नाइट इवान के पास जाना जो आजकल राजा ड्रैगन ज़ार फ़ियोदुल के राज्य में राज करता है।

इन सबकी तन्दुरुस्ती का हाल पूछना और आ कर मुझे बताना। जब तुम जा रहे हो तो रास्ते में नम्र रहना पर बहादुर रहना। सो यारोस्लाव अपने पिता के आशीर्वाद के साथ अपनी यात्रा पर चल दिया।

वह पाँच साल तक यात्रा करता रहा और इन सबसे मिला। वापस लौट कर आया। वापस आते समय रास्ते में उसे एक छोटा बूढ़ा मिला तो वह रुक गया और उससे पूछा — "ओ बूढ़े। तुम मेरे रास्ते में क्यों बैठे हो और मुझे इधर से जाने नहीं देते।" यह कहते हुए वह करीब करीब उसके ऊपर चढ़ सा गया।

पर वह छोटा आदमी उसके इरादे जान गया तो वह बोला — "ओ बेचारे नाइट। क्या तुम एक छोटे बूढ़े आदमी को मारोगे? तुम इस बूढ़े से कुछ नहीं ले पाओगे।"

इससे यारोस्लाव का दिल खुश नहीं हुआ सो उसने उस आदमी को मारने के लिये अपनी तलवार खींच ली। पर जैसे ही वह उसे मारने दौड़ रहा था कि बूढ़े ने उस पर एक फूँक मारी। यारोस्लाव उसकी यह साँस का झोंका भी नहीं सह सका और अपने घोड़े से एक भुट्टे की तरह गिर पड़ा।

तो उस बूढ़े ने उसको उसकी बाँह पकड़ कर उसको उठाया और उससे पूछा — "ओ बेचारे नाइट तुम जीना चाहते हो या मरना चाहते हो।"

यारोस्लाव तो यह सुन कर इतना डर गया कि एक शब्द भी न बोल सका। बूढ़े ने उसको जमीन पर लिटा दिया और बोला — "कोई नाइट कोई हीरो कोई आदमी मेरे सामने नहीं टिक सकता। पर क्या तुम ज़ार वोरशोलोमी के राज्य के ज़ार के बेटे नहीं हो?"

वह बोला — "हाँ मैं हूँ।"

बूढ़ा बोला — "तो जाओ घर वापस लौट जाओ। और वहाँ जा कर राज्य के किसी भी आदमी से मेरे बारे में कुछ नहीं कहना।"

कह कर वह गायब हो गया।

यारोस्लाव फिर अपने माता पिता के पास चला गया। बेटे के आने की खबर सुन कर वे उससे मिलने आये। राजकुमारों और बोयर्स ने उसको धरती पर लेट कर सलाम किया।

उसका पिता उसको उसका हाथ पकड़ कर अन्दर ले गया उसके होठ चूमे और उसको ओक की मेज पर जिस पर बहुत बढ़िया मेजपोश बिछा हुआ था खाने के लिये बिठाया।

उसके बाद पिता यारोस्लाव ने छोटे यारोस्लाव से सवाल पूछने शुरू किये — "तुम अपने बाबा राजकुमार लाज़ार से मिले? मुझे उनके बारे में बताओ कि वे कैसे हैं?"

तो छोटे यारोस्लाव ने उसको यह नीचे लिखी चिट्ठी दी जो ज़ार कारतौस ने उसको दी थी "ज़ार कारतौस एक बड़े ज़ार और ताकतवर नाइट यारोस्लाव लाज़ारेविच को नमस्ते करता है। भगवान तुम्हें और तुम्हारी पत्नी अनास्तासिया वोरशोलोमीवना और तुम्हारे बेटे यारोस्लाव यारोस्लावाविच को सब राजकुमारों और बोयर्स को तन्दुरुस्ती दे। मैं अपने राज्य में खुशी खुशी राज्य कर रहा हूँ।"

उसी कागज पर राजकुमार लाज़ार ने लिखा था — "ओ मेरे बेटे यारोस्लाव लाज़ारेविच और मेरी प्यारी बहू अनास्तासिया और मेरे पोते यारोस्लाव यारोस्लावाविच और तुम्हारे पूरे राज्य को मेरी शुभ कामनाऐं। तुम अपने राज्य में खुशी खुशी राज करो और भगवान करे कि तुम आने वाले सालों में खूब तरक्की करो।"

दोनों चिट्ठियाँ पढ़ का यारोस्लाव बहुत खुश हुआ। फिर उसने अपने बेटे से पूछा — "क्या तुम मेरे मुँह बोले भाई रूसी नाइट राजकुमार इवान से भी मिलने गये थे।"

यारोस्लाव ने उसकी तरफ से भेजा हुई एक चिट्ठी उसके दे दी जिसमें लिखा था — “ज़ारों के भी ज़ार। नाइट्स के भी नाइट। मेरे बड़े भाई यारोस्लाव लाज़ारेविच तुम्हें मेरे दिल से सलाम पहुँचे। तुम्हारी जय हो और तुम अपनी पत्नी अनास्तासिया वोरशोलोमीवना और अपने बहादुर बेटे यारोस्लाव यारोस्लावाविच और सब नागरिकों के साथ बहुत दिनों तक खुश रहो।

सर। जब तुम्हारा बेटा मेरे राज्य में घुसा था तब मैं एक लड़ाई से लौट कर आया था। मुझे तुम्हारे बहादुर बेटे यारोस्लाव का पता नहीं था। मैंने सोचा कि यह शायद मेरा राज्य जीतने आया है।

मैंने उसके ऊपर हमला किया और उसको अपनी तलवार से मारने ही वाला था कि उसने अपना भाला पकड़ लिया और उसके पीछे वाले हिस्से से मेरी छाती में इतनी ज़ोर से मारा कि मैं बड़ी मुश्किल से घोड़े पर बैठा रह सका।

इसके बाद उसने कहा “मैं यारोस्लाव लाज़ारेविच का बेटा हूँ।”

जब मैंने ये शब्द सुने तो मैंने उसे माफ कर दिया। पर उसने जो मुझे घाव दिया था वह अभी तक भरा नहीं है।”

उसके बाद यारोस्लाव ने अपने पिता को एक चिट्ठी और दी। यह चिट्ठी नाइट सर रसलानी की थी जिसमें लिखा था — “मैं बड़ा ज़ार रसलानी प्रोचोरोविच अपने छोटे भाई बड़े ज़ार और ताकतवर नाइट यारोस्लाव लाज़ारेविच को यह चिट्ठी लिख रहा हूँ कि वह

अपनी ज़ारीना अनास्तासिया वोरशोलोमीवना और अपने बेटे यारोस्लाव यारोस्लावोविच के साथ हमेशा तन्दुरुस्त और खुश रहे।

तुम्हारे बेटे ने मेरे सिर में अपने भाले के पिछले हिस्से से चोट मारी जिसके घाव अभी भी भरे नहीं हैं। पर जब मैंने सुना कि वह तुम्हारा बेटा है तो मैंने उसे माफ कर दिया और उसको तुम्हारे पास उसको बिना मारे पीटे वापस भेज दिया।"

उसके बाद यारोस्लाव ने अपने पिता को जैसे जैसे जो कुछ हुआ था सब वैसा का वैसा बता दिया। बस फिर क्या था यारोस्लाव के वापस आने की खुशी में दावत का इन्तजाम हुआ और लोगों ने खूब खुशियाँ मनायीं।

उसके बाद शुरू हुई यारोस्लाव लाज़ारेविच की अपने बेटे के बारे में तारीफ कि कैसे उसने कई ज़ारों को हरा दिया। दरबार में बैठे राजकुमार नाइट्स और बोयर्स सभी उसकी तारीफ करने लगे। और कहने लगे कि दुनियाँ में इन दोनों बाप बेटे जैसा और कोई नाइट नहीं है जो इनके मुकाबले खड़ा रह सके।

यारोस्लाव लाज़ारेविच ने बहुत सारे शहर जीते और दूसरे बहुत सारे शहरों ने उनकी बहादुरी की कहानियाँ सुन कर अपने आप ही उनसे हार मान ली।

उसने **20** साल तक तन्दुरुस्त रह कर वहाँ राज किया। जब वह **49** साल तीन महीने का था तब वह मर गया। उसकी पत्नी

अनास्तासिया उसकी मौत पर बहुत रोयी उसको सँभालना बहुत मुश्किल हो गया।

छोटा यारोस्लाव भी अपने पिता की मौत पर बहुत रोया। पर बाद में उसने अपने पिता के राज्य पर बहुत दिनों तक राज किया।

Classic Books of Russian Folktales
Translated in Hindi by Sushma Gupta

1857 **Russian Popular Tales.** Translated from the German version by Anton Dietrich. London : Chapman and Hall. 1857. 17 tales. The same 17 stories are published in English as in **"The Russian Garland"** edited by Robert Steele in 1916.

1889 **Russian Folk-Tales.** By Alexander Nikolayevich Afanasief Translated by Leonard Arthur Magnus. 64 tales.

1903 **Folk Tales from the Russian.** By Verra de Blumenthal. 9 tales.

1916 **The Russian Garland : being Russian Folk Tales.** Ed by Robert Steele. Tales taken from the sources of **1860**. 17 tales. Same tales as given in **"Russian Popular Tales"**

Some More Books of Russian Folktales in Hindi

1 Roos Ki Lok Kathayen-1 / by Sushma Gupta
2 Roos Ki Lok Kathayen-2 / by Sushma Gupta
3 Roosi Lok Kathayen. New Delhi: Peoples Publishing House (Pvt) Limited.
Hindi Translation Pragati Prakashan, 1960. 160 p. Available at the Web Site : https://www.scribd.com/doc/110410668/roosi-lok-kathayein-Russian-Folk-Tales-Hindi
5 Heere Moti – Soviet Bhoomi Ki Jatiyon Ki Lok Kathayen.
New Delhi: Peoples Publishing House (Pvt) Limited. 2010. 143 p.
Available at the Web Site :
https://archive.org/details/HeereMoti-Hindi-CollationOfSovietFolkTales

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न के साथ — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंग्रेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारि डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियाँ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2019**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री।   **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर।   **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला।   **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड।   **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898)** 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे।   **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स।   **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स।   **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले।   **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फैडैरिक केन।   **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt.   1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — जोसेफ जेकब्स।   **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. Translated in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911.
Under the Title “The Enchanted Parrot”.
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights’ Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

35. Short Tales of Panjab
By Charles Swynnerton – a collection of short tales given in his two books – “Romantic Tales of the Panjab” and “Indian Nights’ Entertainment” given above – No 31 and 32. **1903**.

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाऔं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022